ઝવેરચંદ મેઘાણીને

'Girl
The white blossom in the ear
Will it last ?
The scarlet on the brow
Will stay till death
Will the white blossom in the ear
Last ?'

It should be the endeavour of poets to go back to the essence of India-Village India-and be more of poets of the people

—*William G. Archer*

यज्ञकार्य

श्री पुष्कर चंद्रवाकर विख्यात लोकसाहित्य सेवी हैं। उन्होंने अपने मनकी उमंगसे और कर्मकी तरंगित शक्तिसे सच्चे पृथ्वीपुत्र बनकर लोक–साहित्यका संग्रह करनेके लिए आत्मसमर्पण किया है। उनके यशस्वी कार्यको देखकर मुझे बराबर प्रसन्नता होती रही है। आज उनके 'नवो हलको' नामक लोकगीत संग्रहके नवावतारके लिए कुछ मंगल शब्द लिखनेका अवसर पाकर मैं अत्यंत आनंदका अनुभव करता हूँ। मेरी भावना है कि लोकसाहित्यका कार्य एक यज्ञ है। पृथ्वी और आकाशके विशाल अंतरालमें व्याप्त विराट भावोंके साथ जिनका मन मिला हुआ है, वे मातृभूमिके किसी प्रदेशमें रहते हों इस पवित्र यज्ञ के ऋत्विक् हैं। 'माता भूमिपुत्रो अहं पृथिव्या' यह उनका साधनामंत्र होता है। इस मंत्रकी प्रेरणाशक्ति अनंत है। यह मंत्र देश और कालसे ऊपर व्याप्त एकताका विधायक है। इस प्रकार जिनकी निष्ठा मातृभूमिके प्रति समर्पित हुई हो उन पृथ्वीपुत्रोंका आवाहन हमारे राष्ट्रीय साहित्यका नया धर्म है। आज भारतीय लोकमानस भेदोंसे ऊपर उठकर राष्ट्रीय जीवनमें ओतप्रोत एकताकी ओर उन्मुख हो रहा है। किसी भी अन्य क्षेत्रमें यह ऐक्यभाव इतनी सरल स्वाभाविक रीतिसे प्राप्त नहीं होता जितना उस विराट लोकके धरातल पर जो कोटि कोटि संख्यामें भारतीय ग्राम और जनपदोंमें हिमालय से समुद्र तक फैला हुआ है। जो व्यक्ति इस लोकका अवनीपदचंक्रमण शक्तिसे प्रत्यक्ष दर्शन करता है वही उसका सच्चा दर्शन पाता है। उसे ही वेद व्यासने सर्वदर्शी कहा है —

प्रत्यक्ष दर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः (उद्योग ४३/३६)

लोकके प्रति अनन्त सहानुभूति, हृदयके सुकुमार भावोंका तरल प्रवाह, कभी क्षीण न होनेवाली आत्मीयता, यही लोकसाहित्यके कर्मठ यात्रीकी पूँजी होती है, जिसके बल पर वह घर या नगरकी सीमाओंसे अपने मनको बाहर ले जाकर विराटमें विलीन कर देता है। हृदयमें विराट भावका संस्पर्श लोकसाहित्यके कार्यकर्ताकी पहली कसौटी है।

इस गीत समूहका नाम 'नवो हल्को' या 'नया युग' है। साबरकाँठेकी वनबालाएं वसंतके उल्लसित वातावरणमें लोकगीतका स्वर ऊँचा करते हुए गाती हैं:

मातमा गांदी आवे, ने नवो हल्को रे!

अर्थात् महात्मा गांधी आ गए। अब नया युग आ गया। बस यही हमारे इस अभिनव पृथ्वीपुत्र आन्दोलनका बीज मन्त्र है। महात्मा गांधी नवयुगके स्रष्टा थे। उनके कारण ही लोक एवं लोकसाहित्यकी ओर देशका ध्यान गया। जिन कण्ठोंमें इस साहित्यका जन्म हुआ था उन्हें राष्ट्रीय जीवनमें गांधीजीके कारण नई प्रतिष्ठा मिली। राष्ट्रीय आलोकके फैलनेसे हमारे नेत्रोंमें देखनेकी नई शक्ति आई। जहाँ पहले अंधेरा था वहाँ उजाला फैल गया। गाँवों और जनपदोंमें, सुदूर नदियोंके कांठों और पहाड़ोंकी गुफाओं में जो जनता शहदके छत्ते पर लगी हुई मधुमक्खियोंकी तरह भरी हुई थी और जो हमारे ध्यानसे तिरोहित थी, वह अब राष्ट्रीय चेतनाका अभिन्न अंग बन गई। साबरमती नदी तो एक उपलक्षण मात्र है। सचमुच वहीं पहले-पहल महात्मा गांधीने अपनी साधनाका पांचजन्य शंख बजाया था जिसके गगनभेदी स्वर सुनकर सहस्रों वर्षोंकी हमारी बधिरता दूर हो गई। काश्मीरकी कृष्णगंगा और मरुद्वृधा नदी द्रोणियोंसे लेकर असम प्रदेशकी सूरमा और लौहित्य नदी द्रोणियों तक एवं दक्षिण कोशलकी इन्द्रवती और शबरी नदियोंसे लेकर जहाँ कन्याकुमारीके द्वार तक मातृभूमिका विस्तार है, सर्वत्र एक नये युगका आगमन हुआ है। ऐसा लगता है जैसे किसी

महावसन्त के प्राणवत फगुहरेने उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिमके चारों खूँटोंको झकझोर डाला है। आज उसके कारण हमें अपने जीवनके चौमुखी सौंदर्यको देखने और समझनेकी नई आँख मिली है।

राजस्थानी लोकगीत, भोजपुरी लोकगीत, काश्मीरी लोकगीत, पंजाबी लोकगीत, गढवाली लोकगीत बघेली लोकगीत, छत्तीसगढी लोकगीत, उड़िया लोकगीत, सोरठी लोकगीत इत्यादि अनेक प्रदेशोंके लोकगीतोंके नये संग्रह कुछ ही वर्षोंके भीतर सामने आये हैं। उनसे लोकजीवनके अनेक सरस अंगोंको निकटसे जानने और समझनेका नया साधन प्राप्त हुआ है। लोकगीत प्रत्येक जनपदकी अपूर्व निधि होती है। लोक-मानसमें उनका जन्म होता है। पृथिवीपुत्र मानवके जीवनकी निज वार्ता –गृहवार्ता इन गीतोंमें पिरोई हुई होती है। जिस प्रकार षोडश सस्कारोंके मंत्र गृहजीवनमें हमारे साथ रहते हैं, उसी प्रकार मन्त्रोंसे भी अधिक व्यापक लोकगीत उन्हीं घरोंमें स्त्री कंठोंमें सुरक्षित रहते हुए मानवीय जीवनकी पूरी रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं। मानवहृदयके सुख-दुःख एवं उसके उल्लास और आशा–निराशासे इन गीतोंका जन्म होता है। मानवीय मनोभावोंमें प्रेम और त्यागका जो गाढ़ा रंग है वह पदे पदे इन गीतोंमें मिलता है। लोकगीतोंमें विवाहगीत या जिन्हें गुजरातमें लग्नगीत कहा जाता है, सबसे विचित्र और करुणापूर्ण होते हैं। लोकमें विवाह सबसे बड़ी घटना समझी जाती है। विवाह द्वारा मनुष्यके जीवनमें जैसा विलक्षण परिवर्तन होता है वैसा अन्य विधिसे नहीं। मानव–जीवनका जो सबसे प्रभावशाली रस है उसी शृंगार रसके स्वस्थ, संयत रूपसे अधिकांश लोकगीतोंका स्वरूप निर्मित होता है। विवाह सच्चे अर्थोंमें मानवीय आत्माकी अध्यात्म दीक्षा है। स्त्री और पुरुष दोनोंके रोमरोममें व्याप्त देह और मनकी जन्मसिद्ध कोई महती प्रवृत्ति अपने दूसरे केन्द्रसे मिलनेके लिए विवाहके रूपमें विस्फोट प्राप्त करती है। जैसा स्वाभाविक था प्रस्तुत संग्रहमें भी लग्नगीत और प्रणय गीतोंकी पर्याप्त संख्या है, जिनमें अनेक सुकुमार भावनाएँ अभिव्यक्त हुई हैं। जिस प्रकार विवाह

के आगमनकी प्रसन्नतासे उत्तर या मध्यदेशकी नारी गाती है—'मैं सोने चांदीकी वेदी बनाऊँगी और केसर-कुङ्कुमसे लीपकर गज-मोतियों से चौक पुराऊँगी।' उसी प्रकार गुजराती बहन कहती है—'आज हमारे घर आनन्दका बधावना है, उसमें कुङ्कुम और केसर का साँथिया पूरना है।'

अधिकांश लोकगीतोंका केन्द्रबिन्दु नारी है। उसके गृहस्थजीवन, प्रेम, वात्सल्य, मान, उपालम्भके उभरे हुए चित्र गीतोंमें प्राप्त होते हैं। सास-बहू और ननदभौजाई के पारिवारिक चित्र भी मिलते हैं। नारीके सुकुमार यौवनका सौंदर्य लोकगीतोंका अति सरस पक्ष है। राजस्थानकी सुन्दरी मूमलके वर्णनमें किसी लोककविने कितना सुन्दर कहा है—

काली रे काली काजलिये री रेखड़ी रे
हांजी रे काल्योडी कोठरामें चमके बीजली।

मूमलकी जिन काली आंखोंमें काजलकी रेखा खिंची हुई है वे ऐसी लगती हैं मानो काली कोठरीमें बिजली चमकती है। बघेलखंडकी ग्रामीण विराट अलङ्कारोंकी कल्पना करती हुई पतिसे कहती है—

'हे मेरे छैल, पृथिवीका वाहन मेघोंका ओहार (पर्दा) और चन्द्रमाकी टिकुली लेकर मुझे लेने आओ तो मैं तुम्हारे साथ चलूँगी।'

इसके साथ ऋग्वेदके उस विवाह गीतका स्मरण आता है जिसमें अपने पति सोमके घर जाती हुई सूर्याके लिये मनका वाहन और द्युलोकका ओहार कल्पित किया गया है—

मनो अस्या अन आसीद्
द्यौ रासीद् उत च्छदिः

(ऋग्वेद १०/८५/१०)

यह भी सोमसूक्तके विवाहका लोकगीत ही ज्ञात होता है। देशके

भिन्न अंचलोंमें फैले हुए लोकगीतों में मनोभावोंकी गहरी एकता पाई
जाती है। वे सब एक ही संस्कृतिकी जलवायुमें प्रतिपादित हुए हैं।

श्री पुष्करजीने वन्य जातियोंके जीवनमें घुलमिल कर अपनी सामग्रीका अधिकांश भाग प्राप्त किया है। सौराष्ट्र और बम्बई राज्योंकी सीमाके बीचमें लगभग साठ वर्गमीलका नल सरोवर नामक जलाशय है। उसके कांठेमें पढार नामक जाति बसी हुई है। जनसंख्यामें केवल छह हजार होते हुए भी इस जातिका जीवन बहुत ही रंगबिरंगा है। लोक-कवियोंने उनकी मानवती पढारणोंके अनेक सटीक चित्र गीतोंमें उतारे हैं। उन्हींमें 'भूरी बायडी' या कर्कशाका चित्र भी है जिसको प्रसन्न करने के लिये उसका पति भौंरेकी भातवाली साड़ी मोल लाता है, पर पत्नीका स्वभाव बदलता नहीं। वह अपने घरकी ओखली-चक्की छोड़कर पराए घर दलने-पीसने जाती है। उसके पतिकी आन्तरिक पीड़ा गीतका विषय बनी है।

इसका दूसरा पक्ष वह है जिसमें स्त्री पतिके लिये अत्यंत मधुर रसका स्रोत है। उसे यौवनकी फुलवाड़ीकी सुगंध कहा गया है जिसके लिये पतिरूपी भौंरा सदा उत्कंठित बना रहता है (पृ० ३७)।

पढारोंके प्रदेशमें बहनेवाली रोड नदी उन्हें माताके समान प्रिय है। उनके लोकगीतोंमें उल्लासपूर्वक उसका वर्णन आता है। उसके तट पर वे चोखला रांधकर खांड मिलाते और गानके स्वरमें पुकारते हैं—हे बाट चलने वालो, आओ, रोड के कांठेमें चोखला तैयार है (पृ० ४२)।

लेखकने पढारोंके स्थानिक वीरोंके कथागीतोंका भी संग्रह किया है। किंतु शियाल गांवकी पढार बालाओंका वर्णन विलक्षण है। उनके सुरीले कंठोंसे गीतोंकी झड़ी लग गई थी। उनमें मानों होड़ लग गई और उन्होंने नृत्यगीतकी, आपूर्द, रसायर, चन्द, मी., दिल, राव, कुन्दर, यादव, घोळी, फूल नामक पढार बालाओंके समान ही कृष्णा नदीके कांठेमें

लवाड़ी जातिकी वनबालाओंने एक बार नृत्य और गीतके रस-पर्वसे हमें छका दिया था। वस्तुत: ऐसे ही स्वत: प्रेरित मानससे सच्चे गीतोंका जन्म हुआ करता है। उन किशोरियोंकी थिरकन 'चालो भमरजी वनमा जाबों' गीतकी द्रुत लयमें तरंगित है (पृ०५६)। नव विवाहित युवतिको लोकगीतोंमें 'रत्नकटोरी' कहा जाता है। पढार गीतकी यह पंक्ति कितनी सरस और सुन्दर है—

'सोना वाटकडी रे, केशर घोल्यां, वालमिया—

सोनेकी कटोरीमें हे बालम केसर घोला हुआ है।

लोकगीतकी यह पंक्ति मानों प्रकृतिने स्वयं अपनी लेखनीसे लिखी है—उसी लेखनीसे जो भोली बालाको चित्रविचित्र रंगोंसे सजाकर नव यौवना किशोरीके रूपमें सज्जित करती है।

चाँदीके चार कड़ोंमें सोनेकी साकलोंसे आमकी डालमें बँधे हुए हिंडोलेका चित्र भी मार्मिक है और गुजरातकी निजी संस्कृतिका विशेष प्रतीक है।

चरोतर और अहमदाबादकी छारा जातिके गीतोंका संग्रह भी रोचक है। उनके लग्नगीतोंमें सर्व प्रथम गणेशजीकी वंदना और आवाहन किया जाता है। यही प्रथा राजस्थानी लोकगीतोंमें विघ्नहारक देवताके स्तवनसे आरंभ होती है। चूंदड़ी लोकगीतोंका चिरपरिचित अभिप्राय है। छारा जातिके लग्नगीत में रंगरती चूँदड़ीको सोलह सुवासिनोंने तैयार हुई कहा गया है—

मारी घघरीमां थाने पनी चूँदड़ी रे,
मारी सोले स्वासोनी चूँदड़ी रे।

सौभाग्यवती स्त्रीके लिए सुहागिन शब्द तुलसीदासजीने रामचरितमानसमें प्रयुक्त किया है। वही गुजरातीमें 'सवासण' और छारा जातिकी बोलीमें स्वासोनी हो जाता है।

भाई चंदरवाकरजीके इस संग्रहमें और भी अनेक प्रकारके लोक-गीतोंकी चासनी चखनेको मिलेगी। आशा है भविष्यमें गुजरातके किसी एक प्रदेशमें ही अपना कार्यक्षेत्र सीमित करके वे गीतोंकी पुष्कल संख्या प्राप्त कर सकेंगे जैसा उत्तर भारतमें भोजपुरी लोकगीतोंके संग्रहकर्ताओंने किया है।

काशी विश्वविद्यालय
१६–१०–'५६

वासुदेवशरण अग्रवाल

ક્રમ

यज्ञकार्य ૫

(आमुख : डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल)

નવો હલકો ૧

નવો હલકો રે! ૩

પઢારોનાં લોકગીતો ૧૬

પઢારનાં સંસારગીતો ૩૧

પઢારનાં લોકગીતોમાં સ્થાનીય રંગો ... ૪૦

પરમ માથે આવવાનું નો ભૂલતા! ... ૫૨

ફિનના શરીર હું દીઠ ૬૪

છારાનાં લોકગીતો ૬૮

આંમા નાંઈમા ભિખારી ૭૫

ચંગ ધેરો બજાવણવાળો ૮૩

સંસારગીતો ૯૭

ગઢ લાગી ૯૯

ત્રણ પ્રણયગીતો ૧૦૫

વનનો મોરલો ૧૦૯

જુગારીનું ગીત ૧૧૦

સધીરો મેમાન આવ્યો ૧૧૨

નાયક ૧૧૫

અરજણિયો ૧૧૭

ઉત્તર ગુજરાતનાં ૭ લોકગીતો ૧૨૦

વનમેં બોલે રાજ કોયલડી ૧૨૯

ગ્રામગીતો ૧૩૩

તમ્બરનાં લાકડાંનો ભારો ૧૩૫
ગુજલડી રે ૧૩૮
હોલો રાણો એકલો ૧૪૦
મેવલો આવે ને મે લાવે ૧૪૪
આઈ અખાતરી ૧૪૮

નાટ્યગીતો ૧૫૧

શામળાજીનો મેળો ૧૫૩
કણબી અને કણબણનું ગીત ૧૫૬
સાડી ગુલાબી મગાવો ૧૬૦

ગાંધીગીતો ૧૬૫

ગાંધીગીતો ૧૬૭
જવાહરલાલ નેં'રુ ૧૭૦

ટોપીવાળો અંગરેજ ૧૭૩

ટોપીવાળો અંગરેજ ૧૭૫

મરશિયા ૧૭૯

एको रसः करुणः एव ૧૮૧
અભિમન્યુના રાજિયા ૧૯૮

પરભવનું પરબ ૨૦૩

પરભવનું પરબ ૨૦૫
રવિદાસની વાણી ૨૧૭
આ ભજન કોનું ? ૨૧૮
મને નાથ લ્યો ઉગારી ૨૨૧

ત્યારે, લોકગીતમાં કેટલાક પ્રસંગમાં સામ્ય મળે છે. પુરાણના પ્રસંગો તો આખાય ભારતમાં વ્યાપક બનેલા છે તેથી તેના પરનાં લોકગીતોમાં સામ્ય જોવા મળે તે સ્વાભાવિક છે, પણ સમાજજીવનના પ્રસંગો અને રાષ્ટ્રવ્યાપી ઘટનાઓ પર રચાયેલાં લોકગીતોના ભાવોમાં સામ્ય મળે છે. માનવનું ચિત્તતંત્ર લગભગ સરખું હોવાના કારણે કેટલાક ભાવો જાણે ભાષાનો વાઘો બદલીને ગવાયા હોય તેવું લાગે છે, પણ તેના મૂળમાં તો એવું સંવેદન જ પડેલું છે ને તે ગવાયું જ્યાં ને ત્યાં, તે તે ધરતીની બોલીમાં.

ધરતીના બોલ

ધરતીનાં બદલાતાં રૂપવાળાએ બોલનાં અને વેણનાં રસમાદળિયાં કોતરી કાઢયાં છે. ભીનસંગઠન કરવું છે, એમ કહેવાના બદલે ઉચ્ચારે છે: 'બાંધલી એકી બાંધરી!' ચાકરી કષ્ટદાયક છે, વેદનાભરી છે તે ભાવ વ્યક્ત કરવા તે 'બારા વરહની ચાકરી' કહેવાય ને? ચઢવાને મુશ્કેલ એવા ડુંગરાળ માર્ગને લોકકવિએ 'ધૂળિયો ઘાંટો' કહીને ગીતમાં ગાયું કે:

કેડાળોનો ધૂળિયો ઘાંટો, નઈ ચડાય છોરી રાજુડી!

અને એમાં શય્યા—મૃત્યુશય્યા ખડકાવાની હોય તો તે હોય માત્ર નાળિયેરની, માટે શબ્દપ્રયોગ રચાયો. 'નાળિયેરની સયું ખડકે!' પૂજ્ય દુઃખ માટે 'આવેડયાં દખ' લોકકવિ મૂકે. શોષના સાટે દલની આંટી, વ્યસનનાં ગીતોમાં વ્યસનની તલપ બતાવવી હોય તો લખે: દલનો ભોગી. નારીરૂપ વર્ણવતાં લખેઃ 'અંબોડે ગલફૂલ.' જુવાની આવી ગાય તો તો લોકકવિની કલ્પના પૂરી જ કહેવાય ને? તેથી તેણે ગાયું 'ફૂલવાડી કેરી.' રેંટિયો ફરતો બતાવવાનો ને તેની ગતિને બતાવવા માટે લોકકવિ તેની કાવ્યપંક્તિમાં શબ્દચિત્ર દોરશેઃ 'રણઝણ રણઝણ રેંટુડો ફરિયો!' વાટકડી હોય તો લોકગીતમાં તે 'સોના વાટકડી' જ હોય! હોંચકાની ગતિ બતાવવા માટે કવિએ શું ગાયું?

પરિશિષ્ટ–૧ ... ... ૨૩૨
પરિશિષ્ટ ૧ અ ૨૩૪
„ ૨ ... ... ૨૩૯
આહ્નો સૂર ૨૪૧
ગીતોની સૂચિ ૨૪૬
શબ્દોની સૂચિ ૨૫૩
આંમા નાંઇખ્યા ભિખારી ૧ (૨૫૯)

શુદ્ધિ

પૃ–૧૨૮ પરની ૩૭ પંક્તિમાં આવતા સ્વ. શ્રી. પ્રેમશંકર ત્રિવેદીના સ્થાને હરગોવિંદ પ્રેમશંકર ત્રિવેદી વાંચો.

લેખકની કૃતિઓ

લોકસાહિત્ય

૧. નવો હલકો (લોકગીતસંગ્રહ)
૨. ચંદર ઊગ્યે ચાલવું (કથાગીતો)

વાર્તાસંગ્રહો

૧. અંતરદીપ
૨. શુકનવંતી
૩ બેનરનો બેડું
૪. બાંધણી

નવલકથાઓ

૧. બાવડાના બળે
૨. ભવની કમાણી
૩. રાંકનાં રતન
૪. નંદવાયેલાં હૈયાં
૫ માનવીનો માળો
૬. લીલુડાં લેજો

એકાંકીઓ

૧ પિયરનો પડોશી
૨. મહીના ઓવારે
૩ યજ્ઞ
૪. સહકારમાં

બાળવાર્તા

૧. પ્રાણીવર

સંપાદનો

૧. એકાંકીનો સંગ્રહ
૨. લોકઘડતરમાળાની ૧૨ પુસ્તિકાઓ

૧૬+૨૫૮+૧૮=૨૯૨

'હાંચમા હાલે ને રે દેરી ધરૂકા!'

જો પતિ રિસાય તો ગવાય ત્યારે એમ જ ગાય: હજારી ઢોલ રૂસણો!

અને ગઢના કાંગરા તે એમ ને એમ વર્ણવાય? તેના માટે તે 'પાન સરખા જ' મૂકવું તેને શોભે! મૂલ્યવાન ચૂંદડી બનાવવી હોય તો તે ગવાય ત્યારે બને 'હોળે સવાસોની ચૂંદડી' તેથી જરાય ઓછા નહીં.

તે ગીતસર્જકોએ શી સૂઝથી આ રસમાદળિયા સર્જ્યા હશે?

પછી તેઓ ગાય જ ને 'આમા નાંઈએ ભિખારી!'

આભાર

પ્રથમ તો, શ્રી શાંતિભાઈ શાહનો વસંત મુદ્રણાલયના ફોરમૅન. છાપાની કાપલીઓના ઢૂવામાંથી 'નવો હલકો'ની છાપણીમાં સજાવટ કરી આપી મુદ્રણ પગલે, તેથી જ તો બાકી લોકગીતોની કાપલીઓ તો લેખાય ઉકરડાનો માલ. તેની સુંદર છાપણી કરી આપવી તે જરા મુશ્કેલ. અને તે પણ ગડમડગોટાળિયા ને તુચ્છલખાણમાંથી માટે જ તેમનો આભાર. પ્રા. જે સી ત્રિવેદીએ લોકગીતોની પંક્તિઓ અને શબ્દની સૂચિ કરી આપી માટે તેમનો પણ આભાર માનું છુ તેમના ઠપકાના ભયને કલ્પીને જ મુ. શ્રી. કે કા શાસ્ત્રીએ આ સંગ્રહના પ્રૂફ જોઈ આપીને મને ઋણી બનાવ્યો છે ડૉ વાસુદેવશરણ અગ્રવાલનુ મમત્વ મારા પક્ષે રહ્યુ છે તે તો આ સંગ્રહની પ્રસ્તાવના કહે છે તે શુ ઓછુ અદગ છે? તેમનો હુ ખૂબ જ આભારી છુ

'શાંતિભુવન'
ખડાયતા કાવીની પાછળ
એલિસબ્રિજ, અમદાવાદ–૬
તા ૧૮ ૯ '૫૬

પુષ્કર ચંદરવાકર

નવો હલકો

•

Indian tribal poems, which were a great reservoir imagery, should be accepted as a valid source for enrichment of modern Indian literature.

W. G. Archer

નવો હલકો રે !

વસતનુ સામ્રાજ્ય હતુ, વૃક્ષેવૃક્ષ પર, વનના સીમાડાના દરેક ઝાડ, વેના અને છોડ પર ત્યારે મહુડાઓનાં મીઠાં ફુળ સનાર પડતા ધરતી પર વેગતાં અને વનનો મધમધાટ માદક બનતો હતો

એવા વસંતકાળમાં સાબરકાંઠાના પોશીના પટાની ડુગરમાળમાં ઘૂમતો હતો ઉઘાડા તૃણુવૃક્ષ રહિત ડુગરાઓ બ્રાહ્મણુના મોડિયા તાલકા જેવા લાગતા, પણુ લોકોના હૈયામા ફિ નોન અને ઉ નસ હતા

ત્યારે ઢોલ ઢમૂકવા મડયો, ત્યાના માનવી–ગરાસિયાના અણુએ અણુમા નૃત્ય રમવા લાગ્યુ અને જગનમાંથી લીનુડા વાસની પરોણિયો લઈને ત્રણુ ડુંગરાની વચ્ચે પડેના ઝોળમાં–જ્યાથી ઢોલનો રણુકાર આવતો હતો ત્યાં તેઓ સૌ ચાની નીકળ્યા પેલા ઢે નનો ઢમૂકો સભળાતો હતો તે સ્થાનક પર તેઓ બેચારની સખ્યામાં ન હતા, પણ્ ગામના ગામ ખાલી કરી જેમનિયાને ઝુનાવતા હજારોની સખ્યામાં ૈક વનજાતિના યુવાનો અને યુવતીઓ ચાની ઊમટ્યાં હતાં

તેઓ પેના ડુગરાના ઝોળમા આવે છે કુડી પરથી અવાજ આવે છે તડાક ધીન તડાક !

જુવાનિયાનો શ્યામઝો વર્ણ, માથે ઝુલ્ફાં ઝુલ્ફાંને સાચવવા માથે રૂમાલ બાધ્યો છે ૨ગીનો જુવાન રેશમી રૂમાલ ધાલીને આવ્યો છે અને કાનમાં વગડાઉ વનફૂલ

યુવતીઓ ઠાંસ મારીને આવી છે અનકારમા તેમણે પીજ઼ણિયાં પહેર્યાં છે, હાથના પોચે હ યફૂલ ડુગરાના ઝોળનાં કુંડાળાં ગ્યાય છે પહેલુ કુંડાળુ પુરુષોનું બીજુ સ્ત્રીઓનુ ત્રીજુ પુરુષોનુ, ચોથુ સ્ત્રીઓનુ આ જેનાં તરત જ અભિમન્યુનો ચક્રાવો યાદ આવે

ટહેલાજી, ખાજોપીજો ને ગાયા માણજો રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહેલાજી !
આંગણુ રેપાવું પારસપીંપળી રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહેલાજી !
ટહેલાજી, પાંદડાં ગણીને મઈના કાઢશે રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહેલાજી !

ઢોલાજી પરણ્યા, ને આશીશ મળી ખાજોપીજો ને માયા માણજો રે ! પણ ત્યાં તો શોકય શી નોકરી આવીને ઊભી. વિજોગણ બીચારાણીથી એકલા એકલા દિવસો કેમ જાય ?

આગણુ રોપાવું આંબા આંબલી રે !

અને એવાં બે વૃક્ષથીય વિજોગણથી વિજોગના દિવસો કયાં પૂરા થવાના છે ? તે ગણતરી કયારે પૂરી થશે ? વૃક્ષને નવનવાં પાંદડાં ફૂટવાના જ શી વાસ્તવિકતા મૂકી છે લોકગીતના રચયિતાએ ! માટે તે બોલે છે

આગણુ રોપાવું પારસપીપળો રે, ટહેલાજી !
પાંદડાં ગણીને મઈના કાઢશે રે !

કરુણતાની બાંસુરી અહીં જ થમે છે આ ગીત પણ લમગીત છે નૃત્ય કરતા કરતા તેઓ ગાતા હોય છે

કેશુજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
કેશુજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
બાપાજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે,
બાપાજીના રાજ કનૈયા !

બાપુ કે'તો રેમ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે,
બાપુ કે'તો રેમ કનૈયા, ખેલ કનૈયા; ઢમસે માદળ વાજે !

કેણુજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
કેણુજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
મારલીજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
મારલી કે'તો રેમ કનૈયા, રેમ, કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !

કેણુજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
કેણુજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
કાકાજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
કાકુ કે'તો રેમ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
કાકુ કે'તો રેમ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
કેણુજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
કાકીજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
કાકી કે'તો રેમ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
કાકી કે'તો ખેલ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
કેણુજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
બધમાજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
બધમાજી કે'તો રેમ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !
કેણુજીના રાજ કનૈયા, ઢમસે માદળ વાજે !

ઢમસે માદળ વાજે, જોરથી નબાળુ ઢોલ બાજી રહ્યાં છે અને રાજકનૈયો ઘોડા લઈને વરલાડીને વરવા ચાલી નીકળ્યો છે ત્યારે કહે છે કે બાપુ, મા, કાકા અને બધવાના કહેણ પ્રમાણે તુ ઘોડા ખેલવ, અર્થાત રમ

કેન્દ્રમાં નાચનાર પુરુષોનું 'ઓરકેસ્ટ્રા મંડળ' ઢોલ, ડફી, તબલાં, નગારાં, પખવાજ, કાંસીઓ લઈને બેસે છે

નૃત્યનો વગાડનાર નાયક હાથમાં નીચુંડો વાંસ લઈને હાથ સાદે કૂદનારનો ગીતપંક્તિઓને પ્રારંભનો હોય છે

નૃત્યનો લય બધા પ્રકારનો છે? દરેક પુરુષના હાથમાં લીંબુ વાંસના ટાંકિયા છે તેનાથી નવા ધડકાર બેઉના ડાંડિયા સાથે લે છે આ નૃત્ય ચોમાસું નૃત્ય છે

સ્ત્રીઓ હાથમાં મેંદી પહેરીને આવે, હાથે હાથના પહેરે, હાથરૂન પણ ખરાં! હાંસડી, બોર, ને દોરડા પણ લટકાવે.

સ્ત્રીઓ બહેનપણીના ગળામાં હાથ ઘાલીને કે ખભા પર હાથ રાખીને ઝૂકી ઝૂકીને પગ ઉપાડતી નાચે, અથવા જોડકું શોધીને નાચે, તેમાં યુવાનને પણ તેના ભાગીદાર તરીકે તેઓ શોધી લે.

ચાર ચાર વર્તુલોમાં ગોઠવાયેલ મેઠડો વનમાળા વચ્ચે કેન્દ્રમાં ઊભેલ નાયક પુકારે છે, ડંડો ઊંચો કરીને ગાના ને લીસા સારે—

માતમા ગાદી આવે, ને નવો હલકો રે!
લાકડિયા તાર માયલો, ને નવો હલકો રે!
બાધવી એવી બાધવી, ને નવો હલકો રે!
દારૂ કોઈ મા પીજો, ને નવો હલકો રે!
માતમા ગાદી આવે, ને નવો હલકો રે!
ગો તો કોઈ મા મારજો, ને નવો હલકો રે!
હુશી કોઈ મા મારજો, ને નવો હલકો રે!
માતમા ગાદી આવે, ને નવો હલકો રે!

દે ગાંધિયા ભાઈઓ, મહાત્મા ગાંધી આવ્યા, ને નવા જમાનાનો પ્રારંભ થયો છે આદમીઓને જગાડી દેશનું કે સમજાવ

દેશે, દારૂ ત્યજો, કેમકે મહાત્મા ગાંધી આવ્યા છે ને નવયુગ મંડાણો છે, કોઈ ગાય મારશો નહી, ખિસકોલીનો વધ કરશો નહીં, કેમકે મહાત્મા ગાંધી આવ્યા છે ને નવયુગ શરૂ થયો છે

આ ગીતમા ગાંધી-વિચારસરણીમાંના અહિંસાના તત્ત્વજ્ઞાનને પ્રાધાન્ય મળ્યુ છે તેને આ વનલોક પિછાની શક્યા છે ને તેથી જ ગાયુ:

હુશી કોઈ મારશો મા, નવો હલકો રે!

આ નવા હલકામાં લગ્નગીત ગવાય છે નૃત્ય અને ઠેક વગર તો વનજાતિ ગાય જ નહી.

કિહા ગામોમાં વાજા વાગે રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાજી!
ટહોલાજી કાલ પરણીને ઘેર આવ્યા રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાજી!
ટહોલાજી વાગા વાડિયામાં ડેરા તાણ્યા રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાજી!
ટહોલાજી કેહા ગામે કાગજ આવ્યા રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાજી!
ટહોલાજી ઇદિરપરાના કાગજ આવ્યા રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાજી!
ટહોલાજી, શું ઇદિરપરાની સાકરી બોલે રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાજી!
ટહોલાજી, બારા વરહની ચાકરી બોલે રે,
મરવાની કાંગસે રે, ટહોલાજી!

પોશીના પટાના ઉદિયો અને લાડુડા ભીલની આ વીરગાથા છે. એ બંનેએ મળીને રાજના સિપાઈને માર્યો હતો ને પછી તેમના પર રાજની શી મહા આફત ઊતરી હતી તેનું બ્યાન આ ગીતે નોંધ્યું છે

શું સપાઈ મારિયું હે રે, કેહા ગામે માંય રે !
કુકાવા ગામેમાં સપાઈ મારિયું હે રે,
સપાઈ મારિયાં હે રે,.
સપાઈ મારિયાં હે રે, લીરી મોટર આવે,
સપાઈ મારિયાં હે રે, ઉદિયાને પકડાણો !
સપાઈ મારિયાં હે રે, ઉદિયો નહિ માનતો !
સપાઈ મારિયા હે રે, ઉદિયા સાચું બોલ ના !
સપાઈ મારિયાં હે રે,

કુકાવા ગામમા પકડાયેલ ઉદિયો પોલીસની પકડમાંથી નાસી છૂટે છે:

સપાઈ મારિયાં હે રે, ઉદિયો ને પકડાણો !
સપાઈ મારિયાં હે રે, તીખા તાજણા પરે !
શું કામ ઉદિયો, નાઠો ?
તીખા તાજણા–ડંડા પડયા માટે !
મરાઠા ફોજદારે, સપાઈ મારિયાં હે રે !
ઉદિયો નાઠો જાયે રે, સપાઈ મારિયાં હે રે !
સપાઈ મારિયાં હે રે, લાડુ નહિ મળતાં,
સપાઈ મારિયાં હે રે ! સપાઈ મારિયાં હે રે !
કુકાવા ગામે હે રે !

સિપાઈના ત્રાસની આ આખીય ઘટના તેમના જીવનમાં કેટલી ઊંડી ગઈ છે !

તેમના મુલકમાં પડેલ દુકાળની તેવી જ દુર્ઘટના તેમના લોક-ગીતમાં વર્ણવાઈ છે દુકાળ આવ્યો ને ભીલોને ભૂખ્યા મરવાના દિવસો આવ્યા ત્યારે શું શું કરવું જોઈએ, જીવવા માટે? જીવનનો સંઘર્ષ Struggle of existence તેમની પાસે શા શા ધંધા કરાવે છે તે આ ગીતમાં તેમણે નોંધ્યું છે:

દુકાળ પડિયા, લા મોટિયારા!
ભેગા હોની, લા મોટિયારા!
બધા વાસ્તો, લા મોટિયારા!
મોટિયારા ચોરવા જાવું, લા મોટિયારા!
મોટિયારા સામઠા કોહરા રે ગણવામાં!
લા મોટિયારા!
ચોરવા જાઈયે, લા મોટિયારા લા મોટિયારા!
ખોટા સમણા, લા મોટિયારા!
પાછા વળજો, લા મોટિયારા!
સામઠા ઘઉરા રે, જાખુરે રે, લા મોટિયારા!
ચોરવા જાવું, લા મોટિયારા!
ખોટા સમણા, લા મોટિયારા!
પાછા વળજો, લા મોટિયારા!
ચોરવા જાઈરે, લા મોટિયારા!
ઘોળિયો મરે રે, લા મોટિયારા!
ઘોળિયો લેવી, લા મોટિપારા!
ચોરવા જાવું રે, લા મોટિયારા!
દુકાળ 'પડયા, લા મોટિયારા'!

દુકાળ પડ્યો ત્યારે તેઓ ચોરી કરવા નીકળ્યા, પણ સમણા–શુકન ખોટાં થયા. ધડુંગ ને જાણુગમાં ન જમ્યો. પણ ત્યાં ધોળી ભેંસ અની નજરે પડી ત્યારે તેઓએ નિર્ણય કર્યો કે તે ઉપાવો.

આ ગીતોના વિષયો નવ્ય સમાજના લોકોને અસભ્ય લાગે તેવા છે, પણ જીવનના મહા તત્ત્વજ્ઞાનને વ્યંજનાથી કેવું લોકગાયકે ગાયું:

હુશી કોઈ મા મારજો !

ખરી વ્યંજના તેણે પ્રયોજી! લગ્નગીતોમાં મઝાગ માંડવા માટે કવિએ ગાયું:

ખાજોપીજો ને માયા માણજો રે !

ગૃહસ્થ-જીવનને કવિએ ફક્કડ રીતે વર્ણવી નાખ્યું, પણ ક્રિયાપદોમાં! અને છેવટે તેમની આર્થિક વિષમતાનું દર્શન કરાવતું ગીત છે દુકાળનું તેઓ દુકાળમાં શું કરે? બીજો ..તેઓ ગણાય Criminal Tribe માં પણ હોય શું તેમની પાસે કે આસમાની આફતમાં તે સ્થિરચિત્તે બેસીને તેને જીતે? તેઓ તો તે જ વિચારે; મોટિયારા મોરવા જાવું, વા મોટિયાર !

આ ધરતી પર જીવવા માટે માનવને આ કૃત્ય આચરવું પડે તેમાં શિષ્ટ ગણાતા સમાજની એ લોકગાયકે નાનેથી શી આલેખી!

અને ની-ગાથામાય તેમણે તેમની તાકાત બતાવી છે

નમકતમથી અદાએ નાચના નાચનાં નવી ઢબથી જ્યારે તેઓ મસ્ત બનીને વાસ્તવ જીવનનાં આ મસ્તી ગીતો ગાતાં હોય છે ત્યારે શિષ્ટ માનવના કાનમાં આ નવો ઢબકો કાયમ માટે ગુંજતો થઈ જાય છે, બે કારણે તેમના આર્થિક જીવનની વિષમતાના કારણે, અને મુખ્ય અને આનંદ માણવાની વૃત્તિના કારણે

૨

સાબરકાંઠાના ભીલોનાં આ વધુ ચાર ગીતોમાં મેળાનાં ગીત, લગ્ન-ગીત અને નૃત્યગીત છે. એક નૃત્યગીત અધૂરું છે. નૃત્યગીતમાં સંસારની ઘટનાને સુંદર રીતે, ઊર્મિથી સેવીને લોકકવિએ મૂકી છે

સામળાજીનો મેળો

(ભીલોનું આ લોકગીત તેઓ મેળામાં જતી વખતે ગાય છે)

હાલ કદુરી હાલ રે, રમજણિયુ રે પીજણિયુ વાજે !
હામળા[1]જીને મેળે રે, " " "
ધીરી ધીરી હાલજે રે, " " "
બાજરી[2]વાળી નાળમાં રે, " " "
ડુહા[3] ડુહી રમે, " " "
મોટિયાર મૂછો આમળે રે, " " "
ડમેટી[4] ડાળા કાઢે રે, " " "
હુ[5] પહેરને જઈશું રે, " " "
કોને કઈને જઈશું રે, " " "
બાપાજીને કઈને જઈશું રે, " " "
ન મોકલે તો, કુપડે[6] જઈશુ રે; " " "
ગામનો હંગાથ જાય રે, " " "
ગામના ચૈલ્યા જાય રે. " " "

૧. સામળાજી ૨. ઘાટ રસ્તાનુ નામ છે ૩. ડોસા ૪ ડોશીઓ ૫. શું ૬. વારો

છોરી રાજુડી

(લગ્ન વખતે એકલી બ્હેનો જ આ ગીત ગાય છે)

બેટાળીનો ધૂળિયો ઘાટો, નઈ ચઢાય, છોરી રાજુડી !
વેગળે રહીને એમ કે'જે રે, હરીરો[1] ઘડાવું જો !
હરીરો મારો દઈ પે'રે ને, ડોસાને કોણ જાશે રે !
બેટાળીનો ધૂળિયો ઘાટો, નઈ ચઢાય, છોરી રાજુડી !
વેગળે રઈને એમ કે'જે કે આંસડી[2] ઘડાવુ જો !
આંસડી મારો દઈ પે'રે ને, ડોસાને કોણ જાશે જો !
બેટાળીનો ધૂળિયો ઘાટો, નઈ ચઢાય, છોરી રાજુડી !
વેગળે રહીને એમ કે'જે કે કટલાં ઘડાવું જો !
કટલા મારો દઈ પે'રે ને, ડોસાને કોણ જાશે જો !
બેટાળીનો ધૂળિયો ઘાટો, નઈ ચઢાય, છોરી રાજુડી !
વેગળે રહીને એમ કે'જે રે, ઝાઝરાં ઘડાવુ જો !
ઝાઝરા મારો દઈ પહેરે ને, ડોસાને કોણ જાશે રે ?



વિલુ વાણિયાણી રે !

(ડેકવા વેળાએ બાઈબ્હેનો આ ગીત સાથે ગાય છે)

(નૃત્યગીત)

વાણિયાણી વાણિયાણી, વિલુ વાણિયાણી રે !
રઈને કેવુ બોલે, „ „

1 હેરો (હરો ?) 2. હાંસડી

હાંસળો[1] મારી વાતો, „ „
ઈડર કે અમનગર રે, „ „
હામું[2] અમદાતેવાદ મોડાહુ,[2અ] અને „ „
અમદાવાદ અમદાવાદ, „ „
બાર બાર પોળે અમદાવાદ, „ „
કાંણુંવાળું ઝાડુ[3], „ „
ત્યાં[4] કુણ વાણિયણો વાજે,[5] „ „
એક પાડે[6] વાણીલા, „ „
હામુ એક પાડે બામણિયા, „ „
ત્યાં વાણિયેણ વાજું,[7] „ „
એને વાંઝુડો[8] અવતારે, „ „
એને હકને બોલમાંય રાખો,[9] „ „
ક્યાં બોલાય હે દેવ રે, „ „
સોકણુ વાછુ[10] દેજુ, „ „
ત્યાં સોકણાં[11] માય હામળાછ, „ „
તેને રે બોલમય નાખો, „ „
હકને વચન દેજ્યુ[12], „ „
એને એકમો મહિનો જાયરે, „ „
એને બેમો મહિનો જાય રે, „ „
એને ત્રણમો „ „ „ „
એને ચારમો „ „ „ „

---

૧. સાંભળો, ૨. સામું ૨અ. મોઢામું ૩ ઝાડ છે. ૪. ત્યાં ૫. વાગે છે. ૬. કેડીએ ૭. વાગે છે. ૮. વાંઝિયો ૯. વછેરો ચાકુ રહે તેની બાધા રાખી રાખે. ૧૦. શેરાન ૧૧. વાજતા, પ્રખ્યાત, ગાજતા ૧૨. બોલ [illegible] અને તેના બોલ [illegible]

એને પાંચમો ,, ,, ,, ,,
એને છઠ્ઠો ,, ,, ,, ,,
એને સાતમો ,, ,, ,, ,,
એને આઠમો ,, ,, ,, ,,
એને નવમો મહિનાનો ઓધાન ,, ,,
એને કુંવરિયુ જન્માવો, ,, ,,
એની સાહેલી તેડાવો, ,, ,,
વળી એને એકુસ[13]એક કુવારિયુ,, ,,
કિકલી[14] કરતું થાય હી, ,, ,,
થશે[15]એને હીરિયા રળતુ થાહે હે, ,, ,,
હાસે હોરું[15અ] માંહુ થાય રે, ,, ,,
હકતે બોલમાય રાખો,[16] ,, ,,
હામળાજી હામળાજી, ,, ,,
બે નાળિયેર જોડ રે, ,, ,,
હકતે નકલ થાય હે, ,, - ,,
વું[17] તેહોરું હાજુ અ થાય રે, ,, ,,
ફેરી પાછું માંહું થાય રે, ,, ,,
એને મોટા બોલમાં રાખો, ,, ,,
ક્યાંક તે દેવ બોલાય હે, ,, ,,

એને એ લમાંય રાખો, „ „
એ નાળિયેર જોડ રે, „ „
હામે હાજુહમુ થાય રે, „ „



જોયનપોરનું બાજરિયું

(ઠેક્વા વધ્યનનુ ગીત ભાઈ બહેનો સાથે ગાય, ગમ્મત કરતાં જાય આ ગીતમાં નવુ પ્રતીક અત્રે મળે છે.)

બાજરિયે લેર લાગી રે, જોવનપોરનું બાજરિયુ !
યુ હેટુનો[1] હણ્યુ[1અ] મરી ગયુ રે, „ „
જ્યુ કપડાં હીવતાં[2] મરી ગયુ રે, „ „
યું ચામટુંને[3] હણ્યુ મરી ગયુ રે, „ „
યુ ખાહડાંને હીવયાં „ „ „ „
અલા ડુંગરપોરનાં આટારે „ „
હાસે[4] વાણીલા હાટા „ „
બાજરીએ લેર લાગી રે, „ „
યુ ઘાયજુ હળે મરી ગયુ રે, „ „
યું માથુ મૂડલા[5] „ „ „ „
બાજરિયે લેર લાગી રે „ „

(એ જ પ્રમાણે બીજા વસવાયામાંથી સોની, સુથાર અહીં મૂકવામાં આવે છે)

---

૧. તે દાટ ૧અ. રોગે ૨. સીવતા ૩. ચમાર ૪. સાથે ૫. મૂડવાં.

એને પાંચમો ,, ,, ,, ,,
એને છઠ્ઠો ,, ,, ,, ,,
એને સાતમો ,, ,, ,, ,,
એને આઠમો ,, ,, ,, ,,
એને નવમો મહિનાનો ઓધાન ,, ,,
એને કુવરિયુ જન્માવો, ,, ,
એની માહેલી તેડાવો, ,, ,,
વળે એને એકુસ[13] એક કુવારિયું., ,,
કિકલી[14] કરતું થાય હી, ,, ,,
યશે[15] એને હીરિયા રળતું થાહે હે, ,, ,,
હામે હેરૂં[15અ] માડું થાય રે, ,, ,,
હકતે બોલમાય રાખો,[16] ,, ,,
હામળાજી હામળાજી, ,, ,,
બે નાળિયેર જોડ રે, ,, ,,
હકતે નકલ થાય હે, ,, ,,
વુ[17] તેહેરુ હાજુ અ થાય રે, ,, ,,
ફરી પાછું માંદુ થાય રે, ,, ,,
એને મોટા બોલમા રાખો, ,, ,,
કયાંક તે દેવ બોલાય હે, ,, ,,
કુગરોવાળી[18] રેલો, ,, ,,
ત્યાં કેશરિયો[19] દેવ રે, ,, ,,

૧૩. એ જ. ૧૪. હસાહસ કરે કિકિયારી કરે. દીસે
૧૫અ. સામે જ પેડુ. ૧૬. બાંધા રાખો. ૧૭ પેડુ
૧૮ કુખમાં વસેલો. ૧૯. કેસરિયાજી.

એને બોલમાંય રાખો, „ „
બે નાળિયેર જોડ રે, „ „
હાસે હાજુહમુ થાય રે, „ „



જોવનપોરનું બાજરિયું

(ડેકવા વખનનું ગીત બાઈ બહેનો સાથે ગાય, ગમ્મત કરતાં જાય. આ ગીતમાં નવું પ્રતીક અત્રે મળે છે.)

બાજરિયે લેર લાગી રે, જોવનપોરનું બાજરિયુ !
યુ હેટુનો હણે[1]મ મરી ગયુ રે, „ „
જ્યુ કપડાં હીવતાં[2] મરી ગયુ રે, „ „
સું ચામટુંને[3] હણે મરી ગયું રે, „ „
સું ખાહડાંને હીવચાં „ „ „ „
અલા ડુંગરપોરનાં આટારે „ „
હાસે[4] વાણીલા હાટાં „ „
બાજરીએ લેર લાગી રે, „ „
યું ઘાયજુ હણે મરી ગયુ રે, „ „
સું માથું મૂંડલા[5] „ „ „ „
બાજરિયે લેર લાગી રે „ „

(એ જ પ્રમાણે બીજા વસવાયામાંથી સોની, સુથાર અહીં મૂકવામાં આવે છે)

૧. તે દરજી ૧અ. હણે ૨. સીવતાં ૩. ચમાર ૪. સાથે ૫. મૂડતાં.

પઢારોનાં લોકગીતો

આગળ ઘનશ્યામ સાહેબના ઘોડલા રે,
વાંહે વાંહે પઢારની ટોળી, સુરીંગડો સુવ્વરને મારવો દોયલો રે.
ગયા વેરાસર નામના તળાવડે,
ઘેરી લીધો સુવ્વરને ત્યાંહી, „ „
કંઈક *કલાને કાને અવાજ,
ત્યાં તો પઢાર—પાયદલ દોડે, „ „
પડખે પરતાપસંગ પડકાર કરે, „ „
ભેળા મોનુભા સરદાર, „ „
ત્યાં તો કૂતરાએ ડાડવાળો દીધી, „ „
ઘોડી સવિતાએ સપડાવ્યો, „ „
હવે પે'લો તે ભાલો કોણે ભોંક્યો ? „ „
નાનભઈ સા'બ નાખ્યો નાખ્યે, „ „
પેલો પગના ડાબોટે પાડી દીધો, „ „
ત્યાં તો લૂલો થયો તત્કાળ, „ „
હવે પેલો તે ભાલો ભાંગી તૂટ્યો, „ „
હવે બીજો લાવો તત્કાળ, „ „
ત્યાં તો માધુભાએ માકારો કર્યો, „ „
હવે મરેલાને શું મારો, ખુમાનસંગ, „ „

---

*પઢારોનો મુખી.

"સુવરને નળકાંઠામાં આજ મનમાન્યું મળે. પઢાર કોમને સુવરનો ભારે ત્રાસ. લીંબડીના રાજકુમારે કરેલી મદદનું વર્ણન કેવું વિશેષનામોની મનભર ગૂંથણીથી દીપી ઊઠે છે! કોંગ્રેસનો મોભો વધ્યો, રામસંગ, રૂપસંગ અને ધંધુકાની ગોરી સત્તા ડૂલ્યાં, ત્યાં લોકકવિ કોંગ્રેસવાળાનું પંખ કેવું શેનકનર ચિત્ર આલેખે છે :

હાર્યો ઓલો રામસંગ, હાર્યો ઓલ્યો રૂપસંગ,
હાર્યો ઓલ્યો ધંધુકાવાળો રે લોલ !
કેશુભાઈની મેડીએ કોણ કોણ ઊતર્યા, કોંગ્રેસ બાપુ રે લોલ !
પાંચસે પાદરવાળા કોંગ્રેસે બાપુ; છસે ખેતરવાળા....હાર્યો૦

લીલડી ઘોડીવાળા કોંગ્રેસવાળા, રોઝી ઘોડીવાળા રે
રોઝી ઘોડીવાળા કોંગ્રેસ બાપુ રે લોલ !

આ પઢારોના સામાજિક જીવનના વિવિધ રંગ એમનાં કેટલાંક લોકગીતોની મદદથી જોઈએ.

ભાલના બળબળતા બપોરે બીડ બાંડતાં શરીર પરસેવે રેબઝેબ બને ને કંઠ સુકાય ત્યારે રાગની સરવાણીઓ પઢારણના સુકાયેલ કંઠમાંથી ક્યાંથી ફૂટે ! આખોય પઢારવાસ જાણે પોઢી ગયો છે એવી શાંતિ ઉનાળે પઢારવાસમાં રહે. પઢારણનાં કંઠ અને હૈયાં ગાણાંથી દાબ્યાં હોય, પણ પઢારણનાં કંઠ અને હૈયું તો ખૂલે આકાશમાં હાથીનાં બચ્ચાં જેવાં મદપતાં વાદળાં દેખીને, ત્યારે તેની આંખોમાં ઘેરી મસ્તી અને પ્રસન્નતા દેખાય. પઢારણના અંગેઅંગમાં ત્યારે આનંદનાં મોજાં ફળાય મોરલાના કેકારવ સાથે પઢારણના કંઠ ખૂલે, મેઘગર્જના સાથે તેનું હૈયું થનથનવા લાગે ને મેવલો આવે ત્યારે તો ગાય :

તારા મલકમાં વરસ્યા મેવલા, મારા મલકમાં આવી રેલ,
મારી આયર ઘોડી વાંકડી, મૂછના છો મનિયાર.

પઢારોનાં લોકગીતો

આગળ ઘનશ્યામ સાહેબના ઘોડલા રે,
વાંહે વાંહે પઢારની ટોળી, સુરીંગડો સુવ્વરને મારવો હોયલો રે.
ગયા વેરાસર નામના તળાવડે,
  ઘેરી લીધો સુવ્વરને ત્યાંહી, ,, ,,
કંઈક *કલાને કાને અવાજ,
  ત્યાં તો પઢાર–પાયદલ દોડે, ,, ,,
પડખે પરતાપસંગ પડકાર કરે, ,, ,,
  ભેળા મોનુભા સકદાર, ,, ,,
ત્યાં તો કૂતરાએ ડાડવાળો દીધી, ,, ,,
  ઘોડી સવિતાએ સપડાવ્યો, ,, ,
હવે પે'લો તે ભાલો કોણે ભોંક્યો ? ,, ,,
  નાનભાઈ સા'બ નાખ્યો નાબ્યે, ,, ,,
પેલો પગના ડાબોટે પાડી દીધો, ,, ,,
  ત્યાં તો લૂલો થયો તત્કાળ, ,, ,,
હવે પેલો તે ભાલો ભાંગી તૂટ્યો, ,, ,,
  હવે બીજો લાવો તત્કાળ, ,, ,,
ત્યાં તો માધુભાએ માકારો કર્યો, ,, ,,
  હવે મરેલાને શું મારો, ખુમાનસંગ, ,, ,,

---

*પઢારોનો મુખી.

"સૂત્રરને નળકાંઠામાં ખાજ મનમાન્યું મળે. પઢાર કોમને સૂત્રરનો ભારે ત્રાસ. લીંબડીના રાજકુમારે કરેલી મદદનું વર્ણન કેવું વિશેષનામોની મનભર ગૂંથણીથી દીપી ઊઠે છે! કોંગ્રેસનો મોભો વધ્યો, રામસંગ, રૂપસંગ અને ધંધુકાની ગોરી સત્તા દૂભ્યાં, ત્યાં લોકકવિ કોંગ્રેસવાળાનું પણ કેવું રોનકદાર ચિત્ર આલેખે છે :

હાર્યો ઓલો રામસંગ, હાર્યો ઓલ્યો રૂપસંગ,
હાર્યો ઓલ્યો ધંધુકાવાળો રે લોલ!
કેશુભાઈની મેડીએ કોણ કોણ ઊતર્યા, કોંગ્રેસ બાપુ રે લોલ!
પાંચસેં પાદરવાળા કોંગ્રેસે બાપુ; છસેં ખેતરવાળા....હાર્યો૦
લીલડી ઘોડીવાળા કોંગ્રેસવાળા, રોઝી ઘોડીવાળા રે
રોઝી ઘોડીવાળા કોંગ્રેસ બાપુ રે લોલ!

આ પઢારોના સામાજિક જીવનના વિવિધ રંગ એમનાં કેટલાંક લોકગીતોની મદદથી જોઈએ.

ભાલના બળબળતા બપોરે બીડ ખાંડતાં શરીર પરસેવે રેબઝેબ બને ને કંઠ સુકાય ત્યારે રાગની સરવાણીઓ પઢારણના સુકાયેલ કંઠમાંથી ક્યાંથી ફૂટે? આખોય પઢારવાસ જાણે પોઢી ગયો છે એવી શાંતિ ઉનાળે પઢારવાસમાં રહે. પઢારણનાં કંઠ અને હૈયાં ગાણાંથી દાસ્યાં હોય, પણ પઢારણનાં કંઠ અને હૈયું તો ખૂલે આકાશમાં હાથીનાં બચ્ચાં જેવાં મલપતાં વાદળાં દેખીને, ત્યારે તેની આંખોમાં ઘેરી મસ્તી અને પ્રસન્નતા દેખાય. પઢારણના અંગેઅંગમાં ત્યારે આનંદનાં મોજાં છળાય. મોરલાના કેકારવ સાથે પઢારણના કંઠ ખૂલે, મેઘગર્જના સાથે તેનું હૈયું થનથનવા લાગે ને મેવલો આવે ત્યારે તો ગાય :

તારા મલકમાં વરસ્યા મેવલા, મારા મલકમાં આવી રેલ,
મારી આયર ઘોડી વાંકડી, મૂછુના છો મનિયાર.

પઢારોનાં લોકગીતો

આગળ ઘનશ્યામ સાહેબના ઘોડલા રે,
વાંહે વાંહે પઢારની ટોળી, સુરીંગરો સુન્‍વરને મારવો હોયલો રે.
ગયા વેશમર નામના તળાવડે,
ઘેરી લીધો સુન્‍વરને ત્યાંહી, „ „
કંઈક *કલાને કાને અવાજ,
ત્યાં તો પઢાર-પાયદલ દોડે, „ „
પડખે પરતાપસંગ પડકાર કરે, „ „
ભેળા મોનુભા સરદાર, „ „
ત્યાં તો કૂતરાએ ડાડવાળો દીધી, „ „
ઘોડી સવિતાએ સપડાવ્યો, „ „
હવે પે'લો તે ભાલો કોણે ભોંક્યો ? „ „
નાનભાઈ સા'બ નાખ્યો નાખ્યે, „ „
પેલો પગના ડાબોટે પાડી દીધો, „ „
ત્યાં તો લૂલો થયો તત્કાળ, „ „
હવે પેલો તે ભાલો ભાંગી તૂટ્યો, „ „
હવે બીજો લાવો તત્કાળ, „ „
ત્યાં તો બાપુભાએ ભાકારો કર્યો, „ „
હવે મરેલાને શું મારો, ખુમાનસંગ, „ „

---

*પઢારોનો મુખી.

તારા તે અંગનો રોમાલ, બેલી મારા, તારા તે અંગનો રોમાલ;
તારો રોમાલ દેખી રૂંશું આવે, ભાઈબંધ મોરા જો.

તારા તે અંગનો રેંટો, બેલી મારા, તારા તે અંગનો રેંટો;
મને ઘડીક ઓઢવા દેજે, ભાઈબંધ મોરા જો.

તારા તે જીવની સારુ, વાલા સાજણુ, તારા તે જીવની સારુ,
મેં તો મેલ્યો સૈયરનો સાથ, ભાઈબંધ મોરા જો.

તારા પગમાં બેડી, બેલી મારા, તારા તે પગમાં બેડી,
આપણુ નાના હતા ત્યારે નાનપણુની હેડી.
ભાઈબંધ મોરા જો.

તારા તે જીવની સારુ, વાલા સાજણુ, તારા તે જીવની સારું,
મેં તો મેલ્યાં છે મા ને બાપ, ભાઈબંધ મોરા જો.

તારા તે જીવની સારુ, વાલા સાજણુ, તારા તે જીવની સારુ,
મેં તો મેલ્યાં છે ભાઈ ને ભોજાઈ, ભાઈબંધ મોરા જો.

આવું રે નો'તું જાણ્યું, વાલા સાજણુ, આવું રે નો'તું જાણ્યું,
નીકર તે દિનો ટકો કરત, ભાઈબંધ મોરા જો.

આવુ રે નો'તું જાણ્યું, વાલા સાજણુ, આવું રે નો'તું જાણ્યું,
નીકર થડથી થોડી રાખત, વાલા સાજણુ,
નીકર થડથી થોડી રાખત, ભાઈબંધ મોરા જો

પ્રેમનિષ્ફળતાની આર્દ્ર ધામા ભજેલ પદારણના મીઠા સરોદની હલક આખા વગડ ને વીંધી નાખે છે આથી પદારણને નિષ્ફળતાને અંતે સૂઝે છે કે પહેલેથી જ જો મને પ્રણયનિષ્ફળતાની ખબર હોત તો થડથી પ્રીતિ થોડી ન રાખત! આ કરુણ સૂર વગડામાં ન જંપે ત્યાં જ ક્યારડાની પદારણો બીજા ગીતને ઉપાડે છે.

તારા મલકમાં આંબાઆંબલી, મારા મલકમાં મીઠી ધરાખ,
મારી આયર ઘોડી વાંકડી, મૂછુના છો મનિયાર.
દેરાણીજેઠાણી આબે જોડલું, ચાલો રોઝીનો અસવાર જોવા,
મારી આયર ઘોડી વાંકડી, મૂછુના છો મનિયાર.
સૌને ખોળે સે ખારેકટોપરાં, એની મારી બાજ્યો છે અવતાર,
મારી આયર ઘોડી વાંકડી, મૂછુના છો મનિયાર.

પઢારના મુલકના માથે સાણંદ અને બાવળાનાં ગામો ત્યાંથી વરસેલ મેંનાં નીર આવતાંકને વિગટકાય નળમાં ભરાય છે આ નીરને દેખીને પઢારણના કદની સરવાણીઓ ફૂટે છે પણ તેય કયાં ઝાઝા દિવસ રહેવાનાં છે। એ નીર બારેય ગામને બીજની દે છે માર્ગના ડાંગરના ક્યારડાઓ ઝળાંઝળ ભરાઈ જાય છે પઢાર વહેલા પરોઢે ઊઠીને, અંધારે, ખભે કોદાળી મૂકી, ધરુ કરવાં ચાલ્યાં જાય છે અને ત્યારે રાસવા દિ' ચડ્યે ગાતડી વાળી, હડોટો મારતી પઢારણો ડાંગરના ક્યારડે પઢારને ભાત પહોંચાડવા નીરને વીંધીને જાય છે. પાણીએ છલકાતા ક્યારડા દેખીને પઢારણના હૈયામાં કામેન મજુરગીતો સરી પડે છે એ ગીતોમાં જીવનની માત્ર મસ્તી છે, કાછડા વાળીને સ્યાગાઓ ગાતી ગાતી ડાંગરના ધરુને રોપવા લાગે છે. સાથમનિ સાથમો એ ગીતની પંક્તિઓ મોર્ય મોર્ય લલકારતો ડાંગર રોપતો હોય છે, પાછળ પાછળ પઢારણો ગીત ઝીલતી હોય છે :

એ સૂતી'તી ને પ્રીતિવાળાએ પછીતે પાવા વગાડયા,
પછીને પાવા વાગ્યા, બેલી મારા, પછીતે પાવા વાગ્યા,
મારો જીવડિયો ઉદાસી, બાઈબંધ મેરા જો.
પાવઠટે પગ પેતી, બેલી મારા, સાજણની વાટ જોતી;
મારો જીવડિયો ઉદાસી, બાઈબંધ મેરા જો.

તારા તે અંગનો રોમાલ, બેલી મારા, તારા તે અંગનો રોમાલ;
તારો રોમાલ દેખી રૂડું આવે, ભાઈબંધ મોરા જો.

તારા તે અંગનો રેંટો, બેલી મારા, તારા તે અંગનો રેંટો;
મને ઘડીક ઓઢવા દેજે, ભાઈબંધ મોરા જો.

તારા તે જીવની સારુ, વાલા સાજણ, તારા તે જીવની સારુ,
મેં તો મેલ્યો સૈયરનો સાથ, ભાઈબંધ મોરા જો.

તારા પગમાં બેડી, બેલી મારા, તારા તે પગમાં બેડી,
આપણ નાના હતા ત્યારે નાનપણની હેડી.
ભાઈબંધ મોરા જો.

તારા તે જીવની સારુ, વાલા સાજણ, તારા તે જીવની સારું,
મેં તો મેલ્યાં છે મા ને બાપ, ભાઈબંધ મોરા જો.

તારા તે જીવની સારુ, વાલા સાજણ, તારા તે જીવની સારુ,
મેં તો મેલ્યાં છે ભાઈ ને ભોજાઈ, ભાઈબંધ મોરા જો.

આવું રે નો'તું જાણ્યું, વાલા સાજણ, આવું રે નો'તું જાણ્યું,
નીકર તે દિનો ટૂંકો કરત, ભાઈબંધ મોરા જો.

આવું રે નો'તું જાણ્યું, વાલા સાજણ, આવું રે નો'તું જાણ્યું,
નીકર થડથી થોડી રાખત, વાલા સાજણ,
નીકર થડથી થોડી રાખત, ભાઈબંધ મોરા જો

પ્રેમનિષ્ફળતાની આર્દ્ર ધામાં બળેલ પદારણના મીઠા સરોદની હલક આખા વગડ ને વીંધી નાખે છે. આવી પદારણને નિષ્ફળતાને અંતે સૂઝે છે કે પહેલેથી જ જો મને પ્રણયનિષ્ફળતાની ખબર હોત તો થડથી પ્રીતિ થોડી ન રાખત! આ કરુણ સૂર વગડામાં ન જંપે ત્યાં જ ક્યારડાની પદારણો બીજા ગીતને ઉપાડે છે :

પાણી ભ્યાંતાં ઝીલડિયે તલાવ, કાંટો વાગ્યો પગની લાંકમાં.
અમદાવાદી ઘાંચએ તેડાવ્ય, કાંટો વાગ્યો પગની લાંકમાં.
કાંટો વાગ્યો પગની લાંકમાં,
એ પાટડિયા બાંધે પગની લાંકમાં.
પથમલ! સુરત શે'રથી સૂંડડી મગાવ્ય, એ પાટડિયા બાંધે
પગની લાંકમાં.
પથમલ! તારે ને મારે નાનપણની પ્રીત, પ્રીતું તોડીને
મારે જાવું સાસરે!

પથમલ તું છો મારા હૈયા કેરો હાર,
પરણ્યો મારા ડાબા પગની મોઝડી!
પથમલ! તને પીરસું સાકરિયો કંસાર,
પરણ્યાને પીરસું ખાટો ઠૂંમરો.

આ પઢારણથી પથમલની પ્રીત તોડી તોડાતી નથી. હૈયાના સિંહાસન પર પથમલ આવીને બેઠો છે તે વાત પણ તે કબૂલે છે અને પથમલને કહે છે, "તને હું કંસાર પીરસું અને પરણ્યાને ખાટો ઠૂંમરો." પઢારસમાજમાં કોઈ યુવતી એના મનમાન્યાનું ઘર નથી માંડી શકતી. પ્રથમ લગ્ન તો માબાપની ઇચ્છા પ્રમાણે જ યુવતીને સ્વીકારવું પડે. તેના બદલે આ પઢારણની આંખમાં છલોછલ આંસુઓ છે. પણ કેટલીક પઢારણો પરણ્યાને વશ કરી લે છે. કામણ કરી લે છે તેય વાત પઢારના કંઠમાંથી ડાંગર રોપતાં રોપતાં સરી પડે છે:

વને વગડામાં રાણ્યું, ઝમકુડી વનવગડામાં રાણ્યું.
ઈ તો રાણ્યું વીણવા હાલી, ઝમકુડી નારીઠણ!
રાણ્યુંનાં થડે જઈ બેઠી ઝમકુડી.
રાણ્યુંનાં થડે જઈ બેઠી ઝમકુડી,

ઈ ને કરડચો છે કાળો નાગ, ઝમકુડી નાડોદી!
જીહો જોડી લાવ્યો, જગમલ જીહો જોડી લાવ્યે,
ઈને ધોળકા શેર લાવ્યે, ઝમકુડી નાડોદી!
ધોળકાનો કામદાર જોવે, ઝમકુને, ધોળકાનો કામદાર જોવે,
ઈ તો ઓછી આવરદાની છે, ઝમકુડી નાડોદી!
નાળિયેરની શેયુ ખડકે, જગમલ, નાળિયેરની શેયુ ખડકે,
ઈના જમણે અગૂઠે આગ મેલી, ઝમકુડી નાડોદી!
ઝમકુનો સાસરો વાટયુ જોવે, ઝમકુની સાસુ વાટયુ જોવે,
દાઢી વઉ મલાજા કાઢી ફરે, ઝમકુડી નાડોદી!

આ ગીતમાંય કરુણ ભાવ પણ આ મરણાનો ભાવ આગના ગીત કરતાં આમાં જુદે અહીં શુદ્ધ પ્રેમ છે પણ ઝમકુડી નાડોદીના રૂપને બનાવવા લોકજીભે નાકય આવ્યુ 'ધોળકાનો કામદાર જોવે ઝમકને' એવી શ્યામાનાં સાસુસસરા ઝમકુની વાટ જોતાં બેસે ગે તો મ્હાગરી વહુનું સૂચન છે ને! અને વળી ઝમકુ કુળીનેય કયા ઓછી છે! માટે જ સાસુસસરાનો તે મલાજા રાખે છે ને! આવી કુળીન પદમણ વહુવારુને પરણ્યાનાય કયાં એછા દુ:ખ છે? પરણ્યો ભવોભવના અમોલા સઈ બેસે છે પદમણુ સમળીગોરણુ આગળ હૈયુ ઠાલવે છે

ઊંચી તે ઊંચી સમળી લમે,
સમળી એક સંદેશો લઈ જા, સૈયર!
સમળી, મોરી માતને જઈ ને એટલુ કે'જે,
'માતા, આવેડચા દખ વેઠચા કેમ જાય?'

આનો સંદેશો સૈયર આપે છે ત્યારે મા મ વે એ

'દીકરી જ્યમ વેઠાય તેમ વેઠજે,
આપણુ મોટાના છોરુ કે'વાય'

પાણી ગ્યાંતાં ગ્રીલડિયે તલાવ, કાંટો વાગ્યો પગની લાંકમાં.
અમદાવાદી ઘાંચણે તેડાવ્ય, કાંટો વાગ્યો પગની લાંકમાં.
કાંટો વાગ્યો પગની લાંકમાં,
એ પાટડિયા બાંધે પગની લાંકમાં.
પથમલ! સુરત શે'રથી ચૂંદડી મંગાવ્ય, એ પાટડિયા બાંધે
પગની લાંકમાં.
પથમલ! તારે ને મારે નાનપણની પ્રીત, પ્રીતું તોડીને
મારે જાવું સાસરે!

પથમલ તું છો મારા હૈયા કેરો હાર,
પરણ્યો મારા ડાબા પગની મોઝડી!
પથમલ! તને પીરસું સાકરિયો કંસાર,
પરણ્યાને પીરસું ખાટો કૂંમરો.

આ પદારણથી પથમલની પ્રીત તોડી તોડાતી નથી. હૈયાના સિંહાસન પર પથમલ આવીને બેઠો છે ને વાત પણ તે કબૂલે છે અને પથમલને કહે છે, "તને હું કંસાર પીરસું અને પરણ્યાને ખાટો કૂંમરો." પદારસમાજમાં કોઈ યુવતી એના મનમાન્યાનું ઘર નથી માંડી શકતી. પ્રથમ તો માબાપની ઇચ્છા પ્રમાણે જ યુવતીને સ્વીકારવું પડે. તેના જીવને આ પદારણની આંખમાં છલોછલ આંસુઓ છે. પણ કેટલીક પદારણો પરણ્યાને વશ કરી લે છે. કામણ કરી લે છે તેની વાત પદારના કંઠમાંથી ડાંગર ગેપનાં રોપનાં સરી પડે છે :

વને વગડામાં રાણ્યું, ઝમકુડી વનવગડામાં રાણ્યું.
ઈ તો રાણ્યું ટોવા હાલી, ઝમકુડી નાટોદણ!
રાણ્યુંનાં થડે જઈ બેઠી ઝમકુડી.
રાણ્યુંનાં થડે જઈ બેઠી ઝમકુડી,

ઈ ને કરડચો છે કાળો નાગ, ઝમકુડી નાડોદી!
જીહો જોડી લાવ્યો, જગમલ જીહો જોડી લાવ્યે,
ઈને ધોળકા શેર લાવ્યે, ઝમકુડી નાડોદી!
ધોળકાનો કામદાર જોવે, ઝમકુને, ધોળકાનો કામદાર જોવે,
ઈ તો ઓછી આવરદાની છે, ઝમકુડી નાડોદી!
નાળિયેરની શેયું ખડકે, જગમલ, નાળિયેરની શેયુ ખડકે,
ઈના જમણે અંગૂઠે આગ મેલી, ઝમકુડી નાડોદી!
ઝમકુનો સાસરો વાટચું જોવે, ઝમકુની સાસુ વાટચુ જોવે,
દાડી વઉ મર્લાજા કાઢી ફરે, ઝમકુડી નાડોદી!

આ ગીતમાંય કરૂણ ભાવ. પણ આ કરુણાનો ભાવ આગલા ગીત કરતાં આમાં જુદો. અહીં શુદ્ધ પ્રેમ છે. પણ ઝમકુડી નાડોદીના રૂપને બતાવવા લોકજીભે વાકચ આપ્યુ 'ધોળકાનો કામદાર જોવે ઝમકુને' એવી ક્યામાનાં સાસુસસરા ઝમકુની વાટ જોતાં બેસે એ તો કલ્યાગરી વહુનું સૂચન છે ને! અને વળી ઝમકુ કુંવાને ય ક્યા ઓછી છે! માટે જ સાસુસસરાનો તે મલાજા રાખે છે ને! આવી કુલીન પદ્માણ્ વહુવારુને પરણ્યાના ય ક્યાં ઓછાં દુઃખ છે? પરણ્યો ભવોભવના અબોલા લઈ બેસે છે. પદ્માણ્ સમળીગોદણ્ આગળ હૈયુ ઠાલવે છે.

ઊંચી તે ઊંચી સમળી ભમે,
સમળી એક સંદેશો લઈ જા, સૈયર!
સમળી, મોરી માતને જઈને એટલું કે'જે;
'માતા, આવેડચાં દખ વેઠચાં કેમ જાય?'

માનો સંદેશો સૈયર આપે છે ત્યારે મા કા'વે છે

'દીકરી જ્યમ વેઠાય તેમ વેઠજે,
આપણ મોટાનાં છોરુ કે'વાય.'

એ સૈયર અબોલા ભવે રૂયાં..

આસુ નાથ, વિલાપ કરતી સૈયરને પદારણ વીનવે છે:

સમળી, એક સંદેશો લઈ જા, સૈયર,
સૈયર અબોલા ભવે રૂયાં.
સૈયર મોરા દાદાને એટલું કે'જો:
'દાદા આવેડયાં દખ વેઠયાં કેમ જાય?
સૈયર, અબોલા ભવે રૂયાં.'

દાદા દીકરીને શીખ મોકલાવે છે:

'દીયરી, જમે વેઠાય, ઈમ વેઠજે,
આપણુ મોટાનાં છોરું કે'વાય.'
સૈયર અબોલા ભવે રૂયાં

પિયુજીના અબોલા ભવ આખોય રહે છે. પદારણ જિંદગીભર આંસુએ દખણો ભીંજવતી એ ઘરમાં જ રહે છે, કેમકે 'આપણુ મોટાનાં છોરુ કે'વાય' મોટા ઘરનું છોરુ ન હોત તો પદારણે ક્યારનોય છેડો નાત સમક્ષ ફાડી આપ્યો હોત!

આ પદારણુની જિંદગીભર આંસુ સારે છે, જ્યારે સરખેસરખી દેરીનાં પદાર નણુંદભોજાઈ પાણી ભરવા જાય છે ભોજાઈથી નણુંદ છેટે પડી જવાથી ભોજાઈ વણુજારાને ઘડૂલો ભરવાનું કહે છે ને તેનું મન મેરે છે એ વણુજારામાં. માબાપને તે પદારણુ વાત કરે છે:

નણુદેભોજાઈ બે પાણીડાંની હાર્ય,
નણુદેભોજાઈને છેટાં બહુ પડ્યાં, વણજારા હોજી.
એ વણુજારા, મુજને ઘડૂલો ભરી આલ્ય,
મોરો ઘડુલો ભરી આલ્ય,
ઊંડાડી (એંદાણી) આંબાડાળે વળગાડી, વણુજારા હોજી!

હૈ'તો અલિ, હું અડધો ભરું,
અડધો ભરું ખારેકટોપરે, વણઝારા હોજી!

અડધો ઘડો વણઝારે ખારેકટોપરે ભર્યો પછી પદ્માગણ હવે વણઝારાને વીનવે છે:

'એ વણઝારા મુજને ઘડૂલો ચડાવ્ય,
મોરો ઘડૂલો ચડાવ્ય.
એ કુવાના પગથિયે ઊગી આથમ્યો, વણઝારા હોજી!

પેર આવે છે. માને કહે છે:

મોરી માતા ઘડૂલો ઉતરાવ્ય, મોરો ઘડૂલો ઉતરાવ્ય,
એ જી માથું તપ્યુ, એ છાતી ઊભટયું, વણઝારા હોજી.

દાદાને વીનવે છે:

મોરા દાદા રે, જોજો આપણ દેશપરદેશ,
મોરી હેડીનો નાયક ગોતજો આખર, વણઝારા હોજી.

દાદા દેશપરદેશ હાલી નીકળે છે.

એ રે દીકરી જોયો દેશપરદેશ, આવડ દેશપરદેશ,
તોય તેરી હેડીનો નાયક નો મળ્યો, વણઝારા હોજી.

દીકરી દાદને ફરીને વીનવે છે:

મોરા દાદા, જોજો સરોવરિયાં પાળ,
મોરી હેડીનો નાયક ત્યાં છે, વણઝારા હોજી.

દાદા સરોવરિયાપાળ જાય છે:

એ રે ધેડી, જોયુ સરવરિયાં પાળ,
જોયુ સરવરિયાં પાળ,
તોરી હેડીનો નાયક ત્યાં છે, વણઝારા હો જી.

દીકરી દાદાને કહે છે :

મોરા દાદા એ લીલા વાંસળિયા વઢાવો,
એ લીલા વાંસળિયા વઢાવો,
ચોરી ચીતરાય ચાંપાનેરની, વણઝારા હોજી.

અને દીકરીનાં મગન વર્તાય છે, મનના મોતેર માનવીને પદારણ આમ વરી પણ લે કે માબાપ અને દાદા એવી પેઢીને મારગ કરી આપે છે આ રિવાજ ત્યાંના સમાજની એક કડીરૂપ છે

પણ માબાપનેય ખબર આપ્યા વિના પદારણ ચાલી નીકળે તેને ય પદારગીતમાં વિષય તરીકે સ્થાન મળ્યું છે કેના રંગીલી બાઈ ગામમાં ભવાયા નાયક આવ્યા નાના નાયકને જોઈ તે મોહી પડી :

ભાલાળે ભવાયારે રમે,
સૌએ છોડિયું જોવા જાય.
કેણા નારા આદમી હારે જાય, કેણાને દેવલો હેરી ગયો.
સો રે છોડિયુ માથા રે ગૂંથે,
કેણા પટિયા પાડે, કેણાને દેવલો હેરી ગયો.
સો રે છોડિયુ મશડી આંજે,
કેણા સોયરો આંજે, કેણાને દેવલો હેરી ગયો.
સો રે છોડિયુ ઢાલડિયે એને,
કેણા ગદના કાગરે રે, કેણાને દેવલો હેરી ગયો
સૌ રે છોડિયુ છૂટા નાખે,
કેણા રૂપિયા ઉલાળે રે, કેણાને દેવલો હેરી ગયો
ત્યાથી ભવાયા રમીને હાલ્યા,
કેણા વાંસોવાંસ રે, કેણાને દેવલો હેરી ગયો
નાના રે નાયકે સામું રે જોયુ,

ઓલી બઈ આવે ઈ કુણ રે, ફૈબાને દેવલો હેરી ગયો!'

હવે નાનો નાયક કહે છે:

ગામે રમતાં, બે ગામે રમશું,
ફૈબાને સાડી સાચી લેશું રે, ફૈબા દેવલો હેરી ગયો.
બે ગામ રમતાં, પાંચ ગામ રમશું,
ફૈબાને કાપડું લેશું રે, ફૈબાને દેવલો હેરી ગયો.

ફૈબા નાના નાયકને ત્યાં ગઈ. એ ગીત તેમના સમાજની એક બાજુ છે તેમ ગગુડી નારોદીને ત્યાં સામતો બેસવા આવે છે ત્યારે ગગુડી નારોદીને રેંટિયો ઉલાળી મેલવાનું કહેવાય છે. આ ગીતની ખૂબી તો એ છે કે તે સંબોધનરૂપ બન્યું છે! જાણે કોઈ નાટકની વચ્ચે આવતું ગીત ન હોય!

ખેતર વચાળે ખીજડાનાં ફાલે ફૂલ, સામતો છેલી છે
ડાળખીવાળો.
ગગુડી વીણે ફૂલ, ગગુને વાલો રેંટિયો રે!
એ રેંટિયાને વાલાં તેલ, સામતો છેલી બેસવા આવ્યો,
સામતો છેલી બેસવા આવ્યો, રેંટિયો ઉલાળી મેલ,
નારોદી ગગુડી, રે તારા દલની આટી મેલ.
રે તારા દલની આટી મેલ.
ગગુને આવ્યો દીકરો રે, એ કોને કેસે બાપ?
પાળે બંધાવો પારણા, એ હીંચોળે એનો બાપ!
ખેતર વચાળે ખીજડાનાં ફાલે ફૂલ, સામતો છેલી છે
ડાળખીવાળો.

આવા આડા સબંધને કારણે તેમના સમાજમાં આવી અનેક સમસ્યાઓ ઊભી થઈ છે. ઉપરના ગીતભાવની અવધિ તો ત્યાં છે કે,

'ગયુને આગ્ગો દીકરો રે, એ કોને કેસે આપો!' લોકગીતના રચનારે એ સમાજના એવા પ્રસંગોને ગીતોમાં ગૂંથવાનું નથી ચૂક્યા. છાણુ લેવા ગયેલ સાંકુ પદારણુ ભાણિયાને લઈને આવે છે. તેમનો સમાજ શંકિત નજરે સાંકુને અને ભાણિયાને જુએ છે. ફૂલ શા બાળની છાતી પર પગ મૂકીને તેને યમઘર મોકલે છે. તેની ક્રૂરતાના સૂર પણ વગડાને પણ ગમગીન બનાવે છે:

છાણુના વાસીદે રે હાલી સાંકુ, છાણુના વાસીદે રે હાલી,
સાંકુ, છાણુના વાસીદે રે હાલી.
ચાંથી તે ભાણિયાને લાવી સાંકુ, ચાંથી તે ભાણિયાને લાવી,
સાંકુ, ચાંથી તે ભાણિયાને લાવી?
ઊભી બજારે જઈ હાલી સાંકુ, ઊભી બજારે જઈ હાલી,
સાંકુ, ઊભી બજારે જઈ હાલી.
જંઈના તે ડાળિયા લીધા સાંકુ, જંઈના તે ડાળિયા લીધા,
સાંકુ, જંઈના તે ડાળિયા લીધા.
લઈને ગુંજામાં નખાવ્યા સાંકુ, લઈને ગુંજામાં નખાવ્યા,
સાંકુ, લઈને ગુંજામાં નખાવ્યા.
ઊભી બજારે લઈ હાલી ભાણિયાને, ઊભી બજારે લઈ હાલી,
સાંકુ, ઊભી બજારે લઈ હાલી.
એક ફેરો પાણી પાજે માસી, એક ફેરો પાણી પાજે,
માસી, એક ફેરો પાણી પાજે.
હવે તો પાણી કેવાં ભાણિયાને, હવે તો પાણી કેવાં,
સાંકુ, હવે તો પાણી કેવાં!
ત્યાં વંડિયું ઠેકાવી ભાણિયાને, ત્યાંથી વંડિયું ઠેકાવી,
થી તે વંડિયું ઠેકાવી!

છાતી ઉપર પગ મૂક્યો, ભાણિયાની, છાતી ઉપર પગ મૂક્યો !
સાંકુ, ભાણિયાની જીભ તાણી લીધી રે !

નિર્દોષની સામે તે સમાજે અપરાધી વર્તન બતાવ્યું. સમાજની કોક વ્યક્તિએ રોતી આંખે તે કૃત્યનેય ગીતમાં ગાઈ નાંખ્યું છે

આ બધાં ગીતોમાં સંસારચિત્રો છે, કેટલાંક કરુણ, કેટલાંક મીઠાં. એ સમાજની દૃષ્ટિએ જે જે વાત અગત્યની અને મહત્ત્વની લાગી તે તે ત્યાંના જનસમૂહે લોકઢાળમાં ઢાળી દીધી. પણ તે લોકસમુદાય એટલેથી નથી થંભતો. તેમના સ્વભાવમાં કટાક્ષ અને મર્મ તો ભર્યો છે. મરમીલા લોક છે. તેમનાં વેણ પણ મરમીલાં છે. મરમીલા લોકોએ ગીતોમાં કટાક્ષો વેરવામાંય પાછું નથી જોયું. નળસરોવરના કાંઠાનાં બારપંદર તેમનાં ગામો. તેમાં વેપારીનાં માંડમાંડ પાંચપંદર ઘર હશે. એ વેપારીઓએ તેમને ત્રાહિત્રાહિ પોકરાવી, ત્યારે પઢારોએ રાજિયાના રાગનું ગાયું :

કૂડાં તોલ ને કૂડાં ત્રાજવાં,
કૂડાં કીધાં કામ, અમરતને તમે ના ઓળખ્યો,
હાય રે લાડા હાય હાય !

આ તો વ્યક્તિ પરનો રાજિયો પણ તેમના સ્વજન માટેના રાજિયામાં ગીતનું કરુણ તત્ત્વ ભર્યું છે સાથે સાથે જીવનનું તત્ત્વજ્ઞાન પણ કાંઈ ઓછું નથી :

લીલી લીંબરડીની છાંય રે, મરઘો બોલ્યો કરોધમાં,
મરઘે એના કટુંમ જગાડિયાં, કટુંમનાં રામબાણ છૂટશે,
નાખે[1] પંખીડા તુંને મારશે.
પંખીડાં ઊડયાં ને રોળા[2] રઈ ગિયાં, લીલી લીંબરડીની છાંય રે,

---

૧. નાસ, ૨. દેહ.

મરશે એના બંધવ જંગાડિયા, બંધવુનાં રામબાણુ છૂટશે,
નાખે પંખીડા તુંને મારશે, પંખીડાં ઊડયાં ને શેળાં રઈ ગિયાં.
મરશે એના દાદાને જગાડિયા, દાદાજીનાં રામબાણુ છૂટશે,
નાખે પંખીડા તુંને મારશે, પંખીડાં ઊડયાં ને શેળાં રઈ ગિયાં.

બીજા મૃત્યુગીતમાં પંખીડાનો ક્યાં વાસ છે, તે વાત મૂકી છેઃ

પાળે ઘૂમે પારેવડાં, મઢીએ ઘૂમે નાગરવેલ, ઓય લાડા
હાય હાય,
પાંહે રઈને દાદાએ પૂછિયાં, ક્યાં છે અમારો વાહ,
સીંગાસણુ અમારાં બેસણાં, ને વઈકુંઠ અમારો વાહ.

આ મૃત્યુગીતોમાં તેમણે પરલોકવાસીની વાતો મૂકી છે તેમ ઐહિક જીવનની વાતો ય પઢારલોકોએ તેમનાં ગીતોમાં મૂકી છે. સ્વભાવે ખૂબ નરમ હોવા વેળુ જમાદાર કે રાજનો નાનો નોકર ત્રાડૂકે તો તે થરથરી ઊઠે. આવા નાના નોકરં પઢાર પર ભારે દાસ મારે. તેવો 'ચોનીલાલ મોઝડીવાળો' પઢારનાં લોકગીતનું કરુણપાત્ર બનેલ છે. રાજના કુંવરને સવારે નળમાં પંખીના શિકારે જવું છે. ગનોરાતમાં નળના કાંઠા સુધીનો કાદવથી ભરપૂર રસ્તો, મોટર ચાલી શકે તેવો પાકો તૈયાર થવો જ જોઈએ, એવી રાજકુમારની આજ્ઞા. આમાં રિબાઈ ગયા પઢારો. પ્રગતિશીલ વિચારસરણીવાળા કોઈ અદ્યતન કવિએ જાણે શ્રમનું ગીત ન રચ્યું હોય!

એક ચાળીશ તો દાડિયા લાવ્યો,
એક ચાળીશ તો દાડિયા લાવ્યો,
પાવડા લાવ્યો ચાર, ચોનીલાલ મોઝડીવાળા,
કામનો નાં'વ્યો પાર.
પાંચા ખોદીને હાથડાં દુખ્યાં, એ ટાઢિયો આવ્યો તાવ,
ચોનીલાલ મોઝડીવાળા, કામનો નાં'વ્યો પાર.'

માથડે ટોપી, હાથમાં સોટી, ફરતો ફેરા નાખ્ય,
ચોનીલાલ મોઝડીવાળા, કામનો ના'વ્યો પાર.
તારો સર્પૈ તો ભવ રે ભૂંડો, પોકલા મેલ્યા ચાર,
ચોનીલાલ મોઝડીવાળા, કામનો ના'વ્યો પાર.
પાંચ રૂપિયા તો રોકડા આલ્યા, પાયલાનો નૈં પાર,
ચોનીલાલ મોઝડીવાળા, કામનો ના'વ્યો પાર.
ગોંદરા સુધી ગોધલે હાંકર્યાં, ચોખે મશન ચાલુ થાય,
ચોનીલાલ મોઝડીવાળા, કામનો ના'વ્યો પાર.

ચોનીલાલ મોઝડીવાળાએ પદાર કોમને ત્રાસ આપ્યો, પણ એક જમાદાર પાણી ભરવા ગયેલ જીજડી પદારણની આડે જઈ ઊભો ને જીજડીને પ્રલોભન આપવા લાગ્યો :

પાણી ગઈ'તી જીજડી ઝીલણિયે તળાવ,
એને આડો ઊભો જમાદાર,
એને આડો ઊભો જમાદાર.

કે' તો જીજડી તુંને કડલાં ઘડાવું,
કે' તો કાંબીએ મોરલા મેલાવું,
એને આડો ઊભો જમાદાર.

પાણી ગઈ'તી જીજડી, ઝીલણિયે તળાવ,
એને આડો ઊભો જમાદાર,
એને આડો ઊભો જમાદાર.

કે' તો જીજડી તુંને ઘાઘરો સિવડાવું,
કે' તો તુંને તેમાં મોર મેલાવું,
એને આડો ઊભો જમાદાર.

જમાદારના પ્રલોભને તે ન લલચાઈ. મનનાં ધમસાણ તેનાં શાં હશે? લોકકવિએ તે અત્ર નથી આલેખ્યાં. તનનાં ધમસાણો પણ પઢારોએ તેમના ગીતમાં મૂક્યાં છે. મગના પઢારને ત્રાડી ગામના મારગે દુશ્મનોએ ભેગા થઈને માર્યો.

ત્રાડીના મારગે આવે મગનિયો,
ત્રાડીના મારગે આવે રે લોલ.
મથાડે કુઅડી ઓલી મગનિયાને,
મથાડે કુઅડી ઓલી રે લોલ.
પાછી મોડે બાધ્યો મગનિયાને,
પાછી મોડે બાધ્યો રે લોલ,
નેતરની સોટીએ માર્યાં મગનિયાને,
નેતરની સોટીએ માર્યો રે લોલ.
ઘોડા ઈના મા ને બાપ,
ઘોડા મગનિયાને માર્યો રે લોલ.
ઘોડા ઈના ભાઈ ને બાપ,
ઘોડા મગનિયાને માર્યો રે લોલ.

આ ગીત ટીટોડાનું ગીત છે. પઢારના નૃત્યનું વિશેષ નામ ટીટોડો, (જે કે આખાય જાન પ્રદેશમાં ટીટોડો હવે જાણીતો છે. મેળાઓમાં અન્ય જાનોમાં વ્યક્તિઓને ટીટોડા લેતી મેં જોઈ છે.) ટીટોડામાં નૃત્યકાર વારાફરતી એક હાથ કેડે મૂકે બીજો માથે. પગ પણ ગતિશીલ રહે. પગના પછડાટમાં એક પ્રકારનો નિર્ઘોષ હોય છે. આ નૃત્યપ્રકાર લાસ્યને મળતો નથી જ. તેમના ટીટોડામાં એક પ્રકારનું જોમ છે, ત્વરિત ગતિ છે, અને ટીટોડા જૂથમાં લેવાય છે. પાંચસાત ભેગા મળે ને લે. પછી તે પુરુષો હો કે સ્ત્રી પણ હોઈ શકે. ટીટોડા લેનાર સૌ કોઈ મોઢેથી સમાજચિત્રનાં ગીતો ગાતાં જાય. બીજા પ્રકારનાં પણ ગીતો ગાતાં હોય.

પઢારનાં સંસારગીતો

કોઈ રાજનીતિજ્ઞે કહ્યું છે કે રાષ્ટ્રના ને પ્રજાના અધઃપતનનું દર્શન કોઈએ કરવું હોય તો તે દેશના શાસકે તે પ્રજાને માટે ઘડેલા કાયદાઓ જોઈ જવા અને પછી તો તે પ્રજાના સંસ્કાર અને અસંસ્કારના બધા જ વળો (pattern) તમારી દૃષ્ટિ સમક્ષ આવી ખડાં થશે આ કથન લોકગીતના સંગ્રાહકને ઠીકઠીક માર્ગદર્શન આપી શકે તેમ છે લોકગીતનો સંગ્રાહક કહેશે કોઈ જાતિના સંસ્કારજીવનના વળો જોવાં હોય તો તેમનાં લોકગીતો જુઓ ભૂસ્તરશાસ્ત્રી જેમ ધરતીના પડ જોઈને ધરતીનો ઇતિહાસ કહી શકે છે તેમ સમાજશાસ્ત્રી (sociologist) આ લોકગીતો જોઈને જાતિઓના જીવનના અનેક વળાં જોઈ શકે છે કોઈ પ્રજાના કે જાતિના લોકજીવનને પિછાનવા માટે તેમનાં લોકગીતો અનેક દૃષ્ટિએ ઉપયોગી બની શકે છે પઢારનાં લોકગીતો તે જ દૃષ્ટિએ અહીં જોવાનાં રહે

સૌરાષ્ટ્રરાજ ને મુંબઈરાજની સીમા વચ્ચે પડેલું લગભગ ૬૦ ચોરસ માઈલનું નળ સરોવર તેના કાંઠા પર પઢારનાં બાર ગામ ને બાર ગામમાં પઢારની વસ્તી આશરે ૭ હજારની આ ૭ હજાર પઢારો અદ્યપર્યંત તેમની સંસ્કૃતિને જાળવીને બેસી રહેલા કેટલી ગડમથલ કરે છે! સિંધુ નદીના કાંઠા પરથી તે જાતિ આવી સૌરાષ્ટ્રમાં અને તેને કેટલાય વર્ષો થયાં હશે! અનંત એવા કાળના મૂળિયાં ક્યાં પકડવા બેસવું!

પણ પઢારનો સમાજ હિંદુ સમાજ જેવો જ સમાજ છે એવું દર્શન કોઈ પણ સમાજશાસ્ત્રીને પ્રથમ તો લાગે, પણ છતાંય તેમાં એક જુદું વરુ છે, તેની તે ના પાડી શકે એમ નથી તેવાં ર્ગ

જોવા માટે તેમનાં લોકગીતો ઠીક ઠીક સહાયરૂપ બને છે. આ લોકગીતોને તેમનું સ્વત્વ છે તે પણ લોકગીતનો પરોક્ષ સમજી શકશે. પઠારનું આ લોકગીત છેઃ

પાંચ રૂપિયાનું કાપડું રે લીધું પે'રીને હાલી પાણી,
પાણી ભરીને ઉંબરે આવી, ત્યારે ઉંબરા વચ્ચે બેડું ટાળી,
આંબળો મૂકી દેને મડકાળી, ઉંબળા ઝુંબળાની ઘરવાળી.
સાસરો બચ્ચારો દળણાં દળે ને જેઠ ભરે છે પાણી,
નાનો દિયરિયો વાળીડાં વાળે, ને નણદલ કરે છે લાણી,
આંબળો મૂકી દે ને મડકાળી, ઉંબળા ઝુંબળાની ઘરવાળી.
પારકા મૂવે ત્યારે પીતાંબર પહેરતી ને નાકમાં નાખતી વાળી,
ઘરનાં મરે ત્યારે રોતાં ના આવડે, મેલી દે મૂઠીયું વાળી,
આંબળો મૂકી દેને મડકાળી, ઉંબળા ઝુંબળાની ઘરવાળી.

તેમના સમાજમાં આંબળાવાળી, મડકાળી, ઉંબળા ઝુંબળાવાળી સ્ત્રી છે તેનું ચિત્ર લોકકવિએ કેવી કુશળતાથી ઉપસ્થિત કર્યું છે! સ્ત્રીસ્વભાવનું આથી વિશેષ વાસ્તવદર્શન કરાવવાની વાચકોને જરૂર લાગે છે ખરી?

હોકો પીનાર પઠારને કેવી માયામાયે પત્ની મળી છે તેનું ચિત્ર નીચેના લોકગીતમાં લોકકવિ કરાવે છે. હોકો આ પઠારના દિલનો કબજો લઈને બેઠો છે, તેણે તેનું દાસત્વ સ્વીકાર્યું છે તો તેને કોનું દાસત્વ સ્વીકારવું પડે છે? લોકકવિ ગાય છેઃ

હોકો મારો દલનો લોગી, હોકે કરેલ છે જોગી,
બજર તો મને ગમતી નથી, ને હોકો સૂરતા લાવી દે!
ચૂલે બેઠો ટગટગું ત્યારે એંરું ચપટી દાણા દે!
આ હોકો મારા દલનો લોગી, હોકે કરેલ છે જોગી!

'આ સહુ ગામનો સવાદિયો, સાંભડા જેવી નાળ્ય,
ભરી સભામાં તો પીવા બેઠો, કોઈ ને ન કે' લે,
આ હોકો મારો દલનો ભોગી, હોકે કરેલ છે જોગી.

શી છે આ પઢારની લાચાર સ્થિતિ! પઢાર જાતિ નિર્વ્યસની જાતિ છે. તેમની આર્થિક સ્થિતિ જ એવી છે કે તેમને વ્યસન રાખવાં પાલવે નહીં. ત્યાં જો હોકો કે બીડીનું વ્યસન રાખે તો તેની શી દશા થાય! તંબાકુ ખરીદવા ચપટી દાણા તો જોઈએ ને? ને તે દાણાની મલકાના છે પઢારણ, તેથી તેને રગરગવું પડે છે.

આ લોકોએ તેમના સંસારના ઝીણા ઝીણા પ્રસંગોને યાદ કરીને પણ ગાયા છે. ભૂંડી બાયડીને તેઓ કાંઈ બિરદાવવાનું ચૂકે! તે વેદના અને પીડા પછી સફેદ ડહાપણ કેવું તેણે નીચેની પહેલી પંક્તિમાં મૂક્યું છે:

ભાયોજી જીની બાયડી ભૂંડી, પીડા અંતરે ઊડી!
આ બામણ આવ્યો લોટ માગવા, પોઢી ઘરમાં જાય!
ઊભી ઊભી તાળિયું પાડે, બાવો ચાલ્યો જાય!
ભાયોજી જીની બાયડી ભૂંડી, પીડા અંતરે ઊડી!
આ પાંચ રૂપિયાનો સાડલો લીધો, ને ભમ્મરિયાળી ભાત!
જમી કરીને ઊભી થઈ ત્યારે સાડલે લૂછ્યા હાથ!
ભાયોજી જીની બાયડી ભૂંડી, પીડા અંતરે ઊડી!
ઘરમાં ખાંડણિયો ને ઘરમાં ઘટી, પરઘર દળવા જાય!
ટોડલે ઊભી ટોલા મારે, ત્યારે કૂતરા લોટ ચાટી જાય!
ભાયોજી જીની બાયડી ભૂંડી, પીડા અંતરે ઊડી!

કર્કશાઓના દિમાકનું દર્શન આ ગીતમાં થાય છે. ચાકેસ અને ત્રાસેલ પતિ તેમની પત્નીઓ માટે પહેલી પંક્તિના ઉદ્ગારોથી શું વિશેષ પીડાકથન કરે!

'બાયડી ભૂંડી', 'આંમળીવાળી', 'મકકાળી', 'ઉબળા–ઝુબળાવાળી' સ્ત્રીઓએ લોકસાહિત્યમાં પણ તેમનો ફાળો આપીને તેમના સમાજનું દર્શન કેટલું ભાતીગળ બનાવ્યું છે!

મરકડાવાળીનાં ગીતો જોયાં. ચમેલીનાં ફૂલ શા કોમળ દિલવાળી યુવતિઓનાં ગીતો પણ તેમના લોકકવિએ કર્યાં ઓર્ગા ગાયાં છે! સાસુનું શકિન દિલ ચદનની નંદવાયેલ ઢાંકણી પર રો તર્ક કરે છે! સંસારની રઢમાંથી તેને હાંકી કાઢવા માટે તે સાસુ તૈયાર થાય છે. અને ત્યારે તે યુવતિનું દિલ રસ રસ ટપકવા માંડે છે. સાસુ પૂછે છે.

અગર ચદનની ઢાંકણી, વવ શું કરતાં નદવાણી જો,
નાના દિયેરિયાને પીરસતાં, મારા હાથમાંથી વસૂટી રે!
ઢાંકણી ફૂટી તે. વવ ભલે ફૂટી, હવે મેલો ઘરની માયા જો,
ઘરની માયા તે કેમ કરી મેલું, શીદ ખાધા'તા ચોખા જો!
પાળે બેઠુ'તું એક પંખીડું, મારો સંદેશો લઈ જાયે રે,
મારા દાદાને જઈ એટલું કે'જો, દીકરી વનડાં વેઠે જો!
ખરા બપોરે મારો દાદો આવ્યા, નવ નવ વેલ્યુ લાવ્યા રે,
તારી વેલ્યુ ને હું શું રે કરુ, દાદા, દીકરીનાં મેણાં ભાંગો જો!

કાવ્યત્વથી દીસેન આ ગીતમાં ભગ્ન હૃદયનું દર્શન થાય છે. અને છેવટે તેના હૈયામાંથી ઉદ્ગાર સરી પડે છે કે:

'તારી વેલ્યુ ને હું શું રે કરુ, દાદા, દીકરીનાં મેણાં ભાંગો જો!'

આ કયુ મેણું? દિયેર-ભોજાઈના જાતીય સંબંધો માટે આવાં ઘણાં ગીતો મળે છે! સાસુ શુ કામ. પતિએ પણ કયાં આવી ચમેલીને તે નથી ચાહી? પતિ અએલા સે, તો પત્નીનું જુવાન હૈયુ ક્યાં ક્યાં ભમવા નીકળે છે! એના હૈયાના સૂર સાંભળો.'

ઊંચી ગોવીદાની પીપળી, નીચાં દાનારીનાં હાટ, વા'લા!
ચૂડલી મૂલવવાને હું ગઈ'તી રે, સામો મળિયો મેલ, વા'લા!

બોલાવ્યો પણ બોલ્યો નૈં, કોના હૈયામાં કૂડ, વા'લા!
અંબોડે ગલફૂલ વા'લા!
ઊંચી ગોવીંદાની પીંપળી, એ નીચાં મોચીડાનાં હાટ, વા'લા!
મોજડી મૂલવવાને હું ગઈ'તી રે, સામો મળિયો સેલ, વા'લા!
બોલાવ્યો પણ બોલ્યો નૈં, કોના હૈયામાં કૂડ, વા'લા!
અંબોડે ગલફૂલ, વા'લા!

કેવી આશાએ અંબોડે ગલફૂલ ઘાલીને તે ગઈ હશે? અને વહાલાને બોલાવ્યો ત્યારે પણ તે બોલ્યો નહીં, અને ત્યારે વેલ ચીમળાઈ ગઈ અને ઉદ્‌ગાર સરી પડ્યો કે 'કોના હૈયામાં કૂડ!' ઓફિલિયાનો પણ હેમ્લેટ આમ જ ક્યાં અનાદર કરતો નથી? 'કોના હૈયામાં કૂડ!' એ પ્રશ્ન કણ્વપુત્રી શકુંતલાને પણ દુષ્યંતે જાકારો દીધો ત્યારે જન્મ્યો હશે ને? સીતાનો જ્યારે રામે ત્યાગ કર્યો ત્યારે સીતાના હૈયામાં પણ આવો જ પ્રશ્ન નહીં જન્મ્યો હોય? 'દીપક બુઝાવીને તેનો જીવનદીપ બુઝાવવા દે!' બોલતો ઓથેલો ડેઝડીમોનાના મૃત્યુ માટે હાથમાં છરીને રમાડતો હશે ત્યારે તેના હૈયામાં પણ 'કોના હૈયામાં કૂડ!'નો જ પ્રશ્ન નહીં જન્મ્યો હોય? જગતસાહિત્યની ઉત્તમ કૃતિઓમાં આ જ ભાવે શું કરુણા નથી જન્માવી? ટેસ, શકુંતલા, ઓફિલિયા, ડેસડીમોના, એના, નોરા: આ બધી સુંદરીઓને સહન શા કાજે કરવું પડ્યું છે? કોના હૈયામાં કૂડના કારણે જ? જગતસાહિત્યમાં રેલાતો ભાવ આ માનવીઓએ માણ્યો છે ને તેને ગાઈ નાખ્યો છે. અને કરુણ ગીતોમાં આ સંસારગીત આમ ઉલ્લેખનીય ઉમેરો કરે છે.

અને તે સ્થિતિનો કાળ એટલે પ્રણયકાળ (Period of courtship). એ કાળમાં ચીજો-જણસોની લેવડદેવડ કાંઈ ઓછી થયા વગર રહે? ઓથેલોએ ડેસડીમોનાને રૂમાલ આપ્યો, દુષ્યંતે શકુંતલાને વીંટી. પ્રણયચીજોની લેવડદેવડ થતી હશે ત્યારે હૈયામાં કેવા

આવો ઊગના ક્યાંથી? નીચેના ગીતમાં કવિએ આખેઆખું હૈયું ઠાલવી દીધું છે:

મારી સગી નણંદના વીરા, રૂમાલ મારો લેતા જજો,
રૂમાલ મારો લેતા જજો, કે દલ દેતા જજો, સગી નણંદના વીરા,
રૂમાલ મારો લેતા જજો!

લીલી ઘોડીના અસવાર રે, રૂમાલ મારો લેતા જજો,
એ લેતા જજો, કે દલ તમારું દેતા જજો,
મારી સગી નણંદના વીરા, રૂમાલ મારો લેતા જજો!
ઓલ્યા વાણિયાના હાટનો લીલો રૂમાલ,
મારી સગી નણંદના વીરા, રૂમાલ મારો લેતા જજો!
ઉતારા આલીશ ઓરડા, રૂમાલ મારો લેતા જજો,
મેડી મોલાત્યું માણશું, કે રૂમાલ મારો લેતા જજો,
મારી સગી નણંદના વીર, રૂમાલ મારો લેતા જજો!

ભોજન આલીશ લાડવા, રૂમાલ મારો લેતા જજો,
તને પીરસુ સાકરિયો કંસાર, દઈશ, રૂમાલ મારો લેતા જજો,
મારી સગી નણંદના વીર, રૂમાલ મારો લેતા જજો!
નાવણ આલીશ કુંડિયુ, એ રૂમાલ મારો લેતા જજો,
ઝિલણિયા તળાવ જાઈશું, રૂમાલ મારો લેતા જજો!
મારી સગી નણંદના વીર, રૂમાલ મારો લેતા જજો!

આટઆટલાં પ્રલોભનો આપ્યાં! દિલની આરઝુઓ એણે—નાયિકાએ ઠાલવી. પ્રેમની મસ્તીમાં સામસામા પાણિયા એકબીજાને છટકાવવાનો વિરલ ભાવ અ ગના શિષ્ટ સાહિત્યમાં વિરલ બન્યો છે. 'વસંતવિલાસ'ની નાયિકાએ તે ભાવ વ્યક્ત કર્યો છે અને આ પ્રકાર નાયિકાએ!

એવી જ પ્રકાર નાયિકા નાયકને વીનવે છે:

અરમર મેહુલો વરસે, ભીંજાવે કચરો પાણી;
આવ્યે લે'રીડા,
મારા જીવના સારુ જો !

ભીંજાવે તારાં પગલાં પડશે, ફૂલવાડી ફોરી,
આવ્યે લે'રીડા,
ઘેયે' આવ્યે, મારા જીવના સારુ જો !

હદ કરી છે લોકકવિએ આ ચાર પંક્તિઓમાં! ફૂલવાડી ફોરી. કઈ ફૂલવાડી? જોબનની જ તો! ફૂલવાડીનો ભોક્તા ભ્રમર તો જોઈએ જ તો!

અને એ જ ભ્રમરભોગી સુંદરીઓ પાસે આ સમાજનાં જડ બંધનોએ પણ કયાં ઓછાં પાપકર્મ કરાવ્યા છે! ચોરીમાં અગ્નિ-સાક્ષીએ સ્વીકારેલ પતિને હણી નાખવામાં પણ આ સુંદરીઓ ક્યાં જરાય અરેરાટી અનુભવે છે! નીચેનું ગીત એવી એક નાયિકાનું દર્શન કરાવે છે:

પાંચે પાંચે બેડાં નાની વઉ હલકે ભરી આવી જો,
છઠ્ઠા બેડે વારું લાગી, પાંચે પાંચે નાની વઉ....
છઠ્ઠા બેડે વારું લાગી, નાની વઉ !
સીંબડે ચડીને નાની વઉ કાંચીડો માર્યો જો,
ખોળે ઘાલીને ઘરે લાવી, નાની વઉ જો,
ઘીની તાવણુમાં આંધણુ મૂક્યાં રે, નાની વઉ જો !
ખોળે ઘાલીને ઘરે લાવી, નાની વઉ જો !
કાંહાંની થાળીમાં ઠાર્યો જો !

રમતાંઝમતાં વાલીડે એક જ કોળિયો ભર્યો જો,
બીજા કોળિયે લેયું લીધી જો, નાની વઉ જો!
ત્રીજા કોળિયે પ્રાણ છાંડયા જો, નાની વઉ જો!
લીંબડેથી દેરાણી જેઠાણીને બોલાવે જો, નાની વઉ જો!
ઉપરવાડેથી દેરાણી જેઠાણીને બોલાવે જો, નાની વઉ જો!
તમારો દિયરિયો રિસાણો જો, નાની વઉ જો!

જેઠાણી આખા પ્રસંગનો મર્મ પામી જાય છે:

નો'તું રે'તું તો નાની વઉ, નો'તું આવું કરવું જો.
રાજાના કુંવર સરખો માર્યો રે, નાની વઉ જો!

પ્રેમે માનવ પામે શું શું નથી કરાવ્યું? જે જાતિમાં પ્રેમનો ઉમ ભાવ નથી તે સમાજને માંદલો જ કહેવો રહે ને!

છેલ્લે જુઓ આ રેટિયાનું ગીત. તેમાં ય તેમના સમાજનું આ રહ્યું અચ્છું ચિત્ર!

રણઝણ રણઝણ રેંટુડો ફરિયો,
રણઝણ રણઝણ રેંટુડો ફરિયો,
સામુ જાણે વહુ કાંતે રે, મારી સૈયરું શરમાણી!
વહુ રે વહુ અમને કોકડાં દેખાડો,
કોકડાંનાં લીધાં રોકડાં રે, મારી સૈયરું શરમાણી!
વહુ રે વહુ અમને રોકડાં વતાડો,
રોકડાંની લીધી ઝારી રે, મારી સૈયરું શરમાણી!
વહુ રે વહુ અમને ઝારી વતાડો,
ઝારીના થ્યા બે કટકા રે, મારી સૈયરું શરમાણી!
વહુ રે વહુ અમને કટકા વતાડો,
કટકા નાખ્યા ઉકરડે રે, મારી સૈયરું શરમાણી!

વહુ રે વહુ અમને ઉકરડો દેખાડો,
ઉકરડો નાખ્યો સાભર નદીએ રે,
મારી સૈયરું શરમાણી !
વહુ રે વહુ અમને સાભર વતાડો,
સાભર ઊછળે નીર રે,
મારી સૈયરું શરમાણી !
સાસુડી ભૂંડી, સાડલો તરિયો,
જો જો નગરીનાં લોકો રે !
બાઈજી ઝારી ગોતે રે, મારી સૈયરું શરમાણી !

સાસુને, આમ, વહુએ ટૂંકાં કરી નાખ્યાં. એ ભાવને વ્યક્ત કરતા ગીતને લોકકવિએ મલાવી મલાવીને મૂક્યું છે તે તો સ્પષ્ટ ભાસે છે. પણ એ કાવ્યત્વની પાછળી પડેલ સમાજવળાંની એક આછી રેખા કાંઈ અછાની રહેતી નથી.

પઢાર સમાજના અનેક રંગો તેમનાં લોકગીતોમાંથી મળે છે. તેમના સમાજમાં મડકાવાળીઓ પતિને હોકા માટેની ગડાકુ લાવવા માટે દાણાની યાચના કરાવે છે. જુઈની વેલ શી યુવતિઓ ફૂલેલ ફૂલવાડીમાં ભ્રમર આવે તેની ઝંખના કર્યાં કરે છે. તો કોઈને પતિ તરફ ધિક્કાર જન્મે છે, તેથી પતિને તે પૂરો કરી નાખે છે અને તેની સાથે વંચના ખેલવાનું પણ તે જાણે છે! કેટલું ક્રૂર છે તે સમાજનું દર્શન! અને કોઈ વહુઆરુઓએ સાસુને પૂરાં કર્યાનાં દૃષ્ટાંતો જોવા મળ્યાં હશે, તેનેય કવિએ છાંડ્યું નથી. આમ આ લોકનાં સંસારનાં ક્રૂર, ભયાનક, ધેરાં, કોમળ. કાળાં–પીળાં અનેક ચિત્રો તેમનાં લોકગીતોમાંથી જોવા મળે છે. આ લોકગીતો દ્વારા તે સમાજમાં અનેક ચિત્રો–સ્પષ્ટ અને રંગદર્શી–જોવા શું નથી મળ્યાં?



પઢારનાં લોકગીતોમાં સ્થાનીય રંગો

કવિ વર્ડ્ઝવર્થનું "ડેફોડાઇલ્સ" (આવળનાં ફૂલો) કે "સોલિટરી રીપર" (એકાકી કાપણી કરનારી) વાંચો અથવા એ જ કવિનું "લ્યૂસી ગ્રે" કાળજીપૂર્વક જોઈ જાઓ. કવિ વર્ડ્ઝવર્થ સ્થાનીય રંગ(Local Colour)નાં ચિત્રો દોરનાર કવિ છે એવી છાપ મન પર તરત જ અંકાઈ જાય છે. એવું તો નહિ બન્યું હોય કે એ કવિએ લોકગીતોમાં, ત્યાંના લોકોમાં, સરોવર-મુલક(Lake Country)માં, ત્યાંનાં ફૂલોમાં, ડુંગરાઓમાં, નદીઓમાં, વૃક્ષો અને પ્રાણીઓમાં, ત્યાંની ધરતી પર જે કાંઈ ભાળ્યું તે સર્વમાં-જીવને પરોવ્યો અને પછી તેમાંથી પોતાનાં ગીત-ઝરણને જન્માવીને વહાવ્યું એટલે જ તેનાં કાવ્યોમાં સ્થાનીય રંગનાં અનેક ચિત્રો પ્રગટ્યાં? પછી તો જગતસાહિત્યમાં તેની પરંપરા ચાલતી જોવા મળે છે. શેક્સ્પિયર પણ ક્યાં તેમાં પાછો પડે તેમ છે? આર્ડનનું જંગલ, ઇંગ્લાંડની ધરતીને પખાળતો સાગર, હેમ્લેટના ઘોર-ખોદિયા; એ સર્વમાં સ્થાનીય રંગો છે. ટોમસ હાર્ડી, આર્નોલ્ડ બેનેટ, રાજકવિ મેઝફીલ્ડ, ડબલ્યુ એચ ડેવીસ, ફીલિસ બેન્ટલી, ટોમસ ડિલેન: એ સર્વ કવિઓ અને સર્જકોએ ઇંગ્લાંડના સ્થાનીય રંગોમાં મનભર ચિત્રો પોતાની કૃતિઓમાં આપ્યાં. આયરિશ લેખક લિયામ ફ્લેહાર્ટીમાં પણ આ રંગ જોવા મળે છે. સ્પેનિશ કવિ લૉર્કાએ પોતાના એક નાટકમાં સ્થાનીય રંગો ચીતરવામાં કમાલ કરી છે, સંસ્કૃત સાહિત્યમાં આ પ્રકારના સ્થાનીય રંગો ક્યા સર્જકમાં સૌથી વિશેષ છે એ અભ્યાસનો વિષય બની શકે એમ છે

લોકસાહિત્યમાં સ્થાનીય રંગો પ્રાધાન્ય ભોગવતા હોય તેવું લાગે કે લોકજીવનની સાથે સંકળાયેલ સૌ કોઈને પોતપોતાના લોકસાહિત્યમાં

સ્થાન મળતું હોય છે, પછી તે વહેળા સરખી નાનકડી નદી હોય કે નર્મદા કે મહી જેવડી મહાનદ હોય; સમડી, કાગડો, પારેવું કે ચકવી હોય કે રાયણ, લીમડા, પીંપળા કે ખીજડાનાં વૃક્ષો હોય, કૂવો હોય, કૂવાના પાવઠાં હોય; આ બધાને લોકકવિ પોતાનાં ગીતોમાં બિરદાવતો હોય છે–તેઓને યોગ્ય સ્થાન આપતો હોય છે સ્થાનીય રંગોમાં તે તે પ્રદેશનાં ગામોના પણ અનેક ઉલ્લેખો મળતા હોય છે લોકકવિ તેની સૃષ્ટિનું સાહિત્યમાં નખશિખ નિર્માણ કરવાનું જરાય ચૂકતો નથી. સાથે સાથે સ્થાનીય પ્રથાઓ, લોકમાન્યતાઓ, રૂઢિઓ, રિવાજો, રહેણીકરણી ઇત્યાદિના રણકાર પણ એ સેમાં ગૂંજતા હોય છે તે તે સ્થળની ભૂગોળ–Topography પણ લોકગીતોમાં જોવા મળે છે. લોકગીતોમાં જ સ્થાનીય રંગો ઘેરા જોવા મળે છે કદાચ એટલા ઘેરા રંગો અન્ય શિષ્ટ સાહિત્યમાં ભાગ્યેજ જોવા મળે.

પઢારનાં લોકગીતોમાં સ્થાનીય રંગનાં ચિત્રો તેમજ ઉલ્લેખો અત્રતત્ર ખૂબ છે; જેમકે

તારા મલકમાં વરસ્યો મેહુલો,
મારા મલકમાં આવી હેલ.

નળ સરોવરના કાંઠા પરના પ્રદેશમાં આ પઢાર જાતિનો વસવાટ. નળનો પ્રદેશ નીચાણવાળો છે, આથી ઉપરના પ્રદેશમાં "મેહુલો" વરસે કે તરત જ પાણી દડી દડીને નીચાણવાળા નળમાં ભરાય છે. નળના પ્રદેશનો ચિતાર આ પંક્તિ દ્વારા કવિ આપે છે. અને નળ સરોવરને ઘસાઈને વહેતી કે થોડા અંતરે વહેતી નદીઓના ઉલ્લેખો પણ તેમનાં ગીતોમાં ક્યાં ઓછા છે? "રેંટુડો" નામે એક પઢાર લોકગીતમાં એક પંક્તિ આવે છે કે

"ઉકરડો નાખ્યો સાભર નદીએ રે!"

આ સાભર નદી તે સાબર નદી પઢારના વસવાટનાં ગામોમાં વહેતી રોડ નદીની જન્મદાત્રી આ સાબર છે સાબરમાંના 'પોંપળિયા'

નામની વિશાળ ધરાનાં રૂપ અને મિજાજ તેમણે જોયાં છે, આથી 'સાબર'ને તેમનાં લોકગીતોમાં સ્થાન આપ્યું. સાબરમાંથી જન્મેલ રેડ નદીના ઉલ્લેખો પણ સ્મરણીય છે:

રેડના કાંઠે એક લીંબડી,
લીંબડીનાં કાંઈ લીલાંપીળાં પાન રે!
ગેલીગેલના રાજા.

પઢારને મન આ રેડ નદી જીવન ટકાવનાર માતા સમી છે. રેડના ઉલ્લેખો તેમનાં અનેક કાવ્યોમાં મળે છે. બીજા સ્થળે પણ રેડનો ઉલ્લેખ મળે છે:

રેડના કાંઠે ચીબરી બોલી,
રેડના કાંઠે ચીબરી બોલી,
અવળાં શુકન થાય, ઊભો રે',
ઊભો રે' વાટના જાનાર!
જોડલું ભેળું થાય!
એ—એ....રેડના કાંઠે ચોખલા રાંધ્યા,
એ....એ....રેડના કાંઠે ચોખલા રાંધ્યા,
ખોબલે ઊડી ખાંડ;
ઊભો રે' વાટના જાનાર!
જોડલું ભેળું થાય!

સાબર અને રેડ પછી લીંબડી ને વઢવાણના ભોગાવાનાં ગીતો પણ તેમના લોકસાહિત્યમાં પ્રાપ્ત થાય છે; જેમકે

વઢવાણુનો ભોગાવો બઉ ભારે,
તાણ્યું તાણ્યું છે વઢવાણ શે'ર રે!
બૂડ તો ભારે,

તાણ્યાં તાણ્યાં વા'લીડાનાં ચીર રે!
બૂડ તો બઉ ભારે!
લીંબડીનો ભોગાવો બઉ ભારે,
તાણ્યું તાણ્યું છે લીંબડી શે'ર રે!
બૂડ તો બઉ ભારે,
તાણ્યાં તાણ્યાં વા'લીડાનાં ચીર રે!
બૂડ તો બઉ ભારે.

પાણીના પ્રવાહના સ્વભાવનું દર્શન કરાવતાં કરાવતાં કવિએ તેમાં પ્રણયભાવને રોપી દીધો. આ કાવ્યો માત્ર સ્થાનીય રંગોને ચીતરવા જ લખાતાં હોય છે એવું નથી, પણ તેમને કદીક પશ્ચાદ્‌ભૂમાં રાખીને, તો કદીક તેમને જ પ્રાધાન્ય આપીને કવિ તેનું આલેખન કરતો હોય છે.

સ્થાનીય રંગોમાં વિશેષ ઉમેરણ કરે છે તે તે સ્થાનમાં વસતા સ્થાનિક વીરો(Local heroes)નાં પરાક્રમનાં કથાગીતો(Ballads). "રઢિયાળી રાત"નાં ગીતોમાં આવાં ગીતો છે. પઢારોના મનમાં આવી વસે છે તેમના ગામના સુખી કનુભા, લીંબડીના રાજકુંવરે કરેલા શિકારનો પ્રસંગ, શિયાળ ગામમાં સર્વોદય કેન્દ્ર શરૂ થયું ને નાનકડા બંગલા જેવું મકાન બંધાયું એ ઘટના, એ બંગલાના બંધાવનાર છોટુભાઈ, ને બકરાણા ગામનો જીવુભા ઠાકોર.

તેમણે કનુભા સુખીનું ગીત જોડ્યું :

ડેલીએ ડેલીએ રે! કનુભાના ડાયરા,
કસુંબાની ઊડે રે, છાકમછોળ રે! ....કનુભા સુખી!
ડંકો દેવડાવ્યો રે, ભાલ દેશમાં!
નામ આખું રાખ્યું છે ભાલ દેશમાં;

રેશ્મી ઘોડી કનુભાની રાંગમાં,
ઉપર માંડયાં પિત્તળિયાં પલાણ રે ....કનુભા સુખી !

બબ્બે જોટાની રફલ હાથમાં,
ભલે ઝૂલે ચાંદલિયો તરવાર;
પોલીસ પક્ષનો ટોટો રાખતા,
પચાસની રહી ગઈ છે હાર રે ! ....કનુભા સુખી !

માથે રેશમી ફેંટો કનુભા બાંધતા,
રે ! હાથમાં નેતર સોટીનાં બાન રે ! ....કનુભા સુખી

કનુભાનું સુરેખ ચિત્ર લોકગીતના રચનારે આપી દીધું છે. શિયાળ ગામનો ગરાસિયો છોકરો બોલાવે છે કનુભાના વ્યક્તિત્વનું વિશેષ જે કંઈ છે તે અહીં આ ગીતના ગાનારે આલેખ્યું છે.

બકરાણાના છવુભએ બંગલો તો બંધાવ્યો, પણ સ્વભાવમાં જરા ખચ્ખિચપણું આથી મજૂરી ચૂકવવામાં તેણે કચાશ રાખી. બંગલો રૂપાળો થયો, તેનો ઉપભોગ છવુભા ભલે કરે; પણ છવુભને રૂપિયો વહાલો એનું શું ? આથી છવુભના આવા સ્વભાવની વિશેષતા પકડીએ એક ગીતમાં ગાયું:

બકરાણા વચ્ચે બંગલો, છવુભ !
બકરાણા વચ્ચે તારો બંગલો,
છવુભને રૂપિયો વા'લો લાગે !

બસો ને બાર બારિયું, છવુભ !
બસો ને બાર બારિયું, છવુભ !
છવુભને રૂપિયો વા'લો લાગે !

બારીએ બેસીને દાતણુ કરજો, જીવુજી !
બારીએ બેસીને દાતણ કરજો, જીવુજી !
જીવુજીને રૂપિયે વા'લો લાગે !
બારીએ બેસીને ભોજન કરજો, જીવુજી !
બારીએ બેસીને ભોજન કરજો, જીવુજી !
જીવુજીને રૂપિયો વા'લો લાગે !

શિયાળ ગામના પાદરમાં સર્વોદય કાર્યકર શ્રી. છોટુભાઈએ રુસ્ટમ હાઉસનો બંગલો વેચાતો લીધો. તેમની સાથે તેમના સહકાર્યકરોમાં શ્રી. નવલભાઈ, શ્રી. મુનિ સંતબાલ, શાંતિભાઈ વગેરે પધારશે. તેમને મળવા માટે મોટર આવશે. તેને પણ તેઓ ભૂલી શકતા નથી. કેન્દ્રમાં વૈદકીય સારવાર કરનાર બહેનને પણ ગીતમાં સ્થાન આપ્યું છે. ગીત જ જુઓ :

એ ગામના ઝાંપલે છોટુભાનો બંગલો,
બંગલે લીલાને પીળા નેજા હોય રે !
એ ભલો બનાવ્યો તમે બંગલો.
એ બંગલાની બારિયુંમાં કોણુ કોણુ બેસે ?
બંગલામાં બેસશે નવલભાઈ સાહેબ........છોટુભા સેવક
એ ભલો બનાવ્યો તમે બંગલો.
બંગલે મોટા મા'રાજ પધારાશે.
લેશે લેશે ગરીબ માણસુંની ખબર........છોટુભા સેવક
એ ભલો બનાવ્યો તમે બંગલો,
બંગલે લીલાપીળા ખટારા આવશે,
મહીં ભરેલાં કંઈ બાજરી કેરાં બીજ રે !........છોટુભા સેવક

એ ભલો બનાવ્યો તમે બગલો
એ જોયા જોયા વડોદરાના વૈદડા
ના’વે ના’વે મારી કાશીબે’નના તોલ રે!
એ ભલો બનાવ્યો તમે બગલો
એ રોઝી ઘોડી લઈ શાંતિભાઈ આવિયા,
લેશે લેશે બગલાની ઓળખ . છોટુભા સેવક
એ ભલો બનાવ્યો તમે બગલો

એ પ્રદેશના ઠાકોરને જૂનાગઢની જેલમાં પુરાવુ પડ્યુ તેના પર પણ પહાડની સહાનુભૂતિ રેલાણી તેમણે ગાયું

એ જીવણજી ઠાકોર, કાયા મેલી રે, જૂનાની જેલમા!
ઘરે રે, પે’રતો તું ધોતિયા,
જેલખાનામા પે’રવી ટૂંકી ચડીયુ રે!
જીવણજી ઠાકોર!
કાયા રે, મેલી જૂનાની જેલમા!
ઘરે રે, સૂતો’તો જીવણજી ઢાલિયે,
જેલખાનામાં સોય પથારી હોય છે;
જીવણજી ઠાકોર!
કાયા રે! મેલી જૂનાની જેલમા
ઘરે રે, ખાતો’તો જીવણજી બાજરો,
જેલખાનામા આવી ખોરી જાર રે,
જીવણજી ઠાકોર!
કાયા રે! મેલી જૂનાની જેલમા!

જીવણ ઠાકોરના આ લોકગીતમાં કવિ માનવમાંના અનુકંપા, સહાનુભૂતિ અને દયાના ભાવને "કાયા રે! મેલી જૂનાની જેલમાં"

લખીને કેટલી હદે જાગ્રત કરે છે! અને સાહિત્યદૃષ્ટિએ જો તેનું પૃથક્કરણ કરવાનું હોય તો લોકકવિએ તેમાં વિરોધવાક્યો સામસામાં મૂકીને કેવું ફક્કડ કાવ્યનું નિરૂપણ કર્યું છે! કાવ્યના સિદ્ધાંતોથી અજ્ઞ એવા કવિઓ જ આના સર્જક છે તેની તો કોઈ ના નહિ કહી શકે. વળી તેમાં જીવુજીના જીવનમાં કવિએ સ્થાનીય રંગો ફક્કડ અદાથી પૂર્યા છે.

પઢારના લોકો જેમ વીરપૂજક છે તેમ તેમના પ્રદેશમાં બનેલા નાનકડા રોમાંચક પ્રસંગને કાવ્યત્વે ભીંજવીને નાટ્યાત્મક પદ્ધતિએ તેનું નિરૂપણ કરવાનું પણ તેઓ જાણે છે. આ લોકગીત જુઓ:

છસોનો સાંઢિયો લીધો સારણિયે,
છસોનો સાંઢિયો લીધો!
રાણિયાના છોકરે છસોનો સાંઢિયો લીધો રે!
ઘીના તે ભાડા ભરિયા સારણિયા,
ઘીના તે ભાડા ભરિયા રે!
અધવચ્ચે લૂંટાણો સારણિયો,
અધવચ્ચે લૂંટાણો સારણિયો રે!
સારણિયાનો છોકરો અધવચ્ચે લૂંટાણો રે!
બાપ તે વાંહે હાલ્યો,
સારણિયાના છોકરાનો બાપ તે વાંહે હાલ્યો રે!
સારણિયાના છોકરાનો બાપ તે વાંહે હાલે રે!
મા તે માથાં ચૂંટે,
સારણિયાના છોકરાની મા માથાં ચૂંટે રે!
સારણિયાના છોકરાની મા માથાં ચૂંટે રે!
લીંબડીની કેદ્યું પડી રે!
સારણિયાના છોકરાને લીંબડીની કેદ્યું પડી રે!

સારણિયાના છોકરાને લીંબડીની કેદ્યું પડી રે !
શાથી રઈને કેદ્યું છૂટ્યું ?
સારણિયાના છોકરાને શાથી રઈને કેદ્યું છૂટ્યું રે ?
સારણિયાના છોકરાને શાથી રઈને કેદ્યું છૂટ્યું રે ?

શિયાળની બાજુમાં અગોદરા ચારણનું ગામ છે. તે ગામના કોઈ ચારણપુત્રની અવદશાને તેઓએ ગાઈ હશે ? ચારણના છોકરાને શાથી કેદ પડી ? તે તો લૂંટાયો હતો, તો સજાને પાત્ર શાથી થયો ? પઢારના મનમાં આ પ્રસંગે પ્રશ્ન પેદા કર્યો અને તેનો ઉત્તર તેમને ન જડ્યો, પણ પાછો ચારણનો છોકરો કેદમાંથી છૂટીને બહાર આવ્યો ત્યારે પણ તે જ પ્રશ્ન જન્મ્યો. લોકકવિ સમૂહના ધબકારા ઝીલતા હોય તેવું લાગે છે. વિશેષે તે લખતા હોય છે સમૂહ (mass)ના કાજે. લોકકવિ પોતાના વ્યક્તિત્વને ઢંઢાડીને અન્ય લોકોને કાજે જ જાણે કૃતિ રચતા ન હોય તેવું ભાસે છે સૌનો પ્રસંગ લઈને સૌને તે અર્પણ કરે છે ને છતાં ય તેમા કાવ્યત્વ અને રસ જાળવવા તે સતત મથતો હોય છે.

ચારણનો છોકરો લૂંટાગનો શિકાર બન્યો તેમ ધનસ્યામ સાહેબનો શિકાર બન્યો એક સુન્દર. તેનું હૃબહુ ચિત્ર નીચેના કાવ્યમાં જોશો :

આગળ ઘનશ્યામ સાહેબનાં ઘોડલાં રે !
વાંહે વાહે પઢારની ટોળી,
સુરીંગડો સુન્દરને મારવો દોયલો છે.
ગયા વેરાસર નામના તળાવડે,
ઘેરી લીધો સુન્દરને ત્યાંય;
સુરીંગડો સુન્દરને મારવો દોયલો છે.
પડખે પરતાપસ્રંગ પડકાર કરે,
ભેળા મોનુભા સખદાર,
સુરીંગડો સુન્દરને મારવો દોયલો છે.

ત્યાં તો કુતરાએ ડાડવાળો દીધી,
ઘોડી સવિતાએ સપડાવ્યો,
સુરીંગડા સુન્વરને મારવો હોયલો છે.
હવે પેલો તે ભાલો કોણે ભોંકયો ?
નાનભાઈ સા'બે નાખ્યો નાચ્યે,
સુરીંગડા સુન્વરને મારવો હોયલો છે.
પેલો પગના ડાબોટે પાડી દીધો,
ત્યાં તો લૂલો થયો તત્કાળ,
સુરીંગડા સુન્વરને મારવો હોયલો છે.
હવે પેલો તે ભાલો ભાંગી તૂટયો,
હવે બીજો લાવો તત્કાળ,
સુરીંગડા સુન્વરને મારવો હોયલો છે.
ત્યાં તો માધુભાએ માકારો કર્યો,
"હવે મરેલાંને શું મારો ?"
સુરીંગડા સુન્વરને મારવો હોયલો છે.

જેલમાં પુરાવું એ પઢારના જીવનમાં બહુજ કલંકિત પ્રસંગ લેખાય છે. મગનિયાને જેલમાં જવુ પડયુ તો જાણે આખી જાતિનો કકળાટ ન હોય તેવુ એક ગીત તેમણે કરી નાખ્યુ :

ત્રાડીના મારગે આવે મગનિયો
ત્રાડીના મારગે આવે રે લોલ !
મથાળે કૂંઝડી બોલી મગનિયાને
મથાળે કૂંઝડી બોલી રે લોલ !
પાછી મોડે બાંધ્યો મગનિયાને
પાછી મોડે બાંધ્યો રે લોલ !

ધોળકાની મોટરું છૂટી,
એ ધોળકાની મોટરું છૂટી રે લોલ!
ધોળકાની જેલમાં પૂર્યો,
એ ધોળકાની જેલમાં પૂર્યો રે લોલ!
નેતરની સોટીએ માર્યો,
મગનિયાને નેતરની સોટીએ માર્યો રે લોલ!
ધોડો ઈનાં મા ને બાપ,
ધોડો, મગનિયાને માર્યો રે લોલ!
ધોડો ઈના ભાઈ ને બાપ,
ધોડો, મગનિયાને માર્યો રે લોલ!

આ છે અત્યંત નાનકડો પણ તેમના જ જીવનનો, તેમના જ ચિત્તની વેદના વ્યક્ત કરતો, પ્રસંગ. તેમાં સ્થાનીય રંગો છે એ કહેવાની જરૂર ખરી?

અને આ લોકકવિ હવાનાં સ્પંદનો પણ સંવેદી શકે તો રાષ્ટ્રની ઊથલપાથલોને કેમ ન અનુભવી શકે? જમીનદારો ને બાપુઓનો અમલ ગયો. તેમણે પોતાના શાસનકાળમાં તેમનાંય ગીત ગાયાં. કોંગ્રેસ આવી ને તેમનાં પણ ગીતો ગાયા તેમાં તેમણે જે જોયું તે જ ગાયું. તેમનાં ગીતોમાં કલ્પના કરતાં વિશેષ પ્રાધાન્ય છે વાસ્તવને. અને તેથી કૉંગ્રેસનું ગીત ગાતાં ગાય:

"હાર્યો ઓલો રામસંગ, હાર્યો ઓલો રૂપસંગ,
હાર્યો ઓલો ધંધુકાવાળો રે લોલ!
કેશુભાઈની મેડીએ કોણ કોણ ઊતર્યા?
"કૉંગ્રેસ બાપુ" રે લોલ!
પાંચસેં પાદરવાળા, કૉંગ્રેસ બાપુ, છસેં ખેતરવાળા;
હાર્યો ઓલો રામસંગ, હાર્યો ઓલો રૂપસંગ,

હાર્યો ઓલો ધંધુકાવાળો રે લોલ!
લીલડી ઘોડીવાળા, કોંગ્રેસ બાપુ.
હાર્યો ઓલો રામસંગ, હાર્યો ઓલો રૂપસંગ,
હાર્યો ઓલો ધંધુકાવાળો રે લોલ!

ઘોડી પર પનાણુ નાખીને ફરનાર રામસંગ ને રૂપસંગ હાર્યા, ધંધુકાની ગોરી સ્લ્તનત પણ હારી, કોંગ્રેસ બાપુનો અમલ સ્થપાયો અને તેમણે પણ "લીલડી" અને "રોઝી" ઘોડીઓ રાખી સામત શાહીમાં તંત્રના સંચાલકો કેશુભાઈની મેડીએ આવીને ઊતરતા અને હવે "કોંગ્રેસ બાપુ" પણ એ જ મેડીએ ઊતરે છે! નર્યું વાસ્તવ જ તેમણે ઠાલવ્યુ છે! જે તેઓ નિરખે છે, અનુભવે છે સવેદે છે તેજ તેઓ કાવ્યમાં નિરૂપે છે આ સ્થાનીય રંગો તેમને મન કવિતાવિષય બનવા પામે છે કેમકે તેમના સવેદનો તેમાંથીજ જન્મ્યા હોય છે અને તેમાં જ શમી જાય છે એ બે વચ્ચેના ગાળાની ઊર્મિઓ પાછી કવિતારૂપે સર્જન પામે છે ઇંગ્લાંડની સ્ત્રી–નવલકથાકાર ફીલિસ બેન્ટ લીએ કહ્યુ કે 'મારી નવલકથામાં હુ પ્રસગનું કાવ્યતત્ત્વ લાવવા મથુ છુ વીશ–પચીશ વર્ષના ગાળાના સમયમાં માનવમાં જે પરિવર્તન થાય છે તેજ મારે મન સાચુ જીવન છે તેના નિરૂપણમા હુ રાચુ છુ' પહાડોનો લોકકવિ પણ જાણે આ કથનને વરી ચૂકયો હોય તેવુ નથી ભાસતુ?

અને એ કથવા મ ટે જરૂરી સામગ્રી કવિ ધરતીમાંથી મેળવે છે આથી સ્વાભાવિકપણે અનેક સ્થાનીય રંગો તેમનાં ગીતોમાં મળવાનાજ. પણ સાથે એ પણ નોંધપાત્ર છે કે તે સ્થાનીય રંગો માત્ર જીવનના લીસોટા બનવા નથી પામ્યા, પણ તેમાં ય જીવતા અને જાગતા, શ્વાસ લેતા અને ઊર્મિઓ અનુભવતા માનવીઓના હૈયાંઓને ઠાલવી દીધાં છે એ કારણેજ તેમને આટલી વિગતે જોવાના રહે છે ને?



પરબ્ય માથે આવવાનું નો ભૂલતા !

'ગીતો મંડાવશો ?'

'ગાણ્યાં ઉતરાવશો ?' મેં ફરી પૂછ્યું.

કોઈએ મને જવાબ ન આપ્યો.

'રાહડા લખાવશો ?'

'અમારા તો સાદ સુકાઈ ગયા છે.'

'સાદ સુકાઈ ગયા છે ?'

'બબ્બે કાળ...પડ્યા છે. બબ્બે કાળની કસોટીએ ચડ્યાં છીએ, પછી સાદ સુકાઈ જ જાય ને ? પણ સારા વરસે કંઠ ઝાલ્યો ય ન રે'. આ દીકરીયુંને સાદ દેવા ય નો જવું પડે.'

શિયાળ ગામની પઢાર નાતના આગેવાન વિહા ગંગદા મારી સાથે વાતે વળગ્યા હતા. જામેલી રાત ધમ્મર ગતિએ આગળ વધ્યે જતી હતી. મેં કહ્યું: 'પણ દિવાળીબહેને તો અમને તેમના ખેતરકાંઠે ગયા ત્યારે કહ્યું હતું કે રાતે વાસમાં આવજો, જરૂર ગાણ્યાં મંડાવશું.'

'દિવાળી ?' અમે તેના ઘરના છાપરાની ઓસરીમાં બેઠા બેઠા ગપાટા મારતા હતા. વિહા ગંગદાએ કહ્યું: 'હોય જ નૈં. દિવાળી કેં'જ નૈં.' તે આત્મવિશ્વાસથી બોલ્યો. 'અમે જાણીં ને કે દિવાળી ગાણું ઉપાડે જ નૈં ?'

મારી સાથે બીજા મિત્રો હતા, તેમણે દિવાળીના ઘરનું ત્રણ ચાર વાર કમાડ ખખડાવ્યું ત્યારે અંદરથી જ બોલી: 'મારું તો માથું અંધન દુખે છે.'

'એ નૈ ઉતરાવે ' વિહા ગગદા દહતાથી બોલ્યો, ' એને તો નાતની આડી છે ઈ કોઈ દિ' નૈ મડાવે. પણ તમને કઈ ખાલી હાથે પાછા કઢાય ?' તેણે બૂમ પાડી : ' અલી વા'લી ! ' તે મારી સામે જોવા લાગ્યો ' વા'લી આપણા ભાથી હરાયાની બોન અને જેશંગ ભગતની ઘરવાળી. ધણીધણિયાણીનો જીવ ભારે ધરમમાં છે.' તેણે ફરી બૂમ પાડી : ' વા'લી ઓ ! '

એક જ ઓશરીએ બીજુ ઘર છે તેનો ખડ ખૂલ્યો અને શરમાળ નેશ્યામળી ઔંદા ખડમાથી બહાર આવી. તેને જોઈને વિહા ગગદા બોલ્યો 'ભઈને થોડાંક ગાણાં મડાવવાં પડશે. છોડીયુંને બકારો ને ! (બોલાવો)' તે વધુ શરમાઈ અને અમારી આજુબાજુ બેઠેલ મોટિયાર જુવાનોને કહ્યું : 'ઓલી હેતુડી, કે રાજુડીને સાકરી લાવ ને ! ઊઠ ' અને તે દાવણી બનીને બોલી ' અલ્યા છોકરાવ, કઈક મડાવો!' તેઓ જાણે મારી નિરાધાર સ્થિતિ પર દયા ખાતા હોય તેમ ખોબામાં મોં ઢાંકીને ખડખડાટ હસવા લાગ્યા. ત્યાં તો વૈયાનું ટોળુ આવે તેમ બારપદર કિશોરીઓ આવી હિતુ, રાજુ, કુવર, વા'લુ, ધોળી, ફૂલ ..

વા'લીમે'ન બોલી · ' વા'લામૂઈઓ, ગાણાં મડાવવાં પડશે '

આ તો એકબીજીઓના ખભા પર માથાં નાખી, આંખ આડી હથેવીઓ ઢાંકી હસીહસીને બોલવા લાગી · ' ઓઢણાં અલાવો '

' સારા વરસે મગાય આપણને વરસ કાઠુ લાગે, તો ઈમિનેય ..'
ખી...ખી...ખી...ખી...ખી ખી
' તે હવે હસવુ મેલો ને ! '
ખી ખી .ખી ..ખી
' તે શુ ધારી છે, હિતુડી ? '
' શરમ લાગે છે '

'સારુ ' બોલી વાલીમેન ઊભી થઈ ઘરમાંથી ખાટલો લાવી વૈર્યાંના ટોળા અને અમારી વચ્ચે ઊભો તેણે મૂક્યો અને તેઓ ખાટલા પાછળ લપાઈને બેઠાં વાલીમેને શું મીઠા સાદે ગીત ઉપાડ્યું !

મીરાબઈ ઓતમકળમા અવતર્યાં રે
મીરાબઈ ઓતમકળ અજવાળો, સાચા બેલી રે ગિરધારી,
દાદે મારે સરપનો સૂડલો મોકલ્યો રે,
દાદે મારે સરપનો સૂડલો મોકલ્યો રે,
આલજો મીરાબઈને હાથ, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
આલજો મીરાબઈને હાથ, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
મીરાબઈએ સરપના કર્યાં બે બેરખા રે,
મીરાબઈએ સરપના કર્યાં બે બેરખા રે,
લીધી તળશીની માળાય, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
મીરાબઈ ઓતમકળમા અવતર્યાં રે,
મીરાબઈ ઓતમકળ અજવાળે, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
દાદે મારે વખના કટોરા મોકલ્યા રે,
આલજો મીરાબઈને હાથ, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
આલજો મીરાબઈને હાથ, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
મીરાબઈ વાટી ઘોળીને પીઓ જિયા રે,
મીરાબઈએ સમર્યાં શરીભગવાન, સાચા બેલી રે ગિરધારી !
મીરાબઈ ઓતમકળમા અવતર્યાં રે,

'લ્યો ચીતરીઓ અમને તો કાંઈ શરમ નો લાગી ' વાલીમેન ખાટલા પછવાડેથી ઊભી થઈ હવે ગડી ઝ' મનાવવા '

'પણ હૈયે ચઢવા દો ને !'

'હાં, પરમના રાસડા...લ્યો ઉપાડો.' બધી કિશોરીઓ સાથે વા'લીએ'ને રાસડો ઉપાડ્યો :

ચાંદો ઊગ્યો પૂનમ રાતનો જી રે!
ચાંદો ઊગ્યો પૂનમ રાતનો જી રે!
ચાંદાનાં ઓઝાં તેજ રે, રાજ, ગોકુળમાં વેલા પધારજો જી રે!
તાંબાકૂંડી જળે ભરી રે!
ઝિલણિયાં તળાવ જઈશ રે, રાજ, ગોકુળમાં વે'લા પધારજો
જી રે!

ચાંદો ઊગ્યો પૂનમ રાતનો જી રે,
ચાંદાનાં ઓઝાં તેજ રે, રાજ, ગોકુળમાં વે'લા પધારજો જી રે!

'અને છોડીયું. હવે જેડિયાનો મેળો મંડાવો.' કંઠની મીઠી હલકે તેમણે જેડિયાનો મેળો શરૂ કર્યો :

જેડિયાનો મેળો, રણછોડજીનો મેળો,
મારી સાસુ કે' છે કે વહુ, નથી જાવું મેળે!
છાનીમાની રે'જે, ચૂલે બેસી રે'જે, રોટલા ઘડી રે'જે,
મારે જાવું છે મેળે.
મારો જેઠ કે' છે કે વહુ, નથી જાવું મેળે!
છાનીમાની રે'જે, સાંતીડું જોડી જાજે,
મારે જાવુ છે મેળે.
મારી નણંદ કે' છે, વહુ, નથી જાવુ મેળે.
જેડિયાનો મેળો, રણછોડજીનો મેળો, મારે જાવુ છે મેળે!'

ધમણની જેમ હાંફતી કિશોરીઓ થાકલો ખાવા થભી અને ત્યાં તો વા'લીએ'ને કહ્યું : 'દિયરિયો ભાભીને વનમાં લઈ જાય છે તે!' તેણે ઉપાડ્યુ.

ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવીં,
ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવીં,
વનમાં કાંટડા દિવરિયા !
નાના દિવરિયે સડક બંધાવી,
સડકે ચાલો રે ભાભલડી !
ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવીં,
વનમાં તડકા રે, દિવરિયા !
નાના દિવરિયે આબો રોપાવ્યો,
છાંયે બેસે રે ભાભલડી !
ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવીં,
ચાલો ભાભલડી વનમાં જાવીં.
વનમાં તરસ્યાં રે, દિવરિયા,
નાના દિવરિયે પરબ બંધાવી,
પાણી પીજે રે ભાભલડી !
પાણી પીજે રે ભાભલડી !
ચાલો ભભલડી, વનમાં જાવીં,
ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવીં.
વનમાં હું જવ છું, દિવરિયા,
વનમાં ભૂખું લાગે, દિવરિયા,
નાના દિવરિયે કદોઈ અણાવ્યો.
લાડુ જમજે રે, ભાભલડી,
લાડુ જમજે રે, ભાભલડી,
ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવીં.
વનમાં કાંટડા છે રે, દિવરિયા,

નાના દિવરિયે મોચી બોલાવ્યો,
મોજડી પે'રશે રે લાભલડી.

આખા પદાગ્વાસને તેમણે ગજવી મૂક્યો અને ખાટલામાં સૂતેલ બીજી પણ પદાર યુવતિઓ ઘેલી થતી થતી વાસના આ ખોરડા તરફ ધસી ઓશરીમાં નાનકડું સુંદરીટોળું જામ્યું વા'લીમે'ન જરાક મરકી પડી: 'તમે ઓદણાં લેજો. આ સધીઓને દાકજો, પણ સાના વરસે. 'અલ્યા...' તેણે બીજું ગીત ઉપાડ્યું:

સોના વાટકડી રે, કેશર ઘોળ્યાં, વા'લમિયા !
નાના દિયરિયે રે, રંગમાં રોળ્યાં, વા'લમિયા !
ઘરે જાશું તો રે, સાસુ મારી વઢશે, વા'લમિયા !
સાસુજી દેશે ગાળ રે, વેગળા શે'ને, વા'લમિયા !
સોના વાડકડી રે, કેશર ઘોળ્યાં, વા'લમિયા !
નાના દિયરિયે રે, રગમાં રોળ્યાં, વા'લમિયા !
ઘરે જાશું તો રે, જેઠ મારો વઢશે, વા'લમિયા !
જેઠાણી દેશે ગાળ રે, વેગળા શે'ને, વા'લમિયા !
સોના વાટકડી રે, કેશર ઘોળ્યાં વા'લમિયા !
નાના દિયરિયે રે, રગમા રોળ્યાં, વા'લમિયા !

'તમારાં કાંઈ દુખશે, ભઈ ! બોલો મડાવું ?' મે ડોકું ધુણાવીને હા પાડી: 'અલી છોડીયુ, મડાવો પારસપીપળો'

ઠાકોરિયા, રજવાડાને રે પાદર પારસપીપળો,
ઠાકોરિયા, હીંચકો હાલે ને રે દોરી ધુરસકે,
ઠાકોરિયા, ગ્યાં રે બધાવુ ડોલર હીંચકો ?
ઠાકોરિયા, હીંચકો હાલે ને રે દોરી ધુરસકે,
ઠાકોરિયા, રજવાડાને પાદર પારસપીપળો,

ઠાકોરિયા, હીંચકો હાલે ને રે દોરી ધ્રુસકે,
ઠાકોરિયા, હીચકો હાલે ને રે દોરી ધ્રુસકે.
ઠાકોરિયા, ક્યાં રે બધાવુ ડોલર હીચકો ?

'ઓઢિયુ જામુડાનું ગાણુ કાગે'

જામુડો ઊગ્યો રે રસિયા, મો'લમાં રે !
જામુડાની ડાળખી લળી લળી જાય,
જાણુ મને જામુડો રળિયામણો રે !
જામુડાની બેટડી, તું મારી બે'નડી,
બે'ન, મને રે માગ્યાં કડલાં આલ્ય,
પરણે ગૂર્દાનો ગરાસિયો રે !
જામુડો ઊગ્યો રે રસિયા, મો'લમાં રે !
જામુડાની ડાળખી લળી લળી જાય,
જાણુ મને જામુડો રળિયામણો રે !
જામુડાની બેટડી, તું મારી બે'નડી,
બે'ન, મને રે માગ્યો ઘાઘરો આલ્ય,
પરણે ગૂર્દાનો ગરાસિયો રે
જામુડો ઊગ્યો રે રસિયા, મો'લમા રે !

'ગજુડી, હવે તુ વડલો મડાવ્ય'

દાદા વડલો ફૂટ્યો રે, લાબા પાંદડે,
દાદા વડલો ફાટ્યો રે, લાબા પાંદડે !
ઇની ડાળખી ઘેરગંભીર કે રંગમાં,
લીધો રે હજારી ઢોલા રૂસણો !
અમે દાતણિયાં કરીને હાલ્યા હીંચવા,
તો ચે ને આલ્યો નુગરો બોલ, કે રંગમાં,

લીધો રે હજારી ઢાલા રૂસણો!
અમે નાવણિયાં કરીને હાલ્યાં હીંચવા,
તોયે ને આલ્યો નુગરો બોલ, કે રંગમાં,
લીધો રે હજારી ઢાલા રૂસણો!
અમે ભોજનિયાં કરીને હાલ્યાં હીંચવા,
તોયે ને આલ્યો નુગરો બોલ, કે રંગમાં,
લીધો રે હજારી ઢાલા રૂસણો!
અમે પોઢણિયાં કરીને ચાલી નીસર્યાં,
તો યે ને આલ્યો નુગરો બોલ, કે રંગમાં,
લીધો રે હજારી ઢાલા રૂસણો!

'હજુ ઓલ્યું, મડાવવાનું રૂયું! 'વા'લો મારો હીંચે રે!''

સોનાની સાંકળે બાંધ્યો હીંડાળો, આંબાની ડાળ્ય;
રૂપાનાં કડાં ચાર, વા'લો હીંચે રે આંબાની ડાળ્ય!
અવળબવળ ઓરડી, આંબાની ડાળ્ય;
આવળિયાં દાતણ દઈશ, વા'લો મ રો હીંચે રે,
આંબાની ડાળ્ય!

સોનાની સાંકળે બાંધ્યો હીંડાળો, આંબાની ડાળ્ય;
રૂપાનાં કડાં ચાર, વા'લો મારો હીંચે રે, આંબાની ડાળ્ય,
તરાબાંકૂડીશુ જળે ભરી, આંબાની ડાળ્ય,
ઝિલણિયા તળાવે જઈશ, વા'લો મારો હીંચે રે,
આંબાની ડાળ્ય!

સોનાની સાંકળે બાંધ્યો હીંડાળો, આંબાની ડાળ્ય,
રૂપાનાં કડાં ચાર, વા'લો મારો હીંચે રે, આંબાની ડાળ્ય!

શેર સુંવાળી લાપસી, આંબાની ડાળ્ય,
સાકરિયા કંસાર દઈશ, આંબાની ડાળ્ય;
સોનાની સાંકળે બાંધ્યો હીંડાળો, આંબાની ડાળ્ય!
રૂપાનાં કડાં ચાર, વા'લો મારો હીંચે રે, આંબાની ડાળ્ય!
ઢોલણુ આલીશ ઢોલિયો, આંબાની ડાળ્ય,
હીંડોળા ખાટયું દઈશ, વા'લો મારો હીંચે રે;
આંબાની ડાળ્ય!
સોનાની સાંકળે બાંધ્યો હીંડાળો, આંબાની ડાળ્ય;
રૂપાનાં કડાં ચાર, વા'લો મારો હીંચે રે આંબાની ડાળ્ય!

'હજુય માંડવું છે, ભઈ!'
'આ તો શું મંડાવ્યાં છે?'
'મોતડી, ઓલ્યું મોતીવાળું!'

ક્યાં ગયું, મારું મોતી,
મોતી વિનાની રોતી, મચકામાં તોડિયાં!

હું બાર વરસની છોડી,
મારી ઉંમર થઈ છે થોડી;
મારી કોણે તોડી જોડી, મચકામાં તોડિયાં!

હું ઢોલિયેથી ઢળી ગઈ,
પલંગ નીચે પડી ગઈ,
આ ક્યાં ગ્યો મારો વાલો, મચકામાં તોડિયાં!

ક્યાં ગયું મારું મોતી,
મોતી વિનાની રોતી, ચમકામાં તોડિયાં!

'તમે તો નથી થાક્યા ને, ભઈ?' વા'લીએ મને પૂછ્યું.

'તમે તમારે મંડાવ્ય રાખો ને!'

'તારે . ?' તે જરા વિમાસણમાં પડી ને તરતજ ગીત તેના હૈયે આવ્યુ ને શરૂ કર્યું :

એકલડી ઊભી હું પનઘટની બારીએ,
કોઈ મને બેડલું ચડાવો.
અજાણ્યા ગામમાં ઓળખતું નથી.
હું ય અજાણી, તે ય અજાણ્યા,
કોઈ મને બેડલું ચડાવો,
નાજુકડી નાર, માથે બેડાનો ભાર,
કોઈ મને બેડલું ચડાવો,
એકલડી ઊભી હું પનઘટની બારીએ,
કોઈ મને બેડલું ચડાવો.

'ભઈ, હવે ઝાઝાં ને મડાવીએ સવારે વે'લા ઊઠીને ઢોકવે જાવુ પડશે ને ત્યા આખો દિ' તડકામાં કૂવામાંથી ચડવા કાઢવાના. ઘડી પો'ર યાકલો તો જોયે ને? છોડીયુ, રણઝણ રણઝણ રે ઢુંડો...'

તરત જ યુવતિએ ગીતને ઉપાડ્યુ ·

રણઝણ રે ઢુંડો ફેરિયો,
રણઝણ રે ઢુંડો ફેરિયો,
સાસુ જાણે વહુ કાતે રે, મારી સૈયરું શરમાણી!
વહુ રે વહુ, અમને કોકડા વતાડો,
કોકડાનાં લીધાં રોકડાં રે, મારી સૈયરું શરમાણી!
વહુ રે વહુ, અમને રોકડાં વતાડો,
રોકડાની લીધી ઝારી રે, મારી સૈયરુ શરમાણી!

વહુ રે વહુ, અમને ઝારી વતાડો,
ઝારીનાં થ્યાં છે રે કટકાંરે, મારી સૈયરું શરમાણી!
વહુ રે વહુ, અમને કટકાં વતાડો,
કટકાં નાખ્યાં ઉકરડે રે, મારી સૈયરું શરમાણી!
વહુ રે વહુ, અમને ઉકરડો વતાડો,
ઉકરડો નાખ્યો સાભર નદીએ રે, મારી સૈયરું
શરમાણી!

વહુ રે વહુ, અમને સાભર વતાડો,
સાસુડી બૂડી ને સાડલો તરિયો,
જો જો નગરીનાં લોકો રે, મારી સૈયરું શરમાણી.

'હવે નૈં મંડાવીએ.' વા'લીબે'ન જ આળસ મરડતી બોલી. તમારે અમારાં ગાણાં, રાસડા માંડવાં હોય તો કાં તો પરબમાં, કાં તો દિવાળી માથે, કે કાં તો અખાતરીજે આવજો. જો જો. પછી કોણ પાછા પડે છે! તમે કે અમે!'

ઊડણ ચકલીઓની જેમ આવજો કહેવાની વાટ જોયા વગર યુવતિઓ અને કિશોરી ચાલી ગઈ, પણ તેમાંથી બેચાર ઝીણા સાદે બોલી: 'પણ ખાલી હાથે નો આવતા. અમારું દાપું લેતા આવજો. એકુકુ ઓઢણું!'

'જાવ, જાવ હવે ચીબરીયું! એવી છીછરા પેટની શું થાતી હશો?'
ખી...ખી ..ખી...ખી...!

હાથમાં ફાનસ લઈને હું ઊભો થયો ત્યારે વા'લીબે'ને વળી વળીને મને કહ્યું: 'પરબ માથે આવવાનું નો ભૂલતા. તમે ગત ને દિ' ગાણાં માંડયા જ કરજો તે દિ' ધરઈ ધરઈને આ સૌ ગાવાનાં. તમારે કે'વું જ નૈં પડે. ત રે તો ગળું ઊઘડી ગ્યું હોય છે.'

આકાશમાં નજર ફેરતો જતો હતો, ત્યારે આ ઊડણ ચકલીઓ જેવું જ તારાનું ઝૂમખું પણ જાણે ગીતો ગાઈને આકાશને પ્રફુલ્લ ન કરતું હોય તેવું મને ભાસ્યું અને સાથે સાથે પેલો રણકાર કાનના ઢોલ સાથે પડ્યો: 'પરમ માથે આવવાનું નો ભૂલતા.'



કિતના શૂરવીર હૈ દિલ !

શિષ્ટ સમાજ અને ભદ્રલોક છારા જાતિને પિછાને છે માત્ર ચોર, ડાકુ, ખિસ્સાકાતરુ અને ગઠિયાના રૂપે જ આ બધી તે જાતિ માટેની એકતરફી કલ્પના છે? ઊભા ઊભા ભણેગણેલ અને શિષ્ટ સમાજે છારા જાતિ માટે કરેલ છે તે ચોર બન્યો હોય તો શા માટે? છારાને એ ધંધા ગમે છે ખરો? તે ડાકુ ચોર લૂટારા ખિસ્સાકાતરુ ચીલઝડપ કરનારમાં દિલ છે ખરું? તે માનવી છે? તેનામાં માનવ હૃદય શું નથી? તેનામાં માનવીમાં છે તેવી મીઠી ને સુકોમળ લાગણીઓ છે ખરી? આવા પ્રશ્નો તે જાતિ માટે શિષ્ટ સમાજના માનવને કદીય થયા છે ખરા?

માનવનું આ ખોળિયુ બધાને તેના સર્જકે જેમ સરખુ આપ્યુ છે તેમ જે ચિત્તનું સર્જન કર્યું છે તેમાંય ગુણો અને અવગુણોય તેના સર્જકોએ સરખા મૂક્યા છે તેના વિકાસ સંયોગોને આધીન છે

શિષ્ટ સમાજનો કોઈ માનવી વધુ સંવેદનશીલ બની શકે અને ગીત જોડી શકે તો તે કવિ કહેવાય લોકો તેની કવિતા સાંભળે, વાંચે! ને ગાય ત્યારે સાંભળે અત્રે જે ગીત પ્રગટ થાય છે તે છારા યુવાન શ્રી શિવરામ કશનભાઈ ગારુંગેનું રચિત છે એ ગીતમાં તેનું સંવેદન શીલ માનસ વ્યક્ત થયુ છે તેના દિલમાં વસ્યાં છે તેની જાતિનાં અને સમાજનાં સુખ–દુખો તેના કંઠમાં હલક છે અને મીઠાશ છે તે ગુજરાતી ભાષામાં ય ગીતો રચે છે, દોહાઓ રચે છે! સાથે સાથે તેમના સમાજની અંદરનાં મનોમંથનો પણ તેમાં મૂકે છે

આ ગીતમાં છારાજાતિની તવારિખની આછી રૂપરેખા આપી છે, અને ભાવિની ઝંખના વ્યક્ત કરી છે છારાજાતિ મૂળ તો રાજ

સ્થાનની રજપૂત જાતિ છે, તે વાત ઈ. સ. ૧૯૩૧ ના ભાવનગર રાજની વસ્તીગણતરીના પુસ્તકમાં તેના લેખકે સ્પષ્ટ કરી છે. દુકાળો, પાણીની તંગી, વરસાદની ખેંચ, મુસલમાન રાજવીઓની ધર્મવટાળ-પ્રવૃત્તિ; આ બધાં કારણોથી આ લોકોએ આશ્રય લીધો જંગલોમાં, ડુંગરોમાં! આ જાતિનાં કેટલાંક કુળો ઉત્તર હિંદના પર્વતોમાં પણ જઈ વસ્યાં. કેટલાંક માળવાઉદેપુરના ડુંગરામાં. ગુજરાતના છારાઓ, આડોડિયાનો સ્થળાંતરનું સંશોધન કરવાનો દિવસ આવશે ત્યારે કદાચ આને 'ડેટા' તરીકે સ્વીકારવું પડશે ત્યાં તેઓ વનફળ ખાતા. પોષણના માટે તેઓ નાની ચોરીઓ–જેવી કે ધાનની અને પશુની કરતા. પણ તેઓ સંતાઈને જ રહેતા. ત્યાંથી તેઓ ગુજરાતમાં આવ્યા. તેઓ મૂળ તો ઓળખાતા હતા 'ભાતુ'ના નામથી. આ શબ્દ 'ભ્રાતૃ'માંથી આવ્યો હશે! આખા ય હિંદમાં વસતી આ જાતિનાં જુદા જુદા પ્રાંતમાં જુદાં જુદાં નામો છે. ગુજરાતમાં આ ભાતુ ઓળખાયા છારાના નામે.

ગુજરાતમાં તેઓ ગોધરાના રસ્તે થઈને ચરોતરમાં અને અમદાવાદ-માં આવ્યા. અમદાવાદમાં શરૂશરૂમાં રહેતા લાકડિયા પૂલ પાસે રહેતા. ત્યાંથી તેઓ રહેવા ગયા જૂના વાડજની સીમમાં, પણ તેમની પ્રવૃત્તિ શિષ્ટ સમાજના માટે બાધક દેખાઇ ત્યારે અંગ્રેજ સરકારે તેમના માટે કાંટાળા તારની વાડવાળુ 'સેટલમેન્ટ' બનાવ્યુ ને ત્યાં પૂર્યા, ઘેર્યા, ને નજરકેદ રાખ્યા. ગુનાહિત કોમ માટેની હાજરી આપવાની ૧૬ કલમ તેમના પર ઠોકી બેસાડી.

પણ ૧૩ મી ઓગસ્ટ '૪૯ ના રોજ તેમાંથી તેમને મુક્તિ મળી, ને આજે તે ફ્રી કોલોનીમાં કુબેરનગર આગળ રહે છે. હવે તો તેમને ઝંખના છે સ્વતંત્ર ભારતના આદર્શ નાગરિક બનવાની! પણ તો ય તેમનાં સુખદુઃખ તેમના દિલમાં ક્યારેક વસે છે અને ત્યારે આવી કોઇક કવિતા છારા શાયરના દિલમાંથી સરી પડે છે. પણ તેમાં છે ઝંખના, પસીનો પાડીને કમાઈ ખાવાની, ધંધાની માગણીની! શિષ્ટ

સમાજ હવે આ જાતિની વધુ નજીક આવીને તેને સમજે તો કેટલું સુંદર આમાંથી પરિણામ નીપજે!

ધંધા બિન હય મુશ્કીલ, કીતના શૂરવીર હય દિલ,
એ ન જાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
બાપદાદાને ચોરી બનાઈ, છોટે બચ્ચો તક ચોરી મનાઈ!

કર રહે હય જિગર, પણ રહે થે જંજીર,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
બાપુદાદાને જંગલ બનાયા, ઘોડે ગદ્ધે પે ડેરા જમાયા!

ફીર રહે થે જંગલ, કર રહે થે મંગલ,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
નદીનાળાંએ ગહરી બનાઈ, ઔરત બચ્ચોને દુખતો ઉઠાઈ!

કર રહે થે મંગલ, ફીર રહે થે જંગલ,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
મોજકનેજમે ડેરા જમાયા, માટીમાંસ કી હોળી મનાયા!

ટીખ રહે થે અંધારી, કર રહે થે ગુલતાની,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
લકડિયા પૂલસે રંગ જમાયા, જૂની વાડજ પે ડેરા લગાયા!

પડ રહી થી મેંટર, બન રહી થી સેંટર,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;
સોલા સીકસના રંગ જમાયા, ઘર ઘરમેં હાજરી લગાયા!

કટ ગયે થે જંગલ, કર રહે થે મંગલ,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;

ચોરી કર કે રંગ બતાયા, ધુળે જલગાંવ મેં ધકલાયા !
માત બહનકો ઠુકરાયા, અપની હાલત બિગડાયા,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;

તેરા અગસ્ટ કો આઝાદ બનાયા, ગાંધી બાપુકા આગયા મનાયા !
તેરંગી ઝંડા ચડાયા, સેન્ટલમેન્ટ છુડાયા,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના;

પંદર ઓગસ્ટ કો આઝાદ બનાયા, ફ્રી કોલોનીમે રંગ જમાયા !
કમા રહે યે માયા, ઉઠ રહીથી છાયા,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે જમાના;

કોંગ્રેસવાદીને રંગ જમાયા, ચોરી દારૂ સે અલગ બનાયા !
કર રહી હય સુધારા, બધ રહી હય મજદારા,
વો ભી થા જમાના, હાય હાય રે જમાના;

છારા મંડળને અરજ પુકારી, ઉનકા પેટકા કરે તો ગુજારા !
ભીલ કે કરેગે સુધારા, ભીલ જાય સહારા;
વો ભી હય જમાના, હાય હાય રે ઘેરા જમાના !



છારાનાં લોકગીતો

(૧)

લગ્નનાં ગીતો

ગણેસ શુંજારા ને પાનેરું મોટી,
પાનેરું મોટી ને વીરને મોતી રે,
મારા ગણુસે શુંજારા ને પાનેરું મોટી....
ગણુસે શુંજારા ને ફૂલડાંની માળા,
માળીની વાડીમાંનાં ફૂલડાં રે—મારા....
ગણુસે શુંજારા ને સોનાની સોટી,
સોનાની સોટી ને વીરની મોતી રે—મારા....
ગણુસે શુંજારા ને સોનાની વીંટી,
સોનાની વીંટી ને માથે મોતી રે—મારા....
તેત્રીસ કોડ દેવતા રે શ્રીમળી આવ્યા,
આવીને પાછા વાળિયા રે, મારા ગણુસે શુંજારા.

(૨)

લીમડલીનાં લૂમેઝૂમે પાન રે,
પાન સરખાં રે ગઢનાં કાંગરાં રે;
વીરના ઝીણા ઝીણા મોર !
મારા રે વીરને હાતણિયાં દેવરાવ,

એકે દાતણે વીરને દાણમે....વીરના ઝીણા....
મારા તે વીરાને નાવણિયાં દેવરાવ,
એકે નાવણ વીરને કૂંડિયાં....વીરના ઝીણા....
મારા રે વીરને ભોજનિયાં દેવરાય,
એક ભોજને વીરને લાપસી....વીરના ઝીણા....
મારા રે વીરને પોઢણિયાં દેવરાય,
એકે પોઢણિયે વીરને ઢોલિયા રે....વીરના....
મારા રે વીરને મુખવાસ દેવરાય,
એકે મુખવાસે વીરને એલચી....વીરના....

(૩)

સીમંત વખતનું ગીત

આજ મારે આનંદનાં વધામણાં,
કંકુકેસરના સાથિયા પુરાવશો રે....આજ....
પંડિત જયંતીભાઈ તો આવશે રે,
એ તો દિલ્હી તણા દરબાર રે....આજ....
આસોપાલવનાં તોરણ બંધાવશું રે,
પંડિત જયંતીભાઈ બોલાવે,
એ તો મુંબઈતણા દરબાર રે....આજ....

(૪)

લોકગીત

મારી ચપટીમાં આવે એવી ચૂંદડી રે,
મારી હોળે હવાસોની ચૂંદડી રે;

મારી ચૂંદલડીનો રંગ રાતો હો લાડલી રે!
ઓઢાડે સાહેબ જાડી ચૂંદડી રે!
મારા બાપાના તેડયા અમે આવિયા રે
મારાં માતાએ માનસોંપા અમે આવિયા રે
લાડલી ઓઢાડે સાહેબ જાડી ચૂંદડી રે!
મારા કાકાના તેડયા અમે આવિયા રે,
મારી કાકીને માનસોંપા રે,
મારા મામાને તેડયા અમે આવિયા રે,
મારી મામીએ માનસોંપા રે,
મામીએ માનસોંપા હો લાડલી....ઓઢા રે....
મારા ભાઈને તેડયા અમે આવિયા રે,
મારી ભાભીએ માનસોંપા રે,
ભાભીએ માનસોંપા હો લાડલી....ઓઢા રે....
મારા દાદાને તેડયા અમે આવિયા રે,
દાદીએ માનસોંપા હો લાડલી....ઓઢ રે....

(૫)

આંગણિયે બાવે મઢી બનાવી,
મઢીઓમાં શ્યામના ઉતારા!
શ્યામના ઉતારા, રામના ઉતારા!
ગાંજો મારે ન હતો પીવો, નહતો પીવો,
કડલા વેચી બાવે ગાંજો મંગાવ્યો,
કડલાં મારાં બ્યાજલામાં ડૂબ્યાં,
બ્યાજલાંમાં ડૂબ્યાં, ગાંજો મારે નહતો પીવો રે!

હાંસડી વેચીને આવે ગાંજો મંગાવ્યો,
હાંસડી મારી વ્યાજડાંમાં ડૂબી,
ગાંજો મારે નહતો પીવો રે !

કબજો વેચીને આવે ગાંજો મંગાવ્યો,
કબજો મારો વ્યાજડાંમાં ડુબ્યો,
ગાંજો મારે નહતો પીવો રે !

ઘાઘરો વેચીને આવે ગાંજો મંગાવ્યો,
ઘાઘરો મારો વ્યાજમાં ડુબ્યો,
ગાંજો મારે નહતો પીવો રે !

કંઠી વેચીને આવે ગાંજો મંગાવ્યો,
કંઠી મારી વ્યાજડલામાં ડૂબી,
ગાંજો મારે નહતો પીવો રે !

(૬)

પોપટ બોલે મારા મૈયરમાં,
કે'તો નણુદલબા, કડલા ઘડાવી દઉં,
ખાંભિયે લાડે લડાવું, મારા નણુદલબા ...પોપટ
કે'તો નણુદલબા, બંગડી ઘડાવી દઉં,
કંકણે લાડે લડાવું, મારી નણુદલબા....પોપટ
કે'તો નણુદલબા, કાંટો ઘડાવી દઉં,
નથડીએ લાડે લડાઉં, મારા નણુદલબા....પોપટ
કે'તો નણુદલબા, ઝાંઝરી ઘડાવી દઉં,
તોડે લાડે કેમ લડાઉં, મારાં નણુદલબા....પોપટ

ભારા ગુનાહિન જાતિ તરીકે સારા ય ગુજરાતમાં જાણીતા છે. અંગ્રેજોએ તેમના શાસનકાળમાં ભદ્રસમાજથી તેમને જુદા વસાવ્યા હતા, ને આજે તેઓ તે જ જગાએ અમદાવાદ શહેરથી દૂર ભારાનગરમાં રહે છે તેમના રીતરિવાજ વિચિત્ર અને આશ્ચર્ય પેદા કરે તેવા છે, તે તેમનાં લોકગીતોમાં અભિવ્યક્ત થાય છે મૃત્યુમાં મહેફિલ માણવી તો આ જ કોમ છે અને તેથી ગુનાહિત કોમને પણ તેની સસ્કૃતિ છે તેની જાણુ તેમનાં ગીતો પરથી થાય છે! તેવાં લોકગીતોમાંથી થોડાં અત્ર પ્રગટ કરું છુ

૧લું ગીત લગ્નગીત છે મોટી ફૂંદાળા ગણેશને એ જાતિએ શુ લાડ લડાવ્યાં છે? મગદળ અને લાડુના ભોગી ગણેશ મોટી ફૂંદાળા છે તેમણે ગળામાં ફૂલડાંની માળા ધારી છે અને તે પણ છે વાડીનાં ફૂલડાંની. તેમની પૂજા માટે સોનાની થાળી આણી છે. તેમણે હાથે સોનાની વીંટી પહેરી છે શ્રી ગણેશની આ માનસપૂજા છે અને એવા દેવને પૂજવા તેત્રીસ કરોડ દેવ આવ્યા છે વર્ષો સુધી વનજાતિ વચ્ચે રહેલ આ ભારાઓમાં લગ્ન વખતે શ્રી ગણેશને બેસાડવાનો રિવાજ ક્યાંથી લાવ્યા, હશે? તે સમાજશાસ્ત્રીઓ માટે અભ્યસનીય વસ્તુ બની જાય છે. ભારાઓને તેમની પોતાની પાગ્સી (dialect) છે તેનો થોડો પરિચય આ ગીતોમાં તો થશે જ

૨ જુ ગીત સામાન્ય કોટિનું છે હિંદુઓનાં લગ્નગીતોમાં આ ભાવનું ગીત જડે છે આ ગીતની પંક્તિઓ પર પરાગત Traditional લાગે છે, પણ તેમાં કાવ્યતત્ત્વ ભર્યું છે તેનો અચ્છો ખ્યાલ પ્રથમ પંક્તિઓમાં આવે છે :

લીમડાની લૂમેઝૂમે પાન રે,
પાન સરખા રે, ગઢનાં કાંગરાં રે!

૩ જુ ગીત ભારતીય વિશિષ્ટ પ્રકારની લોકરીતિનું છે સીમતને

બધા જ લોકસમાજે વધાવ્યુ છે અને ગાયુ છે તે તો ઉત્સવ લેખાય છે, માટે લોકોને મન તે હૈયાનો આનદ છે, માટે તે વ્યક્ત કર્યો·

આજ મારે આનદનાં વધામણાં,
કકુકેસરના સાથિયા પુરાવશો રે!

ખરી રીતે આ પ્રસગ સ્ત્રીઓનો છે, પણ સુસટિયાની વિધિ કરવા માટે દિયરની હાજરી આવશ્યક છે તો તે દિયર કેવા છે?

એ તો દિલ્હી તણા દરબાર રે,
એ તો મુંબઈ તણા દરબાર રે!

એવા કામગરા દિયર આજે સઘળાં કામ છોડીને આ ઉત્સવે જરૂર હાજર રહેશે. આગંતુક માનવની શી અદબ બતાવી છે આ સમાજે પણ!

૪ થુ ગીત હૈયાનાં અરમાનનુ ગીત છે વસ્ત્રપરિધાનના શોખમાથી કઈ જાતિની સ્ત્રી બાકી રહી છે? ચૂદડીના શોખે નારીઓને ઘેની કરી છે તે તેથી બ્હારા સ્ત્રીએ ગાયુ.

મારી ચપટીમાં આવે એવી ચૂદડી રે,
મારી હોળે હવાસોની ચૂદડી રે;
મારી ચૂદડીનો રગ રાતો, હો લાડલી રે!

મહિયરની તે ચૂદડી કેવી છે? ચપટીમાં સમાય તેવી! સોળ સવાસોની, રાતા રગની! અતિશયોક્તિ તો લોકકવિને ખપે છે અને ચૂદડીમા વિરોધ પણ કેવો છે? સાહેમની ઓઢાડેલો ચૂદડી જાડી અને મારી મહિયરની ચપટીમા આવે એવી! અને તે છે કાવ્યચમત્કૃતિ. પછી તો કોનાં તેડાવ્યાં બે'ન આવ્યાં છે? બાપના, માનાં, કાકાકાકીના, મામામામીનાં, ભાઈભોજાઈનાં! અને તે પણ માન સોતાં? પણ વચ્ચે આ 'સાહેમ' ક્યાંથી આવ્યા હશે? તે પતિના બદલે? કે પછી...

૫ મું ગીત વ્યસનનું ગીત છે છારાઓ હોય છે મદ્યાવ્યસની અને ભોગી દારૂ તેઓ ખૂબ વાવરે છે તેનાં લોકગીતો તો ખૂબ છે અન્ય જાતિઓમાંથી ઠાકરડા, ગામીત ને વણઝારામાં પણ દારૂનાં ગીતો મળે છે પટારોમાંથી હોકાનું ગીત મળે છે, કોળીઓમાંથી જુગારના અનિષ્ટનું લોકગીત મળે છે, પણ ગાંજાનું ગીત અન જ મળ્યુ છે છારાના વાસમાં બાવો આવ્યો, તેણે મઢી બનાવી અને તેમાં બેસાડ્યા શ્યામ અને રામને ! પણ બાવો નીકળ્યો ગંજેરી. અને તેણે છારાની સ્ત્રીને તેનું વ્યસન લગાડ્યુ, તેમાં તે બાઈએ દરલાં, હાંસડી, કબજો, ઘાઘરો અને કડી દુન કર્યાં કદંગ્ય સાહિત્યમાંથી વ્યસનનાં આવાં ગીતો એકત્ર કરવા જેવાં છે, જે લોકોપદેશ માટે ઠીકઠીક કામમાં લાગે

૬ ઠુ ગીત સસારનુ ગીત છે, ગૃહજીવનનુ ગીત છે નણદ ભોજાઈના વચ્ચે ગગ ન હોય, વિશેષે દ્વેષ પણ અહીં તો ખરેખર હેત ગાયુ છે ? ના નણદલમાને ઓાંબિયાં, બગડી, કકણુ કંટિ, નથડી અને સાંકળાં ઘડાવી દેવાની લાલચ ભાભી શાને કાજ આપે છે ? પિયરમાંનો પોપટ બોલી રહ્યો છે, તો તે સાદ સાંભળીને ભાભીને તેના પિયરમાં જવુ છે, તો તે વખતે નણદી અવરોધ ન નાખે તે હેતુથી ભાભી નણદને ખુશ કરવા ચાહે છે આ ભાવને વ્યક્ત કરવા આ ગીત ગવાયુ છે

લોકગીતોનું વિશેષ તો એ છે કે તે કલ્પના-ભરી ઉત્તુગ ભાવના કરતાં વાસ્તવ પર વિશેષ ન્યાય છે ઉડ્ડયનવાળી ભાવનાના ગુંજન કરતાં તેમાં હૃદયસ્થ ભાવોનુ ગુંજન વિશેષ હોય છે, તેથી તેનો કવિ કાયમ કવે છે માનવને અને માનવના મનને !

આ ગીતોમાં તમે માનવ અને તેની હૃદયસ્થ ઊર્મિઓનુ જ કવન જોશો, અને માનવના સહજ મનોવ્યાપારનું વાસ્તવિક નિરૂપણ પણ જોશો



આંબા નાંઈબા ભિખારી

ગુજરાતની પૂર્વ સરહદ પર કેટકેટલી ડુંગરમાળો છે? સાતપૂડા અને સહ્યાદ્રિની ડુંગરમાળ. સુરત જિલ્લાની અને રાજપીપળાની હદ પર ઊભેલ આ ડુંગરમાળો વચ્ચે અનેક વનજાતિઓ વસે છે ગામીત, વસાવા, ચોધરા, કુકણા આ સર્વ જાતિઓ ડુંગરમાળને શોભવતાં વનમાં સ્થિર બની જીવી રહી છે પ્રત્યંત ભાગોમા વસીને આ વનજાતિઓ તેમનાં સંસ્કાર અને સંસ્કૃતિને અકબંધ જાળવી રહી છે

ત્યાં જવા માટે તાપ્તીવેલી રેલમાં બેસીને સોનગઢ ઊતરીને ડુંગરમાળમાં જઈ શકાય છે આ ડુંગરમાળના બધા જ ડુંગરા લીલોતરીએ લચી પડતા છે પલાશ, સાગ, સીસમ, હળદરવો, આંબો, સાદડો, તણછ અને વાસના અલંકારે આ વનો શોભી રહ્યાં છે વસંત બેસે ત્યારે તે પ્રદેશમાં પલાશ--ખાખરાનો દિમાક કાંઈક ઓર જ લાગે કોઈ અલંકારઘેલી ઘરમાં હોય તેટલાં એક જ ભાતનાં ઘરેણાં ઠાંસી ઠસો મારી ઊભો રહે તેમ પલાશ તેનાં પુષ્પાભૂષણોથી લચી પડી ત્યાં મિજાજથી ઊભો જોવા મળે છે શીમળાનાં રડ્યાંખડ્યાં વૃક્ષો પર લટકતા ફૂલો મનોહર છે આમા આંબલીની ગણતરી વસમી પડે તેટલી સંખ્યામાં છે આંબો મંજરીએ મહેકતો ઝૂકીને ઊભો હોય છે, ત્યારે આંનવી કાનમાં પોખાનિયો પહેરીને ઊભી હોય તેવુ ચિત્ર આપે છે

વસંત પલ્લવે પલ્લવે અને વૃક્ષે વૃક્ષે જોવા મળે છે ત્યારે વનબાળા હોળીની રાહ જુએ છે, કેમ કે હોળી પર તેમનું નાચણું ચાલે છે નાચણુ તેમને અતિ પ્રિય છે દિવાળી આવે ત્યારે તેઓ નાચે. ઓજીવના દિવસોમાં પણ નાચે દિવાસો આવે ત્યારે પણ તેઓ નાચણું

ગોઠવવાના ! નવો પાક આવે ત્યારે 'દેવ કરવા' જાય, દેવલી માડીના ડુંગરે જાય. દેવલી માડી આગળ નવાં ધાન મૂકે, અને માડી આગળ બકરું કે મરઘું વગેરે, અનાજ અને પ્રાણીને રાંધીને ખાવાનું તૈયાર કરે, ત્યારે પણ તેઓ નાચે.

ગામીતના નૃત્યનાં વાદ્યોમાં ડોબરું હોય છે; ઢોલ પણ ખરો અને મંજીરાં ! તેમને નાચણા માટે ખુલ્લું ચોગાન જોઈએ. વિશાળ પટનું ખુલ્લું મેદાન હોય તો તેમના નાચણાની જમાવટ થાય અને તેઓ નાચણા-પ્રિય તો એવા કે તેમને નાચણાની ભાળ મળે કે તરત જ ડુંગરીના અંતરિયાળમાંથી ય દડૂક દડૂક કરતાં જુવાનજુવતિઓ નાચણાની જગાએ આવે અને સ્ત્રીપુરુષો સાથમાં જ ગોઠવાઈને નાચવા લાગે. તેમના નૃત્યના પ્રકારોમાંથી ભાવજી ઠેકિયો જાણીતો છે. જેમ હાંડલામાં બફાતા શાકને કડછી વતી હલાવીએ, તેવા લયથી પગનો ઠેક આપીને આ નૃત્યમાં તેઓ નાચે છે. વારોડિયો તેમનું લગ્નપ્રસંગનું નાચણું છે. તેમનો જોમદાર નાચ છે બદહા દોડો નાચ આ નાચમાં ગતિ દ્રુત છે. પગની ઠેક જોરદાર છે. હોનદોડો નાચને તેઓએ વિચારાવાળાનો નાચ એવું નામ આપ્યું છે. દેવ કરવા જતી વખતે નાચે છે તેનું નામ આપ્યું છે 'દેવ કરો !'. ગામીતનાં નૃત્યોમાં હાથ સાવ બંધાઈ જાય છે. આંકડા બીડીને તે તો ભેરૂની પીઠ પાછળ બંધાઈજ ગયાં હોય છે આ નૃત્યો તેઓ મૂગાં મૂંગાં કરતાં હોય છે, સાથે સાથે કદીક કદીક ગીતો પણ ગાતાં હોય છે અહીં હોળીના નાચણનાં ગીતો આપું છું :

હોળી બાઈબા કાઈ લિયે હે, લીંગજી લોલ !
જોડજોડ આંકડા લેઈ બાચે હે, " "
આડલો વાટી લેઈ બાચે હે, " "
જોડજોડ પાવીઓ લેઈ બાચે હે, " "
હોળી બાઈબા કાઈ લિયે હે, " "
ચપટી દાહા ને ચપટી લાહું, " "

જોડજોડ બાઈબા લેઇચે હે, લીંગજી લોલ !
હોળી બાઈબા ફેરવે, ,, ,,
આંમા નાઈબા ફીર જે, ,, ,,
હોળી બાઇબા કાઈ લિયે હે, ,, ,,
જોડજોડ ઈજોડિયો લેઈ બાચે હે, ,, ,,
હોળી બાઈબા ભિખારી, ,, ,,
આમા નાઈબા ભિખારી. ,, ,,

હોળી બાઈ શુ લાવી છે? બબ્બે આંકડા લાવે છે (વાંસના માથાના પાતળા ભાગ પર કેશુડાંના ફૂલને ઘાલે છે તે) સૂકાં નારિયેળ અને ટોપરાં લાવે છે નાચતી વખતે કેડચે બાંધવાના જોડય જોડય ઘૂઘરા લાવે છે હોળી બાઈ શુ લાવી છે? ચપટી દાળિયા અને ધાણી જોડય ખાવાને પણુ લાવી। હોળી અમને ઘુમાવે છે અમે ફરતા નથી, પણુ હોળી અમને ઘુમાવે છે। હોળી બાઇ શુ લાવી? બબ્બે હીજડાને પણુ। હોળી ભિખારી છે, અમે ભિખારી નથી આંમા નાંઈમા ભિખારી,—અમે ભિખારી નથી।

હોળીનું આગમન ગામીતોના માટે શુ શુ લાવે છે તે તો ગાનારે ગાઈ નાખ્યુ, પણ તેમની ખુમારી અજબની ગાઈ છે, આંમા નાંઈમા ભિખારી. અમે માગણુ નથી અમે દરિદ્ર નથી, પણુ અમે હોળીની આમન્યા ગખીને ગાવા નીકળીએ છીએ, નાચવા નીકળીએ છીએ-માગવા આવીએ છે તમારે આંગણે તો ?

બારા મહીંની હોળીબાઈ ચેકે દાહી ચેનીવા,
હોળી બાઇચે નાંવાસે, આમુ નીગી આલાહો !
દેઅના ઓ રીતે દેજે, હા, ગાળી રખે દેતે રા
હોળી બાઈબા ભિખારી, આમા નાહા ભિખાર્યા !

બાર મહિનામાં એક દિવસે હોળી આવે છે હોળી બાઈના નામથી અમે નીકળ્યા છીએ આપવાનું હોય તો આપજો પણ ગાળ મત દેતા હોળી બાઈ ભિખારી છે, પણ અમે નહીં!

પણ એક દિવસ માટે આવેલી હોળી તેમને ત્યાં પાંચ દિવસ રહે છે, અને આ બને ગીતો તો માત્ર મરદો જ ગાય છે

હોળી તે બાઈ તું, ડાળેહેરા ગેરિયા !
આડલો ને વાટી, „ „
જોડજોડ પાવા, „ „
જોડજોડ નરાળે, „ „
હોળી તું બાઈ તું, „ „
જોડજોડ પાવા, „ „
જોડજોડ આકડા, „ „
હોળી બાઈ તું, „ „

ઘેરૈયા કહે છે કે હોળીબાઈ તમે આવો છો અને ખજૂર અને નારિયેળ, હારડો અને પાવા, તેમજ આકડા લઈને તમે આવો છો આ ગીતમાં લય બદનાયો છે

અને તેઓ કલ્પી બેઠા છે હોળીના રહેઠાણને તો તે રહેઠાણ ક્યાં છે?

બારા મહીંની હોળીરા બાઈ તું !
અંબા પાળીમે રેવાસીવા બાઈ તું !
પાંચે દીહી ભૂખીવા બાઈ તું !
હોળીએ બાઈચે, ભિખાર્યાવા બાઈ તું !

બાર મહિને, હોળીબાઈ, તું આવી. તું અંબાપાળી ગામની રહેવાથી છે! અમે પાંચ દિવસના ભૂખ્યા છીએ. હોળીના નામથી અમે ભીખ માગવા આવ્યા છીએ.

આ ગીત હોળી સળગે ત્યારથી તેઓ ગાવુ શરૂ કરે છે અને હોળીની સમાપ્તિ વદ પાચમના દિવસે થાય ત્યાંસુધી તેઓ ગાયે જ જાય છે।

તેમના નૃત્યનાં ગીતોમાં સસારનાય અટપટા રગો જોવા મળે છે. તેમની દીકરીઓને લગ્નજીવન બહુ બધનકર્તા નથી, તો તે દીકરીઓ મન ફાવે ત્યારે છેડો ફાડી આપે છે એની છૂટ પણ સમાજે શી આપી છે।

આ ગીત જ્યારે કન્યા વરના ઘરે પરણવા જાય ત્યારની વિદાયનુ ગીત છે। બહેનપણીને વિદાય આપતી કુમારિકાઓ અને સૌભાગ્યવતી બહેનપણીઓ ગાય છે કે તમારાથી રહેવાય તો રહેજો।

રવા તે રોજે બેના, યેતી રોજે વા !
બોકાહા માંઈવા બેના, કાઢી દે નીવા !
તુલનાંઈ વિચારી, બેના !
ડાંમરિયા લોક બેના, તુલનાઈ રોવાઈવા !
જાડી માઇવા બેના, કાઢી દેનીવા !
હું ગાતી જોડી બેના, તૂટી ગઈવા !
રવાતે રોજે બેના, યેતી રોજેવા !

બહેની, તારાથી સાસરે રહેવાય તો રહેજે, નહીં તો પાછી આવજે। તે લોક તને સગાંવહાલાંથી વેગળી કરી નાખશે તારાં સાસરિયા પણ નહીં વિચારે। તારાં સાસરિયાં ડામરિયા લોક – હલકા લોક છે તેથી તુ સાસરામાં રહી શકીશ કે કેમ તેની શકા છે। તને ઘરમાંથી જગલમાં કાઢી મૂકશે ખરેખર, આપણી તો સગત જોડ તૂટી ગઈ તારાથી સાસરામાં રહેવાય તો રહેવુ? નહીં તો આવતી રહેશે, પાછી આ ઘરે। આપણે દહેજના પૈસા પાછા આપી દઇશુ।

આવી ગોરીને દિયરના શા દુખ છે?

સોના ચાટુલીએ ખીચડી પીરસી,
તે ન રીઝવાય મા' નાહલો દેરો !

ભાભીએ તેના દિયરને ચોટાની ચમચીવડે ઘી પીરસ્યું, પણ તો ય તેનો લાડકો અને નાનકડો દિયર રીઝતો નથી. શું દુઃખ છે આ ભાભીને?

આવી નવપરિણીતાને પતિનાં શાં દુઃખ છે!

દારૂ છોડા, દારૂ છોડા રા!
ઓ રામ, સત્યાનાશ વૈયા!
દારૂ છોડા, દારૂ છોડા રા!
વિચારે ગિયા, ગોળ લઈનિ.,
ગોડા માંય નાખ્યા રા!
ઓ રામ, સત્યાનાશ વૈયા!
દારૂ છોડા, દારૂ છોડા રા!
હોરો છોડા રા!
તપલા લીધા, પડલા લીધા,
નદીએ ચાલ્યો રા!
રામ સત્યાનાશ વૈયા,
હોરો છોડા રા!
ભાઈઓ, હોરો છોડા રા!
દારવા પીધા ગોઈનો,
ચેએલ ઠોકયા રા,
ઓ રામ, સત્યાનાશ વૈયા,
દારૂ છોડા, દારૂ છોડા રા!

પતિ દારૂડિયો છે. તેને પત્ની સમજાવી રહી છે કે દારૂ છોડો. દારૂએ સત્યાનાશ વાળી નાખ્યું છે. જ્યારે જઈને ગોળ લાવીને ગોળામાં

તેને નાખ્યો, અને તપેલાં લઇને તેને ગાળવા માટે નદીએ ચાલ્યો. ઘેર આવીને દારૂ પી તેણે તેની બૈયરને ઝૂડી. માટે હવે દારૂ છોડો. તેણે સત્યાનાશ વાળી દીધુ છે।

પણ તેવો પતિ હોવા છતાં ય જ્યારે નવું અનાજ આવે છે ત્યારે દેવલી માડીના ડુંગરે હવિ ચડાવવા જવાનું છે અને ત્યાં નાચણું થવાનું છે, તો ત્યારે સાથે જાય છે અને નાચતાં નાચતાં બને સામસામાં લલકારે છે ·

ચાલેવા આવે હે રોડાલી કેહેડા વાર લાગી, આંહાવામા રોડલી જોડી।
દુનિયા વાટ જોવે હેવા કેહેંડા વાર લાગી, ,, ,, ,,
ચેકીના ઘેડીએ રોડાલા વાટેના ઊભો રે'જે, ,, ,, ,,
દુનિામેં નામે કાઢુવા, નામેના કાઢી જાહું, ,, ,, ,,
દેખીલાં નાહા રાજેવા દેખાયા હાદી લાલો, ,, ,, ,,
ચાલે આવે હે રોડાલી કેહેડા વાર લાગી, ,, ,, ,,

તને કેટલી વાર લાગે છે? દુનિયા આખી વાટ જુએ છે એક ઘડી તું ઊભી રહેજે આપણે નામ કાઢવાનું છે

સ્ત્રી કહે છે : મે માર્ગ જોયો નથી, તો હુ ક્યાં આવું? કેમ કરીને આવુ?

પુરુષ · જલદી જલદી ચાલી આવ

ફાટેલ શૃંગારનું આ ગીત છે

હૃદયસ્થ ભાવોના ગાનારે નવુ મદિર જોયુ . નવા યુગન નવું મદિર. તો તેને ગાઈ નાખ્યુ ·

રામે રામે રામેરા ડાયાં।
રામે રામે કેહેશમાં ડાયાં,
બારા માસની શિબિર ડાયાં।

શિબિર હેંરા આલેરામાં ડાયાં !
જતીરા સરીખો જતીરો ડાયાં !
જતીરો હેંરા આલેરામાં ડાયાં !
ગોવાલ દેવાહા જતીરો ડાયાં !
જતીરો હેંરા, આલેરામાં ડાયાં !
દેવલી માડીએ જતીરો ડાયાં !
જતીરો હેંરા, આલેરામાં ડાયાં !
રામે રામે રામેરા ડાયાં !
રામે રામે કહેંરામાં ડાયાં !

શિબિર આવી છે તે તો યાત્રાનું ધામ છે. બાર માસે શિબિર આવી છે. જાત્રા જેવી જાત્રા છે ત્યાં. ગોવાલ દેવની અને દેવલીની માડીની જાત્રા જેવી તે છે. આ શિબિર તે શ્રમશિબિર.

ક્યા શિષ્ટ કવિએ પંચવર્ષીય યોજના હેઠળ યોજાતી શિબિરો પર સમ ખાવા એક પણ કાવ્યપંક્તિ માંડી છે?

ગરીબાઈમાં પણ જીવન જીવી જનાર અને મણાય તેટલું માણી જનાર આ વનજાતિ તેમની જીવનલીલામાં જે નવું તત્ત્વ ઉમેરાય છે તેને નાચણામાં ગાવાનું વિસ્મરતી નથી. યુગના પડઘાના વધુ ઝીલનાર કોણ? ઉજળિયાતોનો સમાજ કે આ પછાત જાતિના લોકો, કે વનજાતિઓ?

તે જ, કેમકે તેઓ કહે છે: આંમા નાંઈમા ભિખારી!

' ચંગ ઘેરો બજાવણવાળો સાજો તાજો રિજોરે ! '

ચંગ ઘેરો બજાવણવાળો સાજો તાજો રિજો રે !
ગૂગરા બજાવણવાળો આયો રિજો રે,
ભરિયા ફાગણમેં ! હેરે, ભરિયા ફાગણમેં !
લાડકિયો મઈને એવો જાવે રે,
ભરિયા ફાગણમેં ! હેરે, ભરિયા ફાગણમેં !

પાદર હોય; પછી ગાજતા શહેરનું, કામગરા નગરનું કે નાનકડા રૂપાળા વૃક્ષથી ભર્યાભાદર્યા, લૂખા કે સૂકા જનપદનું, પણ માત્ર મહિનો અધૂરે કે પગે ઘૂઘરા બાંધી, ચંગઢોલ લઈ હાથમાં ઝાંઝ, કાંસીજોડા કે મંજીરાં લઈ મારવાડી જુવાનિયા કાછડીનો કછોટો મારી રાત પડ્યે હલકથી તીણા લાંબા સૂરીલા રાગે પગના ઠેકા દઈને ફાગ ..ગાઈને પાદરને જગાડવાના !

અમદાવાદને પાદર છે. નવરંગપુરાની ટેકરિયાળી ધરતી પર હોળી સુધી પગે ઘૂઘરા બાંધીને ચંગ ને કાંસીજોડા લઈ વણઝારાજુવાનો ફાગ લલકારવાના કેઃ—

ચંગ ઘેરો બજાવણવાળો, સાજો તાજો રિજો રે !

શુકરપરામાં ડેરા નાખીને પડેલ મારવાડી વાઘરીઓ તાનમાં આવીને ગાવાના :

ગૂગરા બજાવણવાળો, આયો રિજો રે,
ભરિયા ફાગણમેં !

છે તો આ વિરહિણીનો ફાગ, વસંત આવ્યો છે. પલાશના—ખાખરાના વૃક્ષ પર ફૂલડાં ખીલ્યાં છે. શરીરે પરસેવો ફરે છે ને ઘામ થાય છે, ત્યાર તેના મનમાં ફાગપંક્તિ સ્ફુરે છે :

લાડકિયો મઈનો એળો જાવે રે, ભરિયા ફાગણુમેં !

અમદાવાદમાં વલંદાની હવેલી પાસે, માણેકચોક, શાક બજારમાં, જમાલપુર વૈશ્ય સભા સામેના મેદાનમાં, શાહપુર દરવાજા બહારના મેદાનમાં ચગ, ઘૂઘરા, ઝાંઝ, કાંસીજોડાવાળા થનગનતા મારવાડી જુવાનો નાચતા જોવા મળે છે, હોળીના દિવસોમાં; ને મોંએ ફાગ આલાપતા ગુજરાતની સરહદો પર પણ તે દિવસોમાં આ જ દશ્યો નજરે પડે છે માથા પરના આબુમાં, પૂર્વમાં ચાંદોદકરનાળીના મલ્હારરાવ ઘાટ પર રાજસ્થાની ભીલો નિરનિરાળા વેશો કાઢીને ફાગ ગાવા ઊતરી આવે છે.

સાબરકાંઠામાં ભીલોડા શામળાજી ને લુસડિયામાં ય '૫૦ની સાલમાં આવા જ ઘેરૈયા વચ્ચે કર્યા નહોતો ઘેરાઇ ગયો ! શહેરી વેશ પહેરીને, આંખે ચશ્માં ચડાવીને ટોલકુડીઓ બજવતા તે ય સ્ત્રીઓનાં ટોળાં ભેગા મળીને જીવનનો સાચો આનંદ કેવો વ્યક્ત કરી રહ્યા હતા !

આ તહેવારને રાષ્ટ્રિય તહેવાર કહેવો જોઈએ આ કામ સરકારનું છે. પણ સરકાર તે કરે કે ન કરે તેની આ લોકને ચિંતા નથી, પણ વસંતના તહેવાર તરીકે તે લેખાવો જોઈએ. ઉત્તરહિંદનો સર્વવ્યાપક ને લાડકો તહેવાર છે જ. રાષ્ટ્રિય તહેવાર તે બને કે ન બને પણ લોકોનો તહેવાર છે. નાચવાનો તહેવાર...શ્રમજીવીનો સાચો આનંદ સાથી ! મસ્ત બનીને બસ નાચવું ને ઇશ્ક ભર્યા, પ્રેમભર્યા કરુણ ફાગો આલાપવા !

અવલ નંબરના રખડુ અને ખાનાબદોશ શ્રી. દેવેન્દ્ર સત્યાર્થીએ ય બુન્દેલખંડના મસ્તીભર્યા ને ઇશ્કરંગી ફાગ ભેગા કર્યા છે.

અંગના સુકે સુકનૌ' સો બન સુકે કચનાર,
ગોરી સુકે માયકે સો હીન પુરખ કી નાર,
હમે સુખ નઈહા સાસરે આયકે ।

સાસરામાં સુકાયેલ નારની અતરવ્યથા આલેખનો ફાગ શ્રી. દેવેન્દ્ર સત્યાર્થીએ આલેખ્યો છે, પણ બીજા ફાગમાં તો રસીયા છેલ બાવળજી લાવ્યા છે 'બિન્દુલિયા' નાયિકાના પ્રત્યાઘાતો છે આ ફાગમાં—

ચૂનરી રંગી રંગરેજને ગગરી ગઢન કુમાર;
બિંદિયા ગઢી ચુનારને સો દમકત માઝે લિલાર;
બિન્દુલિયા તો લે દઈ રસીલે છેલને ।

અર્થાત્ રાજસ્થાન અને ઉત્તર હિન્દમાં તો ફાગ લોકસાહિત્યનો એક પ્રકાર જ બનવા પામેલ છે. માનવના દિલના સર્વ ભાવોનું નિર્વહણ આ કાવ્યપ્રકારમાં થાય છે.

તે માત્ર શબ્દમાં પુરાઈ ગયેલો સાહિપ્રત્યકાર નથી, તે ચિરજીવ અને વહેતો સાહિત્યપ્રકાર છે તે વાસી નથી બનતો, કેમકે તેની સાથે છે વાદન, સગીન અને નૃત્ય આથી પુરાણો ફાગ આજે ય લોકજીભ પર નવો બને છે, તાકાતવાન બામે છે, હોળીના દિવસે સજાગ બને છે. સાંભળ્યુ છે કે ઉદેપુર પાસેના માંડણગઢમાં તો હોળી પછીના સાતમા દિવસે રાજગઢીમાં સૌ ભેગા મળી ગજગઢના ઉપરના કાંગરા પર છજ પર, ગોખ પર ગોઠવાય, નિશાળ ઉઘાડા ચોકમાં ઘેરૈયા આવે છે. ચગ બજાવીને વૂઘરા બાંધેલ ઘેરૈયાના પગ નાચવા માંડે, ને લોકો તપસ્વી જેમ તપીનપીને આ સમૃદ્ધ નૃત્યો જોયા કરે. અમદાવાદમાં રહેતા રાજસ્થાની શ્રમજીવીઓ તે દિવસોમા જીવનવિપત્તિને—જીવનસઘર્ષને વીસરીને ચગ લેતા, પગે ઘૂઘરા બાંધતા, વસ્ત્રો પહેરીને, ગળામાં રંગબેરંગી ખોટાં મોતીના અલંકારો ઘાલીને નાચવા માંડે છે અને ચાલીની આસપાસ રહેનારાને મોહે છે ફાગમાં જ :

સમરુ માતા શારદા, ભવાની તને ધ્યાવું;
ભૂલ્યા ચૂકયા અગસર અડધે રાખુ, દેવી શારદા !
શારદા, પાલીના વાહ કર્હુ, દેવી શારદા !

ચગ ઢેલ, અને કૂંડીઓ પર હાથ પડે છે, અને ઘેરૈયાના અંગેઅંગમાં નવો ઉત્સાહ જન્મે છે પગના ઘૂઘરાઓ ખણખણવા અને રણઝણવા માંડે છે પગ ધરતી પર ટેકા દેવા માંડે છે. મોંમાંથી ગવાતા ફાગના સંગીતના સૂરના તાલ સાથે પગના ઠેકાનો તાલ તેમજ ચગઢોલનો તાલ એકરસ બનતો જાય છે ને મસ્તાન બની નાચવા લાગે છે ત્યાર તેઓ બીજા દેવે ને વીનવે છે—

તેલ ને સિંદુર બાબો હનુમાન માગે,
બાકરિયોની જોડ તો મામાજી માગે....ઓ....ઓ....!
ઉપર રાખજો ! હેરે, ઉપર રાખજો !
હેરે ઉપર રાખજો, ઝાડામે મેરા ખેલા નાચે !
ઓ, ઉપર રાખજો ! ઓ, ઉપર રાખજો !

ઝાડોની ઘટામાં છૈયા નાચી રહ્યા છે, તો હે હનુમાન, હે મામા, મારા છૈયા પર તમે નજર રાખજો !

અને પછી નૃત્યનાં વર્ણનો તેઓ આલાપે છે :

સોયત ને જોધાણા વચ્ચે, ગેરી ઢોલ ગાજે !
માર જાતી ડાવલી, નાચણુને લાગી !
ડાકો હોળે દો ! હોરે, ડાકો હોળે દો !
નાચતી પગલાં મૂજે રે ! ડાકો હોળે દો !

સોયત અને જોધાણા વચ્ચે ઘેરૈયાની ઘેરનો ગહરો ઢોલ બજવા લાગ્યો, આ સાંભળીને ભાન દેવા જતી છોકરી નાચવા લગી અને

છોકરી બોલી ઊઠી કે હળવા હાથે ડાંડી દે! ઘેરી ડાંડી મને ગાંડી ગાંડી કરી મૂકે છે!

પણ આ ઘેરૈયાને જોવાનો ઉત્સાહ રોક્યો રોકાતો નથી, તેથી તે ભાવને ફાગ ગાનારે ગાયો :

પનઘટિયા વડલા ઉપર સોવન ચડિયો, બોલે બો!
ઘેરિયો મૂકે ભવાની બોલે, હાલો દેખણુને!
હેરે હાલો દેખણુને!
લીલુડિયા નાળે લેને રે! હાલો દેખણુને!
ઢેલડીના એવડ મેં મોરિડો માલક ભણિયો રે,
મેલેક બેઠો ડાકરિયો, ગોળી દીધી રે!
મોરો માર્યિો, હેરે મોરો મારિયો!
ઢેલડી રાડોલી કીદી રે, હેરે, મોરો મારિયો!

કરુણ રસથી નીતરતો આ આ ફાગ શરૂ થાય છે. ઘેરૈયા જોવાના જવાના કોડથી કોઈ છોકરો પનઘટિયા વડલા ઉપર ચડીને બોલ્યો: મોંથી ભવાનીનું નામ સ્મરણ કરતા ઘેરૈયાને લીલુડાં નાળિયેર લઈને જોવાને જઈએ.

અને દૃશ્ય કેવું રમણીય અને કમનીય છે! ઘેર'માં યુવતિઓ છે તેથી વચ્ચે એક યુવાન ઘેર' લઈ રહ્યો છે. જાણે ઢેલડીની વચ્ચે મોરલો કે!

પણ ત્યાં પેલા કૂડપેટા ડોસાએ મોરલા પર ગોળી છોડી અને મોરને ઢાળી દીધો અને ઢેલડીને રડિલી કાધી.

આ કરુણ ભાવના ગાનાર ઘેરૈયાઓને બીજા અન્ય ભાવો પણ ગાવા ફાવે છે, અને ગમે છે. ઘેરૈયા તો જુવાન છે, ઘેર પરણેતરો છે, ઢેલડીઓ છે. આખો દિવસ તે નાચ્યા કરે છે. ફાગણ આવ્યો છે

ત્યારથી તે જંપ્યો જ નથી તેથી મિનણી–ઢેલડી તેને પાછી સંદેશો મોકલાવે છે :

ગળામેં સોનાનો ફૂલ, સાપે ચડિયો નાચે ઓ !
લારે તારી ભીતણી, સમાચાર મેલો;
એ ઘણો નાચે મા ! એ ઘણો નાચે મા !
લોઈરો ભરાવ થયલા રે, ઘણો નાચે મા !

તું બહુ ન નાચ, પગની પીંડીઓમાં લોહીનો ભરાવ થઈ જશે,

આ ઘેરૈયા તો વસંતના રાજમાં મહાલી રહ્યા છે. નવપરિણીતાના અને જોબનવંતી યુવતિઓના દિલમાં શૃંગારના ભાવ જન્મ્યા વગર રહે ખરા કે? તેથી નજરથી અળગા ભંવરલાને તે કહેવડાવે છે :

' ગંગા તારા ઘાટમાં, ગેરી પાકી કોંગણ્યો
ખૂણે બેઠી ડાવડી, આંસૂડાં રાળે રે,
ભીંજે આંગળિયો ! હેરે, ભીંજે આંગળિયો !
મેહુડા ભાત બિગાડજો, ભીંજે આંગળિયો !

ગણ્યો પાકી ગઈ અને ખૂણામાં બેઠી યુવતિની આંખમાં આંસુડાં ઊભરાયાં છે. આંગણું ભીંજે છે, પણ સાથે સાથે તેની કાંચળી પણ ભીંજે છે.

એક નાયિકાને પતિની ઝંખના ને મનોરથ ફાગણમાં જન્મ્યા ને તેને તેણે ફાગમાં ગાયા :

બાગાન રખવાળા રે'તો, કોયલ હોને બોલું રે !
પિત્તળની પાંદડી લારે આવું મૂરે બોલો તો !
મૂરે બોલો તો, તે મુવેલી મુખેતર પવ !
સોઇતી દરવાજે, તમારી પૂતળી કોરાવું રે !
હથેળીમાં કંકુ લઈ, ચો'રો કરું તારા નામનો !

ધેર્યને મેળો આવ્યો અને નાયિકાને નાયકની સાથે નાચવાના કોડ જન્મ્યા, પણ તેમાં વિધિ ખેલ કરી ગઈ તે ય કરુણ નાયિકાના મનમાંથી સરી ગઈઃ

મેળ ત્યારી થઈ ગઈ, તામબિયે રેઇગો તાળા મેં !
ભંવરજીનો ધોતિયો વડલાનાં ડાળાં ગેં !
ગેલર વેગી....વેગી....ઓ !
હેરે ગેલર વેગી ઓ ! નણદલ ભરોસે રે જિયો !
ગેલર....વેગી....ઓ !

નાયિકા મેળે જવા તૈયાર થઈ પણ ચાવીઓ તાળામાં રહી ગઈ તેમજ ભંવરજી નવું ધોતિયું પહેરીને મેળની ધૈર્યમાં તેની સાથે નાચવાના હતા તે ધોતિયું પણ આથી લેવાયું નહીં અને તે બિચારી રહી નણદલના ભરોસે નણદલ આવું વિક્ષેપ કરનારું તત્ત્વ છે એ જ ભાવ આ નાયિકાનો હશે ને?

લગ્ન પતાવવાની ઉતાવળ નાયિકાને જન્મી છે તેથી તે કહેવડાવે છે કે અગિયારશ આવે છે ત્યારે આપણે ફેરા ફરી જઈએ :

મેળાના મારગે મને ફૂલમાળા લીધી રે ।
પાછી ફરને ભમરલા, ગળામેં નાખિયે !
ભાને ગાલી દ્યો ! હેરે ભાને ગાલી દ્યો !
આંગળી અગિયારશ ફેરીવો, ભાને ગાલી દ્યો !

ઊંટને શણગારીને, જુવાનિયો મેળે ઊપડે છે તેને નાયિકા કહે છે કે તું ઊભો રાખ:

કરેલિયો શણગારી, છોરો મેળે ત્યારી લેજિયો રે !
ઘૂઘરિયારો, ઝાલો કરે ને, હેલો મારું રે !

કરિયો ઢાળી દે ! હેરે કરિયો ઢાળી દે !
તારા કરિયાને ઘૂઘરી બાધુ રે ! કરિયો ઢાળી દે !

આવા પ્રસંગોમાંથી ભવર ને દેડીને અમોના થાય છે ત્યારે સખી શિખામણ આપે છે·

તારે મારે બેસણા નદીઓના કાંઠે રે !
તારે ને ભવરને વેર કદરે પડિયો રે !
કરલે ગજી હેરે કરલે રાજીપો !
સોનાને પાલે દારૂ પીલે રે ! કરલે રાજીપો !
હેરે, કરલે રાજીપો !

ગજિપો થઈ ગયા પછી ભવરજી કેવો મીઠો લાગે છે, પ્યારો લાગે છે અને વહાલો લાગે છે તેનો ભાવ ફાગમા ગવાઈ જાય છે·

ઓલો બાગ માદલિયા, પલારે પલો બાધે !
મેલા મારે આપણે ભેળા, વા'લા કરજો નખરો !
કરજો વા'લા નખરો ! ભવરજી માને લાગે સખરો !
કરજો વા'લા નખરો !

આ ભવરજી રાતે પારકી હવેલીમાં પગ માંડે છે તેનું નાયિકાને ભાન થાય છે ત્યારે તે જઇને સાસુને કહે છે કે તમે તમારા સુપુત્રને વારજો

રાતે તો સાસુજી, માને સાચવો સપનો આયો રે !
થારો જાયો પારકી હવેલી માથે પગલ્યા માંડે રે !
ભરજો જાયા ને ! એહરે, ભરજો જાયા ને !
લાખેણા ઘરરો પાણી લાજે ઓ ! ભરજો જાયા ને !

પોતાના લક્ષણની મા પાસે ફરિયાદ થઈ અને ભવરજીને ચાતક

ચડી. તેમણે રિસામણું લઈને મુંબઈ જવાનું નક્કી કર્યું. પેલી નાયિકાના દિલમાં અત્યારે તડફડાટ જન્મ્યો :

> ઓઢવા ને પાણીનો પીળો, ઘડીક રમવા મેલો !
> કાલ તમારો લાડકચો, મુંબઈ જાય ! મૂંડો જોવા ઘો !
> અરે, મૂડો જોવા ઘો ! મરેલી મુખેતર પાઉં.

મને તેનું મોં જોવા ઘો નહીં અથે તો હું મોતને વરીને પણ તેનું મોં જોઈશ

અને આવી નાયિકાની જુવાની ચાલી ગઈ છે. હવે માથાની પોથીમાં ધોળા વાળ આવ્યા છે ને તેની સાથે ડહાપણ પણ આવ્યું છે, તેથી તે જુવાનીના ધેરૈયાને શિખામણ આપે છે :

> કાઠિયા ઉઘઆની ઊંખી, સામે ઢોરે ભળકે હો !
> દાતારી સતીસી માથે, ભાળી (દાંતની સુવર્ણરેખા)
> ભળકે ઓ !
> આયો બુડાપો ! એરે, આયો બુડાપો !
> નેણ નો નખરો હેઠો મેલો રે ! આયો બુડાપો !

આમ ફાગમાં શૃંગર રસના અને ભક્તિના ભાવ તેમજ શીખના ભાવો વ્યક્ત કરવામાં આવ્યા છે ફાગ જેટલા ગંભીર ભાવના વહનનું સાહિત્યસ્વરૂપ છે, તેટલું જ વહન તેમાં ત્યાંની ધરતીના રંગરૂપો, સમાજના વગિયાઓનુ પણ તેણે વહન કર્યું છે મારવાડનો સોય તનો ઠાકોરિયો કેવો છે!

> ગાડી ને શુડખેલ ધાગો, ગળિયારામાં મળિયો;
> આતીડાનો હલકો, મને સામે મળિયો;
> ઠાકોર સોયતનો ! હોરે ઠાકોર સોયતનો !
> સોનાના માદળિયાવાળો ઠાકોર સોયતનો !

આડે જોડેલ બળદ જોડને હાથીડાની જોડ સાથે સરખાવીને, સોયતના ઠાકોરની સાથમી વર્ણવીને, તેની ધનસંપત્તિ ગાઈ નાખી માત્ર ગળામાંના સેનાના માદળિયાને ગાઇને જુદ્દમી ઠાકોરનો ફાગ રચ્યો છે. તેણે બહારણીને પકડીને ગઢમાં બેસાડી છે. તે બહારણીએ ઠાકોરને શાપ આપ્યો કે નરી ઠકરાત બળીને ખ.ખ થાજો:

અવાવાળો અડમીરાજા, બામણી ગઢ સાહી
મેલો છડથી બામણી સરાપ દિધો, બળજો આઉવો
એરે બળજો આઉવો ની ગાયો ચરજો રે!
બળજો આઉવો! ધરતીનો ધાબો, બળજો આઉવો!

ત્યાંનું અર્થગત્જીય અને સામાજિક છવન ગાયા પછી તરત જ ત્યાંના સમાજછવનમાં તેઓ સરી પડે છે. સમાજછવનમાં હજુય સંયુક્ત કુટુંબો કયાં તૂટયાં છે? ને ભાભીને મન નણંદલ કાં તો સાકર સમાન હોય, કાં તો સખી સમાન હોય તે તેનાથી વિખૂટી પડી સાસરે જાય ત્યારે તો ભાભી 'સરાપ' દે:

નણંદલ ને ભોજાઈ જોડે માથો ધોયો,
નણંદલ ચાલી સાસરે
જોડી બીખર ગઈ, હેરે, જોડી બીખર ગઈ;
નણુદોઈ થારો નાસ જાજો, જોડી બીખર ગઈ!

દૂ:ખી અણું આવ્યું છે ને તેનો ઉલ્લાસ મનમાં છે તે ય ફાગમાં જડી આવે છે:

ધોળ્યા ઓદ્દાની જોડયા, માળબિયો લાયો રે!
પાછી ફરને, જોયો, મારો જેઠ આવે રે!
આણાં અળગાંનો; હેરે, આણાં અળગાંનો!

સાંતળિયે મારો માથો ગૂંથ્યો રે, આણાં અળગાંનો!
હેરે આણાં અળગાંનો!
મીંડાઓ મોતી પોહર્યાં રે! આણાં અળગાંનો!

આણે ગયા. કુટુંબજીવનમાં દેવરિયો વહાલો વહાલો લાગવા લાગ્યો, ને દેવરિયા કાજે 'મિનકી' લાવવાના ભાભીને કોડ જન્મે છે:

કાઠિયા ઘઉંની ઊંબી સામે મોરે ઝળકે રે!
દીવલાના ચાંદલિયે ભાભી રૂપિયા પરખે,
એ ખ્યાં દેવરનો હેરે, ખ્યાં દેવરનો સોરાજી!
કમરો કાંઠી બાંધો રે, હેરે કમરો કાંઠી બાધો રે!
મુક એકલડી પરણાએ, લાઉ એ! ખ્યાં દેવરનો!

કુટુંબમાં ભંવરજી સાથે રહેવાથી હવે તો ભંવરજીના દુર્ગુણો અને વ્યસનોની જાણકાર થઈ છે ભવરજીને હોકા અને અફીણનો ભારે શોખ છે. તો તે ફાગ દ્વારા શિખામણ આપે છે:

હાથમાં ઓકો, બેઠક સારી લાગે,
માથામાં અમલની ડાબી, ખારી લાગે!
માવો છોડ દે! હેરે, માવો છોડ દે!
માવેરો, માવે દારૂ પી લે; માવો છોડ દે!

માવો–અફીણ પીવાથી માથા પર દેવું થઈ ગયું છે ને તેમાં પાલીનો જોડતો શેઠ અચાનક રગમાં આવીને ભંગ પડાવી જાય છે ને લેણા પેટે ચીજો લીધી તે ગાયુ છે:

કાકો ને બતિજો, હોકો આકડિયો મેં ભરિયો,
પાલીવાળો જોડતો, અલબીને પડિરો; ઘોળા દે પર!
એરે, ઘોળા દે પર!
વાણિયે લેણામાં લીધો, સોળા દે પર!

સંસારની આવી અનેક વિટંબણાઓમાંથી નીકળ્યા પછી સંસારના મોજશોખ માણ્યા પછી જીવ વિચારમાં પડે છે કે :

હંસને મૂકે એલો, અનેસો મથી રાખો રે!
થોડા દા'ડાનો જીવણો, ભલાઈ લેલો રે!
ઓછી ઉંમરમેં, હે રે ઓછી ઉંમરમેં,
મરજાણો સંસારમાં!

રણુજાના રામાપીરને પણ તેઓ સંસાર પાર ઉતરવા સ્મરે છે :

કેસર ઘોળી કાળમે પાણુજી થાને સોવે!
લીલો ઘોડો નવલખો, રણુંજે છોવે, રામાપીરનો!
રામા પીરનો! હે રામા પીરનો,
રણુજે લીલો થારો ઘૂમે, રામા પીરનો!

જીવ અને શિવ જુદા છે. જીવને સંસારમાં રહીને ધરતીના બધા જ રંગરાગ જોવા પડે છે. ઘણુાય જીવને પરમાત્મા પાછળ લઈ જવા મથે છે, પણ ધરતીની નક્કર અને ઘન વાસ્તવિકતાઓ જીવને તેમ કરતા અટકાવે છે. આવી નક્કરતામાંની એક છે. તેમના અર્થ જીવનની આ તો વણઝારાએ ગાયેલ ફાગો છે તેથી તેમના જીવનનું વિશેષ અંગ ધાગા—બળદો—છે ને તેના ય ફાગ છે :

ગળાનો વાડલિયો મૂકીને બૂડો ધાગો લાયો રે!
ઉનાળો આયો, ધાગે ઠોકર ખાધી, ડૂબો વાડલિયો!
હાંરે ડૂબો વાડલિયો!
પરાયો લેણો માથે કીદો રે, ડૂબો વાડલિયો!

બળદ કાદવમાં ખૂંચી જાય છે ને માળવો ખારો બને છે તે નીચેના ફાગમાં છે :

કાબરિયા બરદિયાની જોડ, માળવિયાથી લાઈ રે !
હેણીવાળા નારકિયો, કાદામેં કળિયેયો રે !
બાજુ માળવિયો ! એરે, બાજુ માળવિયો !
દેવરિયા, માંડણી લાયો રે બાજુ માળવિયો !

બળદો ગુજરી ગયા. જીવન વિષમ બન્યું છે તેથી ચાકરી સ્વીકાર્યા વગર છૂટકો ન'તો' તેથી ભંવરજી નોકરીએ જવા તૈયાર થયા છે. આટ-આટલા દિવસ, મહિના અને વર્ષો સાથમાં કાઢવા તેવી નાયિકાને હવે વિજોગણુ તરીકે કેમ કરીને વિતાડાય?

હાથમેં કડિયાળી ડાંગ, ખડિયો બાંધણુ ટેટી,
પરાઈ ચાકરીઓ લાગે, કરડી છાતી ઓ !
હું યો હારો મા, હેરે હીનો હારો મા !
મૂંછોનો પાણી હરામ રાખે ઓ ! હિયો, હારો મા !

વિજોગણુ બને છે પછી તેનાથી શણુગાર સજાતા નથી સૌ શણુગાર સાધનો અકબધ પડ્યાં રહે છે તેથી નાયિકા ગાય છે:

નેણુરો શણુગાર કાજળ કૂંપલીમેં રે ગિયો !
એક ટઉકો તેલરો, શેલેરો પડિઓ રે !
કાજળ રેલાણો, હેરે, કાજળ રેલાણો !
નેણુરો બરાબો કીધો રે, કાજળ રેલાણો !

આમ આ ચાર પંક્તિઓના લોકગીતમાં તે સમાજનાં અનેકવિધ રૂપો જોવા મળે છે.

આ ફાગો 'ચોગડિયા ફાગ'ના નામે તેના ગાનારાઓ પિછાને છે. ચાર પંક્તિનો ફાગ માટે 'ચોગડિયા ફાગ.'

કાવ્યસાહિત્યમાં ચાર પાદનું રૂપ ઠીક ઠીક પ્રચલિત અને જાણીતું છે. સોરઠી દોહરામ ચાર પાદ અનુષ્ટુપ જેવા વેદકાલીન પ્રાચીન છંદમાં

૨૮ લાગી !

માનવીના મૉલાંશા મૂળભૂત સ્વભાવની વિચારણા કરીને આપણે માનવને સમજવા બેસીએ તો માનવમાં ભેદ નહીં કળાય ! માનવસ્વભાવ તો પૃથ્વીના ૫૬ પરના સર્વ માનવીમાં સરખો જ લાગે, પછી ભલે સસેક્સ કે વેસેક્સની નારી હોય, પણ તે ગ્રામગૌરી મહુડીની કોઈ ભીલાંરાણી જેવી ભાસશે કે સોરઠમાં ભાદરનાં વહેતાં પાણી પર જીવતી કોઈક મેરકન્યા શી !

આ ગીતો ઉત્તર ગુજરાતમાં ખૂબ નામીચા બનેલ સુણસર ગામની ઠાકરડા સ્ત્રીઓનાં છે. ત્યાંના ઠાકરડાઓ ઈતિહાસખ્યાત ગણાય છે. સ્વ. શ્રીમંત સયાજીરાવે તેમને 'સંસ્કારવા' ભારે મથામણ કરી. ગુનાહિત કોમોમાં સંસ્કાર ફેલાવવાનું કાર્ય કરી પ્રતિષ્ઠાને વરેલ શ્રી. રવિશંકર મહારાજ પણ તે ગામમાં વસી આવેલા છે.

આ કોમની સ્ત્રીઓની અંદર શી કુણાશ પડી છે તે એમના એકેએક ગીતમાંથી જડશે; અને તે ભાવો સ્ત્રીભાવ નથી શું ?

(૧)

ઊંચાં રે થડ, ઢૂંકડે મારું સાસરું;
નેચી મહિયર મારી વાટ રે,
મારા વીરાને કે'જો, આણાં મોકલે !

સાડલા ફાટચા છે, માડી, મારે ઘૂઘરે જાય છે;
મારા પિયરિયાની પડી જાય લાજ રે;
મારા વીરાને કે'જો, આણાં મોકલે !

પોલકું ફાટયું મારા અંગથી રે,
જાય છે મારા પિયરિયાવાળી લાજ રે,
મારા વીરાને કે'જો, આણાં મોકલે !

ઘાઘરા ફાટયા છે મારા ઘેરથી રે,
જાય છે મારા પિયરિયાવાળી લાજ રે,
મારા વીરાને કે'જો, આણાં મોકલે !

ઊંચાં રે થડ, ઢૂંકડે મારું સાસરું;
નેચી મહિયર મારી વાટ રે,
મારા વીરાને કે'જો, આણાં મોકલે !

(૨)

સાસુ મારી સાંભળો ને સાહેલીની હાથમાં અંગૂઠી,
મને ઓલી અંગૂઠીની રઢ લાગી !

કો' તો વહુવર મોઝડી લઈ આપું;
બળી તમારી મોઝડી, બળ્યાં તમારાં કડલાં,
મને પેલી અંગૂઠીની રઢ લાગી !

કો' તો વહુવર સાંકળાં લઈ આપું;
બળ્યાં તમારાં સાંકળાં ને બળ્યાં તમારાં ચૂડલાં,
મને પેલી અંગૂઠીની રઢ લાગી !

કો' તો વહુવર નથડી લઈ આપું, કો' તો ટીલડી,
બળી તમારી નથડી ને બળી તમારી ટીલડી,
મને પેલી અંગૂઠીની રઢ લાગી !

કો' તો વહુવર વાળિયું ને કાં' તો કાંકણી* લઈ આપું;
બળી તમારી નથડી ને બળી તમારી કાંકણી,
મને પેલી અંગૂઠીની રઢ લાગી !

(૩)

સમેળામાં ઊગ્યો રંગ કેવડો રે,
ધોળું રે સાહેબનું ફૂલ, રાતો રે રંગ કેવડો !
મહિયરે બાપાનાં હેત, રાતો રે રંગ કેવડો !
સાસરિયે સાસુનાં ઝેર, રાતો રે રંગ કેવડો !
મહિયરે માતાનાં હેત, રાતો રે રંગ કેવડો !
સાસરિયે જેઠુંના દખ, રાતો રે રંગ કેવડો !
મહિયરે વીરાનાં હેત, રાતો રે રંગ કેવડો !
સાસરિયે જેઠાણીનાં ઝેર, રાતો રે રંગ કેવડો !
મહિયરીએ ભોજાઈનાં હેત, રાતો રે રંગ કેવડો !
સાસરિયે નણદીનાં ઝેર, રાતો રે રંગ કેવડો !
મહિયરીએ બે'નીનાં હેત, રાતો રે રંગ કેવડો !

(૪)

સંગ મારું સસરું ભલું પણ વેગળું;
દામણિયે દીવા ઝળકે રે !
સંગ મારા સસરા ભલા પણ વેગળા;
સંગ મને લાજું કાઢયાનો કોડ;
દામણિયે દીવા ઝળકે રે !

* દીપણી, નાકમાં પહેરવાનું સ્ત્રીનું અલંકાર



સગ મારી સાસુ ભલાં પણ વેગળાં રે;
સગ મને પગે લાગ્યાના કોડ,
દામણિયે દીવા ઝળકે રે!

સગ મારા જેઠ ભલા પણ વેગળા રે;
સંગ મને ઘૂંઘટ કાઢયાનો કોડ રે,
દામણિયે દીવા ઝળકે રે!

સંગ મારી જેઠાણી ભલાં પણ વેગળાં;
સંગ મને કેડે મા'લ્યાનો કોડ રે,
દામણિયે દીવા ઝળકે રે!

સગ મારો દિયેર ભલા પણ વેગળા,
સગ મને હોળી રમ્યાના કોડ રે,
દામણિયે દીવા ઝળકે રે!

સગ મારી દેરાણી ભલી પણ વેગળી,
સગ મને કેડે હાલ્યાના કોપ રે,
દામણિયે દીવા ઝળકે રે!

સગ મારી નણદી ભલી પણ વેગળી,
સગ મને માથાં ગૂંથ્યાનો કોડ રે,
દામણિયે દીવા ઝળકે રે!

(૫)

લીલુડી પાટણની બગડી બહુ સારી,
હારી, હારી, શું રે કરુ એની પહેરનારી પરદેશ!

લીલુડી પાટણની મોજડી બહુ સારી,
હોરી હોરી, શું રે કરું, એની પહેરનારી પરદેશ !
લીલુડી પાટણનાં કડલાં બહુ સારાં,
હોરી હોરી, શું રે કરું, એની પહેરનારી પરદેશ !
લીલુડી પાટણનાં સાંકળાં બહુ સારાં,
હોરી હોરી, શું રે કરું, એની પહેરનારી પરદેશ !
લીલુડી પાટણના ચૂડલા બહુ સારા,
હોરી હોરી શું રે કરું, એની પહેરનારી પરદેશ !
લીલુડી પાટણની ટીલડી બહુ સારી,
હોરી હોરી શું રે કરું, ટીલડીની પહેરનારી પરદેશ !
ટીલડીની પહેરનારી પરદેશ !

અર્થ

ગીત ૧. ગોરીને પિયરની લાજની શી ચિંતા જન્મી છે ! સાસરિયે આવી ત્યારે બચકી બાંધીને માએ લૂગડાં આપેલ તે ફાટી ગયાં છે ! આમ તો ઠકરાણીઓ ઓઝલ પાળે, પણ પિયુજી પાસે ય પોતાના પિયરની લાજ જાય તે શે ખમાય ?

સાંભળ્યું છે કે ત્યાંની ઠાકરડા કોમમાં સ્ત્રીઓ ઘાઘરે ઝબ્બ મુકાવે, ઘૂઘરીઓ મુકાવે ! તો ઘાઘરા જળી ગયા છે તેથી પેલી ઘૂઘરીઓ ખરી પડે છે તે ભાવ હશે પંક્તિ ૪ માં ? કે જેમ ઘાઘરે ઝબ્બ મુકાવે છે તેમ સાડલે હશે ?

ગીત ૨. ફક્કડ સંવાદ છે ગીતમાં. ને સાસુ વહુ વચ્ચે મીઠાશ કેટલી છે ! સાસુ વહુ બોલતાં હશે ત્યારે તો મોએ શબ્દોએ ભરાઈ જ

જાતું હશે ને! અને થી મીઠાશે સાસુ વહુને ઉત્તર વાળી રહી છે?

ગીત ૩. કેવડાનો રંગ રાતો ક્યાંય ભાળ્યો છે? લોકની શી આસમાની (Romantic) રંગભરી કલ્પના છે! જુવાનીનો–પ્રેમનો–રંગ લાલ, માટે કેવડાને ય તે તેજ રંગે જુએ ને!

મહિયરિયાં અને સાસરિયાંની તુલના આ ગીતમાં છે।

ગીત ૪. ઠાકોરનાં નામની અંતે સિંહ આવે ને લોકભાષામાં પછી તે બને છે સંગ: મહોબતસંગ, હિંમતસંગ! જુવાન ઠકરાણી ઠાકોરની આગળ મન કામનાઓ વર્ણવે છે.

ગીત ૫. સરખેસરખી હેડીના બે દોસ્તારો ગયા છે પાટણ. દોસ્તો પાટણની બજારમાં નીકળે છે ને વારાફરતી ચીજો બતાવે છે. તે જાણુસો પેલા મિત્રને ખપમાં લાગે એમ નથી, પણ ઘેર નારને ખપે તેમ છે, આથી તેને વારેવડીએ આ જ ઉત્તર દેવો પડે છે: 'એની પહેરનાર પરદેશ.'



ત્રણ પ્રણયગીતો

સોમાભાઈ મારી સાથે હતા ને અમે બંને વીરમગામથી ત્રણેક ગાઉ દૂરના રહેમલપર ગામમાં પગપાળા જઈ રહ્યા હતા! ઓહોહો! સોમભાઈ શું મજાના માનવી! વાતોનો ભંડાર નેતેમાં ગામડાના જીવ! ધરતીનો સાચો સપૂત, આથી લોકગીતોની વાત નીકળે ત્યારે એ તો મને ગાઈ સંભળાવે એની પંક્તિઓ. દાતરડાના ગીતની વાત કરનાર જ તે!

રહેમલપર અમે ગયા હતા, ખેતમજૂરની સહકારી મંડળીનાં કામકાજ જોવાને માટે. સહકારી મંડળીઓ અંગેની ત્યારે મારે વાતો ભેગી કરવી હતી. સોમાભાઈ પણ સહકારી મંડળીઓના કામકાજના અચ્છા જાણકાર, આથી તેની ગૂંચો, અગવડો, ફાયદાઓ, ગેરફાયદાઓ, મર્યાદાઓ ઇત્યાદિ વિના-સંકોચે રસ્તામાં સમજાવતા જાય અને સાથે સાથે કોઈ લોકગીત યાદ આવી જાય તો તેની પણ વાત કાઢે. અમારી સાથે સોમાજી નામે તરવરાટવાળા ઠાકરડાભાઈ પણ હતા અને ઉઘાડા વગડામાં સવારના પહોરમાં મધ્પાં મારતાં મારતાં, રસ્તો ભૂલતા અને પાછો તેનો મેળ પકડીને ચાલ્યે જતા હતા, ત્યાં ઉસ ધરતીમાં રીંગણીઓની ક્યારડીઓ જોઈ સોમાભાઈએ કહ્યું; 'જુઓ આ રેલમપર. અહીંથી તમને ઘણાં લોકગીતો પણ મળશે.' અને અમે ગામમાં ગયા. સહકારીમંડળીનું કામકાજ સંભાળનાર ભાઈના જ અમે મહેમાન બન્યા, તેમના નિવાસસ્થાનના મોટા વિશાળ વંડામાં કાલાનો આઢ હતો. કોળી, વાઘરી અને ભરવાડ સ્ત્રીઓ કાલાના ઢગલા લઇને કાલાં ફોલવા બેસી ગઈ હતી.

તે દિવસે મેં વળી પાટલૂન અને બુશકોટ પહેર્યાં હતાં તેથી આ લોકને મનમાં કાંઈક વિચાર આવ્યો હશે કે 'આ સાહેબ કોણ છે?' ગામડાંમાંથી લોકગીત એકઠાં કરનારને આ વેશ વિઘ્નકર્તા બને પણ ખરો, એવું મનમાં થયું; પણ સોમભાઈ અજબ માનવી છે! ખેત-મજૂરોની સહકારીમંડળીની વાતો તો તેમણે પેટ ભરીને મને સંભળાવી અને તરત જ મંડળીના સંચાલક શ્રી. નાનુભાઇને કહ્યું: 'પુષ્કરભાઈ તો લોકગીતોના માંડનાર છે. એમને કંઈક સંભળાવે, આ બાઈ લોકોને જરાક કહો ને!'

શ્રી નાનુભાઈએ આ બહેનોને ગાવાનું કહ્યું, પણ એ તો શરમાય, અજાણ્યા માનવી આગળ એમ જીભ શેણે ઊપડે?

છેવટે નક્કી થયું કે પારવતીબહેનને બોલાવો તેમના વગર જીભનાં તાળાં નહિ તૂટે.

પારવતીબહેનને ઇજન મોકલ્યું કે તરત તે આવી ઊભાં. પ્રારંભમાં તેમણે કનૈયો, જશોદા અને ગોપીનાં લોકગીતો ગાયાં. મીરાંનાં પદો, ભજનો ગાયાં, પણ છેવટે તેમણે મુક્ત કંઠે ગાવા જ માંડ્યું ને તેમણે પ્રણયગીતો–ભરત પ્રણયનાં ઝરણાં આપ્યાં. ગીતની પંક્તિએ પંક્તિએ અને શબ્દે શબ્દમાં મધપૂડા શી ગૂંથણી જોશો. મધપૂડાની અંદર રહેલ મધને જે રીતે પામી શકાય છે તે જ રીતે આમાંના શૃંગારને માણી શકાય છે, પણ તેટલી રસદૃષ્ટિ અને સૌંદર્યદૃષ્ટિ કેળવાય તો જ!

કેવડાના છોગા મેલીને!

લીંબડી ઊગી લીલુડી રેતમાં, કેવડાના છોગા મેલીને!
લીંબડો ઊગ્યો સૂંવાળ, ,, ,, ,,
કડલાં લાવ્યો ગૂંદીનો ગરાસિયો, ,, ,, ,,
કાંબિયું લાવ્યો અલબેલો, ,, ,, ,,

લીંબડી ઊગી લીલૂડી રેતમાં, " " "
લીંબડો ઊગ્યો ચૂંવાળ, " " "
હાંહડી લાવ્યો ગૂંદીનો ગરાસિયો, " ઙ, "
દાણિયું લાવ્યો અલબેલો, " " "
લીંબડી ઊગી લીલૂડી રેતમાં, " " "
લીંબડો ઊગ્યો ચૂંવાળ, " " "
નથડી લાવ્યો ગૂંદીનો ગરાસિયો, " " "
ટીલડી લાવ્યો અલબેલો, " " "
લીંબડી ઊગી લીલૂડી રેતમાં, " " "
લીંબડો ઊગ્યો ચૂંવાળ, " " "
ઘાઘરો લાવ્યો ગૂંદીનો ગરાસિયો, " " "
સાડી લાવ્યો અલબેલો, " " "
લીંબડી ઊગી લીલૂડી રેતમાં, " " "
લીંબડો ઊગ્યો ચૂંવાળ, " " "

નવરંગ લાકડું

કે રસિયા, વાડીમાં પડ્યું રે, નવરંગ લાકડું રે લોલ !
કે રસિયા, તેની રે ઘડાવો નવરંગ ચાંખડી રે લોલ !
કે રસિયા, લીલી રે ચાંખડીએ રડચાપડચા રે લોલ !
કે રસિયા, અમને રે લાગ્યું, તમને ઝાઝી ખમાયું રે લોલ !
કે રસિયા, તિયાં રે બંધાવો રે ડોલર હીંચકો રે લોલ !
કે રસિયા, હીંચકડો તૂટ્યો ને પડીઅલ બે જણાં રે લોલ !
કે રસિયા અમને રે લાગ્યું, તમને ઝાઝી ખમાયું રે લોલ !
કે રસિયા રીસે બળતી કવછું, તમને ઘણી ખમાયું રે લોલ !

કે રસિયા, મારી હિંદવાણીનો ઝગડો પૂરો નહિ પડે રે લોલ!
કે રસિયા, મારા ગલફૂલિયાંનો હાર તોડ્યો નહિ તૂટે રે લોલ!

માયાળુ માનવી

આપણા મલકમાં માયાળુ, માનવી,
માયા મેલીને ઘોડે ચડો, મારા દરબાર,
હાલોને આપણા મલકમાં!

આપણે મલકમેં દાતણ દાડમાં,
દાતણ કરીને ઘોડે ચડો, મારા દરબાર,
હાલોને આપણા મલકમાં!

આપણા મલકમાં માયાળુ માનવી,
માયા મેલીને ઘોડે ચડો, મારા દરબાર,
હાલોને આપણા મલકમાં!

આપણા મલકમાં નાવણ કુંડિયું,
નાવણ કરીને ઘોડે ચડો, મારા દરબાર
હાલોને આપણા મલકમાં!

આ ગીતમાં જે લય વેગ છે તે વિશિષ્ટ પ્રકારનો છે અને શ્રમજીવીઓનું આ ગીત છે તે મુલકમાં કાવાનો પાક મબલખ થાય છે ને કાલાં વીણતી વખતે આ ગીત ત્યાંની સુંદરીઓ ગાય છે

ગ્રામધરતીની રસસુંદરીઓનો પ્રેમ એકાકી નથી, તે વાત મારા કાનમાં આવા ધણીના લોકોએ અનેક વાર નાખી છે અહીં પણ તેઓએ તે જ કહ્યું: તેમના પ્રેમને પાણી પાનાર માળી છે શ્રમયુક્ત જીવન!

તેમની પાસે પ્રેમ કરવાની આ અનોખી રીત છે! ને તે ભાવોને કામ કરતાં કરતાં ગાય છે



વનનો મોરલો

જાતિ-ઈર્ષ્યાનું આ લોકગીત છે. કોઈ મરઘાનિણીને મોરલા સાથે પ્રીત બંધાઈ હશે. થનગનતો મોરલો આંગણે આવી નાચતો હશે. કાચની પૂતળી શી કામિની રૂપકડી હથેલીમાં જવારધઉંના દાણા રાખી મોરલાને બીજા હાથે પંપાળતી પંપાળતી ભોજનિયાં કરાવતી હશે, કદાચ ! કે મોરલો પ્રતીકસ્થાને હશે ?

આવાં હેતનો અવસર પરણ્યાને ન સાંપડ્યો હોય તો પરણ્યો પેલા મોરલાનો શિકાર જ ખેલે ને ?

પુરુષ જાત શું છે તેનો કેવો ચિતાર આ લોકકવિએ આપ્યો છે !

સોના કામઠડી ને રૂપલાંનાં છે તીર,
રાજાનો કુંવર શિકાર ચડિયો !
માર્યાં માર્યાં હરણુ ને કાળિયાર,
એકે માર્યો વનનો મોરલો !
એ મોરલિયો કાવડ નાખી લાવ્યો,
લાવીને નાખ્યો મઢી બારણિયે !
ઊઠો રાણી, ઝાંપલિયાં ઉઘાડો,
રમતાં ને જમતાં ઝાંપલિયાં ઉઘેડિયાં !
ઊઠો રાણી, બે મોરલિયા પિછાવો,
તમારા મોરલિયા તમે પીછો !

રાણી ખિન્નવદના બને છે, ત્યારે પતિના દિલમાં પશ્ચાત્તાપની ધૂણી ધખવી શરૂ થાય છે:

કો'તો રાણી, બે કડલાં ઘડાવું, કડલે ટંકાવું વનના મોરલા !
એ મોરલિયો બોલે નૈં, ન ચાલે, વનનો મોરલો ટહુકા કરે !

કે'તો રાણી, એ ઘાઘરા લઈ આલું, ઘાઘરે ટકાવું વનના મોરલા!
એ મોરલિયો બોલે નૈં, ન ચાલે, વનનો મોરલિયો ટહુકા કરે!
કે'તો રાણી, એ હાહડી ઘડાવું, હાંહડીએ ટકાવું વનનો મોરલો!
એ મોરલિયો બોલે નૈ, ન ચાલે, વનનો મોરલિયો ટહુકા કરે!

અને રાણીનું મોં કદી ય પછી ન પ્રફુલ્લ બન્યુ કે ન બન્યું પલ્લવિત!

શા છે આ સંસારના ઘાટ!



જુગારીનું ગીત

લોકગીતો એ સમાજના આભલાં જેવાં છે ગુજરાતનાં લોકગીતોમાં ગુજરાતના લોકજીવનનાં કંઈ કંઈ પડછાયા, ઓછાયા અને પ્રતિબિંબો ઝિલાયાં છે

આ ગીતમાં સુંદર ચિતરણ છે, જુગારીનું! જુગારીની શી મનોદશા હોય છે તેનું આમાં સુંદર માનસચિત્ર જોવા મળે છે

લાલ જુગારી, છેલ જુગારી,
પગના તે કડલાં લઇ ગિયો, જુગારી!
હારીને આવ્યો બિચારો, લાલ જુગારી, છેલ જુગારી!
ડોકનું તે દાણિયું લઇ ગિયો, જુગારી!
હારીને આવ્યો નિમાણો, (ઉતરેલ મો વાળો)
હારીને આવ્યો બિચારો! લાલ જુગારી, છેલ જુગારી!
ડોકની હાહડી તે લઈ ગિયો જુગારી!
હારીને આવ્યો બિચારો! હારીને આવ્યો નિમાણો!

લાલ જુગારી, છેલ જુગારી !
કેડનો તે ઘાઘરો લઇ ગિયો જુગારી !
હારીને આવ્યો નિમાણો ! હારીને આવ્યો બિચારો !
લાલ જુગારી, છેલ જુગારી !
ઓઢવાની ઓઢણી લઈ ગિયો, જુગારી !
હારીને આવ્યો બિચારો, હારીને આવ્યો નિમાણો !
લાલ જુગારી, છેલ જુગારી !
નાકની તે નથડી તે લઈ ગિયો જુગારી !
હારીને આવ્યો બિચારો ! હારીને આવ્યો નિમાણો !
લાલ જુગારી, છેલ જુગારી !

(૨)

જુગટિયો સરદારે, જૂગટ કોઈ રમશો નૈં રે !
જૂગટ રમતાં શું શું હાર્યો ! જૂગટ રમતાં ગોધા રે હાર્યો !
સાંતીડાં જૂગટમાં ડૂલ્યાં, જૂગટ કોઈ રમશો નૈં રે !
જૂગટિઓ સરદારે, જૂગટ કોઈ રમશો નૈં રે !
જૂગટ રમતાં શું શું હાર્યો ? જૂગટ રમતાં ઓરડા હાર્યો,
ઓશરી વિયાજડામાં ડૂલી, જૂગટ કોઈ રમશો નૈં રે !
જુગટિયા સરદારે, જૂગટ કોઈ રમશો નૈં રે !
જૂગટ રમતાં શું શું હાર્યો ? જૂગટ રમતાં બાયડી રે હાર્યો !
છોકરાં વિયાજમાં ડૂલ્યાં, જૂગટ કોઈ રમશો નૈં રે !

★

‘સંધીડો મેમાન આવ્યો!’

લોકગીતોમાં કેટલીક વખતે તત્કાલીન સમાજનું, કોમ-પ્રથાનું તેમજ રીતરિવાજોનું દર્શન થાય છે તો કેટલીક વખતે બની ગયેલ એકાદ સામાજિક પ્રસંગને ગાતાં ગાતાં પશ્ચાદ્ભૂમાં તે વાતાવરણ દ્વારા કોઈ મુલકના ભૌગોલિક ચહેરામહોરાનું સુંદર આલેખન લોકભાવક કરી નાખે છે

આ લોકગીત મને ભાલમાંથી સાંપડ્યું છે ને ભાલની ધરતીનું ચિતરણ, આથી, આ લોકગીતમાં છે બળદ ખરીદાય. બાળધાના માલિક સીંધી. સિંધના મુસલમાન વેપારી ઊંટ લઈને ઉનાળુિએ નીકળે તેમનો પહેરવેશ, શરીરનું કાઠુ, સોયરો આંજેલ ઝીણી આંખો, કાતરેલ પાતળી મૂછો, મુલાયમ ને ચમકદાર કાળી દાઢી, કેડય ઉપર વીંટાળેલ લૂંગી જેવું સિંધનું ભાતીગળ કપડું, ઊંચી એડીના દેશી ચામડાના જોડા; આમ તે ખૂબ નમણા અને આકર્ષક હોય છે

આવો સંધી ભાલના ઝીંઝર ગામે આવી ચડે છે ગામડામાં તો મેમાનને બેસાડવા ઢોલિયો ઢળાય તેના માટે વખતીએ ઢોલિયો ઢાળ્યો, ઊનાં પાણી મૂક્યાં, ડિલ ચોળીને તેને નવરાવ્યો, ને ભાલની ધરતીમાં ઘઉંનો અઢળક પાક પાકે ને તેય સ્વાદમાં ખૂબ મીઠો, તેથી સેવ તો ત્યાંની જ. વખતી આ સંધી મિજમાનને માટે સેવ રાંધવા મૂકે છે, ઘીગોળ તેમાં પીરસે છે, પણ આ ભોજન હારે છે, પીરસે છે વખતી એક જ ભાણામાં ને ભેગા બેસીને તેઓએ ખાધું

વખતી વટલાણી ને બંને ભાગી જવાનો નિર્ણય લે છે સારો સાંઢિયો લાવીને તેઓ બંને નાસી છૂટે છે તેમની પાછળ વાર છૂટે છે

‘પઢારોનાં લોકગીતો’માં ફૈબા ભત્રીજા સાથે, બનાસકાંઠાનાં ‘જવલો’માં કાકી ભત્રીજા સાથે અને ભાલનાં લોકગીતોમાં વખતી સંધી સાથે નાસી જાય છે આ ત્રણેય લોકગીતો સમાજશાસ્ત્રીઓને કંઈ પણ ખપમાં લાગશે ખરાં કે?

સંધીડો મેમાન આવ્યો વખતી, સંધીડો મેમાન આવ્યો રે !
ઝીંઝરિયાની વખતી સંધીડો, મેમાન આવ્યો જો !
ઘોડાને ઢોલિયો ઢાળ્યો રે, વખતીએ ઘોડીને ઢોલિયો ઢાળ્યો રે,
ઝાંઝરિયાની વખતી, સંધીડો મેમાન આવ્યો જો !
ઊનાં પાણી મેલ્યાં રે, વખતીએ ઊનાં પાણી મેલ્યાં રે,
ઝીંઝરિયાની વખતીએ ઊનાં પાણી મેલ્યાં રે,
ડિલે સોળી નવરાવ્યો રે, વખતીએ ડિલે સોળી નવરાવ્યો રે;
ઝીંઝરિયાની વખતીએ ડિલે સોળી નવરાવ્યો જો !
શેવુંનાં આંધણ મૂક્યાં, વખતીએ શેવુંનાં આંધણ મૂક્યાં રે,
ઝીંઝરિયાની વખતીએ શેવુંનાં આંધણ મૂક્યાં જો !
ઊભી બજારે હાલી વખતી, ઊભી બજારે હાલી રે,
ઝીંઝરિયાની વખતી ઊભી બજારે હાલી જો !
અડધાનાં ઘી ગોળ લાવી રે વખતી, અડધાનાં ઘી ગોળ લાવી રે !
ઝીંઝરિયાની વખતી અડધાનાં ઘી ગોળ લાવી જો !
એકે ભાણામાં ઠાર્યું વખતીએ, એકે ભાણામાં ઠાર્યું રે,
ઝીંઝરિયાની વખતીએ એકે ભાણામાં ઠાર્યું જો !
ભેળાં બેસીને ખાધું વખતીએ, ભેળાં બેસીને ખાધું રે,
ઝીંઝરિયાની વખતીએ ભેળાં બેસીને ખાધું જો !
તારો જીવ વટલાણો વખતી, તારો જીવ વટલાણો રે,
ઝીંઝરિયાની વખતી તારો જીવ વટલાણો જો !
હાલ્યને ભાગી જાયીં, વખતી, હાલને ભાગી જાયીં રે,
ઝીંઝરિયાની વખતી, હાલ્યને ભાગી જાયીં રે !
સારો સાંઢિયો લાવ્યો સંધીડો, સારો સાંઢિયો લાવ્યો રે,
સિધ માંયલો સંધી સારો સાંઢિયો લાવ્યો જો !

ભાગી ભાલ ભેળાં થાયીં રે વખતી, ભાગીને ભાલ ભેળાં થાયીં રે,
ઝીંઝરિયાની વખતી ભાગીને ભાલ ભેળાં થાયીં જો !
વાહેં વારું સૂટી, સંધીડા વાંહે વારું સૂટી રે,
સંઘ માંયલો સધી, વાંહે વારું સૂટી જો !



ના ય ક

પતિ યુદ્ધે ચડે છે ત્યારે નવોઢા નાર એને પૂછે છે : 'તમે ક્યારે આવશો ?' આ ગીતનો પૂર્વાર્ધ તે પ્રશ્નના ઉત્તરરૂપ છે. ઉત્તરાર્ધમાં પત્ની પતિના જુદા જુદા સ્વજનોને પૂછ્યા કરે છે કે મારો પતિ ક્યારે આવશે. સૌ સ્વજનો સાંકેતિક વાણીમાં ઉત્તર આપે છે. આ આખુંય ગીત જેટલું સરળ છે તેટલું જ કરુણ પણ છે.

આ ગીત મને બે જગ્યાએ સાંભળવા મળ્યું પઢારમાં પઢારણોએ લાંબી હલકે અને મીઠા સૂરે પરબમાં જન્માષ્ટમી વખતે શિયાળ ગામે ગાયેલ. ઉત્તર ગુજરાતમાં પાટણવાડામાં પણ પ્રચલિત છે. શ્રી. ઇંદ્રજિત આચાર્યે ઉત્તર ગુજરાતના આંજણા પર મહાનિબંધ લખ્યો છે, તેમણે પણ તેમના નિબંધના અંતે આંજણા કોમમાં પ્રચલિત ગીતોમાંના એક તરીકે આ ગીતને સ્થાન આપ્યું છે. પઢાર, હાકરડા કે આંજણા કોમની સ્ત્રીના જ કંઠમાં આ ગીત ગોઠવાય તેવું કાંઈ નથી; તેનો સીમાડો તેથીયે મોટા હશે, કેમકે તેનો ભાવ અને રસ કોઈ પણ માનવીને સ્પર્શી જાય તેવો છે. તેનો કરુણ રસ માનવ દિલને હલાવી નાખે છે ને તેથી આ ગીત વધુ ચિરંજીવ બને છે. આ ગીતની સાંકેતિક વાણી ગીતને વધુ ને વધુ કવિતા પાસે લઈ જાય છે.

નાયક રે તમે ચાલણુરદ, આજના ચાલ્યા તે ક્યારે આવશો ?
વણઝારા હો જી !

એસજો રે તમે ગોરી પીંપળા હેઠ, પાન ગણીને માસ કાઢજો,
વણઝારા હો જી !

પોઢજો રે ગોરી નણંદ–ભોજાઈ, ઉઘાડાં બાર ન મેલજો;
વણઝારા હો જી !

રમજો રે ગોરી દિયર–ભોજાઇ, ખડખડ દાંત ન કાઢજો;
વણઝારા હો જી !

પહેરજો રે ગોરી હીર–ચીર, પૂંઠો વાળીને ન નીરખજો,
વણઝારા હો જી !

ઉત્તરાર્ધ :

આવી રે મારા સસરાની પોઠ, જવું રે સાસુડી ઘેર પૂછવા;
વણઝારા હો જી !

આવી રે વહુવર ઘઉંની ગુણ, ગુણો ફાટીને ઘઉં રણ ચડ્યા,
વણઝારા હો જી !

આવી રે મારા જેઠજીની પોઠ, જવું રે જેઠાણીને ઘેર પૂછવા;
વણઝારા હો જી !

જેઠાણી રે, મારા જાણુ અજાણુ, તમે રે આવ્યા,ને નાયક ક્યાં મેલ્યા;
વણઝારા હો જી !

આવી રે વહુવર, અડદાની ગૂણ, ગૂણો ફાટીને અડદા રણે ચડયા;
વણઝારા હો જી !

આવી રે મારા દિયરની પોઠ, જવું રે દેરાણીને ઘેર પૂછવા;
વણઝારા હો જી !

દેરાણી રે મારાં જાણુ અજાણુ, તમે રે આવ્યાં ને નાયક ક્યાં મેલ્યા ?
વણઝારા હો જી !

આવી રે ભોજાઇ ચોખાની ગૂણ, ગૂણો ફાટીને ચોખા રણે ચડયા;
વણઝારા હો જી !

આવી રે મારા ભાણેજની પોઠ, જવું રે ભાણેજ ઘેર પૂછવા;
વણઝારા હો જી !

ભાણેજ રે મારા જાણુ અજાણુ,તમે રે આવ્યા ને નાયક ક્યાં મેલ્યા રે;
વણઝારા હો જી !

આઈ રે મામી જાંબુડી જાર, સોડયો તાણીને મામા સુઈ ગયા;
વણઝારા હો જી !

અરજણિયો

શ્રી. મેઘાણીભાઈ સંપાદિત "રઢિયાળી રાત-" ભાગ ૪ માં (પ્રથમ આવૃત્તિઃ જૂન, ૧૯૨૪) પૃષ્ઠ બાવન પર "ઘાયલ" નામનું લોકગીત છે. તે ગીતનો પરિચય આપતાં શ્રી. મેઘાણીભાઈ લખે છે કે "કોઈ પ્રેમિક ગોવાળ અરજણિયાને એની પરણેલી પ્રેમિકા ચેતવણી આપતી ને મોહ પામતી સબોધી રહી છે." શ્રી. મેઘાણીભાઈના કથન પરથી એવું ફલિત થયું લાગે છે કે અરજણિયો ગોવાળ પ્રેમિક છે, પણ મને પરબડાથી (તા. હિંમતનગર, જિલ્લો સાબરકાંઠા) જ. વલીભાઈ મોમીનના પત્ર સાથે "અરજણિયો" મળ્યો છે. તે અંગે તેઓ લખે છેઃ "આ પત્ર સાથે લોકગીત મોકલું છું. ભારતની આદર્શ સંસ્કૃતિ સમાં ગામડાં અને તેમાં વસનારા લોકોએ અનેક ગીતો દુહારૂપમાં જોડી કાઢેલાં છે. ખૂબ લાંબો સાદ તાણીને દુહા લલકારે અને અંતે 'અરર્જાણયો' એવો શબ્દ ઉચ્ચારે ત્યારે તો વનસીમમાં મધુર ધ્વનિ ચારેકોર ફેલાઈ જાય.

આ લોકગીત 'અરજણિયો' વિશે અનેક પ્રકારની દંતકથા ચાલે છે. કેટલાક કહે છે કે ભાઈબંધ હંમેશાં દારૂના પીઠે દારૂ પીવા જતા અને નશામાં ચકચૂર બની આ 'અરજણિયો' લલકારતા ત્યારથી 'અરજણિયો' ગીત અસ્તિત્વમાં આવ્યું.

ગામડાંના 'શોખીલાલા' પણ ભવાઈરામલીલા વગેરેમાં પોતાનો વટ રાખવા આ અરજણિયો ગવડાવે !

કેટલાકનું કહેવું એમ છે કે બે ગામડાં નજીક નજીક હતાં; વચ્ચે વૃક્ષોની સુંદર ઘટા હતી; બંને ગામડાંના ગોવાળો આ વૃક્ષઘટામાં ઢોરો

ચરાવવા ભેગા મળતા, સામેના ગામની ગોવાળબાળા વડલાની લાંબી વડવાઈ પકડીને હીંચકા ખાય; આ જોઈ સામેના હીંચકે હીંચકતા ગોવાળોએ આ દોહરા લલકાર્યા, અને પ્રેમમસ્તીની રેલમછેલ થઈ રહી. આ પ્રેમમસ્તીનું ગીત તે જ 'અરજણિયો.'

શ્રી. મેઘાણીભાઈ અને શ્રી. વલીભાઈનાં કથનોની તુલના કરતાં ભેદ એ પારખવા મળે છે કે વલીભાઈ આ ગીતને લોકસાહિત્યના એક પ્રકાર તરીકે લેખે છે, શ્રી. મેઘાણીભાઈ તે અંગે કશું લખતા નથી.

(૧)

તારમાર ઠીક છ ગાયલ રે ! તારમાર ઠીક છ
ઠીકના ઠેકાણુ વે'લો આવજે; રે અરજણિયો....

(૨)

લ્યા, પારસી પીઠ આવજે રે ગાયલ રે ! પારસી પીઠ આવજે;
કાચના પિયાલે દારૂ પીસું રે અરજણિયો....

(૩)

ગૂંજામાં છ ગોળિયો ગાયલ; રે ! ગૂંજામાં છ ગોળિયો
એવી રે ! પરણ્યા ધણીની ઓળિયો રે અરજણિયો....

(૪)

ખોળ તાર ખોપરું ગાયલ રે ! ખોળ તાર ખોપરું
એવા પરણ્યા ધણીનું છોરુ રે ! અરજણિયો

(૫)

ખોળ તાર ખજૂર ગાયલ રે ! ખોળ તાર ખજૂર
એવી પરણ્યા ધણીની મરજ્યા રે ! અરજણિયો....

ગીત ગાનાર સામેથી ઉત્તર આપનારને 'માયલ' કહે છે.

જેમ ગજવામાં ખીસામાં ગોળીઓ (ખાવાની) હોય અને તે ખાવાની ઇચ્છા થાય તેમ પરણ્યા ધણીને થોડા પૈસા મળતાં દારૂ પીવાનું મન થઈ જાય છે ને તેથી ઘરમાં સદાય હોળી જેમ સંસાર સળગતો રહે છે.

અથવા તો વનસીમમાં ગોવાળ અને ગોવાળના ગજવામાં ગોળીઓ હોય અને ખાવાની પ્રબળ ઇચ્છા થાય તેમ-બને પ્રેમીઓને તેવી જ પ્રબળ મિલનઇચ્છા થાય છે. ઉત્સુકતા બતાવતી તે પંક્તિઓ કાવ્યમાં છે.

શિયાળાની કડકડતી ઠંડીમાં ગામડાનાં યુવાન નરનારીઓ ખેતરમાં વહેલી સવારે ચાર (ઘાસ) લેવા જાય છે. શિયાળામાં ગ્રામજનોમાં ખજૂર કોપરું ખાવાનો રિવાજ છે. તેથી સ્ત્રી તેના પોતાના ખોળામાં રાખેલ ખજૂર કોપરું ખાય છે. દારૂડિયાનાં છોકરાંની સ્થિતિ આ જાતની છે.

આ અરજણિયો પેલા દારૂડિયા અને ગોવાળ ગોવાલણ બંનેની પાત્રસૃષ્ટિને દષ્ટિ સમક્ષ રાખીને રચાયો હોય તેવું લાગે છે.

"ખીસામાં ગોળ હોય ને ખાધા વગર જંપ ન પડે." એ કહેવત ખજૂર અને ગોળીઓ માટે લાગુ પડે છે. બે પ્રેમીઓ માટે પણ તે તેટલું જ સત્ય છે. દારૂડિયો ને દારૂ માટે પણ તે તેટલું જ યોગ્ય છે.



ઓળિયો=હોળી, મરજ્યાં=મરજી.

ઉત્તર ગુજરાતનાં છ લોકગીતો

આમાંનાં પ્રથમ બે ગીતો રાસડાના ઢાળાનાં છે. ચાંદની રાતે સાહેલીઓ સામટી ઊમટીને સતું સતું થતા ગામને રાસ રમાડે છે, ત્યારે ગવાતા રાસડા જેવાં જ. રાસડાને એક રીતે તો સમૂહનૃત્ય જ લેખી શકાય. તો આપણી સગવડ ખાતર આ બે ગીતોને ઓળખવાં હોય તો કહી શકીએ કે પ્રથમ બે ગીતો રઢિયાળી રાતના રાસડા છે

આવા રાસડાઓ વિશેષે માનવભાવથી તરબતર હોય છે. તેમાં પ્રણયના પૂરનાં મોજાંઓનાં ભાવ વ્યક્ત થતા હોય છે ત્યારે ક્વચિત્ કુટુંબજીવનની બીજી બાજુ—કુટુંબજીવનના સંઘર્ષો પણ આલેખાયા હોય છે. પહેલા રાસડામાં એક નવોઢા શ્વશુરગૃહેથી પિયર આવી પોતાના અનુભવની વાત માંડે છેઃ—

શેમડામાં ઊગ્યો રંગ એવડો રે,
  ધોળું રે સાહેલીનું ફૂલ, રાતો રે રંગ એવડો રે !
શેમડામાં ભૂંડી મારી સાસૂડી રે,
  મહિયરિયે દાદાનું હેત, રાતો રે રંગ એવડો રે !
શેમડામાં ભૂંડો મારો જેઠ રે,
  મહિયરિયે મારા વીરાનું હેત, રાતો રે રંગ એવડો રે !
શેમડામાં ભૂંડી મારી જેઠાણી રે,
  મહિયરિયે ભોજાઈનું હેત, રાતો રે રંગ એવડો રે !
શેમડામાં ભૂંડો મારો દેવરિયો રે,
  મહિયરિયે વીરાનું હેત, રાતો રે રંગ એવડો રે !

સાસરામાં ભૂડી મારી દેરાણી રે,
  મહિયરિયે કાકીનુ હેત, રાતો રે રગ ખેવડો રે !
સાસરિયે ભૂડી નણદલડી રે,
  મહિયરિયે બે'નીબાનુ હેત, રાતો રે રગ ખેવડો રે !

સીમડામાં–સીમમાં ખેવડાનો છોડ ઊગ્યો તેના માથે ફૂલ આવ્યુ, સાહેલીનું ફૂલ શ્વેત. રાસડાની પ્રથમ બે પક્તિઓમાં આખાય રાસડાના ભાવતની વ્યજના છે અને પક્તિઓમાં કાંઈક ગર્ભિત અર્થઘનતા છે

એ શેમડામાં–ગૃહજીવનમાં, કુટુબજીવનમાં કોણ કોણ ભૂડાં છે ? સાસુ, જેઠાણી, દેવર, દેરાણી, અને કાયમી અળખામણી નણદલડી આ નવોઢા સહજપણે પછી તો મહિયર અને સાસરિયાંની સરખામણીમાં સરી પડે છે મહિયરનાં ય સ્વજનો ત્યારે યાદ આવે છે દાદાનુ, વીરાનુ, ભાઈનુ, ભોજાઇનુ, કાકીનુ અને બહેનમાનુ હેત યાદ આવે છે એક તરફ ભૂડાપો છે, જીવનનુ વિષ છે, બીજા પક્ષે જીવનનુ અમૂલું અને મોંઘુ અમૃત.

બીજા ગીતના પ્રારભમાં ધન્યતા અનુભવતી બહેનનો અનુભવ વર્ણવાયો છે કેટલાય દિવસે માનો જણ્યો ભાઈ બહેનીને મળવા આવ્યો છે બહેનીને ઘેર ભાઈ આવ્યો જાણી તે ઘેલી ઘેલી થઈ ગઈ એના હૈયામાંથી ત્યારે આપોઆપ ગીત સરી પડે છે, એ ધન્યતાભર્યા અનુભવનુ

મારવાડમા જાશું મારા ધન રે કેશરિયાલાલ !
એક પૂળો લાવો, ધન રે કેશરિયાલાલ !
પૂળો ગાયને નીર્યો, ધન રે કેશરિયાલાલ !
પૂળો દઈ દોવા બેઠી, ધન રે કેશરિયાલાલ !
દો'તા દો'તા ચોખા ઉતાર્યા, ધન રે કેશરિયાલાલ !

ચોખાની ખીર રાંધી, ધન રે કેશરિયાલાલ !
ખીર ને પ્રીતિ વીર જમાડયા, ધન રે કેશરિયાલાલ !
વીરે મને ચૂડી લીધી, ધન રે કેશરિયાલાલ !
ચૂડી પે'રી સાસરિયાં ગ્યા'તાં, ધન રે કેશરિયાલાલ !
કેડચે આણું આવ્યું, ધન રે કેશરિયાલાલ !
આણે ચૂદડી પલળી, ધન રે કેશરિયાલાલ !
ચૂદડી મે નેવે સૂકવી, ધન રે કેશરિયાલાલ !
ભમતો ભમતો કાગ આવ્યો, ધન રે કેશરિયાલાલ !

આ બહેનીએ ભાઈને ખીર જમાડી અને ભાઈએ બહેનને ચટકદાર ચૂડી લઈ દીધી. ભાઈ ખાલી હાથે બહેનના સાસરેથી તો ન ફરે ને? અને ત્યાર્કેડે શું બન્યું? વીરાએ આપેલ ચૂડી પહેરીને બહેની સાસરે ગઈ, વગર આણું વળાવ્યે.

પછીથી બહેનનું આણું આવ્યું. અતિ હર્ષના અને મહિયર-વિયોગના અશ્રુથી બહેનની પહેરેલ ચૂદડી—અશ્રુથી જ તો—પલળી ગઈ સૂકવવા ચૂદડીને બહેને નેવે મૂકી. હોંશીલી બહેન એ ચૂદડીને પામતી નથી, કેમકે પેલો કાગડો તેનો વિક્ષેપક બને છે ને ચૂદડી લઈ ઊડી જાય છે આ ગીતના બે વિરોધી ભાવો વિશેષે નોંધપાત્ર છે ગીતના પ્રારંભમાં આનંદની જે છોળો લોકહૃદયના સાગરે મૂકી છે તેનું પૂર્ણવિરામ મૃત્યુ દિનની કરુણ નાનકડી વેદનાથી

પછીનાં બે ગીતો લગ્નગીતો છે આ લગ્નગીતો ઉત્તર ગુજરાતમાં સૌનાં માનીતાં છે પઠાણુ, વાણિયા, ઠાકોરો તેમજ ભગીઓની જાનોમાં ગવાતાં મેં તે સાંભળ્યાં છે, તે વિશેષ રીતે આપણે અત્રે નોંધવું જોઈએ. સામાન્યતઃ નાનકડાં લગ્નગીતો હોય છે, પણ આ લગ્નગીતો આમ વધુ વ્યાપકતાને પામ્યાં છે

બીજું વિશેષ આ લગ્નગીતનું એ છે કે રઈવર નદીકિનારે પતંગ ઉડાડવા નીકળ્યો છે તે ભાવનું. સૌરાષ્ટ્રમાં લગ્નપ્રસંગનાં લોકગીતો ઘણુંય છે, તે સંઘરાયાં પણ છે, પણ પતંગ ઉડાડવાનો ભાવ તે લગ્નગીતોમાં હોવાનું મારી જાણમાં નથી.* આ રઈવર પતંગ ઉડાડતો ઉડાડતો ચૂડલા ઉતારવા બેસે છે. તે વોરવા પણ બેસે છે અને છેવટે મૂલવવા:

નદીકિનારે રઈવર પતગે ઉડાડે,
પવનગોળો છૂટયો, પતંગનો દોરો રે છૂટયો,
પતગે ઉડાડે, રઈવર ચૂડલા ઉતારે,
પતગે ઉડાડે, રઈવર ચૂડલા વોરવે,
પતગે ઉડાડે, રઈવર ચૂડલા મુકાવે,

પછી ગીતમાં જુદા જુદા અલંકારોનાં નામ મૂકીને ગીતને ગાનારી બાઈઓ લંબાવે છે, જેમકે કડલાં મુકાવે, કાંબી મુકાવે આ ગીતની છેવટની પંક્તિ આમ છે.—

સગુવઉ સામી લાવ્યો, તમારો સામી,
પતગે ઉડાડે, નદીકિનાર રઈવર પતગે ઉડાડે.

બીજા લગ્નગીતોમાં પણ લગ્નનો લાડીલો ભાવ છે સૌભાગ્યચિહ્નમાં ચૂડલાનું સ્થાન અગ્ર છે લોકગીતના ગાયકોને વ્યંજનાનો કદીય તોટો પડ્યો નથી રૂપકો માટે તેમણે બહુ આઘે દૃષ્ટિ પણ

---

* મારા મુ. સ્નેહી મિત્ર પ્રા. મજરાય દેસાઈએ ખેડા જિલ્લાના લોકગીતમાં આવો ભાવ ક્યાંક સાંભળ્યાનું તેમણે મને કહ્યું છે. સ્વ. ડૉ. હરિપ્રસાદ વ દેસાઈએ બ્રહ્મક્ષત્રિય જાતિનાં લગ્નગીતો એકઠાં કરીને લેખરૂપે પ્રગટ કર્યાં છે, તેમા આ કલ્પના જોવા મળી છે. ઉત્તર ગુજરાતના પટેલનાં લગ્નગીતોમા પણ આવું જ લગ્નગીત હમણાં મને સાંપડયુ છે.

થવા દેતો નથી. અંતે એનું થયું શું? એની પાછળ છેવટે આંસુ સારનાર એક માત્ર હાડિયો જ રહ્યો છે. તેણે જ જવશાનું તર્પણ કર્યું.

છેલ્લું ગીત મરશિયાનું છે. ઉત્તર ગુજરાતમાં કચ્છના રણને સુજાન લેતી કાંધીના મુલકમાં *તૂરીની વસ્તી ઠીક ઠીક છે. તૂરીઓ અછૂતમાં લેખાય છે. તેઓ લોકગીત ગાવાનો ધંધો કરી પેટગુજારો કરે છે. તેઓ રાવણહથ્થા પર ગીતો ગાતા નથી, પણ 'ફીડલ' જેવા રાવણહથ્થા પર ગાય છે બજાણાના નવાબ સાહેબખાનનો મરશિયો જેશીંગા ભિખાજી તૂરીએ રણના કાંઠા પરના ભઆર ગામમાં મને ગાઈ સંભળાવેલો.

પ્રથમ તો મરશિયામાં લોકકવિ રાજાસાહેબનું ચિત્ર શ્રોતાના માનસચક્ષુમાં ખડું કરવા લાગે છેઃ—

રાજા સાહેબખાન રૂપાળા, મોતી ગજરા હેમની માળા,
બંકા સૂબા બજાણાવાળા !

હેમર હાથીઓ ઝૂરે, દેહોતનો દરબાર, ઝૂરે બજાણાનાં ઝાડવાં,
તે સૌ વખાણે સરદાર !

પલમાં રાજા હાલ્યા પરવારી, ચંદરઘટા ચડી અસવારી,
ગામ રૂએ નર ને નારી,

છતરધારી સરદારજી છતન, વખાણું અઢાર વરણ !
બાઈઓ બેઠી રૂએ બંગલે, ને ઉતરા અભરકણ,
વાતું પોતી પ્રાંગે વઢવાણે !

---

* શ્રી ભગવાનદાસ કેલાએ 'હમારી આદિમ જાતિયાં' નામના ગ્રંથમાં તૂરીની વસ્તી ગુજરાત સૌરાષ્ટ્રમાં એકસોની અંદરની બતાવી છે તે કથન મને પોતાને સત્યથી ખૂબ વેગળું લાગે છે. સૌરાષ્ટ્રમાં અને ઉત્તર ગુજરાતમાં તૂરીઓ મોટી સંખ્યામાં છે.

જૂનો ગઢ રાધનપર જાણું, એ બંકા સાહેબખાન બજાણા !
રતનબાઈ ઠકરાણી વાટુ જોવે, દેહોતનો દરબાર જોતજોતામાં
જાતા રિયા, હૈયાના ઉતાર્યા હાર !

તરત હાર મોતીના તોડયા, સોનેરી ઊતર્યા ચૂડા !
રાજા સાહેબખાન રૂપાળા, મોતી ગજરા હેમની માળા,
બંકા સૂબા બજાણાવાળા

આ કરુણપ્રશસ્તિ કાવ્યમાં સાહેબખાનના ગુણોની પ્રશંસા અં સામે પક્ષે લોકોને તેમના મૃત્યુથી લાગેલ આઘાત જ લોકકવિએ વર્ણવ્યાં છે। રતનબાઈને જે અકથ્ય દુઃખ થયું તે દુઃખના ભાવનું કવિ ઉત્કટ તત્ત્વ બતાવી શક્યા નથી માત્ર એક પંક્તિમાં લોકકવિ કહે છે- 'તરત હાય મોતીના તોડયા, સોનેરી ઊતર્યા ચૂડા !'

લોકગીતના ગાયકો ગઈ કાલનાં વર્તમાનપત્રો સમ હતા આવા માનવજીવનના નાનામોટા બધા જ પ્રસંગોને તેઓએ લોકજીવન માટે ભાવિના ઘૂઘવતા પૂરમાં વણઝુબ્યા રાખ્યા છે જવલો! ઠાકરિયો જુવાન! એને કોણ ઓળખત આજે, જો એ લોકગાયકે તેની પર કરુણરસભર્યું ગીત ન રચ્યું હોત તો !

આથી ગુજરાતનાં લોકગીતો માટે એક વિચાર સૂઝે છે. સાંભળ્યું છે કે ફિન્લાંડ પાસે ખૂબ ખૂબ લોકગીતો છે. તેમાંના ઘણાય સંઘરાઈ ગયાં છે, છેલ્લાં સો વરસની સતત મહેનત પછી. જગતમાં તેમનાં લોકગીતો જેટલાં લોકગીતો ભાગ્યેજ કોઈ દેશ પાસે હશે, અને સંઘરાયાં હશે. એમ કરવામાં ત્યાંના સૌ કોઇ જ કામે લાગ્યા હશે ને! ધમધમાટ વેગે જતી રેલગાડીનો પ્રવાસી એકાદ લોકગીતની નવી પંક્તિ સાંભળે કે ખિસ્સામાંથી કાગળની ચબરખી કાઢી તે નોંધી લેતો જ હશે ને !

નથી નાખી પડખેથી જ રૂપક ઉપાડી લીધુ આ લગ્નગીતમાં પારેવડું છે તે નવપરિણીત મુગ્ધાના રૂપક સ્થાને તો નહિ હોય?

પાવા તે ગઢનું પારેવડુ, માણારાજ !
જઈ બેઠું ધરણીને શેઢે, રે ચૂડલો ચતુરે રંગ્યો,
હાથીદાંતનો રે, માણારાજ !
પે'રો સસુવઉ ચૂડલો, ચૂડલો ચતુરે રંગ્યો !
હાથીદાતનો રે, માણારાજ !
પે'રાવે લખમીમાઈનો વીર રે, ચૂડલો ચતુરે રંગ્યો !
હાથીદાતનો રે, માણારાજ !

પાવા તે ગઢનું પારેવડુ, માણારાજ !
એ ચતુરવઉનો રઈવર, વઉરાણી લાયા,

ચતુરના રંગેલ ચૂડનાના પ્રશસાવેણે કન્યાને વર માટે મમત્વ જગાડવાનું દૂતીકાર્ય જાણે જાનડીઓ ન કરી રહી હોય એવુ આ આ ગીત પરથી ભાસે છે કન્યાને પારેવડું કહીને લોકગીતના ગાયકે ભાવપૂર્ણીમાં હદ કરી નાખી છે! મીઠલડું મહિયર મેલીને પરને પ્રિય કરવા નીકળેલ મુગ્ધાને એથી વધુ કયુ યોગ્ય રૂપક આપી શકાય?

આ નિમ્નલિખિત ગીત છે, પરકીય પ્રેમે જગાડેલ દર્દનું અને આહનું ચરાદરીના જવનાને ફરમાયેશ થાય છે કે દેવના મેળે ન જતો ઓધડનાં મેળે દેવદરબારના મેળામા તું કાકાની સાથે વેર રાખીને જઈશ! જવલા, તું પ્રેમમાં પડ્યો છે કાકા સાથે માટે મા પણ તને થોડી ઘણી શીખ આપે છે પણ તું ક્યાં કોઈને ગણકારવા તૈયાર છો! જો, તને આ કાશવાણીના જેવુ 'ના'નું ફરમાન છૂટે છે —

દેવને મેળે ન જઈશ રે જવલા, કાકાભત્રીજાના વેર રે જવલા,
મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !

તારા કાકાની ડેલીએ અહ્યા, હીંચને વાગે ઢાલ,
રમવા આવ રે જવલા ! મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !
તારા કાકાને કાબરો રે ઘોરો, કાંઈ ચડવાનો ઠાઠ જવલાં
મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !
દા'ડે દા'ડે જવોજી કાકીઓ કે'તો, ને ભેળે ભળ્યે લાગે કાન !
મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !
બાર બારાળો ચોરણો જવાને ને કેડિયુ કઠાકઠ !
મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !
તારી ગોઠણકાકી તને ગામમાં ગોતે ને જવલો મેળામાંય !
મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !
તારી માડી તને એમ કે' છે કે તરકડીને શું મોહ્યો,
ઢીંગલી જેવી ઢેલને શું મોહ્યો !
છેતરીને શું છેલને માર્યો !
જવલાને મારી જાળમાં નાખ્યો, ત્યારે હાડિયો હાલાં ગાય !
મેરાનો જવલો, મોટી દેવને ચડાયો !
(મેળે) જાતા જવોજી ઘોડલે જાતા, વળતાં ખેયા માથાં !
તારી ગોઠણે જ્યારે જાણ્યુ ત્યારે એમ કહ્યું કે,
છેલને છેતરીને શું કામ માર્યા રે !

જવલાએ પ્રેમની સામે હોડમાં માથુ મેલ્યુ અને મરાયો કમોતે.
માએ દપકાનાં વેણ કહ્યાં, 'તરકડીને જવલા, શુ જોઈ વારી ગયો છે !'
પણ જવલો તે વેણને ઉવેખીને તેના પ્રેમતંતુમાંથી એકને પણ ઢીલું

* હાડિયો : કાગડો

વનમેં બોલે રાજ કોયલડી રે !

[અહીં ત્રણ લોકગીતો આપવામાં આવ્યાં છે તે ગવાતાં સાંભળ્યાં છે, વીરમગામ તાલુકાના કાંઠાવિસ્તારમાંના રહેમલપુર ગામમાં.]

ગામ કોળીઓનું અને હરિજનનું. ગીત ઉતરાવનાર બહેનને કઈ જ્ઞાતિનાં કહેવાં? નામ પારવતીબહેન.

પ્રારંભમાં તો તેમણે શું સાતમઆઠમનાં ગાણાં માંડવાં છે એમ પૂછ્યું.

હા કહી, અને તેમણે કૃષ્ણગોપીનાં ગાણાં મડાવ્યાં ને મોં ખૂલ્યું, ખોટી શરમ આડેથી ચાલી ગઈ અને ત્યારે ગીતો મંડાવ્યાં કુટુંબ-જીવનનાં. તેમાંનાં આ ત્રણ ગીતો અહીં આપ્યાં છેઃ—

(૧)

કે રસિયાં, વાડીમાં પડયું રે નવરંગ લાકડું રે લોલ !
કે રસિયાં, તેની રે ઘડાવો નવરગ ચાંખડી રે લોલ !
કે રસિયાં, લીલી રે ચાંખડીએ રડચાખડચા પડચા રે લોલ !
કે રસિયાં, અમને રે લાગ્યુ તમને ઝાઝી ખમાયુ રે લોલ !
કે રસિયાં, અણિયાળીને પાધર પારસ પીપળો રે લોલ !
કે રસિયાં, તિયાં રે બંધાવો રે ડોલર હીચકો રે લોલ !
કે રસિયાં, હીંચકડો તૂટયો ને પડિયલ બે જણાં રે લોલ !
કે રસિયાં, અમને રે લાગ્યુ, તમને ઝાઝી ખમાયું રે લોલ !
કે રસિયાં, રીસે બળતી કવઁ છુ, તમને ઘણી ખમાયું રે લોલ!
કે રસિયાં, મારી હિંદવાણીનો ઝગડો પૂરો નેં પડે રે લોલ !
કે રસિયાં, મારા ગલકૂલિયાનો હાર તોડયો નેં તૂટે રે લોલ !

(૨)

ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આયો,
રેશમિયો રોમાલ લાયો;
માડી મારે રેશમિયો રોમાલ !
ઘરમેં નથી શેર બંટીનો દાણો,
નથી રે દળવા ઘંટી;
માડી મારે શેનો રેશમિયો રોમાલ !
ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આયો,
રેશમિયો રોમાલ લાયો;
માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
ઓરડા રે વેચ્યા, ઓશરી રે વેચી,
વેચીને મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આયો,
રેશમિયો રોમાલ લાયો;
માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
ગોધા રે વેચ્યા, સાંતીડાં વેચ્યાં,
વેચ્યાં રે સાંતીનાં જોતર;
માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આયો,
રેશમિયો રોમાલ લાયો;
માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
છોકરાં રે વેચ્યાં, ઓરડા રે વેચ્યા,

વેચ્યા રે ઘરના ગોધા,
માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આયો,
રેશમિયો રોમાલ લાયો;
માડી મારે રેશમિયો રોમાલ !
સાંતીડાં વેચ્યાં રે, છોકરાં રે વેચ્યાં,
વેચ્યો રે ઘરનો ધણ;
માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !
ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આયો,
રેશમિયો રોમાલ લાયો;
માડી મારે રેશમિયો રોમાલ લેવો !

(૩)

પગ પરમાણે કડલાં તારે પે'રવાં છે કે નૈં ?
ઝાલાવાડ બખલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?
ડોક પરમાણે હાંહડી તારે પે'રવી છે કે નૈં ?
પે'રવી છે ભઈ પે'રવી છે, સાસરિયે મરડચામરડચ !
ઝાલાવાડ બખલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?
ડોક પરમાણે ડાણિયું તારે પે'રવું છે કે નૈં ?
પે'રવી છે ભઈ પે'રવી છે, સાસરિયે મરડચામરડચ !
ઝાલાવાડ બખલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?
નાક પરમાણે નથડી તારે પે'રવી છે કે ને ?
પે'રવી છે ભઈ પે'રવી છે, સાસરિયે મરડચામરડચ !

ઝાલાવાડ બખલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?
કેડય પરમાણે ઘાઘરો તારે પે'રવો છે કે નૈં ?
પે'રવો છે ભઈ પે'રવો છે, સાસરિયે મરડયામરડય !

ઝાલાવાડ બખલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?
હાથ પરમાણે ચૂંડિયું તારે પે'રવી છે કે નૈં ?
પે'રવી છે ભઈ પે'રવી છે, સાસરિયે મરડયામરડય !

ઝાલાવાડ બખલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?
ડિલ પરમાણે પોલકું તારે પે'રવું છે કે નૈં ?
પે'રવું છે ભઇ પે'રવું છે, સાસરિયે મરડયામરડય !

ઝાલાવાડ બખલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?
ડિલ પરમાણે ઓઢણી તારે ઓઢવી છે કે નૈં ?
ઓઢવી છે ભઇ ઓઢવી છે, સાસરિયે મરડયામરડય !

ઝાલાવાડ બખલી તારે ચાલવું છે કે નૈં ?



ગ્રામગીતો



ग्रामगीतो और लोकगीतों में हमने यही भेद किया है कि सब प्रकार के गीत, जो व्यक्ति-विशेष की रचनाएँ नहीं है, बल्कि लोक की परपरागत रचनाएँ है। लोकगीत हैं। गाँव के गीत-ग्रामीण जीवन के गीत-ग्रामगीत हैं। एक का क्षेत्र विस्तृत है, दूसरे का सकीर्ण। लोकगीतों मे ग्रामगीत आ जाते हैं, पर ग्रामगीतों में लोकगीत नहीं आते। दोनों में व्याप्यव्यापक का सबध है।

स्व सूर्यकिरण पारीक

તમ્મરનાં લાકડાંનો ભારો

તા. ૨૪–૧–'૫૪ના રાજ ધોળકામાં પઢારના બારોટોની હું ગોત્યે ગયો. તેમાં પ્રથમ મને શ્રી વિષ્ણુરામ કૃષ્ણુરામ બારોટનો મિલાપ કરાવ્યો અમારા પથદર્શક શ્રી. પરતાપભાઈ ભરવાડ. તેઓ મને તેમના બારોટવાસમાં ખારાકૂવા પાસે હોળીચકલામાં લઈ ગયા ને ત્યાં ત્યારે આગણામાં ઢોલ ઢબૂકી રહ્યો હતો. સુંદરીઓ વિશાળ ઉંચાડા ફળિયામાં લહેકાભરી હલકે તાણીઓ પાડીને હળવા ને લીસા કંઠે પગના ઠેકા દઈ ને લગ્નગીતો ગાઈ રહી હતી અમે ફળિયું વળોટીને ગયા એક ઓરડામાં. ઓરડામાં અમારી ઓળખ સૌને આપી શ્રી. પરતાપભાઈએ, અને થોડી આપી વિષ્ણુભાઈએ.

મારે પઢારના વહીવંચાના ચોપડાઓ જોઇતા હતા. તેમનાં કુળો અને શાખની વાતો જોઈતી હતી તે તો પૂરેપૂરી મળશે તેવી આશા શ્રી. વિષ્ણુભાઈને મળ્યા પછી બંધાણી ને અમે ઊઠયા બીજા બારોટોને ત્યાં, પણ વિષ્ણુભાઇ અમને લઈ ચાલ્યા છેવટે તેમના ઘેર

તેમણે તેમની બેઠકમાં ઉપર અમને બેસાડયા, ને હાથવાજું કાઢયું ને પૂછ્યું: 'તમારામાંથી કોઇને બજાવતાં આવડે છે?'

અમે ના પાડી.

'ત્યારે સાંભળશો?' તેઓ બોલ્યા

મે તેમને પૂછ્યું: 'લોકગીતો સંભળાવશો, બારોટજી?'

'કેવાં?' તેઓ બોલ્યા

મારી સાથે અમદાવાદ વાણિજ્ય મહાવિદ્યાલયના અંગ્રેજીના અધ્યાપક શ્રી જી કે જી જોશી હતા તેમણે મને કહ્યું: 'તેમને

શ્રમજીવીનાં લોકગીતો ગાવાનું કહોને.'

તે પ્રમાણે શ્રી. વિષ્ણુભાઈને કહ્યું ને તેમણે 'તમ્મરનાં લાકડાંનો ભારો' ગાયું. એક વખત નહીં, બે વખત, સૂરસ ને ભાવવાહી હલકથી. પહેલી વખત વાજા પર, બીજી વાર કોરું જ.

આ ગીત મને સાંપડયું છે, સાહિત્યના અભ્યાસી ભાઈશ્રી વિષ્ણુભાઈ પાસેથી. તેમણે જે ભાષામાં ગાયું તે જ ભાષામાં હું તેને અત્રે મૂકું છું. તેની ભાષા ભદ્ર વર્ગના લોકોની ભાષા છે. ભાષા પરથી, તેની કાવ્યકલા પરથી, પ્રાસની મેળવણી જોતાં તો જાણે કોઇ વિદ્યમાન કવિની કૃતિ હોય તેવું લાગે છે.

પણ આ લોકગીત હશે તેમ માનવાને લલચાઈ એ છીએ, કેમકે આ ગીતમાં લોકના સમૂહજીવનનું સુંદર ચિત્ર છે. તમ્મર—ભાલના દરિયાકાંઠા પર થતો એક પ્રકારનો છોડ લેવા સમૂહમાં સૌ જાય છે અને આખાય લોકસમૂહને દિનભરનો જે પરિશ્રમ ભોગવવો પડે છે તે સમૂહ-જીવનનું જે ચિત્રણ જોવા મળે છે, તેથી માનવા લલચાઈએ કે આ લોકગીત હોય! આ ગીત મહુવાના દરિયાકાંઠે ફરી ખલાસણોનાં મોંએ, ત્યાર પછી, સાંભળવા મળ્યું બે વર્ષ પછી.

બાકી લોકગીતની ભાષા લોકોની નથી રહી પ્રાસ ને કાવ્ય-પંક્તિઓની ગોઠવણી તો સાવ અઘટન લાગે છે. માત્ર સમૂહજીવનની અભિવ્યક્તિ અને વિષય જ લોભાવે છે કે તે લોકગીત હશે.

લ્યો, લ્યો, તમ્મરનાં લાકડાંનો ભારો,
એ તમ્મરનો ભારો!
સવારે ઊઠીને અમે દરિયે જઈએ,
ગોઠણ સુધીના ગારામાં પડીએ,
તોયે ન આવતો વારો!
એ તમ્મરનો ભારો!

લ્યો, લ્યો, તમ્મરનાં લાકડાંનો ભારો !
એ તમ્મરનો ભારો !

હાથમાં કુવાડી તે માથે છે પોટલા !
થોડાં થોડાં મરચાં
ને ટાઢા છે રોટલા,
બપોરે ખાવાનો વારો !
એ તમ્મરનો ભારો !

લ્યો, લ્યો, તમ્મરનાં લાકડાંનો ભારો !
એ તમ્મરનો ભારો !

જેમતેમ, ઝટપટ ઝટપટ કાપીકૂપીને,
તમ્મરનાં લાકડાં ભેગાં કરીને,
સીંદરીએ બાંધવાનો વારો !
એ તમ્મરનો ભારો !

લ્યો, લ્યો, તમ્મરનાં લાકડાંનો ભારો !
એ તમ્મરનો ભારો !

સાંજ પડે તારે ઘર ભેળાં થઈને,
થાકીપાકીને પછે ઊંઘી જઈએ,
બીજે દિ' વેચવાનો આરો !
એ તમ્મરનો ભારો !



ગુજલડી રે !

શ્રમજીવનપ્રેરિત લોકગીતો ગુજરાતમાં ક્યાં ઓછાં છે? પઢારોના લોકગીતોમાં 'સુર્નલાલ મોઝડીવાળો' તેમનાં કરુણ જીવનનું ગીત છે. ભાલમાં દુકાળ પડે છે ત્યારે માણસને ખાવાના દાણા મળે, પણ ઢોરને ખાવાના સાંસા પડે છે ત્યારે દરિયાના કાંઠે આપોઆપ ઊગતું 'તમ્મર' (એક પ્રકારનું ઢોરને ખાવાનુ ઘાસ) આશિષરૂપ બને છે, અને તે તમ્મરનાં ગીત ભાલના દરિયાકાંઠા પર લોકની જીભ પર રમતાં જોવા મળે છે.

આ ગીત પણ શ્રમજીવીઓનુ ગીત છે સરકારી બીડમાં અડાબીડ ઘાસ ઊગ્યાં છે, તો તેની દાંડી રોજી નીકળી છે. સ્વાભાવિક જ છે કે ગરીબ લોકોને, મજૂરોને તે વાઢવાની તાલાવેલી જન્મે, કેમકે રોજી જરા ત્યાં વધુ હોય, આથી આવી એક ગુજલડીને આ બીડ વાઢવાની આંતરિક ઇચ્છા જન્મે છે, અને તે બાઈના મનમાં આવતા એકેએક વિચાર કેટલા સ્પષ્ટ રીતે આ ગીતમાં ગવાયા છે!

સોના રૂપાનું દાતરડું રે લોલ,
મારા વાલમાજી રે લોલ,
સરકારી બીડલાં વાઢવાં ગુજલડી રે !

સવા બચેરનું દાતરડું રે લોલ,
હીરાના બંધિયા હાથ,
સરકારી બીડલાં વાઢવાં, ગુજલડી રે !

પરણ્યે વાઢ્યા પાંચ પૂરિયા રે લોલ,
મેં રે વાઢી છે બીડ, રે મારા વાલમા,
સરકારી બીડલાં વાઢવાં, ગુજલડી રે !

પરણ્યો ઉપાડીને લઈ ગિયો,
હું રે રઈ વનરા વચ જો, રે મારા વાલમા !
સરકારી બીડલાં વાઢવાં, ગુજલડી રે !

વાટે નીકળ્યા વટેમારગુ રે લોલ,
ભાઈ વીરા, ભારો ચડાવ્ય રે, મારા વાલમા !
સરકારી બીડલાં વાઢવાં, ગુજલડી રે !

ભારો ચડવું તારા બોલડે રે લોલ,
તું છો મારા હલઠાની નાર,
રે મારા વાલમા હવે નૈ જવૅ બીડ વાઢવા રે લોલ !

ફટ ભૂંડા ને ફટે પાપિયા,
તું છો મારો માડી-જાયો વીર,
રે મારા વાલમા, હવે નૈ જવૅ બીડ વાઢવા રે લોલ !

★

હોલો રાણો એકલો

દિવાસાની સાંજના ૪-૩૦ આશરે એલિસબ્રિજ વિસ્તારની પશ્ચિમ છેડાની ગુલબાઈની ટેકરી. ટેકરીના તળિયામાં મારવાડી વાઘરીનો મોટો ડેરો. એના પ્રાંગણમાં ખુલ્લાં વિશાળ ખેતરો, ઉગમણી દિશાના ડાબા હાથે જમણા હાથ તરફ દશેકોશીનાં ગામડાંનાં ઠાકરડાંની ત્રીસ ખોરડાંની વસાહત. વસાહતના આથમણા છેડે ઉવાડી જમીન.

કાળી ડિબાંગ વાદળીએ ઘેરાયેલું આકાશ. સૂરજ સાથે કાળુડી વાદળીઓ સાતતાળી ખેલતી હોવાને કારણે આ ભોમ પર ઘડીવારે પથરાતી છાંય, તો ઘડીભર આવતી જતી વર્ષાની તડકી.

કાળી ડિબાંગ વાદળીની છાંયમાં, આકાશના છાપરા નીચે, દિવાસાની સાંજે આ ધરતી પર પેલી વસાહતની કુંવેરડીઓ ટહુકી રહી છે ટોળે મળી છે, લાંબી લાંબી હારમાં એક સામટી ચાળીશથી પચાસ કુંવેરડીઓ

ફૂલફગરના ઘાઘરા બાર બાર હાથ કાપ. તેમાં સમાઈ ગયું છે ટોળે મળીને પગનો ઠેકો દઈને, તાળીઓના તાન સાથે અંગના અણુએ અણુને નચાવતી કુંવેરડીઓ પેલી વાદળીને કહે છે

ઓતર રે દખણ રે ચડી ઝીણી વાદળી,
મેવલો રે વરસ્યો, ઝીણાં ઝીણાં મોતિયે,
મેવલો રે વરસાવશું આપણે બે બેનું રે!
મેવલો વરસાવશું આપણે બે બેનું રે!
મેવલો વરસાવનાર, હોલો રાણો એકલો!

હોળ જોડાવશું આપણ બે બુનું;
હોળનો જોડનાર હોલો રાણો એકલો !
ડાંગર પૂંખાવશું આપણ બે બુનું;
ડાંગરનો પૂંખનાર હોલો રાણો એકલો.
ધરુનો તણાવશું આપણ બે જણાં;
ધરુનો તાણનાર, હોલો રાણો એકલો !
ડાંગર રોપાવશું આપણ બે જણાં;
ડાંગરનો રોપનાર, હોલો રાણો એકલો !
ઝીલાં રે તાણશું અમે બે બુનું;
ઝીલાંનો તાણનાર, હોલો રાણો એકલો !
ડાંગર વાઢશું અમે બે બુનું;
ડાંગરનો વાઢનાર, હોલો રાણો એકલો !
ડાંગર લઈશું અમે બે બુનું;
ડાંગરનો લેનાર, હોલો રાણો એકલો !
ડાંગર ખાંડીશું અમે બે બુનું;
ડાંગરનો ખાંડનાર, હોલો રાણો એકલો !
ચોખલિયા રાંધીશું અમે બે બુનું;
ચોખલિયાનો રાંધનાર, હોલો રાણો એકલો !
ચોખા જમીશું અમે બે જણીઓ;
ચોખલિયાનો જમનાર, હોલો રાણો એકલો !

બે બહેનો—બે શોકયો સમજીને હળીમળીને જીવનમાં ને કામમાં આદર્શ સંવજીવન ગુજારે છે તેનો અચ્છો ખ્યાલ આ ગીત આપે છે.

ઓતરદખણ વાદળી ચડી, મેવલો આવ્યો, હળ જોડયાં, ડાંગર રોપી, ધરુ તૈયાર થયાં અને તેને ખેંચ્યાં, ધરતીમાંથી—એક કયારડામાંથી !

ધરૂને ફરી વાર રોપ્યાં! અહોહો! પાણી વગર ડાંગરનો મોલ લેવાય નહિ તેથી પતંગનાં લાંબાં લાંબાં ઝીણાં પાણી ખેંચવા માટે લાગનાં ફગાવીને શેઢાની નીકમાંથી વહ્યાં જતાં નીરને તેના વડે ખેંચી ડાંગરને ઉછેરી. ડાંગર પાણી પીને તૈયાર થઈ ગઈ ત્યારે મ્યાનડામાંથી વાઢીને તેને લેવાનો સમય આવી પહોંચ્યો ત્યારે તે બે ભુનું જ તેને વાઢીને ઘેરે લાવી ખાંડણિયામાં ડાંગરને નાખીને ખાંડી! ત્યાં તો આજનાં હજુ નથી પહોંચ્યાં. ડાંગરને ખાંડી નાખીને એ બા મરથા ચાસમતી હશે કે પખાળી હશે, કે કમોદની જાત હશે! જે હોય તે, પણ તે તો મીઠા લાગત ના જ! આપપેદાશની છે માટે જ તો! નોખલિયા રંધાય છે, જમાય છે, પણ પેનો હોનો ગળો તો એમને જ રહે છે

શ્રમયુક્ત ગૃહજીવનનું આથી વધુ ફક્કડ શબ્દચિત્ર આલેખી શકાય? લોકોના હૃદયના ભાવને શબ્દના શણગાર વગર લોકકવિએ મૂર્ત કરવામાં કમાલ કરી છે! અને એમ્બરપૂરા પતિને માટે રૂપ પણ ચોન્યું! હોળો રાજો! ઝાડના ડૂંડા પર એકનું બેસી રહેનાર પંખીડું! કોઈનો સંગ પણ તે પંખીને ન ગમે! ઘરમાં બન્ને નાર, તોય એકલસૂરું જીવન ગુજારનારને લોકકવિએ બિરદાવ્યો હોલા ગણાના સંબોધને!

આ બે ભુનુંમાં માનવસ્વભાવનું સચ્ચું ચિત્ર જોવા મળે છે. બેટા વેવર વેડા પણ તેમનામાં નથી જોવા મળ્યા. લોકકવિને ડાંગ વાવી રોપાં રાણાં વગર ને રંધીને જમ્યાં રોવા રાણાં વગર! મનહર કેવો છે તેના સ્વભાવનું વાસ્તવચિત્ર (True Picture) કવિએ છેલ્લી પંક્તિમાં ફક્કડ આપ્યું છે, જરાય ચેતવણમાં ઝોંતર્યાં વગર!

અને ગીતમાં ગતિ (Dynamic Element) પણ ઘણી છે! એક પછી એક ક્રમો એક પંક્તિમાં પવાન ડે એન દખણી ચરક માં ચડેલી વર્ણીના સમયથી માંડીને ચિતાં સુધીના ભાગને કવિએ ગાઈ નાખ્યું એ ગજબની પંક્તિઓ મ.!

અને એ માર્મિક ભાવે પેરી ગાન? કુશતેલડીએ ચ ભજતી ન

હોય । તે રાજો મળી, ઘાઘરા ઘુમાવતી, પાલવના છેડાનું પેરેશ્યૂટ બનાવતી જતી, કાર્યના ભારે નમતી, પંક્તિ કંઠમાંથી ઉચ્ચારે છે ત્યારે બે કુવેનડીને ટોળામાંથી, સમૂહમાંથી પેલા ઢોલ વગાડતા રાવળિયા તરફ હડસેલે છે તે બેઉ સાથે મળીને નૃત્યમાં પગના તાનમાં ઇંગિતો વડે અભિનય બતાવી પંક્તિના આખા ય મર્મને શ્રોતાની સામે ધરી દે છે। એમ હશે મનમાં કે સમૂહમાં લાંબા લસરકા જેવા સાદમાં ગવાતી આ પંક્તિઓનો તો કદાચ અર્થસ્ફોટ ન થાય ને શ્રોતા ગીતને ન સમજે માટે અભિનય તેમની મદદે આવી ઊભશે। એવો જ કાંઈ આમાં વિચાર હશે?

ગુજરાતનાં શ્રમનાં અનેક ગીતોમાં સંગીત, નૃત્ય અને અભિનય સાથે જ હોય છે હોંશીલી કુવેનડીઓ હોય તો ગીતનો પૂરેપૂરો રસાસ્વાદ શ્રોતાને આ ત્રણે દ્વાર ચખાડે

દિવાસાની સાંજે એકના હોલા રાણાને મે માત્ર સાંભળ્યો નહિ, પણ તેની એકલતા આ ગવાતા ગીત દ્વારા મૂર્ત થતી જોઈ

પેલી પંક્તિ ઘણીય વાર કાનમાં રણકી જાય છે - હોલો રાણો એકલો।

અને તેમનું નૃત્ય? નજર સામે તરવરે છે।

અભિનય મનમાં ઘર કરી બેઠેલ છે।

આ છે ગુજરાતનાં ગ્રામનોક અને શ્રમગીતોનું જાદુ।

આ જ અભિનયગીત વાત્રકને કાંઠે ઊંટડિયા મહાદેવ પાસેના વાઘજીપુર ગામે ગવાતું સાંભળ્યું છે, અભિનય સાથે પઢારણો પણ આ અભિનયગીત ગાય છે

મેવલો આવે ને મે લાવે !

આદિમાનવ પ્રકૃતિના ખોળાને ખેલતો હતો, રમતો હતો ત્યારે તેને પ્રકૃતિનાં વિવિધ તત્ત્વોમાં શ્રદ્ધા હતી એ જ શ્રદ્ધામાંથી તે તત્ત્વો પ્રત્યે તેને ભક્તિ જાગી અને તેની આમ ઉપાસના શરૂ થઈ

આદિમાનવે ઉષાને આરાધી, વીજળીને પૂજવી શરૂ કરી, વર્ષાના દેવના સ્તવનો રચ્યાં, કેમકે આદિમાનવ વિશ્વાસીને ખેતી કરતો થયો એ યુગ યંત્રનો તો ન જ હતો, તેથી ધોમધખતા ઉનાળા પછી તે આકુળવ્યાકુળ થતો ધરતી પણ એ કૃષક જેટલી જ આકુળવ્યાકુળ થતી તેના અંગેઅંગમાં આગ વ્યાપતી અને તેમાંથી શાતા મેળવવાની તેનેય ઇચ્છા જન્મતી.

તપતા દિવસોમાં ધરતીપુત્રોએ આકાશના ગઢ માથે આવીને સ્થિર થતાં વાદળાંની સામે ક્યાંય વાર સુધી નજર માંડી રાખી. મનમાં ભડલી-વાક્યોને તેમણે સંભાર્યાં અને આ કહેતીના અને જોષના જાણકાર માથે શ્રદ્ધા રાખી, પણ તોય ધરતીને તરસે મારતો અને ખેડૂતોને મૂંઝવતો મેહ ધરાર ધરતી પર ન આવવા લાગ્યો ત્યારે ધરતીપુત્રોએ ગાયું :

મેવલો આવે ને મે લાવે,
મલક જાણે મેવલો,
ઓચીંતા મેવલે છેતર્યા રે !

ગામના સુતાર વાટ જોઈ રિ'યા,
એને ઓરણી પૂર્યાની ઘણી હામ રે,
ઓચીંતા મેવલે છેતર્યા રે !

અધેળી ગામના ખેડુ વાટ જોઇ રિ'યા,
એને ઓળિયા જોડયાની ઘણી હામ રે,
ઓચીંતાં મેવલે છેતર્યા રે !

અધેળી ગામની વવારુંવાટ જોઇ ર'ઈ,
એને ભાતું દેવાની ઘણી હામ રે,
ઓચીંતાં મેવલે છેતર્યા રે !

અધેળી ગામની દીકરીયું વાટું જોઇ ર'ઇ,
એને ભરત ભરવાની ઘણી હામ રે,
ઓચીંતાં મેવલે છેતર્યા રે !

ઓચીંતા મેહુલિયો આવીને છેતરી રહ્યો છે. અધેળી ગામના સુથાર એની રાહ જોતો બેસી રહ્યો હતો, કેમકે મેઘ વરસ્યે બી વાવવા જતી વખતે ઓરણિયા જોઈએ તે ઘડવાની તેને ઘણી હોંશ હતી. પણ આ તો એકાએક આવી પહોંચ્યો ને સુથારની મનઃકામના મનમાં જ રહી ગઈ. ખેડૂતને ઓળિયા જોડવાની હામ હતી તે પણ મનમાં જ રહી ગઈ. ઓળિયે ગયેલ પતિને, દિયરને, જેઠને ભાત આપવા જવાની હામવાળી જુવાન વહુવારુ પણ ખિન્ન બની અને ઉનાળાના લાંબા દિવસમાં સાંગા–માંચીએ ચડીને ભરત ભરતી દીકરીઓની પણ મનઃકામના મનમાં જ રહી ગઈ, કેમકે મેહુલે ઓચીંતાં છેતર્યા.

અને ત્યાં તો જરાતરા ઉઘાડ નીકળ્યો. કામે લાગેલ વહુવારુઓ અને દીકરીઓ હવે જરા શ્વાસ લે છે. ત્યાં તેમનો કંઠ ખૂલે છે અને વાદળીઓ ચાંદની રાતમાં લાંબી હલકે સૌને મેઘના સમાચાર આપે છે :

ઓતરદખણની વાદળી ચડી રે,
વરસ્યો મારા દાદાજીના દેશમાં, મારુજી !

ભાઈ મારા હળ જોડ રે,
નાનાં વઉ ભાતના ભતવારે, મારુજી!
ભેંજાય મારા ભાઈના મોળિયારે,
ભેંજાય નાની વઉનાં ચીરે, મારુજી!

ઓતરદખણની વાદળી આકાશના ગોખે ચડીને વરસ્યો મારા દાદાજીના દેશમાં ને ત્યારે મારો વીરો હળ જોતરવા લાગી ગયો છે; અને નાની વહુ ભતવારે ચાલી નીકળી છે, પણ ત્યારે માથા પર બાંધેલ ભાઈની પાઘડીનું મોળિયુ ભીંજાય છે અને ભાત આપવા નીકળેલ નાની વહુનાં ચીર ભીંજાય છે આ ભીંજાયેલ ચીર અને મોળિયાવાળાના ઉરમાં કેવો આનંદ ઊભરાયો હશે!

ને ત્યારે ધરતી લીલુડાં વસ્ત્રો ધારણ કરી, ભૂખડી બાગ્રશ જેવી ઉનાળાના તાપમાં બનેલ તે પોતાની કાયાને સરપની કાંચળી જેમ ઉતારીને રૂપવતી બને છે. ધરતીપુત્રીઓ ત્યારે માતા વસુંધરાના રૂપનાં ગીત ગાય છે અને 'મેહુલા'ને કૃતજ્ઞભાવે ગીતમાં ગાય છે

ઓતરદખણથી ચડી રે
વાદળી રે લોલ,
ઝીણી ઝીણી ઝબૂકે છે વીજ જો,
આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ!
એડુના માથે લીલાં મોળિયાંરે લોલ,
ધોરીડાના કોટે ઘૂઘરમાળ જો,
આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ!
વીરના વાવણિયે હીરલા જડયા રે લોલ,
મોતીડાની શેરું ટંકાવું જો,
આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ,

ધોરીને ડોકે બાંધી રાખડી રે લોલ,
વીરને લેલાટ કુંકુમનો ચાંદલો જો,
આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ,

વાવી જારુ ને વાવ્યા બાજરા રે લોલ,
ધરતીએ ઓઢયાં લીલાં ચીર જો,
આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ!

સરિતાની શેરુ ચાલે જોરમાં રે લોલ,
ગવરી તો ચરે લીલાં ઘાસ જો,
આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ!

મેઘ આવ્યો અને ધરતીએ, સરિતાએ નવરૂપ ધર્યાં છે, તેનું ટૂબહૂ ચિત્ર લોકકવિએ આમાં ગાઇ નાખ્યું. ધોરી અને ખેડુ પણ હૈયે ઉલ્લાસ ધરીને કેવા બણ્યા છે, ઠણ્યા છે! અને છેવટે તો સૌએ સાથમાં ગાયું

'આજ આનંદ મારે આંગણે રે લોલ!' એ ગાયું ત્યાં તો ખેડુ લોકોએ હળ જોડ્યાં છે, અને હળ જોડીને ખેતરે જાય છે ત્યારે તેમને ઘરનારો શીખરૂપે બે-ચાર વેણ કહે છે:

વરસ્યા વરસ્યા અષાઢીલા મેઘ રે;
હોળ શેડુએ હોળ જોતર્યાં,
મારા રાજ!

વાવજો વાવજો મગ, જવ, તલ ને જાર;
મોચ મરી લવિંગ એલચી,
મારા રાજ.

રંગજો રંગજો ઈશ્વરજીનાં મોળિયાં,
પારવતીની રંગજો . ચૂંદડી,
જી મારા રાજ!

મેઘનાં ઉલ્લાસનાં ગીતો આ ધરતી–બાળોએ ગાયાં છે. મન મૂકીને અને દિલના ઉમળકાથી!

એ ધરતીનાં બાળોને મેઘ જ્યારે વરસતો હશે ત્યારે આજેય તે જ ઉલ્લાસ જીવનમાં આવીને તેને આનંદે નવપલ્લવિત બનાવી જતો હશે ને!



આઈ અખાતરી

ભારત ગામડાંમાં વસ્યું છે. આ ગામડાં એટલે ખેડુભર્યાં ગોકુળો. આવાં ગોકુળોમાં તેની સંસ્કૃતિનું આજેય આછુંપાતળું દર્શન થાય છે. તેમાંય તેમના ઉત્સવો વખતે તો તેમની સંસ્કૃતિનાં ઝરણાં ભર્યાભર્યાં હોય છે. આ ઉત્સવો તેમની કૃષિસંસ્કૃતિ સાથે સુબદ્ધ છે. આથી ખેડૂતોના જીવનની સંસ્કૃતિ ને પરંપરાએ જે ઉત્સવોને એમના જીવન સાથે વણી લીધા છે તે ઉત્સવોને નકામા લીસોટા ગણી ફેંકી દેવા ન જોઈએ. ગ્રામજીવનના ધબકતા અને પ્રાણવાન ઉત્સવનું આ લોકગીત લોકજીવનનાં દર્શન શું નથી કરાવી જતું? આ લોકગીતનો કવિ એ સંસ્કૃતિના નીરને જાણે હેલે ચડાવવા નથી ગાઈ રહ્યો કે 'જીવનમાં ચેતન લાવો, અવિરતપણે કાર્ય કરો'!

આ ગીત અખાત્રીજનું છે. અખાતરી એ કૃષિજીવનનું મહાપર્વ. આ દિવસે તેઓ ઉત્સવ ઊજવે અને માણે છે. આ ગાળામાં વસંત યૌવન મહાલી રહી હોય છે. વનવનની કુંજોમાં અને ઉદ્યાનોમાં વસંત ઘૂમી રહી દેખાય છે કોકિલ પંચમસૂર લલકારતો હોય છે. બધે જ પ્રેમ અને ઉત્સાહ હોય છે. ટૂંકમાં, બધે જ નવું જીવન ડોકિયાં કરતું જોવા મળે છે. આ સમયે ખેડૂતોનો આ ઉત્સવ આવે છે. ત્યારે સાબરકાંઠાના ખેડૂતના ગળામાંથી સર લહેરાય છે : 'અલ્યા, ઉંઘાં સાં સમ!" "અલ્યા, ઊંઘો છો શા માટે?" ઉત્તિષ્ઠ, જાગ્રત...નો મંત્ર તેમના કાનમાં ફૂંકાવા લાગે છે,

અખાતરીના દિવસે ખેડૂતો શુભ શુકન–અબોતરો કરે છે. આજે તો અબોતરાની ધામધૂમ લગભગ અદૃશ્ય થઈ છે, પણ કોઇક અંતરિયાળ ગામડાંમાં તેની મજા જરૂર જોવા મળતી હશે આ દિવસે ખેડૂતો 'ટોઠા' રાંધે છે અને બળદોને શણગારે છે. બળદોનાં શીંગડે—નાડાછડી બાંધે છે, તેલ પાય છે, હળ સજાવે છે, ગોળનાં શુકન લઇ સૌ સ્ત્રી-બાળકો ગામના ઝાંપે જાય છે, ભેળાં મળે છે. સ્ત્રીઓ માથા પર મોરિયો મૂકી, કૂવેથી પાણી ભરીને 'આઇ અખાતરી' ગાતી ગામના ઝાંપે આવી ઊભી રહે છે. સ્ત્રીઓ પાસેથી પાણીભર્યાં મોરિયા લઈને પુરુષો ખેતરે જાય છે. નવા વર્ષના કામનાં શુકન વધાવવા આ ઉત્સવને 'અબોતરો' એવું વિશિષ્ટ નામ ગ્રામસંસ્કૃતિના બ્રહ્માએ આપ્યું છે.]

અલ્યા ઉંઘાં સાં સમ,
અલ્યા ઉંઘાં સાં સમ,
આઇ અખાતરી![1]
હેંડાં અબોતરા કરવા, 'લ્યા લાલિયા,[2] હેંડાં, અબોતરા કરવા'
'લ્યા લાલિયા, હેંડાં, અબોતરા કરવા!
આખલાને ધૂંસરી બાંધીને ધૂંસરે,

૧. અલ્યા, ઊંઘો છો કયમ, આવી અખાતરી. ૨. પુરુષને સંબોધ્યું છે.

કોટિયાં રે ટોકરી બાંધીને પેરમે'[1]
બળદાંને લેજે શણગારી,' લ્યા, લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા!
'લ્યા, લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા!
જોજે 'લ્યા પૂજિયા પરુણો ભૂલતો;
જઈએ અખોતરા કરવા, 'લ્યા, લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા!
ઓર[2] ને ધૂંસરે, બળદાંને શીંગડે બાંધી 'લ્યો, નાડાછડી
'લ્યા લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા!
'લ્યા લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા!
કંકુનો ચાંદલો કરી કપાળમાં,
'લ્યા લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા!
'લ્યા લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા!
ડાબેથી દેવલી[3] જમણે ઊતરે તો આખલાં લેજે હલકારી
'લ્યા લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા!
'લ્યા લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા!
શુકનનો ગાંર[4] નથી, 'લ્યા લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા!
'લ્યા લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા!
અલ્યા ઉઘાં સાં સમ,
આઈ અખાતરી, 'લ્યા લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા!
'લ્યા લાલિયા, હેડાં, અળોતરા કરવા![5]

૧. પગમાં. ૨. હળ. ૩. પોશીના પટ્ટામાં ગરાસિયા લોકોમાં પ્રચલિત માન્યતા છે કે દેવલી-નાનકડુ દેવચકલી જેવડું કાળું પખી-ઊડીને લીલા ઝાડ પર બેસે તો શુકન કહેવાય, સૂકા ઝાડ પર બેસે તો અપશુકન કહેવાય. ૪. શુભ પ્રસગે ગોળ વહેંચવાનો રિવાજ જાણીતો છે, પણ જ્યાં શ્રીમ જ મધુરતા લાવીને ઊભો હોય ત્યાં ગોર-ગોળની મધુરતાની—"મીઠુ મોં કરવાની" પણ શી જરૂર ! ૫. પરિશિષ્ટ જુઓ.

નાટ્યગીતો

•

'No study of a people can be more rewarding than a study of its folk culture – its songs, and dramas and dances.'

શામળાજીનો મેળો

સાબરકાંઠા જિલ્લાના એદલપરા કંપામાં ગુજરાતનું નવું લોહી દરેક દિવસ પૂરતુ નવરચનાના કામે ધમધોકાર લાગી ગયું હતું સવારે ૭ વાગ્યે ધરતી પર એક સાથે ત્રીસેક તીકમ તૂટી પડે, પાવડા માટી ભરવા લાગે, અને ખોદાયેલ ખાડામાંથી માટી ઊચકતાં ચોકડીઓ આભલા જેવી ચોખ્ખી ને ચટ થાય

ઋતુ શીતળ હતી ઉઘાડો વગડો આખી રાત તે ઠર્યો હોય. કતાનના ઘરમાં રહીએ તો સવારે ઊઠતાં તો મનમાં થાય કે ઠંડી... પણ જ્યાં તીકમના પચ્ચીશ ઘા ધરતી પર કર્યા કે દેહમાનું ઠરી ગયેલ 'બોઈલર' ધગધગવા લાગે અને ત્યારે ધનસૂરના નાનકડા પૂનમચંદની જીભ પરથી કાવ્યપંક્તિ સરવા મંડે: "શામળાજીના મેળે કે રમઝણિયું રે પીંજણિયું વાગે," ઝીણો લહેકાદાર સૂર. થતું કામ જોવા નીકળ્યા હોઈએ તો કાવ્યપંક્તિમાં જીવ જતાં ઠેકા સાથે પગ અથડાય, પણ પેલા સૂરનો રણકાર જતો કરવા કાન ના જ પાડે.

અને પૂનમચંદભાઈને કહ્યું : 'ફક્કડ છે. ક્યાંથી લાવ્યા છો?' તે તો શરમાઈ પડ્યા 'આવુ પ્રેમનુ ગીત,...ભાઈ સાંભળી ગયા?' એવું મનમાં થયુ હશે? ફરી વાર કહ્યુ 'સંભળાવશો પૂરુ?' 'પણ મને આખું નથી આવડતું આ તો શામળાજીને મેળે ભીલ જાય ત્યારે ગાય'

એક વખત અમારા વરુણ દુકાળદુશ્મન – 'ફેમીનફાઈટર'નું યંત્ર ચલાવતા જાય અને મસ્તીથી ગીત ગાય : 'ધીરુભાઈ, ફક્કડ ગીત છે. ક્યાંથી તમે લાવ્યા?'

'આ તો આ લોક ગાય છે, મેળે જતાં જતાં.'

'મને ન માંડી આપો ? મને આખું ન સંભળાવો ?'

તેમણે બે–ત્રણ પંક્તિઓ ગાયા પછી કહ્યું કે 'શિબિર પૂરી થશે ત્યારે અમે નાટક આપવાના છીએ તેમાં ગાઈશું.' ને મને તેની ચાર ટૂંક લખી આપી. તે ગતે ગીત સાંભળવા ન મળ્યું. પણ સાબર-કાંઠા જિલ્લાના ત્રણ વિદ્યાર્થી મિત્રોને કહી રાખ્યું. ધનસુરા ગામના શ્રી. જોશી માસ્તરને વાત કરી કે શું આ ગીત મળશે. તે ત્રણ સ્થળેથી મળ્યું. હિંમતનગરથી ભાઈ વલીભાઈએ પણ મોકલ્યું

'શ્રાવણી મેળો' વાર્તામાં વાર્તાકાર લખે છે '...નવલોહિયા નવાનવા વનકિશોરો એકલા મેળે આવતા ને એકલા જતી પાછા જતાં. વનકન્યાઓ ટોળેબંધ ચાલી આવતી, લાવતી એક અણુખોટ હૈયું... વનલોકને આથી જુદો કોઈ વિવાહવિધિ જડયો ન હતો.' આવી વન-જાતિનું—આવા અણુખોટ હૈયાનું આ ગીત છે. થાવરો અને કટારી બંને શામળાજીના મેળે જતાં ગાય છે.

શામળાજીના મેળે હાં રે રમઝણિયું રે પીંજણિયું વાગે.

હાલ કટારી હાલ રે! ,, ,, ,,
કટારી : ધીરો ધીરો હાલજે, હાં જો, ,, ,,
થાવરા, તારમાર નઈ બને, ,, ,,
થાવરો : બાર ભઠ્ઠીનો દારૂડો રે, હાં જો, ,, ,,
કટારી : અડે વડે પાન ખરંતાં,
તાંણું અજરા લાંબા જો, હાં જો, ,, ,,
થાવરો : હોવે જો,
કટારી : સોનાનો શામળિયો જો,[1] હાં જો, ,, ,,
થાવરો : હોવે જો.
કટારી : કેડ્યમાં કટારી રે હાં જો, ,, ,,

થાવરો : હોવે જો.
કટારી : બરાબર હોકો બોલે જો, હાં જો, „ „
થાવરો : કલચારીનું અણુજું આયું હાં જો, „ „
પિયારી ભટકાઈ જો, „ „
કટારી : જાબુડીની જાળમાં, * હાં જો, „ „
ઝાંઝરીવાળી નાળમાં, „ „
થાવરા તારા પગે, „ „
હે, ડોસા દોરો કાઢો „ „
મોટિયારા મૂછો મરડે, „ „
એ, છૈયાં સીતો× કરે, હાં જો, „ „
હે ડોસી પાણુ મારે, „ „

પાઠાંતર (૧) સનાનો શામળિયો જો, (૨) સાણુનો શામળિયો જો,
* કાંટચમા ×સીટીઓ.



કણબી ને કણબણનું ગીત

લોકસાહિત્ય ભવાઈમાં પણ સંઘરાયું છે ભવાઈનાં મુખ્ય અંગો ત્રણ : નૃત્ય, સંગીત અને અભિનય.

તેમાં સંવાદ પણ છે. ભવાઈમાંના સંવાદો ગદ્યમાં તેમજ પદ્યમાં ચાલતા હોય છે. ઘણી વખતે આખાય વેશનો સંવાદ પદ્યમાં હોય ! તે સંવાદના વસ્તુમાં પછી કથા ન પણ હોય ! કથાનું તત્ત્વ સાવ નબળું હોય તોય ચાલે !

પઢારની ભવાઈના ઘણાય વેશ એવા છે કે જેમાં પતિ-પત્નીના માત્ર ગીતસંવાદ હોય, દા. ત. મુંબઈનો વેશ, તેમાં માત્ર મુંબઈની કલ્પના કરીને પત્ની ને પતિના મોંમાંથી ગીતપંક્તિઓ સરે છે. પત્ની હાથમાં ઘુઘરિયાળ રૂમાલ લઈને પગના તાલ અને ઠેકા સાથે સાયબાની પાછળ પાછળ ગીતપંક્તિ ગાતી જતી હોય છે. સટોડિયાના વેશમાં વડછડ ચાલે છે પત્ની ગીત ઉપાડે છે :

એક આનામાચે,
એક સો લગાયા;
ચોગાના સાથે ચાર,
સવારમાં ઊઠી, મુંબઈની મેડી દેખાય,
હાય હાય રે સટોડિયા.

પતિ : હાય હાય રે મોરી મા !

અને પછી સટોડિયાના જીવનનું વાસ્તવદર્શન પત્ની કરાવતી જતી હોય છે.

પગમાં બાંધેલ ઘૂઘરા, હાથમાં રાખેલ રૂમાલ, આ અને ઉપ-

કરણોથી અને સંગીતથી તે ગીત જ વેશના વસ્તુસ્થાને રહે છે. આ વેશ ભજવીને બંને ચાલ્યાં જાય છે.

આ ગીત કણબી-કણબણનું છે પ્રથમ ભજવ્યું વીરમગામ તાલુકાના શાપરના પઢારોએ. તેઓ ક્યાંથી લાવ્યા તેની જાણ મળી નથી, પણ મે જોયું શિયાળના પઢારની ભવાઈમાં.

અત્યંત ભાવપૂર્ણ રીતે આ ગીત બે પઢાર જુવાનભાઈઓ કલો અને પાંચો, તેમણે એ ભજવી બતાવ્યું. કણબીએ હાથમાં દંતાળી લીધી હતી. કણબી જેવું પોતડું, માથે ચોટલી, કાનમાં કોકરવા ને આંગળે ચાંદીના વેઢ, ફાટેલ કફનું પહેરણ ને તે પર તાફેટાનું ગામડા ઢબનું જાકીટ.

પઢારની ભવાઈમાં Open Air Stageને સ્થાન છે, બેઠેલ પ્રેક્ષક વચ્ચેના ખુલ્લા ઉઘાડા ગોળ કૂંડાળામાં કણબી આવીને દંતાળીથી જમીનને ફોળવા મંડયો, અને તેણે પંક્તિ લલકારી:

આજ મારે બાજરો વાવવો,
રાણી કણબણ લાવશે ભાત !

ત્યાં તો ઊંડાણમાંથી ઉત્તર મળ્યો :

વાવી કરી તમે વેલા પધારજો,
હું નેં આવું ભાત !

કણબીએ પાછી તે જ પંક્તિઓ લલકારી. ત્યાં કણબણના પહેરવેશમાં પુરુષે લીધેલ સ્ત્રી-પાત્ર પટમાં આવ્યું. ઘડીભર તેમણે બંનેએ પટમાં નાચી લીધું અને પછી તેમના વચ્ચેનો સંવાદ શરૂ થયો :

કણબી : આજ મારે બાજરો વાવવો,
રાણી કણબણ આવશે ભાત !

કણબણ : વાવી કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નેં આવું ભાત !

કળના કણબી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણબી : આજ મારે બાજરો ઢૂંઢવો
રાણી કણબણ જો આવ્યાં ભાત !

કણબણ : ઢૂંઢી કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નૈં આવું ભાત !
કળના કણબી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણબી : આજ મારે બાજરો નીંદવો,
રાણી કણબણ જો આવ્યાં ભાત !

કણબણ : નીંદી કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નૈં આવું ભાત !
કળના કણબી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણબી : આજ મારે બાજરો લણવો,
રાણી કણબણ જો આવ્યાં ભાત!

કણબણ : લણી કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નૈં આવું ભાત !
કળના કણબી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણબી : આજ મારે બાજરો વાઢવો,
રાણી કણબણ જો આવ્યાં ભાત !

કણબગ : વાઢી કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નૈં આવું ભાત !
કળના કણબી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણબી : આજ મારે બાજરો વે'વો,
રાણી કણબણ જો આવ્યાં ભાત !

કણબણ : વેઈ કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નૈં આવું ભાત !
કળના કણબી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !

કણબી : આજ મારે બાજરો મસળવો,
રાણી કણબણ જો આવ્યાં ભાત !
કણબણ : મસળી કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નૈં આવું ભાત !
કળના કણબી રે મારે નથી શેતરમાં ભાગ !
કણબી : આજ મારે બાજરો વેચવે,
રાણી કણબણ જો આવ્યાં ભાત !
કણબણ : વેચી કરી તમે વે'લા પધારજો, હું નૈં આવું ભાત, !
કળના કણબી રે મારે નથી શેતરમાં ભાત !
કણબી : આજ મારે પૈસા લાવવા,
રાણી કણબણ જો આવ્યાં ભાત !
કણબણ : પૈસા લાવી ઝાંઝરી ઘડાવજો, ધમધમ આવીશ ભાત !
કળના કણબી રે મારે છે તમ ખેતરમાં ભાગ !



સાડી ગુલાબી મંગાવો !

આ નાટ્ય–ગીત છે. ગુજરાતના લોકનાટ્યનાં કેટલાંય શૃંગારી ગીતોને લોકસાહિત્યમાં અનોખું સ્થાન મળ્યું છે. 'મેંદી વાવી તે માળવે,' 'શામળાજીના મેળે...' 'સોના રૂપાનું દાતરડું રે લોલ,' 'લાલ જુગારી છેલ જુગારી,' 'જુગટિયાં સરદારે, જુગટ કોઈ રમશો નેં રે!' આ બધાં ગીતો ભવાઈમાં અને લોકનાટ્યના વેશોમાં ગાઈ સંભળાવે છે. ભવૈયાઓએ કોઈ ગીતોમાંથી જ વેશ આખો રચી નાખ્યો છે. દા. ત. કણબી–કણબણનું ગીત, ભવાઈમાં વેશ બને છે.

આ ગીત શૃંગારનું છે.

પ્રીતમજી સાડી ગુલાબી મંગાવો,
વાલમજી સાડી ગુલાબી લાવો !
સાડીમાં લેસ હીરલે જડાવો,
પ્રીતમજી હરખે હરિના ગુણ ગાશું !

ગૃહસ્થાશ્રમનાં સુખ માણી લઈએ અને પછી ચોક્કસ જીવને શિવમાં પરોવીશું.

(દોહરો)

પીળ પીત ને પચરંગી;
વળી ધોયે ધોળી થાય,
પરદેશી પ્રીત ન કરીએ, વાલમજી,
પળમાં તે તૂટી જાય;
વા'લમજી, સાડી ગુલાબી લાવો,

વાલમજી, સાડી ગુલાબી મંગાવો,
પ્રીતમજી, હરખે હરિના ગુણ ગાશું !

લોકનાટ્યની એક ખૂબી એ છે કે તેય શિક્ષણના સાધન સ્થાને છે. તે હરતીફરતી (Moving University) વિદ્યાપીઠ છે તેમાં કટાક્ષ ઈત્યાદિ તો છે જ. લોકશિક્ષણમાં, માનવસ્વભાવ લોકોને સમજાવવામાં તેણે ખૂબ અગત્યનો ભાગ આજ દિવસ સુધી ભજવ્યો છે, પ્રીત શું છે તેને વ્યંજના દ્વારા બતાવવા ઉપરના દોહરામાં લોકકવિએ યત્ન કર્યો છે.

(દોહરો)

વાલમ જાજે વાડીએ,
વેરાવજે હળદર ને હીંગ,
એવી વસ્તુઓ વેરાવજે,
એના માથે શીંગ,
ચતુર હોય તો ચેતજે,
મૂરખો કરે છે વિચાર !
વાલમજી, સાડી ગુલાબી મંગાવો,
વાલમજી, સાચા હીરલે જડાવો,
પ્રીતમજી, હરખે હરિના ગુણ ગાશું !

લોકોના બૌદ્ધિક વિકાસમાં પણ આવા વેશોએ ભાગ ભજવ્યો છે, અહીં સમસ્યા–કોયડો–પ્રહેલિકા મૂકી છે, પાત્રના મોંમાં ! પ્રેક્ષકો તેના વિચારમાં ડુલ થાય છે ને ત્યાં તો બીજી સમસ્યા ઉચ્ચારે છે પુરુષ પાત્ર :

(દોહરો)

તલ જેટલું ટીટોડું
વળી તારા નામે નામ,

નામ હતું તે કંઈ દીધું,
બાલમજી, મૂરખો કરે છે વિચાર!
પ્રીતમજી, સાડી ગુલાબી મંગાવો,
વાલમજી, સાચા હીરલે જડાવો,
પ્રીતમજી, હરખે હરિના ગુણ ગાશું?

(દોહરો)

વેંત જેટલી વરખડી રે,
ઈનાં ઢાલો જેવડાં પાન,
કાચનાં ઊતરે કાપલાં,
પાકાનાં મૂલ થાય,
ચતુર હોય તે ચેતજો,
મૂરખો કરે છે વિચાર,
વાલમજી, સાડી ગુલાબી મંગાવો,
વાલમજી, સાચા હીરલે તે જડાવો,
પ્રીતમજી, હરખે હરિના ગુણ ગાશું.

શું ફક્કડ વિરોધાભાસ (contrast) આ સમસ્યામાં મૂક્યો છે!

(દોહરો)

સાસુ, વહુ, મા ને દીકરી,
ઈ ચારેના એક ભડથાર;
ચતુર હોય ઇ ચેતી લેજો,
મૂરખો કરે છે વિચાર!
વાલમજી, સાડી ગુલાબી મંગાવો,
વાલમજી, સાચા હીરલે તે જડાવો.
પ્રીતમજી, હરખે હરિના ગુણ ગાશું!

(દોહરો)

સાસરો, જમાઈ, બાપ ને દીકરો,
ચારેના ઘરે એક નાર;
ચતુર હોય એ ચેતી લેજો,
મૂરખો કરે છે વિચાર!
વાલમજી, સાડી ગુલાબી મંગાવો,
વાલમજી, સાચી હીરલે તે જડાવો;
પ્રીતમજી, હરખે હરિના ગુણ ગાશું!

(દોહરો)

કાળો તે માર્યો કાગડો,
માર્યો લીલો હંસ;
ખાય વાણિયા-બ્રાહ્મણ,
ખાય અઢારે વર્ણ!
ચતુર હોય તે ચેતજો,
મૂરખો કરે છે વિચાર!
પ્રીતમજી, સાડી ગુલાબી મંગાવો,
વાલમજી, સાચા હીરલે જડાવો!
પ્રીતમજી, હરખે હરિના ગુણ ગાશું!



ગાંધીગીતો

•

As for the accusation that the folk forms belong to the distant past nothing could be more misconceived. As a matter of fact, the most significant characteristic of folk art is its contemporaneity'

ગાંધીગીતા

[પાટણવાડામાં કરાળરૂપ ધારણ કરીને જતી બનાસનાં તીર પર રબારીનાં અનેક ગોકળિયાં વસ્યાં છે. વર્ષો પહેલાં બનાસના કાંઠાનાં એ ગામોમાં ઘૂમતાં વૃદ્ધ સુરદાસ રાઈકા ભજનિક મળી ગયા. તેઓએ પોળા દિવસે ભજનો ગાઈ સંભળાવ્યાં તે માત્ર ભજનો ગાતા હતા તેવું ન હતું, તેઓ ભજનો બનાવી પણ જાણતા તેમણે તેમની જવાની અમદાવાદમાં વાડજની આજુબાજુ ગાળેલી, ને તે જ અરસામાં અમદાવાદથી ગાંધીજીએ દાંડીની મહાકૂચ આદરી તેમાં આ રાયકાને રસ. નજરે આ નિહાળેલ, ને ત્યારથી તેમને તે રંગ લાગ્યો. તે રંગનાં પ્રથમ ત્રણ ગીતો તેમની જીભ પરથી મે લીધાં છે, જ્યારે ગીત ચાર અને પાંચ પઢારમાંથી પ્રાપ્ત થયેલ છે ગીત ચાર ટીંટોડા નૃત્યનું નૃત્ય ગીત છે, જ્યારે ગીત પાંચ રાસગીત છે દાંડિયા લેતા લેતા પઢારો આ ગીત ચગાવતાં રમઝટ બોલાવે છે સંવેદનશીલ લોકકવિઓને સમાજનાં આ સર્વ પરિવર્તનો અને મહાનરો કેટલા સ્પર્શી જાય છે!]

'સરિતાતીરે તપસા કીધી, સાબરમતીના સંતજી,
હાક તમારી હિંદમાં લાગી, સાથી સોબતીઓ શ્રીમંતજી.
આશ્રમ કીધો અમદાવાદ, ધનધન સુંદર ધામજી;
સરદાર વલ્લભભાઈ સાથી, એમનાં નવખંડોમાં નામજી.
નામ ધરાવ્યાં ગાંધીજી, એ તો ઈશ્વરનો અવતારજી,
ભરદુનિયામાં ભાષણ કરિયું, સંભળાવ્યા સારાસારજી.
ગાંધી ગાંધી સૌ કોઈ કે'વે, પણ વીરલા સમજે ભેદજી,
ભવિષ્યવાણી ભૂલ્યા બ્રાહ્મણ, વિપ્ર ભૂલ્યા વેદજી.

સાનો શાસ્ત્રની* સમજ્યા નૈં, ન જાણ્યા ગુપત ગ્રંથજી,
ભાવારથ કા ભેદ ન જાણ્યા, અનરથ કરિયા અરથજી.
બ્રાહ્મણજોશી જોતીક[1] જુવે, વિપ્ર વિચારે વેદજી,
પંડિત પુરાણી પાર ન પામ્યા, ભગવતગીતે પાયા ભેદજી.
ચૌદ ભુવનના સ્વામી એ તો, બ્રાહ્મણ કેરા ભૂપજી,
એ બેહદવાસી[2] બુદ્ધિબળિયા, બાપુ બુદ્ધા રૂપજી.[3]
એ જૂના જોગેશ્વર જુગમેં આયા, જરણુ[4] જાપ જપાયાજી.

(૨)

સત અહિંસાકા શબ્દ સુણાયા, બ્રહ્મગીતા ગુણ ગાયાજી,
એ બ્રહ્મસ્વરૂપી, નિર્વિકારી, નિર્મળ ગુણો ગાયાજી.
ઉત્તમકુળ અવતાર લિયા, બાપુ બુદ્ધ અવતારજી,
મહાસભામાં મોહનજી, સવરાજસત્તા સમજાયાજી.
જગત જગાડયાં જુગતે બાપુ, સંગીત સૂર સંભળાયાજી,
દૃઢ ધ્યાન જ ધરિયાં, ગાંધી ગુણ ભંડારજી.
બ્રહ્મજ્ઞાન ભાખ્યાં આલમ, કરવા એકાકારજી,[5]
આતમબળ સમજાયા બાપુ, ગાંધી બુદ્ધ અવતારજી.
સતકા સુધારણ, વિઘ્નના વારણ, હિંદના તારણહારજી,
સાધુજનના સ્વાંગ ધરિયા, ભારે ભજ્યો ભેખજી.
કહેત રૈકા રાશી, તુમ ત્રિભોવન રાખો ટેકજી.

(૩)

દલી તખત, સિંહાસન ઉપર જોગ* જવાહરલાલજી,
સતનું થાપન કરવા, આવ્યા લેવા ભારત સંભાળજી.

* શાસ્ત્રાર્થ જાણ્યા. ૧. ભવિષ્ય ૨. સ્વર્ગવાસી ૩. બુદ્ધરૂપ ૪. શાંતિ
૫. વર્ણભેદ અને જ્ઞાતિભેદ તોડવા.

પાંચે પાંડવ પરભુ માથે, આવ્યા શૂરવીર ધીરાજી,
બળિયા બહાદુર જોદ્ધા જાગ્યા, વટકણિયા કાંઈ વીરાજી.
મોટા મોટા મહિપત મળિયા, સાહેબ કંઇ સુલતાનજી,
સામંત શૂરા સર્વ સખાયા, મળિયા મલ્લ મસ્તાનજી.
મળિયા મુર્શિદ મીર મુંજાવર, જાગ્યા સર્વે જાનજી,
રાવત કંઈ રઢિયાળા રણમાં, લડશે ક્ષત્રી ખાનજી.
રાજા કંઈ રજવાડી મળશે, સેનાપતિ સરદારજી,
લાખો લશ્કર લડશે હોશે, હિંમતમાં હુંશિયારજી.
જબ્બર જોરાવર જોદ્ધા મળશે, લાખ–કરોડ લોકજી,
અનંત ઊંટો, ગજ, રથ, ઘોડા, જુક્તિ જોવા જોગજી.
ઋષિમુનિ, દેવ, દિગંબર, મળશે મોટા મહંતજી,
જોગી, જંગમ, સિદ્ધ, સંન્યાસી, મળશે સાધુ સંતજી.
આલમ, દુનિયા વર્ણ અઢારે, મળશે કંઈ નરનારજી,
કહેત રૈકા રાશી! હિદમાં, હોશે હલહલકારજી.

(૪)

ગાંધી મા'તમારે, તારા ખાદી નગરમાં રે;
વળિયુંના વાડા બનાવ્યા, ઉપર ચોડયા બાવટા,
ગાંધી મા'તમા રે!
ગાંધી મા'તમારે, તારા ખાદીનગરમાં રે;
દારૂનાં પીઠાં બંધ કરાવ્યાં, બજાર મેલી છૂટી;
ગાંધી મા'તમા રે!
કાળી ટોપી કાઢી મૂકી, ધોળીનાં આપ્યાં નિશાન;
રોકડા રૂપિયા કાઢી મેલ્યા, નોટનાં આપ્યાં નિશાન,
ગાંધી મા'તમા રે!

(૫)

એકવાર આવો રે ગાંધીજી ગુણિયલ ગરવા,
હિંદનાં દુખડાં હરવા,
એકવાર આવો રે ગાંધીજી ગુણિયલ ગરવા!
ઊપજ્યો નહિ કોઈ આપ સરીખો,
બીજી તૂંબડીએ તરવા,
એકવાર આવો રે ગાંધીજી ગુણિયલ ગરવા,
હિંદનાં દુખડાં હરવા,
એકવાર આવો રે ગાંધીજી ગુણિયલ ગરવા!
સવરાજ લીધું ને સુખિયાં થાશું,
આ અંસાર સુખિયો કરવા,
એકવાર આવો રે ગાંધીજી ગુણિયલ ગરવા,
હિંદનાં દુખડાં હરવા,
એકવાર આવો રે ગાંધીજી ગુણિયલ ગરવા!

★

જવાહરલાલ ને'રુ

(આ પઢાગ્નચિત સંતારનૃત્યનું ગીત છે.)

જવાહરલાલ ને'રુ, તમે રે ને'રું છોડી છે ભાલે દેશમાં,
પહેલું પાણી બાવળે આવિયું,
પછી રેલી છે કાંઈ આદરોડાની સીમ;
જવાહરલાલ ને'રુ, તમે રે ને'રું છોડી છે ભાલે દેશમાં!

એક મેલે[1] ને ગવે પોચતું,
(અને) ભરી છે કાંઈ જુવાલ[2] જેવી વાટ;
જવાહરલાલ ને'રુ, તમે રે ને'રું છોડી છે ભાલે દેશમાં!

એક કાગળ લખી બાબુભાઈ[3] મોકલે,
(અને) દેજો જવાહર ને'રુને હાથ;
જવાહરલાલ ને'રુ, તમે રે ને'રું છોડી છે ભાલે દેશમાં!

અરે, પચાશ પઢાર બાબુભાઈ મોકલે,
(અને) સાથે જાયે કંઈ નવલભાઈ, કાશીબેન;
જવાહરલાલ ને'રુ, તમે રે ને'રું છોડી છે ભાલે દેશમાં!

જુવાલની પાટેથી પાણી છોડિયાં,
આવ્યું રે કાંઈ શિયાળ જેવા શે'ર,
જવાહરલાલ ને'રુ, તમે રે ને'રું છોડી છે ભાલે દેશમાં!

અરે સો રે પઢાર બાબુભાઈ મોકલે,
પાણી લાવ્યાં શિયાળ કેરા તળાવ રે,
જવાહરલાલ ને'રુ, તમે રે ને'રું છોડી છે ભાલે દેશમાં!

સારી રે સલાહ બાબુભાઈ આપતા,
(અને) ઓરજો ચીણાં અને ચાહટિયાં;
જવાહરલાલ ને'રુ, તમે રે ને'રું છોડી છે ભાલે દેશમાં!

અરે ગુણે રે અમે તમારાં ગાઈએ,
ગુણ ગાયાનાં આપો તમે ઇનામ;
જવાહરલાલ ને'રુ, તમે રે ને'રું છોડી છે ભાલે દેશમાં!

---

૧. માઈલ ૨. સ્થાનિક ગામો ૩. પઢારના કાર્યકર.

ટોપીવાળો અંગરેજ



In china says Arthur waley, folksongs were collected for political purposes They were regarded as a means by which the governing classes could get into touch with the common people and discover their grievance and aspirations

ટોપીવાળો અંગરેજ

[**આ** લોકગીતો છે, વિજાપુર અને મહેસાણા જિલ્લાનાં! ત્યાંની વસતીમાં છે બકા અને કાંટિયા ઠાકરડા! અને તેઓ આજેય ભૂતકાળના તેમના ગૌરવભર્યા જીવનના ખ્યાલથી અને દિમાકથી જીવી રહ્યા છે. તેમનો એ ખ્યાલ આજેય અંદરથી નથી ગયો કે અમે ઠાકોરો છીએ, આ ધરનીના ધણી છીએ.

એ ઠાકોરનાં ગામો પર એક પછી એક સત્તનતો બદલાઈ ગઈ આ મુલકનો પહેલો કબજો રજપૂતોએ લીધો, પછી મુસલમાનોએ, પછી લીધો મરાઠાઓએ, પણ તેમણે તેમને સાચવી લીધા અને આને કારણે મલ્હાવરાવ ગાયકવાડ માટેનો પ્રેમ આજેય લોકોએ તેમનાં લોકગીતો દ્વારા વ્યક્ત કર્યો છે દા ત 'શેરનો સમો ક્યારે આવશે?' અથવા 'હોળી ખેલે મલ્હાવરાવ મહારાજા!'

અહીં પ્રગટ થતું ગીત છે ત્યાંની ધરતીની બહેનોએ મલ્હાવરાવ ગાયકવાડને આપેલા ઠપકાનું અંગ્રેજો તેમને પકડીને ગુજરાત બહાર મૂકી આવેલ, તો તે વખતે તેની સાહ્યબી, પ્રજાની ફિકરચિંતા ઈત્યાદિને આ બહેનો ગાવાનું નથી ચૂક્યાં.

એક બંગલો મલ્હાવરાવે બંધાવ્યો ને તે માણવા તે ન રહી શક્યો તેનું આ ગીત છે.

બીજું ગીત: પિલવઈના ઠાકોરિયાને બિરદાવીને અંગ્રેજના માનસનું અચ્છું ચિત્ર વ્યક્ત કરે છે.

(૧)

ના ના કે'તી'તી ને બંગલો ચણાવ્યો,
ક્યાં ગયો બંગલાનો માણનાર માલાવરાવ,
ક્યાંથી આવ્યો વેરી ટોપીવાળો ?
ના ના કે'તી'તી ને બંગલો ચણાવ્યો,
ક્યાં ગયો બંગલાનો જોનાર માલાવરાવ,
ક્યાંથી આવ્યો વેરી ટોપીવાળો ?
ના ના કે'તી'તી ને ઘોરીડા વસાવ્યા,
ક્યાં ગયો ઘોરીડાનો ખેડનાર માલાવરાવ !
ક્યાંથી આવ્યો વેરી ટોપીવાળો ?
ના ના કે'તી'તી ને ઘોડીડા વસાવ્યા,
ક્યાં ગયો ઘોડીડાનો ખેલનાર માલાવરાવ ?
ક્યાંથી આવ્યો વેરી ટોપીવાળો ?
ના ના કે'તી'તી ને હાથીડા વસાવ્યા,
ક્યાં ગયો હાથીડાનો ઝૂલનાર માલાવરાવ ?
ક્યાંથી આવ્યો વેરી ટોપીવાળો ?

(૨)

ગાડી હાંકે છે પેલો પિલવઈનો ગરાસિયો રે,
ટીસે બળે છે પેલો ટોપીવાળો અંગરેજ;
પિલવઈ બાળી સરકાર રાજી થિયો !
ઘોડે ચડે છે પેલો પિલવઈનો ગરાસિયો રે,
ટીસે બળે છે પેલો ટોપીવાળો અંગરેજ,
પિલવઈ બાળી સરકાર રાજી થિયો !

બંધુક બાંધે છે પેલો પિલવઈનો ગરાસિયો રે,
રીસે બળે છે પેલો ટોપીવાળો અંગરેજ;
પિલવઈ બાળી સરકાર રાજી થિયો !

તલવાર બાંધે છે પેલો પિલવઈનો ગરાસિયો રે,
રીસે બળે છે પેલો ટોપીવાળો અંગરેજ;
પિલવઈ બાળી સરકાર રાજી થિયો !

ઢાલો ઝાલે છે પેલો પિલવઈનો ગરાસિયો રે,
રીસે બળે છે પેલો ટોપીવાળો અંગરેજ,
પિલવઈ બાળી સરકાર રાજી થિયો !



મરશિયા

•

'The real mourning is to be found in the beautiful and moving spontaneous poems that are sung by the bereaved husband and wife, parent or child, on the day of a loved one's death'

एको रसः करुण एव

માનવનું જીવન અનેક રસોથી પ્રત્યેક ક્ષણે ભર્યુંભાદર્યું રહે છે. જીવનમાં એક ક્ષણ માનવીની એવી નથી જતી હોતી કે જ્યારે તે રસમય ન હોય. કોઈ ક્ષણે તે વીરરસ માણતો હોય, તો પછીની ક્ષણે કરુણ. આથી જ એનું જીવન નવે નવ રસમાં તરબોળ રહે છે. સમાજના રચયિતાએ જીવનક્રમ પણ રસોને અનુરૂપ બને તેવી જીવનચર્યા ઘડી હોય તેવો ભાસ વારંવાર થયા કરે છે અને આથી લગ્ન શૃંગારરસનું ટાણું બને છે, ને જીવનનો અંત તે કરુણનું ગાન બને છે. તે ગાન પ્રત્યેક માનવીના ચિત્ત પર જીવનમાં સ્મરણીય બને છે. ઘણી વખતે આ ગીત અને પ્રસંગ શાશ્વત છાપ મૂકી જાય છે.

આથી રસભોક્તા કવિ, કલાકાર અને સાહિત્યસર્જકોનો તે પ્રિય રસ બન્યો લાગે છે. ગ્રીસ અને રૂમના સાહિત્યકારોએ તેમના ઉત્તમોત્તમ સાહિત્યભંડારને તે રસે જ સીંચી દીધો છે. સાહિત્યસ્વામી શેક્સપિયરની યાદગાર કૃતિઓમાં મુખ્ય રસ તો કરુણ છે.

ભવભૂતિનું 'ઉત્તરરામચરિત,' ભાસનાં માણેકનંગ શા એકાંકીઓમાંથી 'ઊરુભંગ' આદિ કૃતિઓ કરુણરસે નીતરતી કૃતિઓ છે. કથાકારોને પણ કરુણ રસ ભાવી ગયો છે. લોકસાહિત્યની કૃતિઓમાંથી 'લયલા અને મજનું,' 'હીર અને રાંઝા,' 'સુહિણી અને મેહાર'ની કરુણરસનીતરતી કૃતિઓ જગતસાહિત્યમાં કરુણ રસના કારણે ઊંચા સિંહાસને બિરાજે છે. અદ્યતન પરદેશી સાહિત્યમાં 'મેદમ બોવરી', 'ટેસ', 'એના કેરેનીના', 'નાના' આદિ કૃતિઓ કરુણ કૃતિઓ છે. જીવનમાં અને સાહિત્યમાં કરુણ રસ એ રસરાજ હોય એવું આથી લાગ્યા કરે છે. માટે જ સંસ્કૃત કવિ ભવભૂતિએ ગાયું કે एको रसः करुण एव.

વિશ્વકવિ રવીન્દ્રનાથ ઠાકુરે ગાયુ છે :

> আমি ঢালিবো করুণা-ধারা, আমি ভাঙিবো পাষাণকারা
> আমি জগৎ প્লাবিয়া বেড়াবো গাইয়া আকুল পাগল পারা

> હું કરુણાની ધારા વહાવીશ,
> હું પાષાણ કારાગાર તોડી દઇશ.
> હું જગતને કલામય કરતાં કરતાં
> કોઈ વ્યાકુળ પાગલની જેમ ગાતો ફરીશ.

ગુજરાતીમા ન મો. દિએ ગાયુ છે કે.

> આ વાદ્યને કરુણગાન વિશેષ ભાવે !

આમ માનવ જીવનમાં કદીક કદીક કરુણ ગીત ગાવાનુ પણ પસદ કરી લે છે પ્રત્યેક માનવના જીવનમાં પ્રત્યક્ષ એક પ્રસગ તો એવો આવે જ છે કે જ્યારે તે કરુણગીત ગાય છે

માનવ મૃત્યુથી પર નથી અત્યત નજીકના સ્વજનનું મૃત્યુ થાય છે ત્યારે માનવ કરુણાને મોકળા મને ગાય છે હૈયુ રડે છે, આંખોમાંથી છલોછલ આંસુની ધારાઓ વહે છે લોકગીતના રચનારા લોકકવિઓએ તેમની વાણીમાં તેની ભવ્યતાને–તેના કરુણ ગાનને ગાયુ છે ગુજરાતમાં તેનાં અનેક ગીતો–રાજિયાઓ, મરસિયાઓ મળે છે મૈકલ ટેકરીઓમાં રહેતી આદિવાસી પ્રજાએ તે ગીતો ગાયાં છે, અને શ્રી વેરિયર એલ્વીન જેવા લોકગીતના સમર્થ સગ્રાહકની નજર બહાર તે નથી રહ્યાં, તેમાંના કેટલાંકને શ્રી વેરિયર એલ્વિને 'મૈકલ ટેકરીનાં લોકગીતો' નામક સગ્રહમાં મૂક્યાં પણ છે શ્રી વેરિયર એલ્વિન કહે છે કે, તે પ્રસગનુ દુઃખ ખૂબ ઊડું અને મર્મભેદક હોય છે, આથી દુઃખના આવેગો ઉત્કટ ઊર્મિની પ્રબળ શક્તિ દ્વારા ભવ્ય અને સુદર કલ્પનાઓ ભર્યાં તેનાં ગીતો રચે છે કરુણ ભાવની ઊર્મિને વ્યક્ત કરવા માટે

આ ગાયકોએ જુદાં જુદાં ભાવપ્રતીકોનો (અં. સિમ્બોલ્સ) આશ્રય લીધો છે. આથી જ ગુજરાતના મરસિયામાં અભિમન્યુ અને રાવણ અમરત્વને પામ્યા છે. પણ હૃદયસ્થ કરુણને વાચા આપવા માટે ગાયકોએ અભિમન્યુ અને રાવણને મરસિયામાં ભાવપ્રતીકો તરીકે જ માત્ર પ્રયોજ્યા હોય તેવું લાગે છે. આ બે ભાવપ્રતીકો છોડીને પણ ઊર્મિભર્યું ગાન મરસિયામાં થયું છે. જુઓ :

એ લાંબે પાને આંબલી,
એ હરિણી કેરે ખજૂર, હાય !
એ એક અંધારી કોટડી,
દુજી વેરણ રાત હોય, હાય !
ગામે સૂના ગોંદરા,
નગરે સૂની પોળ, હાય !
રાજા વના સૂના રાવણા,
કુંવર વના શું તેજ, હાય !
બાપ વના સો બેટડા,
સો બેટા, સો બાપ, હાય !
વીરા વના સો બંધવા,
સો બંધવા, સો વેલ, હાય !
માએ વના સો બેટડી,
છૂટી પડિયા અવતાર, હાય !
ગોતી ચરંતો મરઘ મારિયો,
ઢેલડીને પડિયા વિજોગ, હાય !
ચારો ચરતો હંસ મારિયો,
હંસને હંસલીના વિજોગ, હાય !

એ લાંબે પાને આંબલી,
હરિણી કેરે ખજૂર, હાય !
દૂધ પીતો નાગ કોણે મારિયો,
નાગ ને નાગણનો વિજોગ, હાય
પીંજરેથી પોપટ કેણે મારિયો,
પોપટ ને મેનાનો વિયોગ, હાય !
ઊતર્યાં છે કાંબીકડલાં વીંછવા,
ઊતર્યો છે ઝાંઝરનો ઝંકાર, હાય !
ઊતર્યાં છે કડાંકાંરેલિયાં,
ઊતરી છે દર્શનિયાની જોડ, હાય !
ઊતરી છે ટીલડીમીંદલી,
ઊતરી છે કંકુડાની આડ, હાય !
મૂઠ દઈ રાણી ભાંગ્યો ચૂડલો,
નખ દઈ તોડયો ચંદનહાર, હાય !
જોજો, જેઠાણી આપણાં,
કાઠિયાણીનો ઊતર્યો છે શણગાર, હાય !
ફૂલડે બિછાવી સેજલડી;
સેજમાં લોટે કાળો નાગ, હાય !
એ લાંબે પાને આંબલી,
હરિણી કેરે ખજૂર, હાય !

યમે આવીને મોતી ચરંતા મરઘને માર્યો છે, હંસને માર્યો છે, પિંજરાના પોપટને માર્યો છે, દૂધ પીતા નાગને હણ્યો છે; એ પોપટની મેનાને, મોતી ચરંતા મોરની ઢેલને, હંસની હંસલીને વિજોગ થયા છે. રસભર્યાં યુવાન્–યુવતિ માટે લોકકવિએ કેટકેટલાં સંકેતો, રૂપકો, ભાવપ્રતીકો

પ્રયોજ્યાં ! અને ગીતના કરુણરસની બંસરી બાજી છે આ પંક્તિમાં : 'ફૂલડે બિછાવી સેજડી, સેજમાં લેટે કાળો નાગ,' અને 'એ હાંએ પાને આંબલી, હરિણી કેરે ખજૂર.' આંબલી તો અપશુકનિયાળ વૃક્ષ, ત્યજાયેલું વૃક્ષ, એ પંક્તિની વ્યંજના દ્વારા લોકકવિએ વિધવાની કરુણ સ્થિતિનું વાસ્તવભર્યું ચિત્ર આપ્યું છે. અને 'હરિણી કેરે ખજૂર'ની પંક્તિદ્વારા કહે છે કે હવે તો તેના માથે ઝાડ ઊગવાનાં બાકી છે. લોકકવિઓને નવનવાં પ્રતીકો જડી જ રહે છે. હૃદયના ઘેરા, કરુણ ને ભવ્ય ભાવને વ્યક્ત કરવા કેટકેટલાં, નવનવાં પ્રતીકો લઈને લોકકવિઓ આવે છે !

સંસ્કૃત દાર્શનિકે કહ્યું છે કે, કાળ અવધિ વગરનો છે. પણ કરુણ ભાવના ગાનારા ગાયકો કાળના નિરંકુશપણાને સ્વીકારવા તૈયાર નથી. તે તો ગાય છે :

પિત્તળ તે લોટાએ જળે ભર્યાં;
હાતણિયાની વેળા થઈ ગઈ;
મારા ઝમ્મરિયાને બાળા જોગણુનો
વખો પડચો !

તાંબા તે કૂંડી જળે ભરી,
નાવણિયાની વેળા થઇ ગઈ;
મારા છનગારાને બાળા જોગણુનો
વખો પડચો !

એ દાળ ઓરી મસૂરની,
એ કૂર ઓર્યાં કમોદનો,
અતરીશઅતરીશ ચારણાં,
એ પાપડ પૂનમચંદના,

એ આયા બિલ્લી સવેજી આથણાં,
એ હલવે કઢિયેલ દૂધડાં,
એ સોરઠવાડી ઘીએ ભરી,
એ સેવ વસઈ ને સાકર મેળવી,
એ ભોજનિયાની વેળા વઈ ગઈ,
મારા દુખાયેલને બાળા જોગણનો
વખો પડચો!
લવંગ, સોપારી ને એલચી,
સુખવાસની વેળા વઈ ગઈ,
મારા છનગારાને બાળા જોગણનો
વખો પડચો!
સાવ સોનાનાં સોળે સોગઠાં,
રમતની વેળા વઈ ગઈ,
મારા ગમ્મરિયાને બાળા જોગણનો .
વખો પડચો!
એ ગોઠણ સમો ઢાળિયો,
પોઢણિયાની વેળા વઈ ગઈ,
મારા છનગારાને બાળા જોગણનો
વખો પડચો!

પણ એ કાળનું બંધન આ જુવાની પૂરતું જ છે; માટે આ ગીતમાં તેને લોકકવિએ સ્પષ્ટ કરેલ છે:

પિત્તળ લોટા જળે ભર્યાં,
દાતણિયા (કરનાર)પોઢયા બાગમેં,

એ દાતણુ વેળા વઈ ગઇ, છતરપાર રાત,
જુવાની ઇની ઢળી ગઇ.
તાંબાકૂડી જળે ભરી,
નાવણિયા પોઢયા બાગમેં,
એ નાવણુ વેળા વઇ ગઈ, છતરપૉર રાત,
જુવાની ઇની વઇ ગઈ!
સેવે સુંવાળી લાપશી,
ભોજનિયા પોઢયા બાગમેં,
એ ભોજન વેળા વઇ ગઈ, છતરપૉર રાત,
જુવાની ઈની વઈ ગઈ!
લવંગ સોપારી એલચી,
મુખવાસિયા પોઢયા બાગમેં,
મુખવાસ વેળા થઈ ગઈ, છતરપૉર રાત,
જુવાની ઈની વઈ ગઈ!
ઘૂંટણુ સમો ઢોલિયો,
ગોઠણિયા પોઢયા બાગમેં,
પોઢણુ વેળા વઈ ગઈ, છતરપૉર રાત,
જોબનિયું ઈનું વઈ ગયું!

આ ગીતોમાં રૂપકો, સંકેતો અને ભાવપ્રતીકો દ્વારા હૃદયસ્થ કરુણાને લોકગીતના ગાનારે વ્યક્ત કરી, પણ કેટલાક રાજિયામાં તે સાવ નગ્ન રૂપે (crude) જન્મે છે. રૂપકો, સંકેતો કે પ્રતીકોનો આશ્રય લીધા વગર હૃદયની ઊર્મિનાં ઉત્કટતા અને પ્રાબલ્ય એટલાં હોય છે કે ગાનારને ભાવપ્રતીકો પ્રયોજવાની જરા પણ આવશ્યકતા દેખાતી નથી. હૃદયમાંથી આપોઆપ કરુણા સરે છે. જેમકે:

હાય હાય પાછલે પરોઢિયે મરઘો બોલિયો,
હાય હાય બોલ્યો ઈમની માડીજીના ઓરડે,
હાય હાય માડીજીના દીકરા ઓરવાયા,
(મરણ પામ્યા)
હાય હાય મરણ થયુ ઝમ્મરનું
હાય હાય પાછલે પરોઢિયે મરઘો બોલિયો,
હાય હાય બોલ્યો ઈમના વીરાજીના ઓરડે,
હાય હાય વીરાજીના બંધવ વીરા ઓરવાયા,
હાય હાય મરણ થયા લ્હે ને કારમા !
હાય હાય પાછલે પરોઢિયે મરઘો બોલિયો,
હાય હાય બોલ્યો ઈમના દીકરાના ઓરડે;
હાય હાય દદા દીકરા ઓરવાયા,
હાય હાય મરણ થિયા ઝમ્મરના !
હાય હાય રગત પાયાનો ઢોલિયો,
હાય હાય ચારે પાયે ચાર જમડા,
હાય હાય ઈમના દીકરા જમડાને રીઝવે,
હાય હાય લો ને જમડા લાચો,
હાય હાય લાચ લઈને એ શું કરુ ?
હાય હાય હરિના અજુ તેડા આવિયા,
હાય હાય પરભુના પરમાણ પાછા ના વળે,
હાય હાય અધલ ખૂટી ને ચિઠ્ઠી ઊતરી !

કરુણતી ઊર્મિ સ્વય જન્મીને ઘોધના પ્રવાહની જેમ વહેતી આ ગીતમાં જોવા મળે છે આ ગીતમાં માનવ તે સ્વાર્થી જીવ છે, તેની પ્રતીતિ 'હાય હાય લોને જમ । લાચો' પંક્તિમાં થયા વગર રહેતી નથી.

પણ નીચેના ગીતમાં મૃત્યુની ભવ્યતા ગાઈ છે. મૃત્યુ વખતે પણ એક પ્રકારના સ્વજન તરફથી છેલ્લી વેળાનાં લાડ મન માનવને મણાવે છે, તે ભાવની અભિવ્યક્તિ આથી શી વિશેષ હોઈ શકે ? ગાય છે કેઃ

બંગલો ખૂબ બન્યો જંગલમાં,
બંગલો ખૂબ બન્યો જંગલમાં,
ઊંચી મેડી આસમાનમાં,
નીચાં દોશીડાં તારાં હાટડાં,
દોશીડા આવ્યો રે ચંદનચોકમાં,
પાગડી લાવ્યો રે ભારે મૂલની,
તું તો મારા હાંશીલાના કાજે રે,
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !
નીચાં સોનીડા તારાં હાટડાં,
સોનીડો આવ્યો રે ચંદન ચોકમાં,
તું તો મારા નોખીલાને કાજે રે,
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !
નીચાં ઝવેરી તારાં હાટડાં,
ઝવેરી આવ્યો રે ચંદન ચોકમાં,
માળાઓ લાવ્યો રે ભારે મૂલની,
તું તો મારા નોખીલાને કાજે રે !
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !
નીચાં ગાંધીડા તારાં હાટ રે,
શ્રીફળ લાવ્યો રે ભારે મૂલનાં,
તું તો મારા નોખીલાને કાજે રે,
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !

નીચાં સુખડિયા તારાં હાટડાં,
સુખડી લાવ્યો રે ભારે મૂલની,
તું તો મારા ભુખાળવાને કાજ રે,
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !
નીચાં તંબોળી તારાં હાટડાં,
તંબોળી આવ્યો રે ચંદનચોકમાં,
બીડલાં લાવ્યો રે ભારે મૂલનાં,
તું તો મારા હોંશીલાને કાજ રે,
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !
નીચાં સોદાગર તારાં હાટડાં,
સોદાગર આવ્યો રે ચંદનચોકમાં,
ઘોડલાં લાવ્યો રે મોંઘા મૂલનાં,
તું તો મારા હોંશીલાને કાજ રે,
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો !

છેલ્લીવારનું આ બધું મૃતદેહને મણાવવાનું છે ને ! કરુણા કરતાં વિશેષ અહીં તો હોંશ છે, ઉલ્લાસ દેખાય છે સ્વજનનો આ ગીતમાં ! મૃતને શોભાવવા જાણે તેઓ સૌ ન નીકળ્યા હોય !

આ તો લાડ લડાવ્યાં મોતી યરંતા મરદને. પણ ત્યારે કંઈ મરદથીનો વિચાર સ્વજનો કર્યા વગર રહે ? તેથી તેના માટે પણ સ્વજનો કહેવડાવે છે કે :

નીચાં ચુડગર તારાં હાટડાં,
ચૂડા લાવે રે ભારે મૂલનાં,
તું તો મારાં....બાને કાજ,
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો રે !

નીચાં સરૈયા તારાં હાટડાં,
કંકુ લાવે રે ભારે મૂલનાં,
ખુશબો લાવે રે ભારે મૂલનાં।
તું તો મારા હોંશીલાને કાજ,
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો રે
નીચાં માળીડા તારાં હાટડાં,
તોરા(હારગજરા)લાવે રે ભારે મૂલનાં,
તું તો મારા માનીતી કાજ,
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો રે !
નીચાં લવારી તારાં હાટડાં,
સાંકળાં લાવે રે મેંઘા મૂલનાં !
તું તો નારી ....ને કાજ,
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો રે
નીચાં કંસારી તારાં હાટડાં,
કાસંદી લાવે રે ભારે મૂલની,
તું તો મારા રંગીલાને કાજ,
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો રે !
નીચાં ખરાદી તારાં હાટડાં,
પલગ લાવે રે ભારે મૂલનાં,
તું તો મારા હોંશીલાને કાજ,
વીજળીએ ચંદરમાને ઘેરિયો રે !

માત્ર જુવાનને સંબોધીને કુટુમ્બીઓએ કાંઈ ગત જીવ પાછળ ઓછાં રુદન નથી માંડ્યાં હોતાં આત્મા વિનાના જડ દેહના ડૂસકાંનું તો ગામને પાદર જ તણાય છે ને ! અને સ્વજનોને તો મનમાં શંકા

જન્મે છે કે ઘડી પહેલાં આપણામાં આસક્તિ—શ્રદ્ધા રાખીને જીવતો લાડ આમ સર્વસ્વ મૂકીને ચાલ્યો જશે? તે ભાવ લોકગીતના રચનારોએ કઈ રીતે ઝીલ્યો છે?

પાદર તંબુડેરા તાણિયા રે લાડા,
ઓય લાડા હાય હાય!
કટંબી તેડાવે મોટે માન,
ઓય લાડા હાય હાય!
દાદાજી તેડાવે મોટે માન,
ઓય લાડા હાય હાય!
તોય ન આલે બોલ્યા બોલ,
ઓય લાડા હાય હાય!
બેનડિયું બોલાવે મોટે માન,
ઓય લાડા હાય હાય!
તોય ન આલે બોલ્યા બોલ,
ઓય લાડા હાય હાય!
માતાજી બોલાવે મોટે માન,
ઓય લાડા હાય હાય!
તોય ન આલ્યા બોલ્યા બોલ,
ઓય લાડા હાય હાય!

એ જ પ્રકારનું આ ગીતઃ

લીલી લીંબરડીની છાંય રે;
મરઘો બોલ્યો રે કરોધમાં,
મરઘે ઈના કટંબી જગાડિયા,
કટુંબીને રામબાણ છૂટશે,

નાસે પંખીડા તુંને મારશે!
પંખી ઊડયાં ને રોળા રઇ ગયા,
લીલી લીંબરડીની છાંય રે!
નાસે પંખીડાં તુને મારશે,
પંખી ઊડયાં ને રોળા રઇ ગયા
લીલી લીંબરડીની છાંય રે!
મરઘે એના દાદાજીને જગાડિયા,
દાદાજીને રામબાણુ છૂટશે,
નાસે પંખીડાં તુને મારશે,
લીલી લીંબરડીની છાંય રે!
મરઘે એની બેનડિયુ જગાડિયુ,
બેનડિયુંનાં રામબાણુ છૂટશે,
નાસે પંખીડાં તુંને મારશે,
પંખી ઊડયાં ને રોળા રઈ ગયા!

પંખી ઊડી ગયુ અને ખોળિયુ બાકી રહી ગયું તેના સ્વજનને શોક થયો છે. પછી સ્વજનો આત્મસંતોષ માટે પૂછે છે કે:

પાળે ઘૂમે પારેવડાં,
મઢીએ ઘૂમે નાગરવેલ,
ઓય લાડા હાય હાય!
પાંહે રઈને દાદે પૂછિયા,
કયાં છે તમારો વાહ,
સીંગાસણ અમારા બેહણા,
ને વઈકુંઠ અમારો વાહ,
ઓય લાડા હાય હાય!

આમ કરણને હળવો કરવા, આત્માની શાંતિ કાજે સ્વજનો મનને તૈયાર કરે છે. કરુણરસ શાંતરસમાં છેવટે સરી પડે છે. એ મૃત્યુને તેઓ મંગળમય બનાવે છે અને ગાય છે :

હાથમાં માળા ને મુખે રામ રે,
રામે કરતાં રાજવી નીસર્યાં,
વિશ્વનાથના ઘરે તંબુ તાણિયા,
મળ્યો છે કાશીનો સંઘ,
હાથમાં માળા ને મુખે રમ રે,
રામે કરતાં રાજવી નીસર્યાં !
મળ્યો છે ડાકોરનો સંઘ,
રણછોડજી તંબુ તાણિય,
મળ્યો છે ચાંદોદનો સંઘ,
શેષશાયીજીએ તંબુ તાણિયા,
મળ્યો કરનાળીનો સંઘ,
કુબેરના ઘરે તંબુ તાણિયા,
હાથમાં માળા ને મુખે રામ રે,
રામે કરતાં રાજવી નીસર્યાં !

પછી તેઓ જીવશિવના સંબંધને વર્ણવવા લાગે છે :

હાય રે જીવ શીદ કરે શોસના
તમારું હોય તો જાય નેં,
હાય રે જીવ શીદ કરે શોસના ?
પોતાનું હોય તો જાય નેં,
મારું મારું કરતાં મરી ગયા,
તારું નથી તલભાર જો,

તમારુ હોય તો જાય ને !
રામચંદ્ર જેવા રાજા ગયા,
રિયાં સીતાબાઈ નાર
પોતાનુ હોય તો જાય ને !
હાય રે જીવ શીદ કરે શોસના ?
તમારું હોય તો જાય નેં !
રાણાજી જેવા રાજા ગિયા,
રિયા મીરાંબાઈ નાર જો !
પોતાનુ હોય તો જાય ને !
હાય રે જીવ શીદ કરે શોસના ?
તમારુ હોય તો જાય ને !
પોતાનું હોય તો જાય ને !

આમ સ્વજન પર આવેલી વિપદને ઓછી કરવા એકત્ર થયેલો સ્ત્રીવર્ગ શાંતરસભર્યો રાજિયો ગાઈ લે છે.

રાજિયા અને મરસિયાના લોકકવિએ આમ જીવનના મહત્ત્વની ક્ષણોને ગાઈ છે તેમાં એક છે કરુણની ! અને જીવનમાં માત્ર કરુણને જ સ્થાન છે, ખરુ ? ના, કરુણમાંથી માનવે ઊઠીને છેવટે તો જીવનના મહામાર્ગ માટે તૈયાર થવાનુ છે. તે વખતે તેના કંઠે હોવું જોઈએ શાંતરસનુ એકાદ ગાણુ.

લોકગીતના ગાનારા ત્યારે દાર્શનિકથી જરાય ઊતરતા ખરા કે ? જીવનનાં મહામૂલાં મૂલ્યો તારવીને આમ લોકો સમક્ષ જ તેઓએ મૂક્યાં છે ને !

અભિમન્યુના રાજિયા

જનસમૂહના હૃદયસ્થ ભાવો, ઊર્મિઓ, હર્ષશોકના આવેગો, દુર્વૃત્તિઓ ને સદ્વૃત્તિઓના ઘેરા કથનો લોકગીતમાં જેટલાં પ્રાપ્ત થાય છે તેટલાં શિષ્ટ સાહિત્યમાં કદાચ ઓછાં જોવા મળશે એવો પ્રશ્ન કેટલાક લોકગીતની કૃતિઓ વાંચતાં જન્મે છે એ વ્યક્ત કરવા ક્વચિત્ રામાયણ, મહાભારત કે પુરાણનાં પાત્રોનો આશ્રય લઈને તેમનાં પોતાનાં જ હૃદયસ્થ માનવ–ભાવોને માનવીએ વ્યક્ત કર્યાં હોય છે સીતા જેમ રામાયણનું કરુણપાત્ર છે તેમ મહાભારતનું કરુણપાત્ર ઉત્તરા અને અભિમન્યુ તેમનાં પર મુગ્ધ થઈ આપણા સાહિત્યના શિષ્ટ કવિઓએ પણ ક્યાં તેમને કાવ્યમાં ગાઈ નાખીને અમરત્વ નથી આપ્યું? પ્રેમાનંદ, નરસિંહરાવ દિવેટિયા ઇત્યાદિએ ઉત્તરા અને અભિમન્યુને ગુજરાતમાં ઘરઘરનાં બનાવી દીધાં છે, પણ લોકસાહિત્યના રચનારાઓએ પણ તેમને કાંઈ ઓછું મહત્ત્વ આપ્યું નથી લોકોને પણ આ બંને પાત્રો માટે ઘણું મમત્વ આજેય રહ્યું છે અને તેથી અભિમન્યુના મૃત્યુનો પ્રસંગ લોકોને મન અતિકરુણ પ્રસંગ છે તે જ કારણે કદાચ લોકોએ જનસમાજમાં અભિમન્યુ જેવા યુવાનોના મૃત્યુ વખતે અભિમન્યુના રાજિયા ગાયા છે

રાજિયા વિશે ચર્ચાદમાં મારા મિત્ર ડૉ. શ્રી નટવર શાહ બ સે કહ્યું 'આજે એક મીરાણીબેન આપણને રાજિયા સંભળાવવા બપોરે સવા વાગ્યે આવશે.'

પણ તે બહેન કારણવશાત્ ચાંદોદ ન આવી શક્યા, તેથી બપોરના ભગભગતા તાપમાં આશરે અઢી વાગ્યે દોઢેક માઈલ ધૂળ ખૂંદીને અમે બંને તેને મળવા ગયા. ગામના છેવાડા ભાગમાં ખુલ્લા આકાશના તળ નીચે એકલવાયું નવું બંધાતું ઘર છે ઘરના છાપરા પર વરણુ પણ

હજુ ગોઠવાયુ નથી. પરસાળમાં એક ખાટનો પડ્યો છે ખાટનાની પડખે બે બાંકડા પડ્યા છે તેના પર બે મીર બેઠા છે અમને જોઈને તેઓ ઘેલા ઘેલા બનીને બોલ્યા 'ડૉક્ટર સાહેબ, ભાઈસા'બ અમે તો ભૂલી ગયા આપ આ તાપમાં અમારા ઘરે ? ખાટલે આવો, આમ આમ!'

'મારા ઓળખીતા અમદાવાદવાળા કાન મે તમને વાત કરી હતી તે. એ તો ગીતો માંડવાં નીકળ્યાં છે' મને બતાવી ડૉક્ટર બોલ્યા

મીર જુવાન મરકીને બોલ્યા 'આવડતા હશે તેટના મડાવશુ'

'રાજિયા પણ મડાવશો ?' ડોક્ટરે કહ્યુ

'રાજિયા તો દરિયાવબે'નને આવડે' આધેડવયનાં બહેનને મે ઓરડામાં ફરતાં જોયાં તેમણે કાળુ સાળુ ઓઢયુ હતુ તેમની પાતળી કાઠી આગળના બે ત્રણ દાંત મોંમાથી પડી ગયેલા દાંતે બજર દેવાની ટેવ હોવાથી સાવ શ્યામ પડી ગયેલાં

'બે'ન રજવાડામાં કુવરનાં મૃત્યુ થાય ત્યારે રાજિયા ગાવા જાય છે ભનક્ના પથ્થર જેવા રાજવી આ રાજિયાનો સાદ સાંભળીને પીગળી જાય ! એમની સાથે બીજા ફૂટનારાં હોય બે'ન રાજિયાની પક્તિઓ આનાપે બીજા ઝીને'

મે કહ્યુ, 'વડોદરામાંથી મને અભિમન્યુનો રાજિયો મળ્યો છે ઉતરાવનાર પૂછી કોઈ વીસા લાડ વણિક છે મને મારા એક વિદ્વાન મિત્રે તે આપ્યો છે'

'તમારી પાસે અહીં છે ?' દરિયાવ બહેને મને પૂછ્યુ
મે મારી ફાઈલમાંથી રાજિયો કાઢી વાંચવો શરૂ કર્યો.

"ઓતરાને થયો અભિમાન,
અભિમન્યુ રાજા રે યુદ્ધે ચડયા
જુદ્ધમા કાઢય સોસરા રે બાણુ,
કેમે ઓતરાબાઈ રિસાઈ ગયા,

જુદ્ધમાં કાઢયાં ઢાલતલવાર,
ઓતરાનો ગર્વ ઉતારિયો.

ઓતરા રાણી પૂછે છે :

"હૃદય, આજનાં ગયેલ ક્યારે આવશો."
"આવીશ, આવીશ માસ છ માસ,
ભાદરવાના પાછલા પખવાડિયે."
રાણાજીએ કીધો છે ક્રોધ,
બોલાવું ત્યારે તું આવજે."
સાંઢણી આવી રાજદરબાર,
ઓતરાને તેડાં મોકલ્યાં.
ઓતરા રાણી કરે છે રુદન,
હવે મારું તો શું થશે?"
રામરાજ ઊઠી રે ગયાં,
મલેછનાં રાજ બેસાડિયાં.
"ઓતરારાણીને થયો છે ગર્ભવાસ"
એવું કહીને રાણા સંચર્યાં.
બીજી સાંઢણી આવી છે દરબાર,
રાણીને છાની રાખવા.
બે'ની હવે છાની રહે,
થનાર હતું તે થઈ ગયુ.
"માડી, મને....મને મોત ન આવ્યુ,
રામરાજ રે ઊઠી ગયાં."

'આવો અભિમન્યુનો રાસિયો તમને...' મેં મીનાણી બહેનને પૂછ્યું.

'અભિમન્યુના બધા રાજિયા આવડે છે, પણ અમે તે બધા ન ગાઈએ. તેમ રાજિયા ગવડાવનાર પણ ન ગવડાવે.'

'કેમ?'

'કાં તો ગવડાવનારને ત્યાં, કે કાં તો ગાનારને ત્યાં ૭ મહિનામાં ભારે નુકસાન થાય.' દરિયાવબહેન બોલ્યાં. અમારા ખાટલા સામે બેઠેલ મીરભાઈ બોલ્યા: 'ડોશીશાસ્ત્ર. અભિમાનના રાજિયા તમે માંડયા છે?'

હાય દરવાન! દરબાર ઉઘેડ રે,
  શોકીલાને જવું દિલ્હી શહેરમાં.
હાય દરવાન! દરબાર ઉઘેડ રે,
  નોખીલાને જાવું દિલ્હી શહેરમાં.
સૂતા હોય તો જગાડજો,
  બેઠા હોય તો બોલાવજો,
હવે મારું શું થાશે રે?
કયમ રે રાણા પોઢયા રે, હજૂર બાગમાં.
કરમે નીકળ્યાં કથીર રે,
  રાણી બેઠી રુદન કરે!
જગમાં થાશે જાણુ રે,
  આ રે થયું શું રાણા!
ઈશ્વિર કોપ્યા રાજદરબાર રે,
  રાણી બેઠી રુદન કરે!
હાય દરવાન! દરબાર ઉઘેડ રે,
  શોકીલાને જવું દિલ્હી શહેરમાં.

'મને તો આ બે મળ્યા છે.' મેં કહ્યું. 'તારે તમને અભેમાનના બીજા મરસિયા હું મંડાવું'

'ઓય રે બાવા ચડયો અભેમાનરાય,
દિલ્હી તણાં દળ જોને ઊમટયાં,
ઓય રે માડી આજુનાં શમણાં એવા હોય,
કોરાં ઘરેણાં જોને ઊતર્યાં.
ઓય રે દીકરી ઘણી રે ખમ્મા,
ઓય રે મા, સમણાં પડે રે સમદર બેટમાં,
ઓય રે બાવા ચડયો અભેમાનરાય,
દિલ્હી તણો દળ જોને ઊમટયો!
ઓય રે વીરા આજુનાં સમણાં, એવાં હોય,
કોરાં ચૂડી જોને નંદવાયાં.
ઓય રે બે'ની ઘણી રે ખમ્મા, મારાં બા,
સમણાં પડે દશમન બારણે,
ઓય રે બે'ની આજુનાં સમણાં એવાં હોય,
કોરાં સાળુડાં જો ને ઊતર્યાં.
ઓય રે બે'ની ઘણી રે ખમ્મા, મારાં બા,
સમણાં પડે રે શીમળ લાકડે.
ઓય રે દાદા આજુનાં શમણાં, એવાં હોય,
કોરા કકણ નંદવાયાં,
ઓય રે દીકરી, ઘણી રે ખમ્મા, મારાં બા,
સમણાં પડે સૂકે લાકડે.

દરિયાવબહેને સૂરીલા કંઠે લહેકા સાથે રાજિયો મંડાવવો શરૂ કર્યો.

અમેમાનનો આ મરસિયો તમને મળ્યો છે, ભાઈ?'

હું દરિયાવબહેનના કરુણ કંઠનાં ગાનથી ગદ્દગદિત બની ગયો હતો. સૂરીલા કરુણ કંઠમાં કેવું જાદુ, કેવી કળા આ બાઈ માણસે સાધ્ય કર્યાં છે!' હું મનમાં વિચારતો હતો.

મૂર્છામાંથી જાગીને ઉત્તર આપે તેમ મેં જવાબ આપ્યો : 'મારી પાસે નથી.'

તે બહેન મારી સામે મરકી પડ્યાં ને બોલ્યાં : 'આથીય અદકો સરસ બીજો માંડો.''

તેમણે તે જ કઠે બીજો મરસિયો ગાવો શરૂ કર્યો, મેં માંડવા માંડ્યો.

"ઓતરાની માડી જાઓ સોનીડાની દુકાન,
સૂતેલા તે સોનીડા જગાડિયો.
સોનીડા અબ ઉઘાડ, ઘરેણાં લાવે ભારે મૂલના.
કાઢે કાઢે પીળાં અબ સોનું કાઢેને, પિત્તળ નીપજે,
વધેતાના લખિયા લેખ, કરમે કાળાં રે, ઓતરા નીપજ્યાં.
ઓતરાનો વીરો બજાજી સૂતો તે બજાજી જગાડિયો.
ભઈ બજાજી અબ ઉઘાડ, સાડીઓ લાવે ભારે મૂલની.
કાઢે કાઢે રાતી રાતી ચૂલ, રાતી કાઢે તે કાળી નીકળે.
વધેતા લખિયા રે લેખ, કરમે કાળાં રે, ઓતરા નીપજ્યાં.
ઓતરાના દાદા ચૂડગરિયાં દુકાન, સૂતો તે ચૂડગર જગાડિયો.
ભાઈ ચૂડગર અબ ઉઘેડય, ચૂડલા લાવ્યે ભારે મૂલના.
કાઢે કાઢે રાતાં ચોળ, રાતાં કાઢે ને કાળાં નીપજે.
વધેતા લખિયા રે લેખ, કરમે કાળાં રે, ઓતરા નીપજ્યાં.

ઓતરા સૂતાં પલંગ મોઝાર, સમણાં આવ્યા રે જેને કારમાં.
ભાઈ રે રાયકા સાંઢડી સોંઢાડય, મારે જાવું નગર શહેરમાં.
ઓતરા તો સાંઢડીએ અસવાર, સામાં મળ્યાં કાઠી લાકડાં.
'ઓતરા, તું પાછેરી વળ, આજનાં શુકન માઠાં ગણાય.
ઓતરા તું પાછેરી વળ, આજનાં શુકન માઠાં ગણાય,
માર્યા માર્યા રા'ખેંગાર,, એક માર્યા અભેમાન રાયને.'

દરિયાવબહેને રાજિયો પૂરો કર્યો અને તે બોલ્યા. "ભાઈ, આ મરસિયો કર્યા ય થી ."

મેં માથુ ધુણાવ્યુ બાઈએ કંઠથી જે કરુણતાનું ગાન ગાયું હતું તે મારા શરીરના અંગે અંગમાં વ્યાપી ગયું હુ તો નાચીજ આદમી! આ બાઈની આ કલા શક્તિની હુ શી કદર કરુ? પણુ ઊભા થતાં થતાં મનમાં તો થયા કર્યું, આ કંઠ કેટલા જુગ ગુજરાતમાં ટકશે? આને કાયમી બનાવી દીધો હોય તો? અને મેના ગુજરીનાં છૈયાં તો ગુજરીની કુખને દીપાવે તેવાં છે તો આવાં છૈયાંને નાણી નાણીને તેમના કંઠને ક્યકડાની પટ્ટીમાં પૂરી દીધો હોય તો દરિયાપારના મુલકના મનવીને મેના ગુજરીનાં સંતાનની તાકાતની ત્યારે જ જાણુ થાય.

શોક અને આનંદના મિશ્ર ભાવે હુ તે ઓરડામાથી ઊભો થયો.

પણ માથા પરના તાપને સહન કરવાની શક્તિ આ બાઈએ ચાદિાદ વળતાં મને આપી હતી.



પરભવનું પરબ



' After this life of two days is passed;
We must travel onward alone '

પરભવનું પરણ

કૂમાની બહારની પડસાળમાં ખેત્રણુ પઢાર સાથે બેઠો હતો. માત્ર જિજ્ઞાસાપૂર્વક અનેક પ્રશ્નો તેમને પૂછયે જતો હતો તેમના ઉત્તરોમાથી નોંધવા જેવુ નોંધી લેતો તે પ્રશ્નોમા નાતજાતના રિવાજોથી માંડીને તેમના જાતીય જીવનના અગત પ્રશ્નો પણુ આવી જતા કોઇ વાર તેઓ મનકતા તો કોઇ વાર ચમકતા ને તેઓ જવાબ આપતા : 'આવુ આવુ શુ પૂછો છો ?'

'ખપ હશે ત્યારે જ પૂછતો હઈશ ને !'

પછી તો ટોળુ વધવા માંડયુ તેમા વૃદ્ધાઓ અને યુવતિઓનો પણુ ઉમેરો થયો

મે પૂછયુ. 'આ જીવ જતો રે' પછી તેનું શુ થતુ હશે ?'

'ભગવાનના ઘરે !' વૃદ્ધ પઢાર છગન રેવાએ જવાબ આપ્યો.

'ભગત છે જીવની વાતું તે બવ જાણે છે'

'ભગવાનના ઘરે ?' મે આશ્ચર્ય વ્યક્ત કર્યુ

'બાપલા, શી ખમર એવી વાતોમા તમે માનતા હશો કે નૈ, પણુ જીવ તો નિરમાણી જવા તનસતો હોય ! મારી વાત કરુ. માનશો ? હું છન્નુનો છુ છપનો મે જોયેલ પણુ છપ્પનમાં હુ પાપિયો માછર્યાં ઝાલું, ખઉ ! સમજ્યુ નૈ તે પરમાગીય ખાતો, પણુ છપના કેડે પરણુ હદ્યે વસી ગયા તે એકલો કર્ઇક ને કર્ઇક રાગોડુ, ન્યાં લાલજી બાવાનો સગ થઈ ગયો ને આ કઠી બધાવી ભગન થયો, પરમાગી છોડી.' અને તેમણે ભજન લલકાર્યું :

હંસલા હાલો હાલો સતગુરુના દેશમાં,
ત્યાં સર્વે દુખ મટી જાય.
હંસલા પિયો રે પિયાલો ગુરુના નામનો.
હંસલા ઊંચી રે મેડી તારી ઊજળી,
ત્યાં તો હલકે હીરાળાખાટ,
હંસલા પિયો રે પિયાલો ગુરુના નામનો.
હંસલા નદી કંઠાણાનાં રૂખડાં,
પરમારથ કરનાર કોણ હોય?
તેમણે મેળ્યાં સમૂળાં ઝાડ,
હંસલા હાલો હાલો સતગુરુના દેશમાં.
હંસલા દેવે રે ડુંગરપરી ઓલિયા,
મારા સાધુ અમરાપર હોય!

'આ હંસલો–જીવ સતગુરુના મલકમાં જવા પાંખું ફફડાવી રહ્યો છે. એનાં ભજનો ગવાણાં છે અને આવું ઝંખના હંસલાને સામેથી કહેણ પણ આવે છે:

એ હંસલા હાલો આપણા દેશમાં,
રે અચરત ખેલ બન્યો.
અમારા દેશમાં નિત નિત પૂનમ,
નૈં ચોમાસાના તે દિ'
અમારા દેશમાં અમીરસ વરસે,
નૈ ભૂખ્યાં, નૈ તરસ્યાં,
હંસા હાલો આપણા દેશમાં;
રે અચરત ખેલ બન્યો.
અમારા દેશમાં મેવલા વરસે,

વરસે અખંડધારા,
સૂઈ રવ મેદાનમાં,
નૈં ભીંજાય તરી કાયા,.
આપણા દેશમાં અચરત ખેલ બન્યો.
અમારા દેશમાં ઊંડમૂંડ કૂવો,
ઢંક સાંકડી શેરી,
અવલ પાણિયારી પાણી ભરે,
વિના ગાગર, વિના દોરી,
અચરત ખેલ બન્યો !
અમારા દેશમાં વાજાં વાગે,
વાગે અપરંપારા,
કહત કબીરા. સુણો મેરે સાધુ,
હંસા નજરે ના'વ્યા,
અચરત ખેલ બન્યો.

'ભાઈ, આવું કેણુ આવે કે તરત જ જીવડો શું ઝંખવા માંડે છે, જાણો છો તમે!

જાવું છે નિરવાણી,
જીવડાને જાવું છે નિરવાણી,
રામ ચેતનવાળા, તમે ચેતીને ચાલો,
જાવું છે નિરવાણી,
ભાઈ જીવડાને જાવું છે નિરવાણી !
માટી ભેળી માટી થાશે,
પાણી ભેળું જળપાણી,
કાચી કાયાનો ગરવે ન કરીએ,

આખર થાયે ધૂળધાણી,
રામ ચેતનવાળા, તમે ચેતીને ચાલો,
જાવું છે નિરવાણી,
  ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી!

રાજા જાશે, પરજા જાશે, રૂપાળી રાણી,
ઈન્દ્રનું ઇંદ્રાસન જાશે, બ્રહ્મા ને બ્રહ્માણી,
રામ ચેતનવાળા, તમે ચેતીને ચાલો,
જાવું છે નિરવાણી,
  ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી!

આબુગઢમા કુભોજી રાણા,
  એમના ઘરે પદરસેં રાણી,
સત છોડાવવા ચારણ આવ્યો,
  ત્યારે માગી કુભા તારી રાણી,
રામ ચેતનવાળા, તમે ચેતીને ચાલો,
જાવું છે નિરવાણી,
  ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી!

સગાળશા સરખા શેઠિયા,
  એમના ઘરે સઘાવતી રાણી,
સતના કારણીએ કેલિયો ખાડચો,
  નયણે ના'વ્યાં પાણી,
રામ ચેતનવાળા, તમે ચેતીને ચાલો,
જાવું છે નિરવાણી,
  ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી!

હરચંદ સરખા રાજિયા,
ઈમના ઘરે તારામતી રાણી,
સતને કારણે તરણે વેચાણાં,
નીચ ઘર ભરિયાં પાણી,
રામ ચેતનવાળા તમે ચેતીને ચાલો,
જાવું છે નિરવાણી,
ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી !
લંકાગઢનો કોટ કનકનો,
એમના ઘરે મનોહરી રાણી,
જેની ગાદીએ સૂરજ તપે,
તેની લોમિકા લેળાણી,
રામ ચેતનવાળા તમે ચેતીને ચાલો,
જાવું છે નિરવાણી,
ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી !
અવિચળ ભગતિ ધરુને (ધ્રુવને) સોંપી,
દાસ પોતાનો જાણી,
ગુરુપરતાપે બોલ્યા અમરથી,
તેની અમ્મર રે'શે વાણી,
રામ ચેતનવાળા તમે ચેતાને ચાલો,
જાવું છે નિરવાણી,
ભાઈ, જીવડાને જાવું છે નિરવાણી !

'જીવ આ નજરે ચારે કોર નજર નાખતો ફરે છે. જીવ એની જાતને સોંપે છે ઓલ્યા ઉપરવાળાના હાથમાં. જીવ નવું ને જાનું જોતોજોતો, વિચારીવિચારીને ફરતો હોય છે.

'અને પાછો આ જીવને કોઈ ઉપદેશ પણ દેવા કાનમાં વાતો કરતો હોય છે. એના કાજે જુવોને આ ભજન:

ભેળીશ નૈં રે કાયાને છોડીશ નૈં, હે મારી વાડીના
ભમરલા, વાડી ભેળીશ નૈં રે!
ઊંચો રે ચંપો, ઈનાં ફૂલડાં ઘણેરાં, વા'લા!
કોયું લેજે, ફૂલડાં તોડીશ નૈં,
ભમરલા, વાડી તું ભેળીશ નૈં રે!
ભેળીશ નૈં રે કાયાને છોડીશ નૈ, હે મારી વાડીના
ભમરલા, વાડી ભેળીશ નૈં રે!
નીચો રે આંબો, ઈનાં ફળ તો ઘણેરાં, વા'લા!
રસ ઘોળીને રસ તું ઢોળીશ નૈં,
ભમરલા, વાડી તું ભેળીશ નૈં રે!
ભેળીશ નૈં રે કાયાને છોડીશ નૈં, હે મારી વાડીના
ભમરલા, વાડી ભેળીશ નૈં રે!
ચાર ચાર મરઘલાં, વાડી ભેળવાને આવ્યાં, વા'લા,
બબ્બે જણાની જોડયું, આ તોડીશ નૈં રે, મારી વાડીના
ભમરલા, વાડી ભેળીશ નૈં રે!
ભેળીશ નૈં રે કાયાને છોડીશ નૈં, હે મારી વાડીના
ભમરલા, વાડી ભેળીશ નૈં રે!'

મેં પૂછ્યું: 'આ ભજન ખરેખર ફરી ફરી સાંભળવું ગમે એવું છે. ફરી ગાઈ સંભળાવશો?' ભજનની હલક, તેનો આલાપ, લય, જાણે કોઈ ગાંધર્વના કંઠમાંથી રેલાતાં હોય તેવું મને લાગ્યું.

'ભલે'

તેમણે ભજન ફરીથી ગાયું હું તેના કાવ્યતત્ત્વ પર મુગ્ધ હતો.

તેથી મે પૂછ્યું: 'કોનું આ ભજન હશે?'

'અમે તો મીરાંબાઈ, કબીર ભગત, અમરશી ભગત, ભૂતનાથ, વાલીબાઈ, ડુંગરપરી, નથુરામ, લાલા ભગત, આવો દેલ, રામદે પીરનાં; આમ સૌનાં ભજનું ગાઈએ. તેમાંના કો'કનું હશે આપણે તો ભજન હારે કામ છે ને!'

હું તો કડું કકડાવીને આ બધાં ભજનો મડચે રાખતો હતો. છગન ભગતની વાણી ઝીણી જિજ્ઞાસે કે કેમ એ પ્રશ્ન તો લખતાં-લખતાં મને વારેવારે થતા પણ તેના મર્મ સુધી હું પહોંચીશ કે કેમ તે વિષે મનમાં પ્રશ્ન જ ન'તો જન્મ્યો; કેમકે આ બધાથી હું કોરોકટ હતો, પણ છગન ભગતને શ્રદ્ધા હતી કે મારે તો મારી વાણી વહાવવી. તેમણે નવી વાત ઉપાડી: 'જીવ ને દેહ પણ ઘણીવાર વાતો માંડતા હોય છે, એવું એક ભજન તમે સાંભળો'

વનરાવનમાં હંસા મઢી રે બનાવી રે,
કંચનના મોલું લૂંટાય રે!
તારે મારે તે હંસા જોયા જેવી થાશે રે,
કાયા સડીને હંસો જાય રે!
તાલ ને તમાસા જોવા દુનિયા મળે રે,
તમુ વિના હંસા, ફરુ ઉદાસી રે!
હલુકે જડયું હું મોટી રે તારે ને મારે હંસા....
થોડા દિવસ હંસા લા'વ લિયો રે!
તારે ને મારે હંસા....
કાયા છોડીને હંસો જાય રે!
તાલતમાસા જોવા દુનિયા મળે રે!
તારે ને મારે હંસા....

'હસનો એટલે જીવ. જીવને દેહ આ વાતો કહી રહ્યો છે અને આપણો જીવ આપણને કયાં ઓછી શિખામણ દે છે! તેનો સાંભળનાર દુનિયામાંથી તરી જાય, ત્યારે સાંભળો

જૂઠડી કાયા, રાણી, જૂઠા ના બોલો જી,
વઢશે તુંને તારો ઘડનારો રે!
આય પદારથ મોટા મોટા પામ્યા જી,
ભજન કરી લે તું દીનાનાથ
માતાપિતાની તને લાલચ લાગી,
ત્રિયાના બોલડે બંધાણો રે–જૂઠડી કાયા .
જાણે જુગતમા વે'લા સુધરજો જી,
ભજન કરી લે તું દીનાનાથ
દૂધપૂતર ને અગળ લખમી
એ શે ફળશે તારી સેવા રે–જૂઠડી કાયા .
અંતકાળે જાવુ છે એકલા,
કોઈએ મરણુ ને જાણ્યો રે–જૂઠડી કાયા
આ ભૂમિ પર એવા એવા વિયા ગિયા,
હાથી–ઘોડાના ચડનારા,
દલ ભીતર ગુણ ગાય નથુરામ,
આયા નથી કોઈ રે'વાનું રે જૂઠડી કાયા

'સાચુ કહે ભાઈ આયા કોઈ રહેવાનુ નથી પૂતર, અનગળ લખમી, માતપિતા, સ્ત્રી, આ સૌનો લાલચુ જીવ જાણે કે 'અંતકાળે જાવુ છે એકલા.' ત્યારે તે ગાય છે કે 'આ ભૂમિ પર એવા વિયા ગિયા, હાથી–ઘોડાના ચડનાર, પછી મારા જેવા પઢારનુ શું?' અને પછી અમને ઉપરવાળો આવીને સધેવો દઈ જાય છે શો સંધેવો?

હાં....હાંરે હું તો અગનિ, હું તો શૂરવીર થઈને,
હાં રે હું તો એરૂ, વીછી, હું ટંકારો ઝેરી,
હું વાઘ થઈને વનમાં રવૈં છું,
તારે હું તમારો વેરી રે.
હાં....હાં રે હું તો ખાતરિયો,
હું તો અગનિ, હું તો તમારો વેરી રે.

હું તો તાવ, હું તો તરિયો, હું તો રણઝણ રોગી,
વૈદ જ થઈને પાંહે રવૈં છું, હું તમારો ભોગી,
હાં....હાં રે હું તો ખાતરિયો,
હું તો અગનિ, હું તો તમારો વેરી રે.

હું ભૂવો ને હું પાવળિયો, હું પાલખમાં રવૈં છું,
આલે તેનો ચરુયો ન ચાખું, નવ આલે તેનું લવૈં છું,
હાં....હાં રે હું તો ખાતરિયો,
હું તો અગનિ, હું તો તમારો વેરી રે.

હું કાકો ને હું પિતરિયો, હું તે પતા થઈને રવૈં છું,
વા'લી તે બાઈના ખેડે વળગિયો ત્યારે,
રવૈં છું સાબદો થઈ ને!
હાં....હાં રે હું તો ખાતરિયો,
હું તો અગનિ, હું તો તમારો વેરી રે!

'જીવને જેનો નડો છે તે આવો છે. ઘડીમાં હું વખ તો ઘડીમાં તેનું જ તે વારણ. એના રંગપલટા પામવા દોહલા છે. તારે જ જીવ મૂંઝાઈને ઈની રમત જાણવાની ઝાઝી ગડમથલમાં ન પડતાં તેના જ પગમાં નમણ્યું કરે છે. નમણ્યુંનું ભજન તારે સાંભળો:

સાધુ બોલે છે એ મીઠી વાણી રે,
પરદેશી સુજને સાધુડાં મળિયાં રે!
આ રે કાયાનો જા'રે ગઢડો હેરાણો,
વિઠલા કરજો આ મારી વારું રે!
આ રે કાયાનો જારે ગઢડો હેરાણો!
સાધુ બોલે છે એ મીઠી વાણી રે,
પરદેશી સુજને સાધુડાં મળિયાં રે.
સઘળા કટંબની મેં તો આ મરજાદું મેલી રે,
ખલકો પહેર્યો છે ખાવંદિયા એ તારો રે!
પરદેશી સુજને સાધુડાં મળિયાં રે,
સાધુડો મીઠી બોલે છે, એ મીઠી વાણી રે!
સાંકડી શેરીમાં આ સતગુરુ મળિયા રે,
નમણ્યુ કરે છે નર આ નારી રે!
પરદેશી સુજને સાધુડાં મળિયાં રે,
સાધુડો મીઠી બોલે છે, એ મીઠી વાણી રે!
ગુરુના પરતાપે આ આવો છેલડી બોલિયાં,
બોટયાં આ અમીરસ વાણી રે!
પરદેશી સુજને સાધુડાં મળિયાં રે!
સાધુડો મીઠી બોલે છે, એ મીઠી વાણી રે!'

સૂરદાસ થભ્યા, તેમણે શ્વાસ લીધો અને પછી બોલ્યા : 'ભાઈ, જીવે ખાવંદનો ખલકો પહેરવાનો હોય છે એ ખલકો પહેરતી વેળાએ કોઈની લાજ કે શરમ ગણવાની ન હોય! ને તો જ જીવ શિવને ઓળખે અને શિવને જીવ માટે મમતા જાગે, સમજ્યા કે! અને પછી જીવરૂપી મોરલાની શી દશા હોય છે?

એ મોરલો મરતલોકમાં આવ્યો રે,
એ....જી આવડલાં રૂપ ક્યાંથી લાવ્યો,
રે મોરલો મરતલોકમાં આવ્યો રે !
હે નાભિકમળમાં ઊગ્યો એક મોરલો,
જઈ બેઠો શીતળ છાય,
સુરતા સુહાગણ સુંદરી રે,
સૂતા સૂતા શેંરે જગાડ્યો રે !
રે મોરલો મરતલોકમાં આવ્યો રે !

લીલો ને પીળો મોરલો, અજબ બેરંગીલો,
વરણ થકી કે'વાણો !
પાંચ બળધિયે તાણ્યો એક ગાડલે,
જ્યમ તાણે તાંસ વાણો,
રે મોરલો મરતલોકમાં આવ્યો રે !

ઇગળા ને પીંગળા તારી વાટચું જોવે છે !
મારા વાલાનો હુકમ હજુ કયમ ના'વ્યો રે !
કાં તો શેષીલો રૂપે ભરાયો,
કાં તો ધરધધામાં ભરાયો,
રે મોરલો મરતલોકમાં આવ્યો રે !

હાં કાચી કાયાનો મૂરખા મત કર ભરોસો,
ઈનો પરથમી ઉપર નથી પાયો,
ગુરુપરતાપે બોલ્યા નારણદા,
ગુણ તો ગોવિંદના ગવાણા,
રે મોરલો મરતલોકમાં આવ્યો રે !

'હવે આથી વધુ શું કે?' કાચી કાયાનો તો મૂરખા વિશ્વા કરે, બાકી એનો વિશ્વાસ શું કરાય?'

ભગત હાથમાં લાકડી લઈને ઊભા થયા. 'ભાઈ, અમે તો આવું જાણીએ તમારા જેવા ભણેલા મોટામોટા શાસ્ત્રની વાતો જાણે'

'ના, ભાઈએ તો ભગનભાભા તમારાં આ સઘાંય ભજન માંડી લીધાં છે કાં તો તમારાં વેણુ ય તે!'

તેઓ સૌ ગયાં, મારાં માટે આ બધું જ નવું હતું શિવ, જીવ અને કાયા માટે આ સૂરદાસે ઘડીભર અહીં કેવું પરભવની દુનિયા માટે પરબ માંડ્યું!



રવિદાસની વાણી

'**સોરઠી** સંતવાણી'ની પ્રસ્તાવનામાં લખ્યું છે કે મીરાંબાઈના ચમાર જાતિના ગુરુ 'રમદાસ' નામે કાશી તરફ, અને આપણે ત્યાં 'રોઈદાસ' નામે સુપ્રસિદ્ધ છે એ સૌરાષ્ટ્રમાં સારી પેઠે રહી ગયા મનાય છે ગિરકાંઠાના અતરાઈ નામે ગામમાં રોઈદાસ ચમારનો ચામડા ધોવાનો ચમત્કારી કુંડ અત્યારે બતાવવામાં આવે છે, અને એના નામે ચડેલા અન્ય પરચાઓ ગામેગામ જાણીતા છે

એમને વૈરાગ્યનો પાકો રંગ લાગી ગયો એને લાગેલી પ્રભુ-લગની જે અનેક ભજનોમાં ઉચ્ચારણ પામી છે, તે ભજનો આજ સુધી સમસ્ત ભજનસાહિત્યના શિરોમણિ મનાયાં છે

રવિદાસની વિવિધતાભરી અને પ્રચુર વાણીમાં પણ ક્યાંયે કોઇ સામ્પ્રદાયિક ઉચ્ચાર નથી; એને તો કેવળ નિરંજન, નિરાકાર અને અનામી જ્યોતિનાં આંતર દર્શન થયાં છે તેના ઉપર એ વારંવાર ભાર મૂક્યા કરે છે. એ રીતે રવિનાં તમામ પદો અંતર્મુખ બનવાની જ હાકલ કરે છે.

તે સિવાય સીધો નીતિધર્મનો ઉપદેશ કરતાં પદો પણ એમનાં ઘણાં છે. પાખંડ ઉપર એણે ખૂબ પ્રહારો કરેલ છે. 'ચડી ખુમારી ન ઊતરે,' 'આઈ પ્રેમ કેરી લહેર' એવી 'ખુમારી' રવિને પ્રિય છે. એનો બીજો પ્રિય શબ્દ છે અનતો અનતો એટલે નિર્ભયતા: ભયનો નાશ.

જ્ઞાનીપણાનો ગર્વ રવિદાસને કડવો ઝેર જેવો લાગે છે.

અત્રે પ્રગટ થતું ભજન વઢવાણ તરફથી સાંપડયું છે. ભજનના ઉતરાવનાર ભરથરી બાવા છે.

અરે બેલીડા, બેદલનો સંગ ના કરિયે,
બેદલ મૂળથી મીઠડું બોલે,
આમ એનો અંતર ડોલે!
એની વાતુમાં વરમડ ડોલે,
અરે બેલીડા, કાગડો ને કોયલ એક જ વરણનાં
બેઠાં આંબલિયાની ડાળે,
એક જ વરણાં હોય, પણ બોલી બરોબર નહીં,
અરે બેલીડા, બેદલનો સગ ના કરિયે!
હંસલો ને બગલો એક જ વરણના હોય,
બેઠા સરોવરની પાળ,
એક જ વરણના હોય, પણ એનો આહાર બરોબર નહીં!
અરે બેલીડા, બેદલનો સંગ ના કરિયે!

કાળા મોઢાની ચણોઠી ભાઈ, આવી હેમના તોલમાં,
હેમ બરોબર હોય, પણ મૂલ બરાબર નહીં,
અરે બેલીડા, બેદલને સંગ ના કરિયે !
આ કળજગના માનવી, તેના દિલની વાતું ના કરિયે,
ગુરુપરતાપે રવિ ભાણ સા'બ બોલિયા,
બેલીડા, ને છેબું ઝાલી ઝાલી રહી !



આ ભજન કોનું ?

જ્યારે ભરથરી બાવાએ મને આ ભજન ગાઈ સંભળાવ્યું ત્યારે મારા નાનપણના દિવસોની સ્મૃતિ તાજી થઈ.

મારાં ભાભુ હતાં, તેમના પુત્રો ખેતી કરે, ને વહેલાં સવારે મારાં ભાભુ શીદીને ઘટીએ બેસી આ ભજન લલકારે :

ઇ ટડિયુંમાં કેમ રે'વાશે, ભાઈ,
મારે રામની રજાયું નહીં !

લગભગ વીશેક વર્ષ પછી જ્યારે ફરી મેં આ જ ભજન સાંભળ્યું ત્યારે ભરથરીજીને મેં કહ્યું : 'ફરી સંભળાવો !'

ભજનરસનો પ્યાલો ઘટઘટાવવા મેં તેમને કહ્યું હશે ? ના, મૃત સ્વજનની સ્મૃતિઓ તાજી કરવા.

પણ શિશુવયમાં માનામાં આ દૃષ્ટિ કયાં હતી કે ભજનો અને લોકસાહિત્યની અનન્ય કૃતિઓ એકત્ર કરવી !

મેં સ્થિરચિત્તે બેએક વાર આ ભજન સાંભળ્યું, અને મેં તે ઉતારી લીધું.

પછી તો તેનો અભ્યાસ આદર્યો. 'સોરઠી સંતવાણી'નાં પાનાં ઉથલાવ્યાં ને મને તેની પ્રસ્તાવનામાં તે જોવા મળ્યું. આખું નહિ પણ પ્રારંભની આ ત્રણ પંક્તિઓ.

> હાટડીએ કેમ રે'વાશે, મારાં રામની રજા નહિ;
> બેસવા સારુ હાટડી કીધી, હાટડી ખડી થઈ;
> તેડાં આવ્યાં શ્રીરામનાં ત્યારે હાટડી પડી રઈ
> —હાટડીએ.

ને અંતની માત્ર બે પંક્તિઓ :

> ધર્મના કામને ઢીલ ન કરવી, વેળા જાશે વઈ,
> દાસી જીવણ ભીમપરતાપે, નામની નોબત થઈ.
> — હાટડીએ.

આ છેલ્લી બે પંક્તિઓ વાચતાં હું વિચારમાં પડી ગયો, કેમકે મને જે ભજન સાંપડયું છે તેમાં એક પંક્તિમાં છે : 'દસ હાથીને મોરાર મળિયા તો નામની નોબત થઈ.'

આ પંક્તિ વાંચીને મારા મનમાં પ્રશ્ન જન્મ્યો કે આ ભજન કોનું ? મોરાર સાહેબનું કે દાસી જીવણનું ?

મોરાર સાહેબ થરાદના રાજકુંવર હતા રવિ સાહેબની પાસે તેમણે ભેખ લીધો ને તેમણે જામખંભાળિયા નામના ગામમાં જગ્યા બાંધેલ.

'દાસી જીવણ' જીવણદાસ ગોંડલનું ગામડું ઘોઘાવદરના ચમાર ભગત હતા. ભજનમંડળીઓમાં મીરાં જેટલા જ 'દાસી જીવણ' પ્રિય છે.

મેઘાણીભાઈ તેમના પર લખે છે કે, જગતના હિસાબે, વ્યાપકતાને હિસાબે લોકપ્રિયતાને હિસાબે સહુથી પ્રથમ 'દાસી જીવણ'નાં પદો ભોગવે છે' અને તેમના નામની જાણકારી વગરનું ગુજરાતમાં એક નાનું નેસડું પણ નહિ હોય.

મને પ્રાપ્ત થયેલ પાઠમાંની છેલ્લી ત્રણ પંક્તિઓ પણ કંઈક અસ્પષ્ટ લાગે છે. તો ભજનરસિયા જીવો વધુ માહિતી એકત્ર કરી આ ભજન પર વધુ પ્રકાશ ફેંકશે ?

રામની રજાયું નહીં, મારે દેઈનો ભરોસો નહીં,
હાટડિયુંમાં કેમ રે'વાશે ભાઈ, મારે રામની રજાયુ નહીં !
ચોક વચાળે હાટડી બાંધી, ઈનો ઠીક બનાવ્યો ઠાઠ,
તેડાં આવ્યાં શરી રામનાં, તો મારી હાટડિયું ઊજડ થૈ.
હાટડિયુંમાં કેમ રે'વાશે ભાઈ, મારે રામની રજાયું નહીં !
નવ ગરહ નવ ઢોલિયે બાંધ્યા, મરણ જરાયે નહીં !
દસ માથાં, વીસ ભુજ તોય રાવણ રિયો નહીં !
હાટડિયુમાં કેમ રે'વાશે ભાઈ, મારે રામની રજાયું નહીં !
સા'બ જેવા સમરથ ઢળતા, પોઢતા પલંગ માંહિ,
તો ચાલો જારે વૈકુંઠમાં, તારો છેડો ઝાલે નહિ કોઈ,
હાટડિયુમાં કેમ રે'વાશે ભાઈ, તારે રામની રજાયું નહીં !
દસ હાથીને મોરાર મળિયા, તો નામની નોબત થઈ,
છડીદાર ચોકીદાર નત પુકારે, તોય રે'વાના નહીં !
હાટડિયુંમાં કેમ રે'વાશે ભાઈ, મારે રામની રજાયું નહીં !

★

મને નાથ લ્યો ઉગારી !

નરકની ખાણ જેવા માયાની પાવકજ્વાળાએ નિરંતર ભડભડતા આ સંસારને કોણ નિર્મળ નીરે ઠારી શકતું હશે ? હિમાલયપુત્રી મા ભાગીરથીનાં નીર એને શાંત કરતાં હશે ? સંસારની પાવક જ્વાળા શી યાતનામાંથી તેના પારને પામેલ કોઈ જીવ હશે ખરો કે ?

અંતર્મુખ બનેલ જીવ મંથનતાને આવા આવા અનેક પ્રશ્નો પૂછવાનો સંસારીઓને પણ પ્રશ્નો પૂછવાનો. મૂઢમતિ સંસારી તો ઉત્તર દેવાના. જીવને એમાંથી શે ઉગારાય ? કંઈ સંસારી જીવો એમાં બળીને ભસ્મ થઈ ગયા ! દેહનો ધરમ છે કે આમાં પડીને ભસ્મ થવું !

પણ પેલો અંતર્મુખ જીવ આથી વધુ વિચારશીલ અને ચિંતનશીલ બને છે. આ પંથ સાચો ? આમાં મારો તો ઉગારો નથી. હીરલા શા માનવઅવતારને મૂલવ્યા વગર મારે સંસારની પાવક જ્વાળામાં હોમાઈને ખાખ થવું ?

ના ના ! પેલો નરસિંહ તેમાં ખાખ ન થયો. મેડતાની મહારાણી પાવકજ્વાળા સોંસરી નીકળી ગઈ ! તુકારામ અને ચૈતન્ય મહાપ્રભુ ચેતનવંતા થઈને આ ઊભા મારી સામે ! અને તેમની વણઝાર કેટલી લાંબી છે ? ગોરખનાથ કબીર, જ્ઞાનેશ્વર, નામદેવ, નાનક, રામદાસ ભોજો, ધીરો, નિષ્કુળાનંદ

પાવક જ્વાળાનો પાર પામવા તેમને ત્યારે કયો હીરનો સાંપડ્યો હશે ? તે હવે આમ વિચારે છે. સંસારીનાં વેણ તેને ઇન્દ્રજાળ શાં લાગે છે, માયા લાગે છે. મૃગજળ તેમાં તેને દેખાય છે ને એ જીવ એટલું તો પામી બેઠો છે કે ઇન્દ્રજાળમાં પગ ન મૂકવો. મૃગજળ

પાછળ વરૂખાં ન માગ્યાં ! એ તો પછી દૂંદતા નીકળે કંઠીના બાંધ-નાર ગુરુદેવને ! અખાજીને આત્માનુભવ થયો હતો, તેવોય અનુક્રમ અનેક અખોજીને ય થયા હશે, 'ગુરુ કીધા મેં ગોકુળનાથ...'

પણ જાગેલ જીવ હવે તો જંપતો નથી. તેને તાલાવેલી જન્મી છે ચોર્યાશીના ફેરામાંથી ઊગરી જવાની. મંદિરોમાંના મહંતો, મઠાધિ-પતિઓ તેને દેખાય છે પેલી પાવકજ્વાળામાં પડેલા ! તેમનાથી તે ભાગે છે, તેમની દયા ખાઈને !

અને ત્યારે તેને કોક કંઠી બાંધનાર મળી જાય છે ! ને ત્યારે તે જીવ નાતજાતના માવાએ ઊભા કરેલ બંધનમાં પડતો ય નથી. રાજસ્થાનની રાણી 'રૂપાદે'ને મેઘવાળ ગુરુ ભેટ્યા'તા ! જાગેલ જીવને એવાં તે બંધન હોય કે ?

સંતોની પરંપરામાં વળી આ માયાવાદ શેનો પ્રવેશે ? તેમણે દિલની ખડકીના કમાડ ત્યાં હાંસીને વાસી દીધાં છે.

ને ત્યારે જ નરસિંહ અને મીરાં, જેસલ અને તોરલ, દાસી જીવણ અને મોરારસાહેબ, ભાણસાહેબ અને ધોરડિયો સંત રવિસાહેબ, ભાણ-સપૂત ખીમસાહેબ અને સઘી સંત હોથી, હાથમાં ઝળહળતી જ્યોત લઈને આ ચડયા જાય ! સંસારનો કોઈ રંગ એમને લાગ્યો નથી. સંસારની પંચજ્વાળાનાં તેજ એ જ્યોતધારી આગળ તો હારીને હિમ થઈ ગયાં છે. આ તો મોટા જ્યોતધારીઓ. એમની જ્યોતને નથી બંધન દિક્ અને કાળનાં !

એમની વચ્ચે વચ્ચે ટચૂકડી જ્યોતો લઈને કંઈ કંઈ મુક્ત જીવો નીકળ્યા છે. પેલો દેવારામ ને દેવાન પંડિત, જેઠીરામ અને લખમો માળી, ગંગા સતી અને લોયણ.

તે તો સોરઠના સંતો છે. એમની વાણી પડછંદા દેતી હોય છે, એમની ધરતી પર ! પણ કાળની નાદારી છે. એનાથી આવા સંતો

વગર–જ્યોતના ધરનારા વગર ડગલું દેવાતું નથી. જ્યાં ત્યાં પરચખીના પટ માથે આ વણજાર હાસ્યા કરતી જોવા મળે છે.

રાજસ્થાનના સીમાડા પર પણ હાથમાં એકતારો લઇ આવા જ્યોતધારીના તેજને રેલાવતા મંડલીને માળામાંથી મોકળો કરવા કંઈ જુવો સાધના કરતા હોય છે।

તે જ્યોતધારીઓ છે મેવાડના બ્રાહ્મણ ભગત કહાનડદાસ, તખતાજીદાસ, લખમોજી માળી, કબીર શિષ્યા કમાળી, વજનાથ ને ગોપાળદાસ આ સૌ છે મેવાડ રાજસ્થાનના વસનારાઓ. રાજસ્થાનના સીમાડાની લગોલગ લાગેલ નાની મારવાડમાં તેની આ જ્યોતોનો પ્રકાશ રેલમરેલ થઈ રહ્યો છે.

પ્રકાશની રેલમરેલ કરનાર છે કોઈ સવા ભગત, ગામ લાંબડિયાના. પોશીના પટામાં પડેલું નાનકડું ગામડું. જાતે પ્રજાપતિ, વય ૬૦નું.

ડુંગરમાળમાં ખેડબ્રહ્મા પાસે લખમીપુરા ગામે ક્રષ્ણજી ભગત સમાધ લઇને બેઠા છે, ત્યાં અડખેપડખેના ભજનિકો એકતારો લઈ સમાધ પર આ તેજની રેલમરેલ કરવા રામનવમીએ આવતા કળાય છે ત્યારે તે જ્યોતના તેજને જોવા ચર્મચક્ષુ બંધ કરી મનોચક્ષુને ઉઘાડે છે અને વાણી વદે છેઃ

હીરલા લાલ છંદા, જરા કોઇ વહેવાલ
જમડા તોડેલા છાતી !
મતિ કરો કાયારો[1] અંકાર,
મતિ કરો કાયારો અભેમાન;
કાયા તારી ધૂળ સે કાચી !

---

૧. કાયાનો

કાયા તારી કબધકી તાટી,[1]
વીરા તારા આતમ સંભાળ,
બળ જળ ખાખ હોશે !

ચલ ગિયા રાણુા બકારાવ,
જયારા[2] ધરિયા રિયા ધનમાલ,
ઘરે ઝૂલતા હાથી !

મતિ કરો કાયારો અંકાર,
મતિ કરો કાયારો અભિમાન;
કાયા તારી ધૂળસે કાચી !

ઘટ ગયો ચીહરકા[3] તેલ,
મટ ગયો[4] સબી બધા ખેલ,
બૂઝ ગઈ દિવાળી બાતી,[5]
મતિ કરો કાયારો અંકાર,
મતિ કરો કાયારો અભિમાન;
કાયા તારી ધૂળસે કાચી !

મત કરો કપટીના સંગ,
મત કરો કાયરોના સંગ,
સંગત સાધુની સાચી !

ભલો કરો સાધુડાના સંગ,
ભલો કરો સાધુડાના સંગ,
જીસમેં ઘણુા ઊપજે રંગ,
સંગત સાધારી સાચી,

---

૧. ખારો. ૨. જેના. ૩. કોડિયાનું ૪. મટી ગયો. ૫. બતી.

મતિ કરો કાયારો અંકાર,
મતિ કરો કાયારો અભેમાન;
કાયા તારી ધૂળસે કાચી !

ગુરુજીનાં વચન સામા ઝેલ,
શીશ ઉતારી પગ સામા મેલ,[1]
જ્યાં જાણું શૂરારી છાતી,
મતિ કરો કાયારો અંકાર,
મતિ કરો કાયારો અભેમાન;
કાયા તારી ધૂળસે કાચી !

એણી પેર બોલ્યા કાનડદાસ,
જેના કાકા તુળશીદાસ.
જ્યાંરી મુક્તિ હો જાસી,[2]
મતિ કરો કાયારો અંકાર,
મતિ કરો કાયારો અભેમાન,
કાયા તારી ધૂળસે કાચી !

(૨)

તારા મન માંયલાને સમજાવ,
ચોર્યાશીરો ટળ જાય ફેરો;
તારા મનખા જમારા વાળી,
મૂગેર[3] વેઈને[4] કોઈ બાંધે ભારા !
આણી માયાજાળ રે ભાઈ,
મુસાફર જાય એકલો રે !

---

૧. ગુરુના ચરણે તારુ માથુ મેલ. ૨. જાશે. ૩. કુબુદ્ધિનો ભાગ. ૪. વહીને.

જોગીડા રે થારો[1] જોગ સંભાળો,
સંસારિયાં સું વૈભવ[2] ન્યારા;
તારી સુરત ચરમા લગાવ,
ત્રિવેણી ઘર કર લે ડેરા!
આણી માયાજાળ રે માંઈ,
મુસાફર જાય એકલો રે!
આવે જમડાવાળી ફોજ,
કાયારો[3] ગઢ ઘરે લે થારા;
તું ભજને બોલાવી લે સાથ,
ચોરાશીરો ટળ જાય ફેરો!
આણી માયાજાળ રે માંઇ,
મુસાફર જાય એકલો રે!
બોલ્યા તખતોજી દાસ,
ભરમણા શું વેજાવ ન્યારા;
આણી માયાજાળ રે માંઇ,
મુસાફર જાય એકલો રે!

(૩)

નાભિકમળમાં નાથનિરંજન,
નૂરતસુરત અસમાન ચડે;
દશમે દુવારે દેખો તમાસા,
જળહળ જ્યોતો અંડ જળે!
સોન શિખર પર સદ્ગુરુ,

૧. તારો. ૨. થઈ જાઓ. ૩. કાયાનો.

અનહદ નોબત અધર જળે !
ખોજ કરો રે ઘટભીતર દિલમેં,
જમીં અસમાન એક ઘડે રે, ભાઈ એક ઘડે !

પાંચ તતપકા[1] બન્યા પૂતળા,
મહેરમ[2] સદ્ગુરુ માંહી થળે !
સોન શિખર પર સદ્ગુરુ,
અનહદ નોબત અધર જળે !
તખત તેરા માનસરોવર,
અજ્ઞ વસતા ભાઈ ઊંન[3] મીલે રે;
ભાઈ ઊંન મીલે રે !

કેવળ નામના કરો પિછાના,
જરા કરમ તને ના અડે;
સોન શિખર પર સદ્ગુરુ,
અનહદ નોબત અધર જળે !
બાળક હો કર બદગી કર લે,
સંતચરણમેં સાન મિલે રે !
ભાઈ સાન મિલે રે !

અમર પુરુષને યાદ લે,
જનમ-મરણરા ભેદ ટળે,
ગરુગમ કોઈ ગોતી લેના,
નરતુગરાને નાહીં જડે ! નાહીં જડે !
ભાઈ નાહીં જડે રે !

---

૧. તત્ત્વ. ૨. કૃપા. ૩. ત્યાં.

દો કર ખોલી, લખમો માળી બોલ્યા,.
ખોજ કરો તો ખબર પડે,
સોન શિખર પર સદ્‌ગુરુ,
અનહદ નોબત અધર જાગે !

(૪)

પહેલાં રે મન તારો માંહ્યલો સમજીને,
પછી પવાડો[1] દીજે !
કર સમરણ ગુરુજી રે આગે !
હિંમત હાર મત દીજે,
ભગતી રાજી હોઈને દીજે,
જબ તારો માંહ્યલો કહ્યો ન માને,
તારો દોષ ગુરુજીનો મત દીજે !'
તરવાની આશા હોય તો,
તરત ગુરુજી કર લીજે !
કામક્રોધ જુઠ્ઠી નિંદા,
દો બાત તજ દીજે,
ભગતિ રાજી વેઇને લીજે !
અમર દેશમાં અમી વરસતાં,
કણુ[2] કાળ નૈ પડંતાં,
રામભજનના પિયો પિયાલા,
હરિભજનના પિયો પિયાલા,

---

૧. પગ. સરખાવો : दृष्टिपूतं न्यसेत् पादम् । ૨. કદી.

માંહી મગન હોઈ રીજે !
ભગતિ રાજી વેઈને લીજે !
નાભિકમળમેં નોબત વાજે,
તુંહિ તુંહિ રટ લીજે;
ભગતિ રાજી વેઈને લીજે !
કહે કમાલી કબીર સાહી લડકી,
અમર મગન રીજે,
ભગતિ રાજી વેઈને લીજે !

(૫)

ભોળી દુનિયા ભરમમેં ભૂલી,
કરતી મેરી તેરી !
ખાલી નદીઓ ખળકવા લાગી;
ડૂબ મરે અહંકારી !
તનમન તપસ્યા તારી,
મને નાથ લ્યો ઉગારી રે, ઓ જી !
આરે કાયારા મેલ બનાયા,
મેલી ઝરૂખા બારી,
વણુ[૧] બારીમાં ભાળતાં,
મને નજરે પડ્યા ગિરધારી;
મને નાથ લ્યો ઉગારી રે ઓ જી !
ચાર ખૂંટ ને ચૌદ ભુવનમાં,
દેખ્યા કૃષ્ણ મુરારી,

૧. તે.

લખું તો લખવામાં ન આવે,
વો[1] હે અચરજ ભારી !
મને નાથ લ્યો ઉગારી રે ઓ જી !
ભણે ગોપાળદાસ ગુરાંજીને ચરણે,
આઠે પહોર એકતારી.
મને નાથ લ્યો ઉગારી રે ઓ જી !

(૬)

કોઈક લખશે સંત સૂરમાં,
નૂરમેં નૂર મિલાઈ !
સંતો અબતક લિખિયો નૈં જાવે,
જેસા ચંદ ઉદકમેં દરસે,
યું સાહેબ સબ માંહી !
ધર ચશ્મા દેખો ઘટ ભીતલ,
નૂર નિરંજન વાંહી !
સંતો અબતક લિખિયો નૈં જાવે.

દૂર જાંરે દૂર હે,
ભિર[2] જાંરે ભિર હે;
હરિ હીરદારી[3] માંહી !
સપનામાં નારી ગમાયો,
જાગ પડી જબ વાંહી[4]
સતો અબતક લિખિયો નૈં જાવે !

---

૧. તે. ૨. નજીક. ૩. હ્રુદયની. ૪. આ પંક્તિ અધૂરી લાગે છે. બીજો પાઠ : ' જાગ પડી જબ વાહી જારો બાળક.'

જાગી જ્યાંરી જોત,
જાગી ઘટ ભીતર;
જ્યાં દેખું ત્યાં સાંઇ,
ઉગત ભાણુ, વીત ગઈ રજણી,
હરિ હમ અંતર નાહીં,
સંતો અબતક લિખિયો નેં જાવે!
મમતા મોટો[1] મલ્યા મોહન સું
ગુરુસે ગમ પાઈ!
કહે વજનાથ સુનો ભાઈ સાધુ;
સબ કુછ ધોકા નેં!
સંતો અબતક લિખિયો નેં જાવે!



૧. મૂઓ, મેયો.

પરિશિષ્ટ

હળોતરા

રાગ–સિંધ ભૈરવી　　　　　　　　　　તાલ–ખેમટો

અલ્યા ઊંઘાં સાં શમ, આઈ અખાતરી
હેંડાં જઈએ અળોતરા કરવા....ઓ લાલિયા,
જઈએ અળોતરા કરવા.

આખલાંને ધૂંહરે જોડીને ધૂંહરે
બાંધી લ્યાં ઓળને તાણી....ઓ લાલિયા,
જઈએ અળોતરા કરવા.

કોટિયાં ને ટોકરાં બાંધીને પ્રેમથી
બળદાંને લેજો શણગારી....
જોજે પરૂણો ન ભૂલતો, લ્યા પૂંજિયા
રાસળાં લેજો હંકારી....ઓ લાલિયા,
જઈએ અળોતરા કરવા.

ઓળે ને ઓથે બળદાંને ચોંગડે
બાંધી લ્યાં નાડાસડી....
મૂરતનો ગાળ લ્યાં વેંચી....ઓ લાલિયા,
જઈએ અળોતરા કરવા.

મૂરત શોધીને હેંડાં કરીએ અળોતરા
લીએ શકન પાંણીઆરી....

ડાબેથી દેવલી જમણે ઊડે તો
આંખલાં લેન્જો હુંકારી....ઓ લાલિયા,
જઈએ અળોતરા કરવા.

ખેડી જમીન રૂડા કરીએ અળોતરા,
કરીએ વાવેતર ભારી....
મેઘરાજા જો અલ્યા! મે'ર કરે તો
રંગત રઈ જાય હારી....ઓ લાલિયા,
જઈએ અળોતરા કરવા.

અલ્યા ઊંઘાં સાં શમ, આઈ અખાતરી
હેંડાં જઈએ અળોતરા કરવા....ઓ લાલિયા,
જઈએ અળોતરા કરવા.



પરિશિષ્ટ—૧ અ

મનસુખલાલ ઝવેરભાઈ મિસ્રી,
ડી. ટી. સી., જી. ડી. આર્ટ., એ. એમ.
રામજી આસર વિદ્યાલય હાઇસ્કૂલ,
ઘાટકોપર તા. ૧૦–૬–'૫૩

શ્રી પુષ્કર ચંદરવાકર

નમસ્તે.

ચાલુ માસના 'સંસ્કૃતિ'નાં પાનાં ફેરવતાં 'આછી અખાતરી'ના મથાળા તરફ મારું ધ્યાન ખાસ ખેંચાયું, તરત જ મારી દૃષ્ટિ આખા પાના ઉપર ફરી વળી. "અસ્યા ઊતરાં સાં શમ" લીટી વાંચીને આનંદ થયો, પણ તેના સંગ્રાહક તરીકે પુષ્કર ચંદરવાકર નામ વાંચીને હું નિરાશ થઈ ગયો. છતાંય હું આખું ગીત વાંચી ગયો, તેથી તો મને આઘાત જ થયો.

આપના નામથી સૌની જેમ હું પરિચિત છું. મારા નામથી આપ પરિચિત ન હો તે સ્વાભાવિક છે. હવે મૂળ વાત પર આવું છું.

આપે 'સંસ્કૃતિ'માં પ્રસિદ્ધ કરાવેલું ગીત, એ કોઈની પણ છાયા વગરનું મારું સ્વતંત્ર સર્જન છે. અને તે ગીત તથા "ખાટાં મીઠાં બોર" નામનું મારું બીજું ગીત એ ઉપર ત્યાંના હિંદી પ્રચાર સમિતિના મંત્રી અને મોડેલ ઇંગ્લીશ સ્કૂલમાં કામ કરી રહેલ શ્રી ગૌરીશંકર જોશીએ એક વિસ્તૃત લેખ લખેલો છે. શ્રી ઇન્દ્રવદન ઠાકોરે "લોકનાદ"નો ખાસ વધારો બહાર પાડી પોય વરસ પહેલાં પ્રસિદ્ધ કરેલો.

સિવાય શ્રી. ઇન્દુલાલ યાજ્ઞિકના "ગ્રામવિકાસ,' શ્રી રામચન્દ્ર ઠાકુરનું 'ઈશ્વજ્યોત' આદેશ, 'આઝાદી' વગેરે પત્રોમાં આ ગીત પ્રસિદ્ધ થયેલું છે સિવાય મે મારાં લખેલાં કેટલાંક ગીતોનો એક નાનકડો સગ્રહ "ખાટાં મીઠાં બોર" અમુક ઉદ્દેશથી પ્રસિદ્ધ કરેલો, જે હું આપને બુકપોસ્ટથી મોકલી રહ્યો છુ તેમાં પણ આ ગીત આપ જોશો

લખવાની મતલબ કે ગીતને અને મને આપના લેખથી ખૂબ જ અન્યાય જાણ્યે કે અજાણ્યે થયો છે કારણ, મૂળ કરતાં તદ્દન વિકૃત રીતે તેને રજૂ કરવામાં આવ્યુ છે કદાચ આપે સાંભળ્યુ હશે તેવુ લખ્યુ હશે, એમ બને તો મારી પુસ્તિકા આપને મળ્યેથી તે ગીત મારા નામ સાથે તેના મૂળ સ્વરૂપમાં ફરીથી છપાય એવો બદોબસ્ત કરાવશો જેથી મારી ઘવાયેલી ભાવના જલદી રૂઝાઈ જાય.

વળી મોડાસાથી ત્રણ માઈલ દૂર ગામ બાકરોલ જેને અમે હાલ મહાદેવગ્રામ કહીએ છીએ ત્યાંનો હું વતની છુ શ્રી ઉ ભાઈનું ગામ મારા ગામથી ફક્ત પાંચ માઇલ દૂર છે ઈશ્વ જ્યોતિ'ના પ્રથમ અંકમાં જ્યારે એ ગીત છપાયુ ત્યારે તેમણે ખૂબ વખાણેલું ને સ્વમુખે ગાઈ બતાવેલુ છતાં તેમના ખ્યાલમાંથી કેમ નીકળી ગયું હશે તે પ્રશ્ન છે! શ્રી જોષીને પણ મે પત્ર લખ્યા છે, ને એક પુસ્તિકાની નકલ પણ મોકલુ છુ તકલીફ માફ કરશો બેઅદબી માફ કરશો

તા ક પ્રૌઢ શિક્ષણ માટે મારા ગીતનો સારો એવો ઉપયોગ થયો છે શ્રી ગૌરીશકર જોષી પાસેથી આપને વિશેષ માહિતી મળશે

લિ આપનો મિત્ર
મ ઝ મિસ્ત્રી
કો શિ

એચ. એલ. કૉલેજ ઑફ કૉમર્સ
અમદાવાદ, ૧૩ જૂન.'૫૩

પ્રિય ભાઇશ્રી,

આપનો પત્ર મળ્યો. આપ પણ એમ નહીં કહી શકો કે છપાવેલું ગીત મારું છે એવો મેં દાવો કર્યો હોય। સાબરકાંઠામાં લોકોના કંઠે સાંભળેલું ગીત મેં લોકોના માટે જ 'સંસ્કૃતિ'માં સંપાદન કરીને મૂક્યું, ત્યારે ખ્યાલ પણ ન હતો કે જેને મેં લોકગીત માન્યું તે વૈયક્તિક સર્જન હશે. આપનું જો સર્જન હોય તો મારાં અભિનંદન ખેવડાં, લખ્યા બદલ અને લોકગીત બન્યા બદલ. લોકસાહિત્યનો પ્રશંસક કોઈને પણ અન્યાય કરવાની ઈચ્છા ન સેવે તે આપ સમજી શકશો. એટલે 'સંસ્કૃતિ'ના તંત્રીને આપનો પત્ર ઘટતું કરવા મોકલાવ્યો છે તેની નોંધ લેશો. આશા છે કે આપ કુશળ હશો.

લિ: આપનો,
પુષ્કર ચંદરવાકર

શાંતિભુવન, ખડાયતા કૉલોની પાછળ,
એલિસબ્રિજ, અમદાવાદ–૬
૮–૧૨–૫૫

પ્રિય ભાઇશ્રી,

હમણાં મારાં સંપાદિત લોકગીતનો સંગ્રહ બહાર પડવામાં છે. તમારું 'હળોતરા' અને મારા પ્રવાસમાંથી સાંપડેલું 'આઈ અખાતરી' ગીત, તમારી ઇચ્છા અને સંમતિ હોય તો તેમાં મૂકું. પાછળ પરિશિષ્ટરૂપે તમારું ગીત, તમારો અને મારો પત્રવ્યવહાર પણ મૂકવાનું વિચારું છું. હું તેને એક સારા ગ્રામગીત તરીકે ઓળખું છું. સાથે સાથે આવું સારું ગીત લોકો સુધી પહોંચે, તે કેવી રીતે પહોંચે, શા માટે પહોંચે, તે સર્વ ચર્ચા કરવાનો મારો વિચાર પ્રસ્તાવનામાં છે.

ઉત્તર તરત આપશો તો હું આભારી થઈશ. જો તમારી અનિચ્છા હોય તો હું તેને સંગ્રહમાંથી જલ્દીથી બાતલ કરું. શ્રી દેવેન્દ્ર સત્યાર્થીએ શ્રી ઉમાશંકર જોષીનું ગીત 'ગાણું અધૂરું મેલ્યમાં' તેમના 'મેવ ગંભીર ગુજરાત' નામક લેખમાં ગુજરાતી લોકગીતોમાં મૂકીને તેની ચર્ચા પણ કરી છે. તેથી લોકો સુધી ગયાં હોય તે ગીતોને આ રીતે પ્રચાર મળે તો મને કશું ય ખોટું દીસતું નથી.

કુશળ હશો.

વિ. આપનો,
પુષ્કર ચંદરવાકરનાં વંદન.

ઘાટકોપર,
તા. ૧૦–૧૨–૫૫

સુરબ્બી શ્રી. પુષ્કરભાઇ

આપનો પત્ર ગઈ કાલે મળ્યો. આપ તરફથી બહાર પડના સંગ્રહ માટે મારું ગીત પ્રશંસા અને પસંદગી પામ્યું તે એક સુયોગ ગણાય.

આમે આપને મળવાની ઇચ્છા હતી, પરંતુ એવો યોગ મળ્યો નહીં. નહીં તો આપણે એકબીજાને વધુ સારી રીતે સમજી શક્યા હોત, કદાચ આવી રીતે મારી સંમતિ માગવી પણ ન પડત. સમજી લો કે મારી સંમતિ મળી ચૂકી. કારણ કે હું તો એમ જ માનું છું કે આપ તે દ્વારા મારા કાર્યમાં મદદ કરી રહ્યા છો. ગીતોનો લાભ લોકો વધુ ને વધુ લેતા રહે તે ઇચ્છનીય છે. આપણો પત્રવ્યવહાર છાપવા પાછળ આપની દૃષ્ટિ શી છે તે મને ખબર નથી. છતાંય આપના પ્રયત્નને તે દ્વારા ઓજસ મળે એમ હોય તો મારે શું કહેવાનું હોય ! આપનો વ્યવસાય છે, એટલે આપ વિશેષ માહિતગાર ગણાઓ. જો વેકેશનમાં કદાચ તે બાજુ આવીશ તો મળવાનો પ્રયત્ન કરીશ. કુશળ હશો. યોગ્ય સેવા જણાવશો.

લિ. મ. ઝ. મિસ્ત્રીના વંદન

परिशिष्ट – २

पढारके प्रणयगीत

(सौराष्ट्र और बम्बअी, अिन दोनों राज्योंकी सीमाओंके बीच अेक बहुत लम्बी चौडी झील है; जिसे नल-सरोवर कहते हैं। अुसके किनारे पर लगभग पढार जातिके छः हजार लोग बसते हैं। अिन लोगोंकी जीवनचर्या, नृत्य, गीत अित्यादि बहुत आकर्षक होते हैं। नीचे दिया गया गीत पढारके 'लोकगीतों' में से लिया गया है।)

गीत

अे सूती'ती ने प्रीतीवालाअे पछीते पावा वगाडया.
पछीते पावा वाग्या, बेली मारा पछीते पावा वाग्या,
मारो जीवड्यो अुदासी, भाअीबंध मोरा जो.
पावठडे पग धोती, बेली मारा, साजणनी वाट जोती,
मारो जीवडियो अुदासी, भाअीबंध मोरा जो.
तारा ते अंगनो रुमाल, बेली मारा, तारा ते अंगनो रुमाल,
तारो रुमाल कैयी रुमे आवे, भाअीबंध मोरा जो.
तारा ते अंगनो रेंटो, बेली मारा, तारा ते अंगनो रेंटो,
मने घडीक ओढवा देजे, भाअीबंध मोरा जो.
तारा ते जीवने सारुं, वाला साजण, तारा ते जीवने सारुं,
में तो मेल्यो सैयरनो साथ, भाअीबंध मोरा जो.
तारा पगमां बेडी, बेली मारा, तारा ते पगमां बेडी,
आपण नाना हता त्यारनी, नानपणनी हेडी.
तारा ते जीवने सारुं, वाला साजण, तारा ते जीवने सारुं,
में तो मूल्यां छे माने बाप, भाअीबंध मोरा जो.

तारा ते जीवने सारुं, वाला साजण, तारा ते जीवने सारु,
में तो मेल्या छे भाभीने भोजाभी, भाभीबंध मोरा जो·
आवुंरे नोतुं जाण्युं, वाला साजण, आवुंरे नोतुं जाण्युं,
नीकर थइको थोडी रावत, वाला साजण,
नीकर थइथी थोडी रावत, भाभीवंध मोरा जो·

भावार्थ

हे प्रियतम ! मैं प्रेमके बारेमें कुछ जानती नहीं थी। परन्तु मेरे साथ प्रेम करनेवालेने आकर मुझे नींदमेंसे जाग्रत किया। अुसने बंसी बजाभी, और मेरा जी अुदास हो गया। कुअेके किनारेपर बैठकर मैं पैरोंको धो रही थी और अपने प्रियतमकी प्रतीक्षा कर रही थी। हे प्रियतम ! तेरे पास जो रुमाल है, अुसे देखकर मेरी आँखें आँसूसे भर जाती हैं। हे प्रियतम ! तेरे मस्तकपर जो कपड़ा है, अुसे देखकर मैं रोने लग जाती हूँ। हे प्रियतम ! तेरे लिये माँबाप, भाभी, भौजाभी और सहेली, सभीको छोड़कर मैं अकेली हो गयी हूँ। हे प्रियतम ! तेरे पैरमें जो अलंकार (बेड़ी) है, वह तेरे बाल्य-कालसे ही है। और अुस दिनसे तेरी और मेरी दोस्ती शुरू हो गभी है। परन्तु, हे प्रियतम ! मुझे अुस वक्त यह ख्याल नहीं था कि अुसका अंत अितना बुरा होगा। यदि पहलेसे ही यह ख्याल होता, तो मैं प्रारंभसे ही तेरे पास अितनी निकट न आती। (यह पढ़ार जातिके लोगोंका करुण गीत है। प्रेमकी निष्फल बंसी अिस गीतमें बजाभी गभी है)।



आहनो सूर

अमदावाद येथें आन्तर भारतीचें कार्य जी तरुण मंडळी करीत आहेत त्यापैकीं प्रा पुष्कर चदरवाकर हे एक आहेत त्यांना साहित्य विपयाची गोडी आहे आणि विशेषतः लोक-साहित्याचा खास अभ्यास आहे.

सौराष्ट्र आणि मुंबई राज्य यांच्या सीमा जेथें एकमेकाना मिळतात तेथें एक विशाल सरोवर आहे हें सरोवर **नल सरोवर** या नावानें ओळखलें जातें या सरोवराची लांबी २१ मैल आणि रुंदी १२ मैल आहे या सरोवराच्या काठीं १२ गावात पढार लोक राहातात त्यांची वस्ती सुमारे पांच हजार असावी हे पढार लोक उत्तर प्रदेशांतून आले असावे असा इतिहासज्ञाचा तर्क आहे त्यांची चेहरेपट्टी, रीतिरिवाज व वागणूक यावरून ते आदिवासींपैकींच असावे असें वाटतें हे वनवासी लोक पटोचे पोहोणारे, अव्वल दर्जाचे शिकारी आणि कुशल मच्छीमार आहेत पक्षी मारणें, शेती करणें हीं कामेंहि हे लोक कार्यक्षमतेनें करतात.

परन्तु मागरालेल्या सरस्थानी मुलखात असल्याने आधुनिक सुधारणेचा प्रकाश आतांपर्यंत त्यांच्यापर्यंत पोंचला नव्हता खऱ्या अर्थानें हे लोक धरतीचीं लेकरें आहेत त्यांना त्या सरोवरबद्दल अपार प्रेम वाटतें परन्तु मध्यतरीच्या काळात ह्या स्वातंत्र्यप्रेमी, निसर्गप्रिय भूमातेच्या लेकरांचें स्वातंत्र्य राजपूत राजांनी हिरावून घेतलें व त्याना वाटेल त्याप्रमाणें वागवावयाला सुरवात केली हे राजे मनमानेल तसा जुलूम त्यांच्यावर करीत ह्या लोकांना विगर मोबदला राबराबवून घेणें हा आपला हक्कच आहे असें राज्यकर्त्यांना वाटत असे ह्या लोकांचा स्वाभिमान मारून त्याना स्वत्वहीन करतां येईल तितकें करण्याचा प्रयत्न राज्यकर्तांनी केला. आपल्यावर होणाऱ्या

अन्यायांची दाद त्यांना जगाच्या बाजारांत लावतां आली नाहीं तरी त्यांच्या मनांत ती कमर तर राहातच असे कधीं कधीं लोकगीताच्या रूपानें ही त्यांची वेदना बाहेर पडत असते आपले गान्हाणें ते निसर्गमातेच्या, आकाशाच्या, सरोवरच्या कानावर समुदायानें घालीत असतात. तुलसीदासजींनीं अेक दोहा लिहिला आहे त्यांत ते म्हणतातः

तुलसी हाय गरीबकी
कबहु न निष्फल जाय
मरे बैंलके चामसे
लोह भस्म है जाय ॥

तुलसीदास म्हणतात गरीबाची 'हाय' कधीं वांया जात नाहीं. बैलाला लोखंडाची पराणी टोंचतात, लोखंडी सुरीनें त्यांच्या माना कापतात. पण त्या बैलाच्या कातड्याचा भाता बनविल्यावर त्याच्या हाय-हायींतून लोखंडाचेंहि भस्म होऊन जातें पढार लोकांनीं शेंकडों वर्षे हालअपेष्टा भोगल्या भारत स्वतंत्र झाल्यावर आज त्यांची स्थिति थोडी सुधारली आहे. त्यांच्यावर जुलूम करणारे राजेरजवाडे खाक झाले आहेत. पढार लोकांवरील अन्यायाविरुद्ध गान्हाणें करणारे सूर अजूनहि कल सरोवराच्या आसमतांत घुमतांना ऐकू येतील. पढार लोक आपल्यावरील जुलमांची ही गाथा समुदायानें गातात.

अेक चालीश तो दाडीया लाग्यो
पाघडा लाग्यो चार
कामनो ना' व्यो पार
चोनीलाल मोझडीवाला ॥
पाया खोदीने हाथडा दूख्या
अे टाढियो आव्यो ताव ॥ कामनो०
माथडे टोपी, हाथमां सोटी
फरतो फेरो खाय ॥ कामनो०

तारो सर्प तो थथरे भूंडो
धोकला मेल्या चार ॥ कामनो०
पांच रुपिया तो रोकडा आल्या
पायलानो नई पार ॥ कामनो०
गोंदरा सुधी वांसडे हांके
चोखे मशान चालू थाय ॥ कामनो०

राजेसाहेबांना एक दिवस सरोवराची शोभा पाहण्याची इच्छा झाली. अनंतविभव निसर्गापुढें जातानाहि राजा दिमाखानें जाऊ इच्छितो राजाला जावयाचें तर जाण्यायेण्याला चांगला रस्ता नाही. म्हणून रस्ता करण्याचा हुकूम सुटला. चोतीलाल मोझडीवाला हा रस्त्याचा टेकेदार साहेबाच्या बरोबरीनें त्याच्यासारखे कपडे हा घालू लागलेला डोक्यावर हॅट हातांत छडी. त्यानें त्या पढार लोकांना काम करायला पर्सावलें

काम लहान नव्हतें. रस्त्याची लांबी मोठी होती वेठीनें हें सारें काम तो घेणार होता कामाला पुरेशीं हत्यारें देखील त्यानें आणलीं नव्हतीं, चार फावड्यांनीं एवढें मोठें काम कोण कसें करणार? बिचाऱ्यांचे फावड्यांनीं काम करून हात थकले, दुखूं लागले पण त्यांना ना विश्रांति ना आराम. त्याच्यावर एक मुकादम ठेवला होता. त्यांनीं हात थोडे हलु चालविले कीं तो येऊन हातांतली छडी सपकावी साऱ्या दिवसभर त्यांने ४१ पढारांना एकसारखे राबविले, त्याच्याकडून जिवापाड काम करून घेतलें आणि शेवटीं त्याच्या अंगावर जणु मेहेरबानी म्हणून पाच रुपये फेंकले.

* * *

सगळेच पढार असला अमानुष जुलूम सदासर्वदा सहन करीत असें नाहीं. असा कांहीं जुलूम झाला कीं कांहीं तरुणांचें रक्त तापवून जात असे. क्वचित् एखादा तरुणाला हा जुलूम असह्य वाटे. व मग तो आपल्या ताकदीचा विचार न करता प्रतीकार करी. पण हा एकट्या/दुकट्याचा

प्रतिकार किती काळ चालणार जोंपर्यंत अशा प्रतिकारामागें संघटित जनशक्ति नसते तोंपर्यंत असा प्रतिकार करणारी व्यक्ति शासनाला पात्र होते व इतरांना त्यामुळें धाक वाटू लागतो इतर पडारानीं प्रतिकार केला नाहीं. ते जुल्म होतांना पाहून त्याच्या निवारणार्थ धावून आले नाहींत तरी त्या तरुणाकरता हळहळत असाच एक तेजस्वी तरुण मगनिया. त्यानें प्रतिकार केला त्याला शासन झालें मारपीट झाली तेव्हां पडार म्हणतात :

झाडीना मारगे आवे मगनियो
झाडीना मारगे आवे रे लोल ॥
मथाडे कुंझडी बोली मगनियाने
मथाडे कुंझडी बोली रे लोल ॥
पाछी मोडे बांध्यो मगनियाने
पाछी मोडे बांध्यो रे लोल ॥
नेतरनी सोटीओ मार्यो मगनियाने
नेतरनी सोटीओ मार्यो रे लोल ॥
धोडो इना मा ने बाप
धोडो मगनियाने मार्यो रे लोल ॥
धोडो इना भाई ने बाप
धोडो मगनियाने मार्यो रे लोल ॥

कुंझडी हा एक पक्षी आहे कोणाच्या माथ्यावर तो ओरडला कीं त्याच्यावर संकट येते असा लोकसमज आहे मगनच्या डोक्यावर हा पक्षी बोलला आणि बिचारा मगन दुश्मनाच्या हातांत सापडला त्यांनीं मगनला पकडलें त्याचे दोन्ही हात करकचून पाठीमागें बांधले आणि त्याच्यावर वेताची छडी चालवायला सुरवात केली लोकांनीं हें पाहिलें. त्याना करुणा आली तसे ते धावत पळत गेले आणि मगनच्या आई-बापांना, भावांना हाका मारू लागले "बापांनो, तुम्ही तरी मधें पडा

आणि त्याला वाचवा" अशी आर्जवें ते करूं लागले.

*   *   *

ज्या दिवशीं हे पहार समूहशक्ति ओळखतील, त्यांना त्या शक्तिचा साक्षात्कार होईल त्या दिवशीं त्यांच्यावर होणारा सारा जुलम नाहींसा होईल आणि ह्या गोष्टी जुन्या काळची स्मृति म्हणूनच त्यांच्या गीतात राहतील. असा काळ दूर नाहीं स्वातंत्र्याचा प्रकाश आणि उष्णता त्यांच्यापाशीं पोंचली कीं ते जागे होतील व आपले हक्क व कर्तव्यें यांना जपू लागतील

साधनाभथी



		પૃષ્ઠ
૨૫	ત્રાડીના મારગે આવે મગનિયો,	૩૦
૨૬	પાંચ રૂપિયાનું કાપડું રે લીધું પે'રીને હાલી પાણી,	૩૨
૨૭	હોકો માગે દસનો ભોગી, હોકે કરેન છે જોગી,	૩૨
૨૮	ભાયોજી જીની બાપડી બૂડી, પીડા અતરે ઊડી!	૩૩
૨૯	અગરચંદનની ઢાંકણી, વવ શું કરતા નરવાણી જો,	૩૪
૩૦	ઊંચી ગોવીંદાની પીંપળી, નીચા દતારીનાં હાટ, વા'લા!	૩૪
૩૧	મારી સગી નણંદના વીરા, રૂમાલ મારો લેતા જજો,	૩૬
૩૨	ઝરમર ઝરમર મેહુલો, ભીંજાવે કચરોપાણી;	૩૭
૩૩	પાંચે પાંચે બેડાં નાની વઉ હલકે ભરી આવી જો,	૩૭
૩૪	રણુઝણુ રણુઝણુ રે દુડો ફરિયો,	૩૮
૩૫	રોડના કાંઠે એક લીમડી,	૪૨
૩૬	વઢવાણનો ભોગાવો બઉ ભારે	૪૨
૩૭	ડેલીએ ડેલીએ રે! કનુભાના ડાયરા,	૪૩
૩૮	બકરાણા વચ્ચે બગનો, જીવુજી!	૪૪
૩૯	એ ગામના ઝાંપલે ઠાકુભનો બગલો	૪૫
૪૦	એ જીવણજી ઠાકોર, કાયા મેલી રે, જૂનાની જેલમાં!	૪૬
૪૧	જસોનો સાઢિયો લીધો સારણિયે,	૪૭
૪૨	આગળ ઘનશ્યામ સાહેબનાં ઘોડલાં રે!	૪૮
૪૩	હાર્યો ઓધોરામસગ, હાર્યો ઓવો રૂપસગ,	૫૦
૪૪	મીરાંબાઈ ઓતમકુળમાં અવતર્યાં રે,	૫૪
૪૫	ચાંદો ઊગ્યો પૂનમ નાતનો જી રે!	૫૫
૪૬	જેડિયાનો મેળો, રણછોડજીનો મેળો,	૫૫
૪૭	ચાલો ભાભલડી, વનમાં જાવીં,	૫૬
૪૮	સોના વાટકડી રે, કેશર ઘોળ્યાં વા'લમિયા ?	૫૭
૪૯	ઠાકોરિયા, રજવાડાને રે પાદર પારસપીપળો,	૫૭
૫૦	જાનુડો ઊગ્યો રે રસિયા, મો'લમાં રે!	૫૮

		પૃષ્ઠ
૫૧	દાદા વડલો ફૂલ્યો રે, લાંબા પાંદડે,	૫૮
૫૨	સોનાની સાંકળે બાંધ્યો હીંડોળો, આંબાની ડાળ્ય;	૫૯
૫૩	ગ્યાં ગયુ મારુ મોતી,	૬૦
૫૪	એકનડી ઊભી હુ પનઘટની બારીએ,	૬૧
૫૫	ધધા બિન હય મુશ્કીલ, કીનના સંજોગ હય દિલ !	૬૬
૫૬	ગણેશ ગુજારા ને પનેરું મોતી,	૬૮
૫૭	લીમડલીનાં લૂમેઝૂમે પાન રે.	૬૮
૫૮	આજ મારે આનંદના વધામણાં,	૬૯
૫૯	મારી ચપટીમાં આવે એવી ચૂંદડી રે,	૬૯
૬૦	અગાસિયે નાવે મઢી બનાવી,	૭૦
૬૧	પોપટ બોલે બાગ નેવન્મા,	૭૧
૬૨	હોળી બાઈમા કાંઈ નિયે હે, લીંગઠ્ઠ લોવ !	૭૬
૬૩	બારા મહીની હોળીબાઈ યેકે દીદી યેનીવા,	૭૭
૬૪	હોળી તે બાઈ તુ, ડાળેહેરા ગેરિયા !	૭૮
૬૫	બારા મહીની હોગીરા બાઈ તુ,	૭૮
૬૬	રવા તે રાજ્જે બેના, યેનો રાજે વા !	૭૯
૬૭	દારૂ છોડા, દારૂ છોડા રા !	૮૦
૬૮	ચાલેવા આવે હે રોડાલો કેડેડા વાર લાગો,	૮૧
૬૯	રામે ગમે ગમેગ ડાયાં !	૮૧
૭૦	ચગ ઘેરો બજાવણવાળો, સાજ્જે તાજ્જે રિજ્જે રે !	૮૩
૭૧	તેલ ને સિંદુર બાબો હનુમાન માગે,	૮૬
૭૨	મોવન ને જોંવાણા વચ્ચે, ગેરો ઢોલ ગાજે !	૮૬
૭૩	પનઘટિયા વડલા ઉપર સોવન ચડિયો, બોલે ઓ !	૮૭
૭૪	ગળામે સોનાનો ફૂલ, સાપે ચડિયો નાચે ઓ !	૮૮
૭૫	ઝંઝા તાગ ઘાટમાં, ગેગી પાણી ફેંગણ્યો,	૮૮
૮૬	બાગાન રખવાળા રોતા, કોયલ મોંને બોલુ રે !	૮૮

પૃષ્ઠ

૭૭ મેળ્ય ત્યાર થઈ ગય઼, તામણિયો રેઈજો તાળા મે ! ૮૯
૭૮ મેળાના માગ્રે મને ફૂલમાળ લાધી રે ! ૮૯
૭૯ ફરેલિયા શણગારી, છોરા મેળે ત્યારી લેજિયો રે ! ૮૯
૮૦ તારે મારે બેસણું નદીઓના કાંઠે રે ! ૯૦
૮૧ ઓલો મારા માનલિયા, પલારે પલો બાંધે ! ૯૦
૮૨ રાતે તો સાસુજી, માને સાચવો સપનો આયો રે ! ૯૦
૮૩ ઓઢવા ને પાલીનો પીળો, ઘડીક રમવા મેલો ! ૯૧
૮૪ કાઠિયા ઊંઘઆની ઊંચી, સામે ઢોરે ભળક હો ! ૯૧
૮૫ ગાડી ને ગુડએલ ધાગો, ગજિયારામા મળિયો; ૯૧
૮૬ અવાવાળો અડબીરાજ, બામણી ગઢ સાડી, ૯૨
૮૭ નણંદલ ને ભોજાઈ જોડે માથો ધોયો, ૯૨
૮૮ ધોળ્યા ખેતાની જોડ્યા, માળખિયો લાયો રે ! ૯૨
૮૯ હાથમાં ઓકો, બેટક સારી લાગે, ૯૩
૯૦ કાંઠો ને ભાતિજો, હોકો આકડિયો મેં ભરિયો, ૯૩
૯૧ હસને મૂકે ભોલો, અનેસો મથી રાખો રે ! ૯૪
૯૨ કેસર ધોળી કાળમેં પાણુજી યાને સોવે ! ૯૪
૯૩ ગળાનો વાડલિયો મૂકીને ખૂડો ધાગો લાયો રે ! ૯૪
૯૪ કાબરિયા બરદિયાની જોડ, માળવિયાથી લાઈ રે ! ૯૫
૯૫ હાથમેં કડિયારી ડાંગ, ખડિગો બાંધણુ ટેટી, ૯૫
૯૬ નેણુરો શણગાર કાજળ ફૂલ્લીમે રે ગિયો ! ૯૫
૯૭ ઊગ્યા રે પડ, દૂકડે મારું સાસરુ, ૯૯
૯૮ સાસુ મારી સાંભળીને સાહેલીની હાથમા અંગૂઠી, ૧૦૦
૯૯ સમેળામાં ઊગ્યો રંગ કેવડો રે, ૧૦૧
૧૦૦ સંભ મારું સસરુ ભલુ પણ વેગણું; ૧૦૧
૧૦૧ લીલુડી પાટણની બગડી બહુ સારી, ૧૦૨
૧૦૨ લીંબડો ઊગી લીલુડો રેજમાં, કેવડાના ઊગ્યા મેલીમે રે ૧૦૨

પૃષ્ઠ

૧૦૩ કે રસિયા, વાડીમાં પડશું રે, નવરંગ સાકડું રે લોલ! ૧૦૭
૧૦૪ આપણા મલકમાં માયાળુ માનવી, ૧૦૮
૧૦૫ સોના હાંબાડી ને રૂપલાંના બે તીર, ૧૦૯
૧૦૬ કો'તો રાણી, બે કડલાં ઘડાવું, ૧૦૯
૧૦૭ લાલ જુમારી, છેલ જુમારી, ૧૧૦
૧૦૮ જુગટિયો સતારે, જૂમક કોઈ ગમશો નૈં રે! ૧૧૧
૧૦૯ સંધાડો મેમાન આવ્યો વખતી, ૧૧૩
૧૧૦ નાયક રે તમે ચાવણ રહ, ૧૧૫
૧૧૧ તાર માર હીક છ ગાયસ રે! (અરજણિયો) ૧૧૮
૧૧૨ મારવાડ જશું માગ ધન રે કેશરિયાલાલ! ૧૨૧
૧૧૩ નદી કિનારે ટહુકો પતંગ ઉડાડે, ૧૨૩
૧૧૪ પાવા તે ગઢનું પરેવડું, મારાગાજ! ૧૨૪
૧૧૫ દેવને મળે ન જઈશ રે જવતા, ૧૨૪
૧૧૬ ગાજ સાહેબખાન રૂપાળા, મોતી ગજરા હેમની માળા, ૧૨૬
૧૧૭ ઉગમણી ધરતીનો વેપારી આવ્યો, ૧૩૦
૧૧૮ પગ પરમાણે કડલાં તારે પે'રવા છે કે નૈં ? ૧૩૧
૧૧૯ લ્યો લ્યો, તમ્મરનાં લાકડાંનો ભારે, એ તમ્મરનો ભારો! ૧૩૬
૧૨૦ સોના રૂપાનું દાતરડું રે લોલ, ૧૩૮
૧૨૧ ઓતર રે દખણ રે ચડી એણી વાદળી; ૧૪૦
૧૨૨ મેવલો આવે ને મે લાવે, ૧૪૪
૧૨૩ ઓતર-દખણની વાદળી ચડી રે, ૧૪૫
૧૨૪ ઓતરં-દખણથી ચડી રે વાદળી રે લોલ, ૧૪૬
૧૨૫ વરસ્યા વરસ્યા અષાઢીલા મેઘ રે; ૧૪૭
૧૨૬ અસ્યા ઊંધા સાં સમ, ૧૪૯
૧૨૭ શામળાજીના મેળે હાં રે રમઝણિયું રે પીંજણિયું વાગે ૧૫૪
૧૨૮ એક આના માથે, એક સો લગાયા; ૧૫૬

		પૃષ્ઠ
૧૨૯	આજ મારે બાજરો પાવવો,	૧૫૭
૧૩૦	પ્રીતમજી, સાડી ગુલાબી મગાવો,	૧૬૦
૧૩૧	સરિતા તીરે તપસા કીધી, સાબરમતીના સતજી,	૧૬૭
૧૩૨	સત અહિંસાદ્ધ શબ્દ સુણાયા, પ્રજ્ઞાગીતા ગુણ ગાયાજી,	૧૬૮
૧૩૩	દલ્હી તખત, સિંહાસન ઉપર જોગ જવાહરલાલજી,	૧૬૮
૧૩૪	ગાંધી માતમા રે, તારા બ્યાની નગરમાં રે,	૧૬૯
૧૩૫	એકવાર આવો રે ગાંધીજી ગુર્જરદેશ ગરવા,	૧૭૦
૧૩૬	જવાહરલાલ નેરુ, તમે રે નેરુ છોડી છે ભાલે દેશમાં,	૧૭૦
૧૩૭	ના ના કે'તી 'તી ને બગલો ચણાવ્યો,	૧૭૬
૧૩૮	ગાડી હાંકે છે પેલો પિતવઈનો ગગાસિયો રે,	૧૭૬
૧૩૯	એ સામે પાને આંબલી,	૧૮૩
૧૪૦	પિત્તળ તે લોટાએ જળે ભર્યાં	૧૮૫
૧૪૧	હાય હાય પાછલે પરોઢિયે મરધો બોલિયો,	૧૮૮
૧૪૨	બગલો ખૂબ બન્યો જગલમાં,	૧૮૯
૧૪૩	નીચાં સુડગર તારાં હાટડાં,	૧૯૦
૧૪૪	પાદર તણુ-ડેરા તાણિયા રે લાડા,	૧૯૨
૧૪૫	પાળે ઘૂમે પારેવડાં,	૧૯૩
૧૪૬	હાથમાં માળા ને મુખે રામ રે,	૧૯૪
૧૪૭	હાય રે જીવ શીદ કરે શોસના,	૧૯૪
૧૪૮	'ઓતરાને થયો અભિમાન'	૧૯૭
૧૪૯	હાય દરવાન! દરબાર ઉઘેડ રે	૧૯૯
૧૫૦	ઓય રે બાવા ચડ્યો અભેમાનરાય,	૨૦૦
૧૫૧	ઓતરાની માડી જાઓ સોનીડાની દુકાન,	૨૦૧
૧૫૨	હસવા હાલો હાલો સતગુરુના દેશમાં,	૨૦૬
૧૫૩	એ હસવા હાલો આપણા દેશમાં,	૨૦૬
૧૫૪	જાવુ છે નિરવાણી,	૨ ૭

		પૃષ્ઠ
૧૫૫	સેણીચ નેં રે કાયાને છોડીશ ને,	૨૧૦
૧૫૬	વનરાવનમાં હસા મઢી રે બનાવી રે,	૨૧૧
૧૫૭	જૂઠડી કાયા, ગણો, જૂઠાં ના બોલો જી,	૨૧૨
૧૫૮	હાં ..હાર હુ તો અગનિ, હું તો શરીર થઇને,	૨૧૩
૧૫૯	સાધુ બોલે છે એ મીઠી વાણી રે,	૨૧૪
૧૬૦	એ મોગરો મગ્નલોકમાં આવ્યો રે,	૨૧૫
૧૬૧	અરે બેવીડા, બેદવનો સગ ના કરિયે,	૨૧૭
૧૬૨	ગમની રજાયુ નથી, મારે દેહનો ભરોસો નથી,	૨૨૦
૧૬૩	હીરલા લાલ છત્ર,જગ કોઈ વરેલાલ,	૨૨૩
૧૬૪	તાગ મન માંયવાને સમજાવ,	૨૨૫
૧૬૫	નાભિકમળમાં નાથ નિરજન,	૨૨૬
૧૬૬	પહેલાં રે મન તારો માલિયો સમજીને,	૨૨૮
૧૬૭	ભોળી દુનિયા ભરમસે ભૂલી,	૨૨૯
૧૬૮	કોઇ લખશે અંત સુરમાં,	૨૩૦



શબ્દોની સૂચિ

	પા. નં.
અખાજી	૨૨૨
અખાત્રીજ	૧૪૯
અનુષ્ટુપ છંદ	૯૪, ૯૬
અભિમન્યુ	૧૮૩, ૧૯૬
અમદાવાદ	૬૫, ૮૩, ૮૪, ૧૬૭
અમરશી ભગત	૨૧૧
આર્ચર ડબલ્યુ. જી.	૧
આર્થર વેલી	૧૭૩
આર્નોલ્ડ બેનેટ	૪૦
આબુ	૮૪
આંજણા કોમ	૧૧૫
ઇન્દ્રજિત આચાર્ય	૧૧૫
ઇન્દુલાલ યાજ્ઞિક	૨૩૫
ઇન્દ્રવદન ઠાકોર	૨૩૪
ઉત્તર હિંદ	૬૫, ૮૪, ૮૫
ઉત્તર ગુજરાત	૧૨૦, ૧૨૬
ઉત્તરા	૧૯૬
ઉદેપુર	૮૫
ઉમાશંકર જોષી	૨૩૭
ઊંટડીયા મહાદેવ	૧૪૩
એલિસપ્રીજ	૧૪૦
ઓથેલો	૩૫
ઓફિલીઆ	૩૫
અંગ્રેજો	૭૨
કચ્છના રણ	૧૨૬
કબીર ભગત	૨૧૧,૨૨૧

	પા. નં.
કમાળો	૨૨૩
કહાનડદાસ	૨૨૩
કુકણા	૭૫
કુંકાવા ગામ	૮
કુબેરનગર	૬૫
કોળીઓ	૭૪, ૧૨૯
કોંગ્રેસ	૫૦
,, વાદી	૬૭
,, વાળા	૧૭
ખીમ સાહેબ	૨૨૨
ગણેશ	૭૨
ગંગા સતી	૨૨૨
ગામીત	૭૪, ૭૫
,, ના નૃત્ય	૭૬
ગાંધીજી	૧૬૭
ગાંધીબાપુ	૬૭
ગિજુભાઈ	૨૧૬
ગિરધારી	૫૪
ગ્રીસ	૧૮૧
ગુજરાત	૬૫
,, ના છારા	૬૫
,, ની પૂર્વ સરહદ	૭૫
,, ના ઘમગીનો	૧૧૦,૧૨૨
ગુનાહિત કોમ	૬૫
,, જાતિ	૭૨

	પા. નં.
ગુનઆર્કની ટકરી	૧૪૦
ગો. મા ત્રિ	૧૨૮
ગોધરા	૬૫
ગોપાળદાસ	૨૨૩
ગોરખનાથ	૨૨૧
ગૌરીશંકર જોશી	૨૩૪, ૨૩૬
ઘનશ્યામ હેમ	૪૮
ઘીવાવદર	૨૧૯
ચરોતર	૬૫
ચાંદોદ	૧૯૬, ૨૦૨
ચાંદ દ કુનાળી	૮૪
ચાંપાનેર	૪
ચૈતન્ય મહાપ્રભુ	૨૨૧
ચોધરા	૭૫
છગનરેવા પદાર	૨૦૫, ૨૧૧
છાન જાતિ	૬૪
,, ની તવારીખ	૬૪
,, નગર	૭૨
, મડળ	૬૭
,, ના રીતરિવાજ	૭૨
ઝોટુમાર્ઈ	૪૫
જગતસાહિત્ય	૩૫
જન્માષ્ટમી	૧૧૫
જવાહરલાલજી	૧૬૮
જામ ખંભાળિયા	૨૧૯
જી કે. જી જોશી	૧૩૫
ઝુઝ ભકરાણાના	૪૪

	પા. નં.
જૂનાગઢની જેલ	૪૬
જેડિયાનો મેળો	૫૫
જેઠીરામ	૨૨૨
જેસન અને તોરન	૨૨૨
ઝાનાવાડ	૧૩૧
ટીંટોડાના ગીત	૩૦
ટેસ	૩૫
ઠાકરડા	૭૪
,, —સ્ત્રીઓ	૧૦૩
,, કાટિયા—	૧૭૧
ડામનિયા	૭૯
ડિપેન ટામસ	૪૦
ડુંગરપરી	૨૧૧
ડેઝડીમોના	૩૫
ડેફોડાઈલ્સ	૪૦
ડેવીસ ડબલ્યુ એચ	૪૦
તખનાજી	૨૨૩
તાપ્તવેલી રેન	૭૫
તુકારામ	૨૨૧
દરિયાવબેન	૧૯૭, ૧૯૯, ૨૦૦, ૨૦૧, ૨૦૨
દારૂના ગીતો	૭૪
દામી જીવણ	૨૧૯, ૨૨૦, ૨૨૨
દિવાળીબહેન	૫૨
દુષ્યંત	૩૫
દેવારામ	૨૨૨
દેવાન પંડિત	૨૨૨

	પા. નં.
દેવેન્દ્ર સત્યાર્થી	૮૪, ૯૬, ૨૭૩
ધીરો	૨૨૧
ધોળકા	૨૧, ૧૩૫
નટવરલાલ વ્યાસ	૧૯૬
નથુરામ	૨૧૧
નર્મદ કવિ	૧૨૮
નર્મદા	૪૧
નરસિંહ	૨૨૧, ૨૨૨
નરસિંહરાવ દિવેટીયા	૧૯૬
નરનભાઈ	૪૫
નવરંગપુરા	૮૩
નવાબ સાહેબ બજાણાના	૧૨૬, ૧૨૭
નળ સરોવર	૩૧
,, નો કાંઠો	૨૭, ૪૧
નાનક	૩૨૧
નાનુભાઇ	૧૦૬
નામદેવ	૨૨૧
નિષ્કુલાનંદ	૨૨૧
પઢાર	૧૭, ૨૦૫, ૨૧૨
પઢારણો	૧૮
પઢારોના લોકગીતો	૧૬
,, નો સમાજ	૩૧, ૩૨, ૩૯
,, ની સંસ્કૃતિ	૩૧
પરતાપભાઈ ભગવાડ	૧૩૫
પરબડા	૧૧૭

	પા. નં.
પાટણવાડા	૧૧૫, ૧૬૭
પારવતી બહેન	૧૦૬, ૧૨૯
પીંપળિયા	૪૨
પૂછ ફોઈ	૧૯૭
પૂનમચંદભાઈ	૧૫૩
પોશીના પટાના ભીલો	૮
પ્રેમાનંદ	૧૯૬
ફાગ	૮૪, ૮૫ ૮૮ ૯૧
,, ચોઘડિયા	૯૫
ફિન્લાંડ	૧૨૭
ફીલિન્સ એન્ટલી	૫૧
બગોદરા ગામ	૪૮
બનાસના તીર	૧૬૭
બાકરોલ	૨૩૫
બાવો છેલ	૨૧૧
ભજન સાહિત્ય	૨૧૬
ભવભૂતિ	૧૮૧
ભવાઈ	૧૫૬, ૧૬૦
‘ભાતુ’	૬૫
ભાદર	૯૯
ભાલ	૧૭, ૧૨૨, ૧૩૮
ભાસ	૧૮૧
ભાણ સાહેબ	૨૨૨
ભીલો રાજસ્થાની	૮૪
ભૂતનાથ	૨૨૧
ભુંગપગ	૮૨

પા ન.
મોગાવો લીંમડી વઢવાણ ૪૨
મનસુખલાલ મીસ્રી ૨૩૪
મગશિયા ૧૨૬, ૧૯૫, ૨૦૬
મહાત્મા ગાંધી ૪, ૫
મહીપતરામ નીલકંઠ ૧૨૮
મઢી ૪૧
મહુવા ૧૩૬
મહુડીની ભોનારાણી ૯૯
મહેસાણા ૧૭૫
મલ્હારરાવ ૧૭૬
માંડણગઢ ૮૫
માંડવા ૧૮૬
મારવાડી જુવાનિયા ૮૩
, વાઘરી ૮૩, ૧૪૦
મીરાંબાઈ ૫૪,૨૧૧ ૨૧૬,૨૨૨
મુખી કનુભા ૪૩
મુનિ સતઆન ૪૫
મેનાણીબાઈ ૧૧૭, ૧૨૮,૨૨૦
મેઝફીલ્ડ ૪૦
મૈકન ટેકરિયો ૧૮૨
મોગર સાહેબ ૨૧૮, ૨૨૨
મોડાસા ૨૩૫
મૃત્યુગીતો ૭૮
રજપૂત જાતિ ૬૫
રઢિયાળી રાત ૬૬૭
રણુજીના રામ વાવાભાઇ ૧૨૮

પા. ન.
રબારી ૧૬૭
રવિદાસ ૭૨૬, ૨૧૭
રવિસાહેબ સત ૨૨૨
રવિશંકર મહારાજ ૮૯
રવીન્દ્રનાથ ઠાકુર ૧૮૨
રહેમનપર ૧૦૫
રાજપીંપળા ૭૫
રાજસ્થાન ૬૫, ૮૫, ૨૨૩
રાજિયા ૨૭, ૧૮૭, ૧૯૫, ૧૯૭
રાજુડી ૫૩
રામ ૩૫
રામાપીર રણુજાના ૮૪
રામદેપીર ૨૧૧
રામદાસ ૨૨૧
રામચંદ્ર ઠાકુર ૨૩૫
રાયસુંગ ૧૨૮
રાવણ ૧૮૩
રાડ નદી ૪૨
લખમાપુરા ૨૨૩
લખમો માળી ૨૨૨, ૨૨૩
લગનગીતો, હિંદુનાં ૭૨
લાના ભગત ૨૧૬
વિયામ ફ્રેનોહાર્ગ ૪૦
લ્યુસી ગ્રે ૪૦
લોકનાટ્ય ૧૬૧
લવણુ ૨૨૨
લોર્ડ ૪૦

	પા. નં.
વર્ડ્ઝવર્થ	૪૦
વણઝારા	૨૨, ૨૩, ૭૪
વડોદરા	૧૯૭
વનજાતિઓ	૭૫
વત્રીભાઈ	૧૧૮, ૧૫૪
વલંદાની હવેલી	૮૪
વ્રજનાથ	૨૨૩
વાઘજીપુર	૧૪૩
વાલીબેન બાઈ	૫૩, ૫૪, ૫૫
	૬૨, ૨૧૧
વિજાપુર	૧૭૫
વિષ્ણુભાઈ	૧૩૫, ૧૩૬
વિષ્ણુરામ કૃષ્ણરામ	૧૩૫
વિહા ગંગદા	૫૨, ૫૩
વેરિયર એલ્વિન	૧૮૨
વેસેક્સ	૯૯
શકુન્તલા	૩૫
શાંતિભાઈ	૪૫
શામળાજીનો મેળો	૧૫૩
શિયાળગામ	૪૫, ૫૨, ૧૧૫
શેક્સપિયર	૪૦, ૧૮૧
સંભાદ્રી	૭૫
સસેક્સ	૯૯
સાતપુડા	૭૫

	પા. નં.
સાબરકંઠા	૮૪, ૧૫૩
સાબરકાંઠા-પોશીનો પટો	૩
સાબરકાંઠાના ભીલો	૧૧
સાબર નદી	૪૧
સિંધ	૧૧૩
સીના	૩૫, ૧૬૬
સુણસર	૯૯
સુરત જીલ્લો	૭૫
સૂર્યકિરણ પારીક	૧૩૩
સેટલમેન્ટ	૬૫, ૬૭
સોમાભાઈ	૧૦૫, ૧૦૬
સોરઠ	૯૯
સોરઠી સંતવાણી	૨૧૯
' સોલિસિટરી રીપર '	૪૦
સૌરાષ્ટ્ર	૧૨૩
' સમ્કૃતિ '	૨૩૪, ૨૩૬
હરગોવીંદ પ્રેમશંકર ત્રિવેદી	૧૨૮
હિમતનગર	૧૫૪
હેતુડી	૪૪
હેમલેટ	૩૫
હોથી સંત	૨૨૨
હોળીનાં ગીતો	૭૬, ૭૯
શ્રમશિબિર	૮૨
શ્રીમત સયાજીરાવ	૯૯
જ્ઞાનેશ્વર	૨૧૨



આમાં નાંઈબા ભિખારી

કાળુડાં ભાંડુ

દોળી બાઈબા ભિખારી આમાં નાહ્યા ભિખાર્યાં !

આ ગાયું છે ગુજરાતમાં વસતાં કાળુડાં ભાંડુએ, સહ્યાદ્રિ અને સાતપૂડાની ડુંગરાળ વચ્ચે વસનારાં વનવાસીઓએ, અરણ્યમાં ઘૂમનારાં જિંદાદિલ કાળાં માનવીઓએ, જગતની ઘાંટીમાં ડગલાં મૂકે ત્યારે તેની સાથે અને ધરતી સાથે આત્મીય ભાવ કેળવી જિંદગીને માણી જાણનારાંઓએ. કેટલાક નૃવંશશાસ્ત્રીઓએ તેમને આદિવાસીઓના નામે ઓળખાવ્યાં, કોઈએ તેમને કાળીપરજ કહ્યાં, તો તે સમાજનાં હિત હૈયે વસ્યાં છે તેવાઓએ તે નામને સંસ્કારીને રાનીપરજના હુલામણા નામે સંબોધ્યાં તો સ્વરાજ આવ્યા પછી તેઓ વનજાતિના નામે ઓળખાયાં. તો કોઈએ તેમને ગિરિજન અને ભૂમિજન કહી બિરદાવ્યાં. ગુજરાતનાં અરણ્યોમાં, ડુંગરાઓમાં, નદીકોતરોમાં અને પર્વતોમાં વસતાં આ 'કાળુડાં ભાંડુ' બહુ મોટી સંખ્યામાં છે, તેનો ખ્યાલ વસ્તીગણતરીના જનઆંકડા પરથી આવે છે.

શાસ્ત્રવિદોએ તેમને આ ધરતીના ધણી તરીકે પણ ઓળખાવ્યાં છે. ઊજળી ચામડીવાળા, લાંબા, રૂપાળા ને અણિયાળા નાકવાળા, પડછંદ શરીર, મોટાં માથાવાળા ને માંજરી પીંગળી આંખોવાળા તો આ ધરતીમાં પરદેશીઓ છે. ધરતીના સાચા ધણી તો ગુજરાતના સીમાડે વસેલ ભીલ, ભ[illegible]યા, ગામીત, વસાવા, કોળી, વાર[illegible] આદિ છે.

પણ વર્તમાનમાં ઊજળા વર્ણવાળી પ્રજાએ આ કાળુડાં લોક પર જબ્બર સત્તા અને અધિકાર જમાવ્યાં છે ભૂતકાળ–નજીકના ભૂતકાળમાં તેમની સ્થિતિ આ હતી પરિણામે કાળુડાં ભાંડુ હીજરાઈ ગયાં, દબાઈ ગયાં અને જંગલોમાં, પહાડોમાં, નદીઓનાં કોતરોમા, અગાધ્ય પ્રદેશ પ્રદેશ માં, દરિયાકાંઠે કે ગ્રહના સુનકમાં જઈને સતાઈ બેઠાં. આ જાતિઓના પગેરે નીકળીએ તો પુરાણકાળથી આગળ જઈને ઊભા રહેવું પડે છે પુરાણના ગ્રંથોમાં શબ્દો જડે છે· कोल दस्यु शुद्र, किरात, ઇત્યાદિ ડૉ વેરિયર એલ્વિને તેમની એક પુસ્તિકામાં નેગ્રિટો Negrito, પ્રોટો ઑસ્ટ્રાલોઈડ્ઝ Proto Australoids જેવા શબ્દો મૂકયા છે એક વિદ્વાને કહ્યું છે It is undoubted that these tribes in most cases, are of Dravidian ancestry તેમનાં સંસ્કાર અને સસ્કારિતા અને જીવનીનાથ સગડ પ્રાચીન ગ્રંથોમાંથી જડે છે. તે કાળુડાં ભાંડુ પાસે તેમનું જ બધું હતું જે આર્યોએ આવીને, ઊજળી ચામડીના માનવીઓએ આવીને, તેમની વચ્ચે વસીને ઝૂટવી લીધું અને તેમના પર તેમના સસ્કારોનો ઓપ, ગલેપ અને રંગ ચઢાવવા યથા-મણ કરી, પણ તેય આજદિન સુધી તે કાળુડાં લોકોએ તેમના સસ્કાર અને સસ્કૃતિ સિવાય કશાયને તેમના સુધી આવવા નથી દીધાં હા, તેમાંથી સાંકર્ય જન્મ્યુ છે, ગ્રંથોમાં અને આ કાળુડાં ભાંડુમાં તેમ છતાંય તેમની મુક્તલગ્નપ્રથા આજેય અકબંધ જળવાઈ રહી છે તેમનો સસાર આંટીઘૂંટી વગરનો અન્યા વગર સાવ સરળ જ હજુ છે અને તેમના શોખો—માછલાં પકડવાં, શિકાર ખેલવો, દારૂ પીવો, નાચવુ, મેળા કરવા—આજ સુધી નભ્યા છે રાજકીય પલટાઓ સાથે તેમના જીવનમાં કાંક કાંક પલટાઓ આવ્યા છે, પણ તે પાછા તેટલી જ સ ળ તાથી ખરી પણ ગયા છે તેમની ભિન્ન સસ્કૃતિ છતાંય તેમણે સહ અસ્તિત્વ સ્વીકાર્યું તેથી જ ડૉ વાસુદેવશરણ અગ્રવાલે તેમના માટે લખ્યું છે पृथ्वीको गोदसे जिसने जन्म लिया है उसीसे हमारा बन्धुत्वका नाता है।

ગુજરાતમાં ક્યાં ક્યાં?

ગુજરાતનો સાગરકાંઠો તેમણે સર કર્યો છે સાગરકાંઠા પર વસતા ખનારસી, ખારવા તો કોળીઓ છે, કૌમમાંથી ઊતરી આવેલ પ્રજા–મરત, ઝિંદાદિલ અને મરજીવા ગુજરાતના ઉત્તરપૂર્વના સીમાડા પર ઊંચા મસ્તકે ઊભેલ અરવલ્લી, પાવાગઢ, સાતપૂડા અને વિંધ્યમાં વસતા ભીલ, ધોડિયા, દૂબળા, તળાવિયા, નાયકા વારના, વસાવા, ચોધરા, ગામીત અને કોળીઓ છે સુરતના દરિયાકાંઠા પર આ કોળીઓના ધામા છે અરવલ્લીના ડુંગરાઓ ને ભાખરના મુલકમાં ભીલો અને કોળીઓ સાથે વસવાટ કરે છે મધ્ય સોરઠમાં કોળી સાથે ઊજળી મેર અને આહીર જેવી ખડતલ પ્રજા પણ બેઠી છે કોડીનારના કાંઠે વાઘેર જેવી મરણિયા ઝનૂની જાતિ ગુજરાતનું રખવાળું કરે છે ગુજરાત–સૌરાષ્ટ્રના સીમાડે નળસરોવરના કાંઠે પઢાર, સાબરમતીના કાંઠે ઠાકરડા મહીનાં કોતરોમાં બારૈયા, ધારાળા, નર્મદાકાંઠે વસાવા અને માછીઓ બનાસના ઉત્તરકાંઠે કોળી અને ઠાકરડા અને કચ્છના રણના સૌરાષ્ટ્રને વળગીને પડેલ છેડા પર ચુંવાળિયા કોળીઓ, જત અને મિયાણા આમ કાળુડાં ભાંડુ ગુજરાતના વિશાળ મહેરામણનો આશરો લઈ રહ્યા છે, તો કોઈક ડુંગરાની ધાર માથે વાંસનાં ખોરડાં બાંધીને જીવે છે થોડાંક થરાદરીના રેતાળ અર્ધરણ પ્રદેશમાં દહાડા કાઢી રહ્યા છે, તો કેટલાંક વનવાસી બન્યાં છે નદીનાં કોતરોએ પણ તેમને સંઘર્યાં છે સરળ અને સપાટ મુલક—ચરોતર, નર્મદા તાપી વચ્ચેનો મુલક અને ઝાલાવાડ ગોહીલવાડ–નથાવી પાડી ઊજળા વર્ણના માનવીઓ ત્યાં વસ્યા ઇતિહાસ કહે છે કે શાસન કરનારનો ભય જિતાયેલાને રહેતો હોય છે તે ડરતા હોય છે—માત્ર તેના લશ્કરથી જ નહીં, પણ લશ્કરથી ય વધુ તાકાતવાળાં ધર્મ, સરકાર અને રહેણીના બીક લાગતી હોય છે! કાળુડાં ભાંડુ આવા જ ભયે ડુંગરામાં, અરણ્યમાં, રણમાં અને નિર્જન પ્રદેશમાં ચાલ્યાં ગયાં

કેવા છે તેમના વસવાટો?

અંગ્રેજીમાં લખાયેલ આ વર્ણન જુઓ ‘The abongines

live on the hills, forest and ragged countryside of India. Broadly speaking, they live on a long and broad belt of land starting from the Arvalli Hills in the west, proceeding into the Vindhya and Satpura Hills and portions of Western Ghats.'

આ બીજું અવતરણ વાંચો : 'If you care to travel through their villages, their hills and forests, you will *find* them in thousands roaming in nature's garb...'

તેઓ વસે છે મગરા પર, ડુંગર પર. દરેક ડુંગરે છૂટક છૂટક ખોરડાં જેવા મગરે ગામ વસાવીને જૂથમાં વસવાની ટેવ તો તેઓએ આજે પણ કેળવી નથી. તેમના આ મગરામાં વાસ, સાગ, મહુડા ખૂબ ઊગે, તેથી તેમાંથી જ તેઓ તેમનાં ખોરડાં બનાવી લે છે. ભીલ, ગામીતો, વસાવાની આ જીવનરીતિ છે. પણ નદીકાંઠાઓમાં અને રસ્તાની કોરે પર રહેતા કોળી, ધાનકા, બારિયા, હાકડા અને પટાર જૂથમાં વસે છે. તેઓ વાસ બાંધીને ગામમાં જ વસતા હોય છે પટાર કૂબામાં જ રહે છે. એક કહેતી છે: 'કોળીભાઈનો કૂબો...'. કોળી પણ આજ દિન તક આવા કૂબામાં જ વસતા. પણ હવે એમનાં ઊંચા શિનરેલ કોળીઓ ઘર વસાવીને રહેતા થોડાંક વર્ષથી થયા છે. ચગદરી, કોંકણના હાકડા પણ કૂબા અને ખોરડાંમાં વસે છે. ધારાળા, બાંધ્યા ઘર બાંધીને જીવે છે.

કયા કુળના?

આ રહ્યું એક ઇતિહાસકારોનું કથન: 'India is an ancient land and its histoty dates back four to six thousand years. India has been the home of the primitive races from prehistoric times. The *Vedas* contain

useful information about the dark thick-lipped noseless, godless primitives who came into conflict with ancestors of the Aryan race...'

જાડા હોઠવાળા, ચીબા નાકવાળા, કાળી ચામડીવાળા અને મૂર્તિપૂજાના અજ્ઞાનવાળા લોક તે જ પેલા Negrito તો નહિ? દ્રવિડોએ તો નહિ! ભીલ, વસાવા, પઢાર, કોળી વગેરે કાળી ચામડીવાળા છે. તેમના ધર્મના માટે સંશોધન કરતાં જાણવા મળે છે : તેઓ પશુપૂજા અને શક્તિપૂજામાં માનનારા છે. તેઓ તેમના ડુંગરાના દેવને પૂજે છે. પિતૃપૂજા પણ તેમનામાં ખરી. પઢારો શક્તિપૂજક છે : The primitive races in India are animist, but through the centuries, they have been assimilated into what is broadly and generally known as Hinduism. આમ તેમના ધર્મમાં અને સંસ્કારમાં આર્યોનાં, હિંદુઓનાં સસ્કાર અને છાપ આજે જોવા મળે છે, પણ જુઓ :

'દેવલી માડીએ જતીરો, ડાયા જતીરો, હેરા આલેરામાં ડાયા'

'દેવલી માડી' ડુંગરાનો દેવ : આ ગાયું સોનગઢવ્યારાના આદિવાસીઓએ પઢાર શક્તિપૂજક છે તેમની કેટકેટલી દેવીઓ છે! અને તેમનો ભુવો તેમની સ્વાણીઓ ગાય છે. અને કોળી ઇત્યાદિને ક્યા કુળના લેખવા? પઢાર અને કોળી એક જ કુળમાંથી છે એમ પઢારોના સંશોધન પછી લગભગ સ્થાપિત સત્ય બનવા પામેલ છે. પણ આર. ઈ. એન્થોવનનું આ કથન જુઓ : Bhils and Kolis are aboriginal tribes which probably do not differ at all in origin. મિશપ હેબરે કોળી માટે કહ્યું છે : They are only civilized Bhils. મિ. વિલંઘબી (Willonghby) કહે છે : Baria has sprung from Kolis. મિ. ટેલર બારાબાને કોળીની

પગનના લેખે છે અને મિ. મેનરિંગે લખ્યુ છે the wilder population of eastern Ahmedabad are equally under the name of Bhil and Koli. પણ મેજર જે ડબ્લ્યુ વોટ્સન અને રેવ. ટેલર માને છે '...it is very difficult to draw any line between Koli and Rajput. The story with which the Prantij Kolis account for their own origin is general in Eastern Gujarat, namely that their progenitor was a Rajput, who lost cast by taking water from the hand of a Bhil woman.' આવો જ ઉલ્લેખ મિ. એફ. એસ. પી લેલીએ પણ આ કોળીઓ માટે કર્યો છે

સાપ ગયા...

થરાદરીના કોળીઓમાં કિંવદંતી છે કે તેઓનો પૂર્વજ રજપૂત હતો, પણ રૂપાળી કોલણના પ્રેમમાં પડયો અને તે વગદાયો એના પેટનાં સંતાનો તે થરાદરીના કોળીઓ, હામ્રડાઓ ભીલોમાં ગગહિયા ઇત્યાદિ ઓળખનામો છ તેમને પણ રજપૂત કહેવડાવવું ગમે છે પઢારો કહે છે કે ધનમેર કોળીનું ખાવાથી અને પાણી પીવાથી અમે હલકી જાતિના થયા, પણ અમે મૂળ તો રજપૂતો હરિજનોમાં અનેક કુળો રજપૂતોમથી આવ્યાં છે એમ તેઓ કહે છે મડોાગા વાઘરીઓ પણ કહે છે કે અમારો વડવો જુવાન વાઘણના પ્રેમમાં પડયો, તેને પરણ્યો ત્યાર પછી તેને તેની નાતના રજપૂતોએ નાતબહાર મૂકયો અને તેમાંથી અમે મહોળા વાઘરીઓ પેદા થયા નાજપીપળાના વસાવા પણ તેમને રજપૂત હોવાનું માની બેઠા છે છારાઓ પણ તેમને રજપૂત હોવાનુ કહી રહ્યા છે આમ આ હાણું માનવીમાં આ માન્યતા આજે પણ પ્રચલિત છે કે તેઓના પૂર્વજો રજપૂતો હતા, અને તે કુળગૌરવમાં આજે ય તેઓ રાચે છે સામંતશાહી યુગમાં જ્યારે રાજશાસકની બેકાબૂ સત્તા હતી, ત્યારે અનેક લોકોને, જાતિઓને અને કુળોને સત્તાના

સ્તંભ હોય તેવું કહેવડાવવું ગમ્યું લાગે છે. આજે પણ તેમ જ છે. આ જ કારણે, સત્તાશીલ કુળોની નજીક તેમના કુળને ગોઠવવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે. મધ્યકાલીન ઇતિહાસમાં હિંદુઓમાંથી આખાય ભારતવર્ષ પર રજપૂતોએ ઠીક ઠીક વર્ષો લગી શાસન ચલાવ્યું. તે ગાળામાં આ જાતિઓએ તેમને રજપૂત કહેવડાવ્યા. સાપ ગયા, અને લિસોટા રહ્યા. પણ આ બધામાંથી તારણ તો આટલું જ નીકળે છે: 'આ પૃથ્વી-પુત્રોને આર્યોના સંસ્કારની છાંટ આપીને જિવાડવામાં આવ્યા છે!'

જીવનનું દર્પણ

આ કાળુડાં ભાડુએ જિંદગીમાં સીધો, સાદો અને સરળ પથ સ્વીકાર્યો છે. તેમના જીવનમાં પ્રકૃતિને અને પ્રકૃતિમાંથી મળતા આનંદને સ્થાન મળ્યું છે. પૃથ્વીની રજ ને પ્રકૃતિનાં અનેક તત્ત્વો જ તેમની નજીક છે ને તેમાં તેઓ ઓતપ્રોત બને છે. તેમાં જીવનના આનંદને જ ગાયો છે. માટે જ તેઓએ ગાયું છે:

ખાજો, પીજો ને માયા માણજો રે!

મસ્ત જીવન! કોઈ જાતની બીજી લપછપ નથી. ખાવું છે, પેટ ભરીને, શિકાર ખેલીને, માછલાં પકડીને, પંખીનો શિકાર કરીને

અને માયા માણવાની રીત પણ તેમની અનોખી છે:

હાલ કટુરી હાલ રે, રમજણિયું રે, પીજણિયું વાજે!
હામળાજીને મેળે રે, " " "

મેળા કરવા છે અને મેળા કરવા છે તો કઈ રીતે?

હું પહેરીને જઈશું રે,
કાને કઈને જઈશું રે,
ન મોકલે તો, કુપડે જઈશું રે,

માયા, આમ, માણવી છે. 'જોવનપોરનું બાજરિયું' ભરપાને હોય ત્યારે કોને કોને દલ કરે છે? તેય તે સમાજના લોકોએ ગાઈ નાખ્યું છે.

જીવન જીવવાના, તેમના માર્ગ—ધાંટા અનોખા છે. પઢારણ પુત્રવધૂને પણ આવા મેળા કરવાની ખાંત છે :

મારી સાસુ કે' છે કે વહુ, નથી જાવું મેળે !
છાનીમાની રે'જે, ચૂલે બેસી રે'જે, રોટલા ઘડી રે'જે,
મારે જાવું છે મેળે.

મેળે જનાર પઢારણને જીવનમાં શાં શાં અરમાન જન્મે છે !

ઠાકોરિયા રજવાડાને રે પાદર પારસપીપળો.

હીંચકો તો પાદર બધાયો છે, પણ આ પઢારણ તો રસની રસિયણ છે તેથી પુછાવે છે કે ક્યાં બધાવું હીંચકો.

ઠાકોરિયા, આં રે બધાવું રોલર હીંચકો !

અને આ અરમાન અનોખું છે:

ભાલાળે ભવાયા રે રમે,
સૌએ છોરિયું જોવા જાય,
કૈંબા સારા આદમી હારે જાય,
કૈંબાને દેરવો દેરી ગયો !

કૈંબાને દેવરો હરી જાય છે, જ્યારે કાકીની સાથેના નાનાને કાગળો માથું ફૂલ કરી દે છે, વખની સખીઓની સાથે ભાગી જાય છે તો તેને ઉવાડા ઢોગે ગાનાં આ સમાજને કોઈ નિષિદ્ધ નડતાં નથી. તેમના જીવનનાં આભલાં જ આ ગીતો, આથી બનતા પામ્યાં છે. આ ગીતો તે જીવનની વિષમતાનાં સાક્ષી બન્યાં છે. જીવન એટલે જ વિષમતા અને વેદના. જેમ વિષમતા તેઓએ માણી છે તેમ વેદના પણ ક્યાં ઓછી ગઈ છે !

વણજારાના કાગ જુઓ ! પતિપત્ની વચ્ચેના સંબંધો બગડ્યા છે ત્યારે સખી શિખામણ આપે છે :

કર લે શાણપો ! કે રે કર લે શાણપો !

પઢાર યુવતીના એવા જ સંબંધોના કારણે લોકગીતના ગાયકને ગાવું પડ્યું છે :

દાદા, આવેડ્યાં દખ વેઠ્યા કેમ જાય?
સૈયર, અબોલા બરે રૂયાં!

ત્યારે વ્યથિત હૈયે દાદાને દીકરી શિખામણ આપે છે :

'દીચરી, જેમ વેઠાય, ઇમ વેઠજે,
આપણુ મોટાનાં છોરુ કે'વાય.'

હૈયાની આવી વેદનાને કોઇ બીજી રીતે પણ લોકગાયકે વ્યક્ત કરી છે :

'તારા દલની આંટી મેલ!'

વણજારાના ફાગની ભાષામાં ઉપર્યુક્ત કથનને વ્યક્ત કરવું હોય તો આમ જ વ્યક્ત કરી શકાય ને? 'કર લે રાજીપો!'

આ 'કર લે રાજીપો' કે 'તારા દલની આંટી મેલ'માં વ્યવહાર-દક્ષતા જ ગાયકે બતાવી છે ને? દલની આંટી મેલી શકે કાં તો કોઇ વ્યવહારપુરુષ કે કાં તો દિલદરિયાવ માનવી! સંસાર તો એવા જ પુરુષો ને સ્ત્રીઓથી સમુજ્જવલ ભાસે છે ને? નાનકડા શબ્દગુચ્છમાં લોકકવિએ જનસમાજને શી મોટી શિખામણ આપી છે! દલની આંટી મેલે કે રાજીપો કરી લે તો તો યુદ્ધો ય જાય, દિલમાંથી, દિમાક-માંથી, પ્રજાએ પ્રજામાંથી અને રાષ્ટ્રે રાષ્ટ્રમાંથી! લોકકવિઓએ આ જ રીતે માનવજાતને સરકારવાની પ્રવૃત્તિ આજ સુધી કરી છે! એ પ્રવૃત્તિ અવિરતપણે અદ્યાપિપર્યંત ચાલુ રહી છે સાબરકાંઠાના ભીલોએ ગાયું :

દારૂ કોઈ મા પીજો, ને નવો હલકો રે!
... ...
બૌ તો કોઈ મા મારજો, ને નવો હલકો રે!
... ...
દુરી કોઈ મા મારજો, ને નવો હલકો રે!

ગ્રામીન લોકોએ ગાયુ છે

દારૂ છોડો, દારૂ છોડો રા !
ઓ રામ, સત્યનાશ થૈયા !

જ્યારે વ્યવહારુ વણજારણને વણજારા જોડેનો મનમેળ તૂટ્યો છે તેને તે સમારનીર ઢહોળવાની ના પાડે છે •

કર લે શાણપો હે રે કર લે શાણપો !

તેમના ફાગની આ પંક્તિઓ જુઓ

હાથમા ચોગ, બેઠક સારી લાગે,
માથામા અમતની ડબી, ખારી લાગે !
માવો છોડ દે ! હે રે, માવો છોડ દે !

અને ચૂવાળની ઢોળણને જુગટિયા પતિનો પૂરો પરિચય થયો છે માટે તેણે ગાયુ

જુગટિયા સરદારે, જૂગઠ કોઈ રમશો નૈ હે !

•

જૂગઠ રમતા શું શું હાર્યા ? જૂગઠ રમતા બાયડી હાર્યા !
છોગ્રા વિધાજમાં ફસ્યા, જૂગઠ કોઈ રમશો નૈ રે !

અને માનવને પ્રેરણા આપે—કાર્યરત થવા માટેની તે આ પંક્તિઓ

અસ્યા ઊભા સા સમ,
અસ્યા ઊભા સા સમ,

અસ્યા ઊભો છો શા માટે ? છોડ અને જાય ! કામે લાગ ! ભને યા હેમ કરીને આગે પાવની ભવના કવિએ એમાં ન દાખવી હોય, પણ માનવીને ઉચ્ચારો માગીને તેને સળવળતો તો એ જરૂર કરી દે !

મોટી સામાજિક શિખામણ આપનાર લોકકવિઓએ તે સમાજના અનેક પ્રશ્નને દૃષ્ટિ સમક્ષ રાખી તેની કાવ્યસર્જનપ્રવૃત્તિને ત્યાંય જોડી છે આમ તે પત્ર ની નજરે સમાજને નિહાળનાર છે તેના

—

સમાજના નાનકડા પ્રસંગને તે ક્વવાનું કદી નથી ભૂલતો, જો તે જરાક પણ 'ડ્રામેટિક' હોય તો! ચારણનો છોકરો સાહિયો લઈને ધીના ભાડે ગયો ને લૂંટાયો તે પ્રસંગ આજે મળે છે. પેલા બે ભીલ યુવનો પોલીસના પંજામાં આવ્યા તો તેને તેઓએ છોડ્યો નથી કે બીજમાં દુકાળનો કારમો અને કાળપંજો પડ્યો તો તે પણ તેમનો કવનવિષય બન્યો છે. આ તો સામાજિક વિષયો છે, પણ ઐતિહાસિક પ્રસંગો તેમાં ગવાય છે. કડીમાં મલ્હારરાવે બંગલો બંધાવ્યો તો તેનું ગીત ઉત્તર ગુજરાતમાં મળે છે સણુસરના દામ્રડા પાસેથી અંગ્રેજ ટોપીવાળાનાં ગીતો મળે છે તેમાં માત્ર ઇતિહાસની શુષ્ક વિગત નથી પણ માનવદિલની સહાનુભૂતિ અને અનુકંપા પણ જોવા મળે છે આમ તે કવિ તો ગાનાર છે માનવઉર્મનાં સંવેદનોને જ. તે ગવાયાં છે માટે લોકગીતનાં ઝરણાંનાં નીર નથી વાસી થયાં કે નથી ગંધાયાં.

પણ ઘણા ભાવ સાવ નવા પણ લાગે છે. ને તે જ છે માનવનાં મનડાંની ખૂબી. જે ભાવ સામાન્ય જનસમાજમાં નથી જોવા મળતા, તે ભાવ 'કાળુડાં ભાંડુ'નાં લોકગીતોમાં જોવા મળે છે. ભદ્ર સમાજે સાસરિયામાં દુઃખ વેઠતી દીકરીને શિખામણ આપતાં ગાયુ :

'દાદા, આવેડ્યા દખ વેઠ્યા કેમ વેઠાય ?'

. ...

'દીચરી, જમે વેઠાય, ઈમ વેઠજે!'

અને દીકરીને સાસરે વળાવતાં પણ કંઈ કંઈ શિખામણ ભદ્ર સમાજે દીકરીને આપી છે, પણ ગામીતનાં લોકગીતોમાં જુઓ :

રવા તે રોજે બેના, યેતી રોજે વા!

સાસરે વળાવતી દીકરીને કહ્યું : 'બહની, તારાથી સાસરે રહેવાય તો રહેજે, નહીં તો પાછી આવજે!' અને આગળ ગાય છે કે તારાં સાસરિયાં હલકાં લોક છે ને ઘરમાંથી તને જંગલમાં કાઢી મૂકશે. જો આવું બને તો આપણે દહેજના પૈસા પાછા આપી દઈશું.

એનો શો અર્થ ? છેડો જ ફાડી દઈશું

ત્યારે, આ લોકગીતોએ સમાજના અનેક ભાવોને, પ્રસંગોને, સ્થિ-ઓને અને નિષિદ્ધોને ગાયાં છે અને આમ માનવસમાજનાં તે સાચાં આભલાં સમ બન્યાં છે.

આ વાસી કવિતા નથી

સમાજના આ જ વર્ગોનાં ગીતો લોકગીતની સૃષ્ટિમાં સાંપડે છે ! દીકરી, દીકરીનાં દુઃખો, પ્રેમની સફળતા કરતાં વિશેષ નિષ્ફળતાના ભાવો, વ્યસનનાં ગીતો કે ફાટેલ આંખનાં શૃંગારગીતો જ આ સૃષ્ટિમાં સાંપડે છે ? ખરો સુજ્ઞ કે સંશોધક તેવાં જ ગીતો મેળવીને ઓડકાર નહીં ખાય ! કેમ કે તે સમાજને માનવસૃષ્ટિના સર્વ કોઈ ભાવો–વર્તમાન યુગ તેમજ ભૂતકાળના–સ્પર્શતા હોય છે તેમને તેમના આર્થિક પ્રશ્નો પણ 'ભાવ'રૂપે જ તેમની સામે આવીને ઊભતા હોય છે, તેથી જ ગાય છે :

એક ચાળીસ તો દાડિયા લાગ્યો.

આ એક ચાળીશ દાડિયાને શી શી મૂંઝવણો અનુભવવી પડી ! ચુનીલાલ મોઝડીવાળાએ તેમની પાસેથી પગલે મજૂરી કરાવી તે તેમને ન રુચી, પણ કરે શું ? તે ભાવને માત્ર કંઠમાંથી જ વહેતો મુકાય. તેથી તેને તે સમાજે ગાયું. પણ વર્તમાન સમયની વધુ નજીક છે પહારનો આ ભાવ :

હાર્યો એરો રામસંગ,
 હાર્યો એરો રૂપસંગ,
 હાર્યો એલ્યો ધંધુકાવાળો રે '

કોંગ્રેસનું ગજબ રચાયું, રામસંગ–રૂપસંગ જેવા ઠાકોરો તો ગયા, પણ ધંધુકા પર રાજ કરનારી બ્રિટિશ સરકાર પણ ગઈ; અને આખરે જઈને કોંગ્રેસનું રોનકદાર ચિત્ર આપે છે:

પાંચસે પાઘડીવાળા કોંગ્રેસ બાપુ !
છસેં ખેતરવાળા..............
લીલડી ઘોડીવાળા કોંગ્રેસ બાપુ !
રોઝડી ઘોડીવાળા કોંગ્રેસ બાપુ રે લોલ !

અને સ્વરાજના આવ્યાની હાકલ પોરશીના પટામાં ભીલોના કાન પર કઈ રીતે પડી ?

માતમા ગાંધી આવે, ને નવો હલકો રે !
લાકડિયા તાર માંયલો, ને નવો હલકો રે !
બાંધવી એકી બાંધવી, ને નવો હલકો રે !

આ નવા યુગનો નવો હલકો ભીલોએ ગાયો, પણ જ્યારે ગામીતોએ શ્રમશિબિરો ગામડાંમાં થતા જોઈ ત્યારે તાનમાં આવીને ગાયું:

શિબિર ડેરા આસેરમાં ડાયા !
જતીરા રુરીખા જતીરે ડાયાં !

શિબિર આવી છે. તેમને મન તે યાત્રાનું ધામ છે.

આમ સ્વરાજના આગમનનાં તેમણે વધામણાં ગાયાં. ગાંધીજીના તત્ત્વજ્ઞાનને તેમની કલ્પનામાં મઢી લીધું અને સ્વરાજના કાળમાં યોજાતી શિબિરોને પણ તેમણે તેમનાં ગીતોમાં સમાવી લીધી. તેમના આગળ કોઇ પણ પ્રસંગ માત્ર 'ભાવ'રૂપે જ આવે છે ને માટે તેઓ તેને તરત જ ગાઈ શક્યા લાગે છે. ભાવમાં જ રસ હોય ને ? કલ્પનાએ તે ભાવને પછી તેઓ મઢતાં લાગે છે !

કેવાં ભાવપ્રતીકો ?

જવાની તે 'જોવનપોરનું બાજરિયું' કવિના મનમાં બને છે. રૂપકડો, ફૂટડો, જુવાન યુવતીને મન છે 'મૂછુના મનિયાર,' પ્રેમી 'હૈયાનો હાર' અને પરણ્યો 'ડાબા પગની મોજડી.' રાજિયાના ગાનારને મન યુવાન તે અભિમન્યુ. યમને 'ગરધો'ના સંબોધને

चला मार्यो देखि ओला गांधी की पलटन दा ॥

આ તો ગાંધીની પલટન પર રચાયેલ ગીત છે. રેકા રાશીએ ક્યાં ગાંધીપલટન પર ગીત નથી જોડ્યું ?

પણ છારાને જમાનાની અસર સ્પર્શી જાય છે, તેથી તેઓએ ગાયું :

વો ભી હમ જમાના, હાય હાય રે પેશ જમાના !

આવું ગીત ગઢવાલી લોકોએ ગાયું: ક્યા જમાનોં આયે. મોટર આવી તે પલટાતા જમાનાનું ચિહ્ન, તેથી તેમને પલટાતો જમાનો સ્પર્શી ગયો. છારાએનું જીવન આર્થિક અને સામાજિક પરિવર્તનમાંથી પસાર થઈ રહ્યું છે, માટે તેમણે તેનું ગીત ગાયું. આ ગીતો સમસંવેદનમાંથી જ ફૂટ્યાં છે ને ! ક્યાં ગઢવાલી લોકો અને ક્યાં આ ગુનાહિત કામો કરી જીવનને ખેંચી કાઢતી જાતિ ! અને ભાલનું 'ગુજલડી રે' (નવો હલકો પૃ. ૧૩૮) પરનું ગીત સુરત જિલ્લામાંનાં ગાનારાં લોકોએ ગાયું :

ખરા લોઢાનું મારું દાતેડું રે લોલ,
ઘડ્યું પેલા લાલિયા લુવારે, મારા બાલમજી હો;
હવે ના જાઉં ઘાસ કાટવા રે લોલ !

આ ઘાસ કાટવા તે નારી કેમ નથી જતી ? એ પ્રશ્નનો ઉત્તર એ ગીતમાંથી જડતો નથી. જ્યારે 'નવો હલકો'ના 'ગુજલડી'માંથી મળે છે, પણ કેટલીક પંક્તિઓ તો સાવ બરાબર છે:

જુઓ, 'નવો હલકો'નું ગીત :

પરણ્યે વાઢ્યા પાંચ પૂરિયા રે લોલ,
બે રે વાઢી છે બીડ, રે મારા વાલમા,
સરકારી બીડલાં વાઢવાં, ગુજલડી રે'

સરખાવો :

પરણ્યે વાઢ્યા પાચ કોળિયા રે લોલ.
...ં વાઢ્યા દસવીસ, મારા બાલમજી હો!•

• ... ગુજરાતના લોકગીતો પૃ. ૧૨૨.